पुराणान्तर्गत श्राद्ध सर्वस्व

श्रीमद्रामायण · महाभारत · श्रीमद्भागवत — श्राद्ध, पितृतर्पण, स्वधा, प्रेतकर्म, दशाह कृत्य, आब्दिक — उदाहरण, सद्गतियाँ, पाप, नियम

(अ.0) पितृदेवता कौन हैं? — उत्पत्ति, स्वरूप, प्रयोजन, आराधना

> पितृगण। अग्निष्वात्त, बर्हिषद, सोम्य और आज्यप पितृदेवता हैं; इनमें साग्निक और अनग्निक हैं (भाग. 4.1.63)। एक अन्य विभाग के अनुसार पितृगण सात हैं — चार मूर्तिमान और तीन शरीरी (सभा. 11.45); वे हैं वैराज, अग्निष्वात्त, गार्हपत्य, सोमप, एकशृंग, चतुर्वेद और कल (कलाः) (सभा. 11.46–47)। स्वयम्भू द्वारा सृष्ट इन पितृदेवताओं को 'ऊष्मप' भी कहते हैं (अनु. 138.27)। पितामह (ब्रह्मा), पुलस्त्य, वसिष्ठ, पुलह, अंगिरस, क्रतु, कश्यप — ये महायोगेश्वर ही पितर हैं, ऐसा भीष्म ने कहा (अनु. 139.21–22)। मृत माता-पिता और पूर्वज (प्रेत) पितर नहीं हैं; प्रेतों के उद्देश्य से की जाने वाली पूजा से पितर तृप्त होते हैं (अनु. 238.45)।

उत्पत्ति। ब्रह्मदेव ने पितृगणों को अपने अदृश्य रूप से सृजा (भाग. 3.21.42–43)। दक्ष की पुत्री स्वधा इनकी पत्नी है (भाग. 4.1.63)। स्वयम्भू ने तिलों को पितरों के प्रथम भोज्य के रूप में सृजा (अनु. 101.7)।

निवास और काल। तीनों लोकों के बीच ही स्थित दक्षिण दिशा में अग्निष्वात्त आदि पितृगण परम समाधि में निवास करते हैं (भाग. 5.24.6)। मनुष्यों का एक मास उनका एक दिन-रात है (शान्ति. 238.49)।

महिमा। पितर देवताओं के भी देवता हैं, शुचि और पुण्य हैं (अनु. 238.2–3); देव, असुर, मनुष्य आदि सभी के पूज्य हैं (अनु. 134.4)। देवकार्य से पितृकार्य विशिष्ट है (शान्ति. 347.59)।

उनकी भूमिका। पितृगण अपने गोत्र वालों के लिए सत्य आशीर्वाद ही चाहते रहते हैं (भाग. 5.24.6)। कव्य से सन्तति होती है (अनु. 238.51–52)। श्राद्धों से पोषित पितर बदले में पोषण करते हैं (अनु. 238.49)। पुष्टि की कामना से श्राद्ध करने वाले विद्वानों को पितर सदा पुष्टि और सन्तान देते हैं (अनु. 238.37)।

आराधना। चारों वर्णों के लोग पितृदेवताओं की पूजा करते हैं (सभा. 11.47)। यज्ञ से देवताओं को, और पुत्रों तथा श्राद्धों से पितृदेवताओं को प्रसन्न करता है (आदि. 126.18)। पितृदेवताओं के उद्देश्य से किया जाने वाला कर्म पितृयज्ञ है (आश्व. 104.10); उन्हें नित्य तर्पण से तृप्त करते हैं (अनु. 154.6); नित्य पितृतर्पण, नित्यश्राद्ध (स्वधा, अन्न) आदि से प्रतिदिन अर्चन करना चाहिए (भाग. 11.17.50)। श्राद्धकर्म के लिए माघ और भाद्रपद मास प्रशस्त हैं; कृष्णपक्ष शुक्लपक्ष से श्रेष्ठ है (अनु. 238.7)। माता-पिता का भाद्रपद कृष्णपक्ष में (पितृपक्ष में) और मृत्यु के दिन (मृताह) यथाशक्ति, पूरी शक्ति से अवश्य श्राद्ध करना चाहिए; उन कालों में पितृदेवताओं को दिया गया नष्ट नहीं होता (भाग. 7.14.20–27)।

श्राद्ध का आरम्भ। पुत्रशोक में श्राद्ध करने वाले निमि से अत्रि ने कहा कि यह ब्रह्मा द्वारा स्वयं देखा गया धर्म है (अनु. 138.20–22)। महाभारत के अनुसार पृथ्वी का उद्धार करने वाले वराहमूर्ति ने अपनी दाढ़ों में लगे तीन पिण्डों को दर्भों पर रखकर पित्र्य किया (शान्ति. 355.14–15); "रूपरहित ये तीनों पिण्डरूप धारण करके सनातन पितर बनें" ऐसा कहा (शान्ति. 355.18–20); पिता, पितामह, प्रपितामह — इन तीन पिण्डों में जो है वह मैं ही हूँ, ऐसा कहा (शान्ति. 355.21–22)।

माता-पिता की सेवा — जीवित रहते हुए। माता, पिता, गुरु — इन तीनों को भीष्म ने 'गुरु' कहा (शान्ति. 108.13); गुरुओं के पूजित होने पर ऋषि और देवता पितृदेवताओं के साथ प्रसन्न होते हैं (शान्ति. 108.27)। पिता गार्हपत्य अग्नि है, माता दक्षिणाग्नि (शान्ति. 108.6–7); पिता की सेवा से इस लोक को, माता की सेवा से परलोक को जीतता है (शान्ति. 108.8–9)। इन तीनों का अनादर करने वाले की सारी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं (शान्ति. 108.12)। माता-पिता का ऋण कैसे चुके, यह गौतम के पूछने पर यम ने कहा कि प्रतिदिन माता-पिता की पूजा करनी चाहिए (शान्ति. 129.9–10)। पिता की सेवा जितना बल दक्षिणाओं सहित यज्ञ भी नहीं देते (रामा. अयो. 30.35), और माता-पिता की सेवा में लगे महात्मा देव, गन्धर्व, गोलोक तथा ब्रह्मलोकों को प्राप्त करते हैं (रामा. अयो. 30.37) — ऐसा श्रीराम ने कहा।

मृत्यु के बाद — पितृकार्य। दिवंगत पिता के वचन को निभाकर उन्हें ऋण से मुक्त करने को भरत से कहते हुए (रामा. अयो. 107.10) श्रीराम ने कहा कि 'पुत्' नामक नरक से पिता की रक्षा करके सब प्रकार से पितृदेवताओं की रक्षा करने वाला ही 'पुत्र' है (रामा. अयो. 107.12), और गुणवान अनेक पुत्रों की कामना करनी चाहिए — उनमें से एक भी गया जाएगा (रामा. अयो. 107.13)। "मेरे अंगस्पर्श से तुम्हारे पिता पूर्णतः पवित्र हो गए; सत्पुत्र वाले वे लोकों को प्राप्त करेंगे; उनके प्रेतकार्य करो" — ऐसा नृसिंह ने प्रह्लाद को आज्ञा दी (भाग. 7.10.23)।

> पहले पितरों की पूजा करके फिर देवताओं को तृप्त करते हैं; इसलिए मनुष्य को सब प्रयत्नों से सदा उनकी पूजा करनी चाहिए (अनु. 134.5)।

(अ.1) महापुरुषों का आदर्श

> वनवास में भी। वनवास में पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर श्रीराम ने जलक्रिया के लिए इंगुदी का पिण्याक और उत्तरीय के रूप में वल्कल वस्त्र लाने को लक्ष्मण से कहा (रामा. अयो. 103.17; 103.20)। दक्षिणाभिमुख होकर पिता को उदक देकर (रामा. अयो. 103.25–27), बेर मिले इंगुदी पिण्याक को ही दर्भों पर पिण्ड के रूप में रखकर (रामा. अयो. 103.28–29), "मनुष्य जो अन्न खाता है, उसके देवताओं का भी वही अन्न होता है" ऐसा कहा (रामा. अयो. 103.30)। शिक्षा: श्राद्ध के योग्य द्रव्य न मिलने की कठिन परिस्थितियों में भी, अनिवार्य श्राद्ध को उपलब्ध वस्तुओं से ही यथासम्भव उत्तम रीति से करना चाहिए।

भरत की निष्ठा। दुःख से भूमि पर गिर पड़ने पर भी भरत ने धर्मज्ञ होकर सभी प्रेतकृत्य करवाए (रामा. अयो. 76.2–3)। दस दिन बीतने पर बारहवें दिन श्राद्धकर्म करवाए (रामा. अयो. 77.1); तेरहवें दिन अस्थिसंचयन के लिए पिता की चिता के मूल पर आए (रामा. अयो. 77.4–5)। शिक्षा: परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो भरत की भाँति शास्त्रोक्त सभी नियमों का निर्धारित दिनों में सम्पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए।

पक्षी के लिए भी। दशरथ की भाँति पूजनीय जटायु का श्रीराम ने अपने बन्धु की तरह दहन किया (रामा. अरण्य. 68.31); हरे दर्भों पर पिण्ड समर्पित करके (रामा. अरण्य. 68.32–33), गोदावरी में उदक दिया (रामा. अरण्य. 68.35–36)। शिक्षा: रक्तसम्बन्ध न होने पर भी, हमारे लिए पूज्य और हम पर उपकार करने वालों का कृतज्ञता से प्रेतकार्य करना चाहिए।

तीन पीढ़ियों का तप। सगरपुत्रों के लिए अंशुमान और दिलीप गंगा को नहीं ला सके (रामा. बाल. 44.8–9; 44.11)। भगीरथ ने केवल फल, मूल और जल को आहार बनाकर एक हज़ार वर्ष घोर तप किया (अरण्य. 108.13); अन्त में सगरपुत्रों को यथान्याय उत्तम उदक समर्पित किया (रामा. बाल. 44.17–18)। शिक्षा: पितरों की सद्गति के लिए कितना भी समय लगे, कितनी भी पीढ़ियाँ लगें, हार न मानकर प्रयत्न करना चाहिए।

अकाल में भी। बारह वर्ष की अनावृष्टि में सभी महर्षियों के जीविका के लिए भाग जाने पर भी (शल्य. 52.36–37), सारस्वत मुनि पितृदेवताओं और देवताओं को तर्पण करते हुए ही अपने प्राणों और वेदों की रक्षा करते रहे (शल्य. 52.40)। शिक्षा: प्राणों पर संकट वाले अकाल में भी पितृतर्पण नहीं छोड़ना चाहिए।

वन में साध्वी। सुकुमारी अर्चि ने (भाग. 4.23.19) पर्वत शिखर पर पति पृथु के लिए चिता बनाकर (भाग. 4.23.21), नदी में स्नान करके उदक दिया (भाग. 4.23.22)। शिक्षा: सुकुमार हों, या सुविधाहीन स्थान हो, फिर भी कष्ट की परवाह किए बिना प्रेतकार्य करना चाहिए।

अनाथों के लिए भी। युधिष्ठिर ने सभी के प्रेतकार्य करवाने की आज्ञा दी (स्त्री. 26.24–26); कुन्ती के अनुरोध पर (स्त्री. 27.12) युधिष्ठिर ने कर्ण को उदक देकर, समस्त प्रेतकृत्य अधिक दक्षिणाओं के साथ विधिवत् किया (स्त्री. 27.27, 29–30)। शिक्षा: जिनके बन्धु नहीं हैं, ऐसे अनाथों की भी अन्त्येष्टि हो, यह देखना चाहिए; युद्ध में शत्रु रहा हो तब भी, मृत बन्धु के लिए उचित कर्म अवश्य होने चाहिए।

वैर मृत्यु के साथ समाप्त होता है। धर्म को त्यागने वाला क्रूर, परस्त्री को छूने वाला, भाई के रूप में शत्रु — ऐसे रावण का संस्कार मैं नहीं करूँगा, ऐसा विभीषण ने कहा (रामा. युद्ध. 111.93–96)। तब श्रीराम ने "वैर मृत्यु के साथ समाप्त हो जाते हैं, हमारा प्रयोजन पूरा हो गया; इसका संस्कार करो — यह जैसा तुम्हारा है वैसा ही मेरा भी है" कहकर (रामा. युद्ध. 111.100–101), यह भी कहा कि धर्म के अनुसार वह तुरन्त विधिपूर्वक संस्कार पाने का अधिकारी है, और उससे तुम्हें कीर्ति मिलेगी (रामा. युद्ध. 111.101–102)। विभीषण ने उसे स्वर्ण पालकी में राजोचित रीति से ले जाकर, उत्तम पितृमेध करके, तिलोदक समर्पित किया (रामा. युद्ध. 111.107–121)। शिक्षा: वैर दुष्टता से होता है, व्यक्ति से नहीं; वह मृत्यु के साथ समाप्त हो जाता है — मृतकों के लिए उचित पितृकार्यों को कभी नहीं रोकना चाहिए।

वंश नष्ट होने पर भी। अर्जुन ने प्रधानता के क्रम से सभी वृष्णियों की क्रियाएँ कीं (मौसल. 8.28–30); बलराम और वासुदेव के शरीरों को खोजकर उनका दहन करवाया (मौसल. 8.32)। शिक्षा: पूरा वंश नष्ट हो जाए, तब भी बचा हुआ एक व्यक्ति भी सबके लिए कर्म करे।

शास्त्र ही प्रमाण। गंगाद्वार में भीष्म ने पिता शन्तनु का श्राद्ध आरम्भ करके पिण्ड-निर्वपण की तैयारी की (अनु. 130.11–14); तभी दर्भों को चीरकर एक बाहु ऊपर उठी (अनु. 130.15–16)। हाथ में पिण्ड देना वेदविहित नहीं है, यह निश्चय करके (अनु. 130.17–18), उन्होंने सब कुछ दर्भों पर ही समर्पित किया (अनु. 130.19–21); पितृदेवताओं ने स्वप्न में प्रकट होकर कहा कि धर्म में मोहित न होकर शास्त्र को प्रमाण मानने से हम प्रसन्न हैं (अनु. 130.21–24)। शिक्षा: कितना भी अद्भुत दृश्य दिखे, भावावेश से नहीं, शास्त्रविधि को ही प्रमाण मानकर श्राद्ध करना चाहिए।

पुत्रशोक में भी। शोक से व्यथित होने पर भी निमि ने मन को वश में करके श्राद्धकल्प के विषय में विचार किया (अनु. 138.9–11); अमावस्या के दिन सात ब्राह्मणों को भोजन कराया (अनु. 138.12–13)। शिक्षा: तीव्र दुःख में भी मन को वश में करके श्राद्ध करना चाहिए।

भगवान की दिनचर्या। श्रीकृष्ण प्रतिदिन सूर्योपस्थान करके देव, ऋषि, पितृ तर्पण करते थे (भाग. 10.80.7)। शिक्षा: स्वयं भगवान ने नित्य पितृतर्पण किया; हमें भी उसे कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

> नित्य स्वाहा, नित्य स्वधा — पितर और देवता इन दोनों की पुत्रों से नित्य अपेक्षा करते हैं (शान्ति. 75.25)।

(अ.2) कर्ता और पितरों को मिलने वाली सद्गति

एक पायस। भाद्रपद कृष्णपक्ष में मघा नक्षत्र होने पर, पूर्व की ओर गजच्छाया में, कुतप काल में, दक्षिणाभिमुख होकर परमान्न से पितरों को निवेदन दे तो (अनु. 189.31–32), तेरह वर्ष महाश्राद्ध करने के बराबर फल मिलता है (अनु. 189.33)। "दक्षिणायन में मघा त्रयोदशी के दिन घी वाला पायस देने वाला हमारे कुल में जन्म ले" — ऐसा पितर स्वयं चाहते हैं (अनु. 135.12)।

ग्रहण-तिलोदक। चन्द्र और सूर्य ग्रहणों में तथा अयनों में पवित्र होकर तिल मिला जल भी पितरों को दे तो एक हज़ार वर्ष श्राद्ध करने के समान होता है (आश्व. 110.29)। अमावस्या के सूर्यग्रहण में सन्निहती पर श्राद्ध करने वाला एक हज़ार अश्वमेधों का फल पाता है (अरण्य. 81.196–198); वहाँ स्नान मात्र से कोई भी दुष्कर्म नष्ट हो जाता है (अरण्य. 81.198–199)।

गया। गया के अक्षयवट के पास पितरों को दिया गया अक्षय हो जाता है (अरण्य. 82.82); दोनों पक्ष गया में निवास करने वाला अपने कुल को सातवीं पीढ़ी तक पवित्र करता है (अरण्य. 82.95)। इसीलिए अनेक पुत्रों की कामना करनी चाहिए, उनमें से एक भी गया जाएगा (रामा. अयो. 107.13; अरण्य. 85.9); अथवा गौरी कन्या का वरण कर सकते हैं, अथवा नील वृषभ छोड़ सकते हैं — ऐसी सन्तान पहले की दस और बाद की दस पीढ़ियों को तार देती है (अरण्य. 85.10)।

प्रेतमुक्ति। पिण्डसम्बन्ध से प्रेत मुक्त होते हैं (अनु. 139.22)। गंगाजल से भस्म भीगने के बाद साठ हज़ार सगरपुत्र स्वर्ग पहुँचे; जब तक समुद्र में जल है, तब तक वे स्वर्ग में रहेंगे (रामा. बाल. 44.2–4)। श्रीराम द्वारा संस्कार किए गए जटायु ने पुण्यमय शुभ गति प्राप्त की (रामा. अरण्य. 68.37)। गंगाजल से तर्पण किए गए प्रेत और पितर तीनों लोकों में तृप्ति पाते हैं (अनु. 65.39)।

कर्ता को फल। पितृमेध से दीर्घायु, आरोग्य, पुत्र और प्रचुर धन-धान्य प्राप्त होते हैं (अनु. 238.35); श्राद्धदाता दुःखरहित स्वर्ग प्राप्त करता है (अनु. 238.36)। तिलों से पितरों की आराधना करने वाला मानो सभी सत्रयाग कर चुका (अनु. 101.9)। सुवर्ण दान करने वाले पहले की दस और बाद की दस पीढ़ियों को तार देते हैं, ऐसा पितृदेवताओं ने कहा (अनु. 130.27–28)। यम द्वारा बताई गई नक्षत्र-श्राद्धविधि को (अनु. 136.1) सुनकर वैसा ही करके शशबिन्दु ने बिना परिश्रम पृथ्वी को जीतकर उसका पालन किया (अनु. 136.15)।

तिलोदक और दीप। श्राद्ध में दिए गए तिलोदक को पितृदेवता सदा अक्षय मानते हैं (अनु. 192.14); तिलपात्र का दान गोदान और शाश्वत भूदान के समान है, ऐसा देवता मानते हैं (अनु. 192.12–13)। वर्षाकाल के चार महीने श्रद्धा से तिलोदक देते हुए, वेदपारग ब्राह्मण को यथाशक्ति भोजन कराने वाला सौ यागों का सम्पूर्ण फल पाता है (अनु. 191.3–4)। नित्य दीप देने वाला पितरों को तार देता है (अनु. 103.28–29); वर्षाकाल में दीपदान करने वाला चन्द्रमा के समान प्रकाशित होता है (अनु. 188.77)।

वंशवृद्धि। अनुमति प्राप्त पत्नी यदि मध्यम पिण्ड खाए, तो पुत्र की कामना करने वाले को पितामह पुत्र देते हैं (अनु. 188.38)। पुष्टि की कामना से श्राद्ध करने वालों को पितर सदा पुष्टि और सन्तान देते हैं (अनु. 238.37)। अमावस्या के दिन गूलर के पात्र से मधु मिला तिलोदक देने वाले की (अनु. 188.78) सन्तान सदा पुष्ट रहती है; श्रद्धा से करने वाला पितृऋण से मुक्त हो जाता है (अनु. 188.79)। पुत्री द्वारा और दौहित्रों द्वारा मैं तार दिया गया, ऐसा ययाति ने कहा (आदि. 87.28)।

कथा सुनाने पर। श्राद्ध में ब्राह्मणों को भारत का एक पाद भी सुनाने वाले का श्राद्ध अक्षय होकर पितरों तक पहुँचता है (आदि. 62.40); वेद के समान रामायण को भी श्राद्धों में सुनाना चाहिए (रामा. उत्तर. 111.4)।

नीलवृषभ। छोड़ा गया नीलवृषभ पूँछ से जल ऊपर उछाले तो पितर साठ हज़ार वर्ष तृप्त रहते हैं (अनु. 188.73–75); सींगों से किनारे से कीचड़ उठाकर खड़ा हो तो पितर सोमलोक जाते हैं (अनु. 188.76)। नीलवृषभ-विमोचन, अमावस्या का तिलोदक, वर्षाकाल का दीपदान — इनसे पितृऋण चुकता है, ऐसा स्वयं पितरों ने कहा (अनु. 188.70–71)।

> प्रिय पुत्र द्वारा दिया गया पितृलोक में अक्षय होता है, ऐसा बड़े लोग कहते हैं (रामा. अयो. 102.8)।

(अ.3) उल्लंघन से घोर पाप

> उदक के बिना गति नहीं। "हे महानदी, जब तक तुम उन शरीरों का जल से अभिषेक नहीं करतीं, तब तक उन सगरवंशियों की गति नहीं होगी" — ऐसा भगीरथ ने गंगा से कहा (अरण्य. 108.19)। जिनकी पिण्डोदक क्रियाएँ लुप्त हो जाती हैं, उनके पितर पतित होते हैं (भीष्म. 25.42)।

उलटे लटके हुए। जरत्कारु ने अपने पितरों को गड्ढे में उलटे लटके हुए देखा; उन्होंने कहा कि सन्तान क्षीण होने से हम अशुचि नरक में गिर रहे हैं (आदि. 45.3; 45.13; 45.22)। अगस्त्य के पितर भी गड्ढे में उलटे लटके हुए दिखाई दिए (अरण्य. 94.14); उन्होंने कहा कि सन्तान के लिए ही हम ऐसे हैं (अरण्य. 94.15–16)।

सौ वर्ष कौआ बनकर। देवकार्य या पितृकार्य किए बिना जो स्वयं ही भोजन करता है, वह मरने के बाद कौआ बनकर जन्म लेता है (अनु. 173.84) — सौ वर्ष कौआ, फिर मुर्गा, एक महीना साँप बनकर जन्म लेकर, उसके बाद ही मनुष्य बनता है (अनु. 173.85)।

मल में, वीर्य में। श्राद्ध खाकर उसी दिन वेदाध्ययन करने वाले, वृषली की शय्या पर जाने वाले — उनके पितर उस पूरे महीने उनके मल में पड़े रहते हैं (अनु. 137.12)। श्राद्ध देकर या खाकर स्त्री के पास जाने वाले पुरुष के पितर उस पूरे महीने उस वीर्य में पड़े रहते हैं (अनु. 188.24)। जानते हुए भी अयोग्यों को देने वालों के पितर मृत्यु के बाद निश्चय ही मल खाते हैं (अनु. 137.16)। सोमविक्रयी को दिया गया मल बन जाता है, वैद्य को दिया गया पीब-रक्त बन जाता है (अनु. 137.13)।

पीपल के फल की भाँति। श्राद्ध में मित्रता के सम्बन्ध जोड़ने वाला 'श्राद्धमित्र' डंठल से छूटे पीपल के फल की तरह स्वर्गलोक से गिर पड़ता है (अनु. 137.43)। नर्तक और गायक को दी गई दक्षिणा देवताओं और पितरों तक नहीं पहुँचती; वह उनके प्रेतों को देवयान से गिरा देती है (अनु. 137.48–49)।

दोनों लोकों से भ्रष्ट। महायज्ञ किए बिना, पितरों को स्वधा अर्पित किए बिना संन्यास लोगे तो हवा से बिखरे बादल की तरह दोनों लोकों से भ्रष्ट होकर नष्ट हो जाओगे, ऐसी नकुल ने चेतावनी दी (शान्ति. 12.52–53)। शास्त्रोक्त रीति से अष्टका आदि से पितृपूजा न करने वाले आदि पुनः जन्म लेने पर सन्तानहीन होते हैं (अनु. 221.12–14)।

कीट-जन्म में पश्चात्ताप। मैंने देवताओं के लिए या पितृयज्ञ के लिए श्राद्ध नहीं किया, अन्न माँगने वालों को नहीं दिया — ऐसा एक कीट ने व्यास से कहकर (अनु. 179.22), उन क्रूर कर्मों को याद करके अब पश्चात्ताप कर रहा हूँ, ऐसा कहा (अनु. 179.26)।

राक्षसों का भाग। बिना तिलों के, क्रोध से किए गए श्राद्ध के हविष्य को यातुधान और पिशाच लूट लेते हैं (अनु. 137.22); समय चूककर दिया गया दान राक्षसों का भाग बन जाता है (अनु. 61.3); पहले पितरों की पूजा किए बिना क्रिया करने वाले के फल को राक्षस और पिशाच भोगते हैं (अनु. 238.50)। असूया से, बिना श्रद्धा के दिया गया सब कुछ ब्रह्मा ने असुरेन्द्र के भाग के रूप में निर्धारित किया (अनु. 137.20)।

छोटी भूलों पर भी। तर्पण करने से पहले ही स्नानवस्त्र निचोड़ दे तो देवता, ऋषिगण और पितृदेवता निराश होकर शाप देकर चले जाते हैं (आश्व. 104.62)। भोजन, अभ्यंग और दान के अतिरिक्त किसी अन्य काम में तिलों का उपयोग करने वाला कुत्ते के मल में कीड़ा बनकर अपने पितृदेवताओं सहित डूब जाता है (आश्व. 109.36)। रजस्वला आदि की दृष्टि पड़े हविष्य से पितृदेवता तेरह वर्ष तक तृप्त नहीं होते (अनु. 190.13)।

शाप। श्राद्ध में अशुचि अन्न परोसने वाले पौष्य राजा को उत्तंक ने 'अन्धे हो जाओगे' ऐसा शाप दिया (आदि. 3.116)। जमदग्नि के श्राद्ध के लिए दुहे गए दूध को दूषित करने वाला क्रोध (आश्व. 95.4–5), पितृदेवताओं का अपचार करने के कारण नेवले का रूप पा गया (आश्व. 95.11)। अष्टका-श्राद्ध के द्रव्यों में से एक को पहले ही खा लेने वाले विकुक्षि को (भाग. 9.7.7–8), इक्ष्वाकु महाराज ने देश से निकाल दिया (भाग. 9.7.9)।

> पितरों का श्राद्ध न करने वाले और देवताओं की पूजा न करने वाले को बड़े लोग मूढ़चित्त कहते हैं (उद्योग. 33.43)।

(अ.4) बार-बार कहे गए नियम

> अपराह्ण। दैवकर्म पूर्वाह्ण में, पितृकर्म अपराह्ण में करना चाहिए (अनु. 61.2–3); जैसे शुक्लपक्ष से कृष्णपक्ष विशिष्ट है, वैसे ही श्राद्ध के लिए पूर्वाह्ण से अपराह्ण विशिष्ट है (अनु. 134.21)। दिन के आठवें भाग 'कुतप' में पितरों को दिया गया अक्षय हो जाता है (आदि. 87.31)।

अमावस्या, माघ-भाद्रपद। अमावस्या के दिन पिण्ड दे तो सब कामनाएँ प्राप्त होती हैं (अनु. 134.19)। श्राद्ध के लिए माघ और भाद्रपद मास पूजित हैं; कृष्णपक्ष श्रेष्ठ है (अनु. 238.7)। भाद्रपद कृष्णपक्ष में माता-पिता का शक्ति के अनुसार श्राद्ध करना चाहिए (भाग. 7.14.20)। ग्रहण में, अयनान्त में, मघा में और गया में दिया गया एक हज़ार निष्कों के बराबर है (आश्व. 110.27)।

तीन पवित्र। श्राद्ध में दौहित्र, कुतप और तिल पवित्र हैं; शौच, क्रोध का अभाव और जल्दबाज़ी न करना प्रशंसनीय हैं (अनु. 238.14)। शील, श्रुत और कुल वाले श्रोत्रिय ब्राह्मणों को विषम संख्या में, एक दिन पहले या उसी दिन प्रातः आमन्त्रित करना चाहिए (अनु. 238.12–13)। सिर से स्नान करने के बाद ही पितृकार्य करना चाहिए (अनु. 161.134); पितरों को तिलोदक ताम्रपात्र से देना चाहिए (अनु. 189.21–22)।

तिलों की महिमा। स्वयम्भू ने तिलों को पितरों के प्रथम भोज्य के रूप में सृजा (अनु. 101.7); जिस श्राद्ध में तिल अधिक हों वह अक्षय है, ऐसा मनु ने कहा (अनु. 135.4)। तिल पिशाचों से और दर्भ राक्षसों से पंक्ति की रक्षा करते हैं (आदि. 87.32); श्राद्धस्थल के चारों ओर तिल बिखेरने चाहिए (अनु. 137.21)।

ब्राह्मणों का चयन। दैवकर्म में ब्राह्मणों की परीक्षा नहीं करनी चाहिए, पित्र्यकर्म में परीक्षा करनी चाहिए (अनु. 137.2–3) — कुल, शील, आयु, रूप, विद्या और वंश से (अनु. 137.4)। पितृकार्य में तीन को, या एक को ही भोजन कराना चाहिए; कितना भी सम्पन्न हो, श्राद्ध का विस्तार नहीं करना चाहिए (भाग. 7.15.3)। मन्त्रवेत्ता एक व्यक्ति प्रसन्न हो तो वह ऋचाएँ न जानने वाले लाखों के बराबर है (अनु. 137.56)। वैद्य, देवलक, सोम बेचने वाले, गायक और नर्तक श्राद्ध के योग्य नहीं हैं (अनु. 61.14–15)। श्राद्ध में मित्र का आदर-सत्कार नहीं करना चाहिए (अनु. 137.44)।

वर्ज्य। कोद्रव, हींग, लहसुन, प्याज़, सहजन, लौकी, काला नमक (अनु. 138.38–39); जीरा, सब प्रकार के नमक, जामुन श्राद्ध में वर्ज्य हैं (अनु. 138.40–41); लोहे, रांगे और सीसे के पात्र भी वर्जित करने चाहिए (अनु. 238.17–18)। मुनियों के आहार से ही पितरों को परम प्रीति होती है (भाग. 7.15.7)।

श्राद्ध के दिन का क्रम। पहले पितृदेवताओं का तर्पण करके, फिर बलि, उसके बाद वैश्वदेव, और अन्त में ब्राह्मण-भोजन करना चाहिए (अनु. 154.17)।

पिण्डों का क्रम। पहले पिता को, फिर पितामह को, फिर प्रपितामह को पिण्ड देना चाहिए (अनु. 139.13–14); दक्षिणाभिमुख होकर, अपसव्य होकर, नाम पहले उच्चारित करते हुए दर्भों पर तीन पिण्ड रखने चाहिए (अनु. 238.27)।

नित्य कर्तव्य। तर्पण, स्वाध्याय, बलि, अतिथिपूजा, पितृयज्ञ — ये पंच महायज्ञ हैं (आश्व. 104.10)। पितृदेवताओं को तर्पण से नित्य सन्तुष्ट करना चाहिए (अनु. 154.6); प्रतिदिन अन्न से, जल से, अथवा दूध, कन्दमूल और फलों से भी पितरों को प्रसन्न करना चाहिए (अनु. 154.8–9)। पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, दादी, नानी, गुरु, आचार्य आदि को तर्पण करना चाहिए (आश्व. 104.58–59)।

प्रेतकर्म। मृतक का शुद्ध स्थान पर विधिपूर्वक दहन करना प्रशस्त है (शान्ति. 303.38); विदेश में मरे और जिसका शरीर न मिले, ऐसे आहिताग्नि के लिए पलाश की डंठलों से प्रतिमा बनाकर संस्कार करना चाहिए (आश्व. 118.1–2)। उदकदान और अष्टकाश्राद्ध मृतकों को परलोक में पोषण देते हैं (अनु. 242.32)। अत्यधिक शोक करने से वह पितामहों को सन्तप्त करता है (आश्व. 2.2)।

अपनी भूमि। पराई भूमि में किया गया श्राद्ध उस भूमि के पितरों द्वारा नष्ट कर दिया जाता है (अनु. 101.33); वन, पर्वत, नदियाँ और तीर्थ किसी के स्वामित्व में नहीं हैं (अनु. 101.35)।

> जैसे पृथ्वी पर सब प्राणी वर्षा की प्रतीक्षा करते हैं, वैसे ही पितर पितृमेध की प्रतीक्षा करते हैं (अनु. 238.4)।

(आ) महापुरुषों का आचरण — श्राद्ध, तर्पण, प्रेतकर्म के उदाहरण

स्रोत, संकेत: सभी श्लोक तीन स्रोतों से यथावत् देवनागरी लिपि में दिए गए हैं — (1) श्रीमद्वाल्मीकि रामायण: गीताप्रेस (गोरखपुर) की प्रति से तैयार JSON; (2) महाभारत: MAHE (मणिपाल) Digital Concordance की कुम्भकोणम् प्रति (DPRC_MM_DC_KK_complete_[200525].txt) — पर्व और उपपर्व के नाम उस प्रति की पुष्पिकाओं के अनुसार, अध्याय-श्लोक संख्याएँ उसी प्रति की हैं (BORI संख्याओं से भिन्न हो सकती हैं); (3) श्रीमद्भागवत: skandha_1–12.json प्रति। यदि एक ही श्लोक अनेक समूहों में उद्धृत हो, तो वह केवल पहली बार ही मुद्रित है, और बाकी स्थानों से उसका लिंक दिया गया है। सारांशों में कुछ द्रव्यों को सामान्य रूप से "अन्य द्रव्य" कहा गया है; श्लोक यथावत् हैं। संकेत: रामा. बाल./अयो./अरण्य./किष्कि./सुन्दर./युद्ध./उत्तर. = रामायण के काण्ड (सर्ग.श्लोक); भाग. = श्रीमद्भागवत (स्कन्ध.अध्याय.श्लोक); महाभारत: आदि., सभा., अरण्य., विराट., उद्योग., भीष्म., द्रोण., कर्ण., शल्य., सौप्तिक., स्त्री., शान्ति., अनु., आश्व., आश्रम., मौसल., महाप्र., स्वर्गा. = सम्बन्धित पर्व (अध्याय.श्लोक)।

आ.1 वनवास में श्रीराम द्वारा मन्दाकिनी तट पर दशरथ को जलांजलि और इंगुदी पिण्डप्रदान

वक्ता / कथन: भरत श्रीराम से; फिर श्रीराम के वचन; शेष वाल्मीकि का कथन उदाहरण नियम पुण्य

- उदाहरण पिता की मृत्यु का समाचार देने वाले भरत ने श्रीराम को प्रेरित किया, 'उठिए और पिता को उदक दीजिए; मैं और शत्रुघ्न पहले ही उदक दे चुके हैं' (रामा. अयो. 102.7)।
- नियम पुण्य भरत ने कहा कि बड़े कहते हैं, प्रिय पुत्र द्वारा दिया गया पितृलोक में अक्षय होता है; आप ही पिता के प्रिय हैं (रामा. अयो. 102.8)।
- उदाहरण श्रीराम ने विलाप किया कि अपने वियोग के दुःख से मरे पिता का मैं संस्कार नहीं कर सका, और कहा कि सब प्रेतकृत्यों से राजा का सत्कार करने वाले भरत और शत्रुघ्न कृतार्थ हैं (रामा. अयो. 103.9–10)।
- उदाहरण जब भाइयों ने कहा 'पिता को उदक देना चाहिए', तो श्रीराम ने जलक्रिया के लिए इंगुदी का पिण्याक और उत्तरीय के रूप में वल्कल वस्त्र लाने को लक्ष्मण से कहा (रामा. अयो. 103.17; 103.20)।
- उदाहरण नियम तेज़ बहने वाली नदी पर पहुँचकर, कीचड़ रहित शुभ तीर्थ में 'यह (आपको) प्राप्त हो' कहते हुए उन्होंने राजा के लिए जल छोड़ा; श्रीराम ने अंजलि में जल लेकर दक्षिण (याम्य) दिशा की ओर मुख करके रोते हुए कहा (रामा. अयो. 103.25–26)।
- उदाहरण पुण्य श्रीराम ने प्रार्थना की, 'हे राजश्रेष्ठ, पितृलोक पहुँचे हुए आपको मेरा दिया यह निर्मल जल अक्षय रूप से प्राप्त हो' (रामा. अयो. 103.27)।
- उदाहरण तट पर आकर भाइयों के साथ पिता का निर्वाप (पिण्डप्रदान) किया; बेर मिले इंगुदी पिण्याक को दर्भों पर रखा (रामा. अयो. 103.28–29)।
- नियम श्रीराम ने कहा, 'हे महाराज, हम जो खाते हैं वही प्रेम से स्वीकार कीजिए; मनुष्य जो अन्न खाता है, उसके देवताओं का भी वही अन्न होता है' (रामा. अयो. 103.30)।

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 102 › श्लोक 7 उदाहरण — वा.रा. 2.102.7

उत्तिष्ठ पुरुषव्याघ्र क्रियतामुदकं पितुः।
अहं चायं च शत्रुघ्नः पूर्वमेव कृतोदकौ॥

↩ वापस: ↩ आ.1 ↩ सूची.65

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 102 › श्लोक 8 नियम पुण्य — वा.रा. 2.102.8

प्रियेण किल दत्तं हि पितृलोकेषु राघव।
अक्षयं भवतीत्याहुर्भवांश्चैव पितुः प्रियः॥

↩ वापस: ↩ अ ↩ आ.1

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 9 उदाहरण — वा.रा. 2.103.9

किं नु तस्य मया कार्यं दुर्जातेन महात्मनः।
यो मृतो मम शोकेन स मया न च संस्कृतः॥

↩ वापस: ↩ आ.1

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 10 उदाहरण — वा.रा. 2.103.10

अहो भरत सिद्धार्थो येन राजा त्वयानघ।
शत्रुघ्नेन च सर्वेषु प्रेतकृत्येषु सत्कृतः॥

↩ वापस: ↩ आ.1 ↩ सूची.66

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 17 उदाहरण वा.रा. 2.103.17

ततस्ते भ्रातरः सर्वे भृशमाश्वास्य दुःखितम् ।
अब्रुवञ्जगतीभर्तुः क्रियतामुदकं पितुः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.1

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 20 उदाहरण वा.रा. 2.103.20

आनयेङ्गुदिपिण्याकं चीरमाहर चोत्तरम् ।
जलक्रियार्थं तातस्य गमिष्यामि महात्मनः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.1

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 25 उदाहरण नियम वा.रा. 2.103.25

शीघ्रस्रोतसमासाद्य तीर्थं शिवमकर्दमम् ।
सिषिचुस्तूदकं राज्ञे तत एतद् भवत्विति ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.1

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 26 उदाहरण नियम वा.रा. 2.103.26

प्रगृह्य तु महीपालो जलापूरितमञ्जलिम् ।
दिशं याम्यामभिमुखो रुदन् वचनमब्रवीत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.1

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 27 उदाहरण पुण्य वा.रा. 2.103.27

एतत् ते राजशार्दूल विमलं तोयमक्षयम् ।
पितृलोकगतस्याद्य मद्दत्तमुपतिष्ठतु ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.1 ↩ सूची.67

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 28 उदाहरण वा.रा. 2.103.28

ततो मन्दाकिनीतीरं प्रत्युत्तीर्य स राघवः ।
पितुश्चकार तेजस्वी निर्वापं भ्रातृभिः सह ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.1 ↩ सूची.67

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 29 उदाहरण वा.रा. 2.103.29

ऐङ्गुदं बदरैर्मिश्रं पिण्याकं दर्भसंस्तरे ।
न्यस्य रामः सुदुःखार्तो रुदन् वचनमब्रवीत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.1

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 103 › श्लोक 30 नियम वा.रा. 2.103.30

इदं भुङ्क्ष्व महाराज प्रीतो यदशना वयम् ।
यदन्नः पुरुषो भवति तदन्नास्तस्य देवताः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.1

आ.2 जाबालि के नास्तिक तर्क का खंडन करते हुए — वनवास में भी पितृदेवताओं को तृप्त करने की श्रीराम की प्रतिज्ञा

वक्ता / कथन: श्रीराम जाबालि से (वाल्मीकि का कथन) उदाहरण नियम

- उदाहरण जाबालि द्वारा कहे गए (परलोक और श्राद्ध को नकारने वाले) तर्क को सुनकर, सत्यपराक्रमी श्रीराम ने स्थिर बुद्धि से उसका खंडन करते हुए उत्तर दिया; उन नास्तिक वचनों को सहन न करके उनकी निंदा की (रामा. अयो. 109.1; 109.30)।
- उदाहरण नियम श्रीराम ने प्रतिज्ञा की कि वे वनवास में ही रहते हुए, शुचि होकर, नियताहारी होकर, पवित्र कंद, पुष्प और फलों से पितृदेवताओं और देवताओं को तृप्त करते हुए, श्रद्धा से लोकयात्रा चलाएँगे (रामा. अयो. 109.26–27)।

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 109 › श्लोक 1 उदाहरण वा.रा. 2.109.1

जाबालेस्तु वचः श्रुत्वा रामः सत्यपराक्रमः।
उवाच परया सूक्त्या बुद्ध्याविप्रतिपन्नया॥

↩ वापस: ↩ आ.2

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 109 › श्लोक 26 उदाहरण नियम वा.रा. 2.109.26

वनवासं वसन्नेव शुचिर्नियतभोजनः।
मूलपुष्पफलैः पुण्यैः पितॄन् देवांश्च तर्पयन्॥

↩ वापस: ↩ आ.2 ↩ उ.85

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 109 › श्लोक 27 उदाहरण नियम वा.रा. 2.109.27

संतुष्टपञ्चवर्गोऽहं लोकयात्रां प्रवाहये।
अकुहः श्रद्दधानः सन् कार्याकार्यविचक्षणः॥

↩ वापस: ↩ आ.2 ↩ उ.85

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 109 › श्लोक 30 उदाहरण वा.रा. 2.109.30

अमृष्यमाणः पुनरुग्रतेजा
निशम्य तन्नास्तिकवाक्यहेतुम्।
अथाब्रवीत् तं नृपतेस्तनूजो
विगर्हमाणो वचनानि तस्य॥

↩ वापस: ↩ आ.2

आ.3 भरत द्वारा दशरथ की अंत्येष्टि — दाह, दशाह, द्वादशाह श्राद्ध, अस्थिसंचयन

वक्ता / कथन: कवि (वाल्मीकि) का वर्णन; वसिष्ठ भरत से उदाहरण नियम

- नियम वसिष्ठ ने भरत से कहा कि शोक छोड़कर, समय आ जाने पर राजा का अंत्यसंस्कार उत्तम रीति से करो; भरत भूमि पर गिर पड़ा था, फिर भी धर्मज्ञ होकर उसने सभी प्रेतकृत्य करवाए (रामा. अयो. 76.2–3)।
- उदाहरण तेल की द्रोणी से राजा का शरीर बाहर निकालकर भूमि पर रखा गया (रामा. अयो. 76.4)।
- नियम वसिष्ठ ने फिर कहा कि करने योग्य सभी प्रेतकार्य दृढ़ता से और बिना संकोच के करो, तब भरत ने ऋत्विजों, पुरोहितों और आचार्यों को शीघ्रता करने को कहा (रामा. अयो. 76.11–12)।
- उदाहरण ऋत्विजों ने विविध सुगंधित द्रव्यों के साथ चिता के बीच राजा को रखा, अग्नि में होम करके जप किया; सामगों ने शास्त्र के अनुसार सामगान किया (रामा. अयो. 76.17–18)।
- उदाहरण ऋत्विजों और कौसल्या आदि रानियों ने चिता पर स्थित राजा की प्रसव्य परिक्रमा की (रामा. अयो. 76.20)।
- उदाहरण नियम रानियों, मंत्रियों और पुरोहितों ने भरत के साथ उदक समर्पित किया, फिर नगर में प्रवेश करके दस दिन भूमि पर ही शोक में बिताए (रामा. अयो. 76.23)।
- उदाहरण नियम दस दिन बीतने पर शौच प्राप्त करके, बारहवाँ दिन आने पर भरत ने श्राद्धकर्म करवाए (रामा. अयो. 77.1)।
- उदाहरण राजा के और्ध्वदेहिक के लिए भरत ने ब्राह्मणों को धन, रत्न, प्रचुर अन्न, मूल्यवान वस्त्र, अनेक गौएँ, दास-दासियाँ, वाहन और बड़े भवन दान किए (रामा. अयो. 77.2–3)।
- उदाहरण तेरहवें दिन प्रातः शोधन के लिए (अस्थिसंचयन के लिए) पिता की चिता के मूल पर आया भरत गला रुँध जाने से दुःख से विलाप करने लगा (रामा. अयो. 77.4–5)।
- नियम वसिष्ठ ने भरत को उठाया, ‘तुम्हारे पिता की मृत्यु का यह तेरहवाँ दिन है; अस्थिसंचयन का शेष कार्य बाकी रहते हुए तुम देर क्यों कर रहे हो?’; मंत्रियों ने दोनों भाइयों को शेष क्रियाएँ शीघ्र करने के लिए जल्दी करवाई (रामा. अयो. 77.22; 77.26)।

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 76 › श्लोक 2 नियम वा.रा. 2.76.2

अलं शोकेन भद्रं ते राजपुत्र महायशः।
प्राप्तकालं नरपतेः कुरु संयानमुत्तमम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 76 › श्लोक 3 नियम वा.रा. 2.76.3

वसिष्ठस्य वचः श्रुत्वा भरतो धरणीं गतः।
प्रेतकृत्यानि सर्वाणि कारयामास धर्मवित्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 76 › श्लोक 4 उदाहरण वा.रा. 2.76.4

उद्धृत्य तैलसंसेकात् स तु भूमौ निवेशितम्।
आपीतवर्णवदनं प्रसुप्तमिव भूमिपम्॥

↩ वापस: ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 76 › श्लोक 11 नियम वा.रा. 2.76.11

प्रेतकार्याणि यान्यस्य कर्तव्यानि विशाम्पतेः।
तान्यव्यग्रं महाबाहो क्रियतामविचारितम्॥

↩ वापस: ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 76 › श्लोक 12 नियम वा.रा. 2.76.12

तथेति भरतो वाक्यं वसिष्ठस्याभिपूज्य तत्।
ऋत्विक्पुरोहिताचार्यांस्त्वरयामास सर्वशः॥

↩ वापस: ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 76 › श्लोक 17 उदाहरण वा.रा. 2.76.17

गन्धानुच्चावचांश्चान्यांस्तत्र गत्वाथ भूमिपम्।
तत्र संवेशयामासुश्चितामध्ये तमृत्विजः॥

↩ वापस: ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 76 › श्लोक 18 उदाहरण वा.रा. 2.76.18

तदा हुताशनं हुत्वा जेपुस्तस्य तदृत्विजः।
जगुश्च ते यथाशास्त्रं तत्र सामानि सामगाः॥

↩ वापस: ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 76 › श्लोक 20 उदाहरण वा.रा. 2.76.20

प्रसव्यं चापि तं चक्रुर्ऋत्विजोऽग्निचितं नृपम्।
स्त्रियश्च शोकसंतप्ताः कौसल्याप्रमुखास्तदा॥

↩ वापस: ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 76 › श्लोक 23 उदाहरण नियम वा.रा. 2.76.23

कृत्वोदकं ते भरतेन सार्धं
नृपाङ्गना मन्त्रिपुरोहिताश्च।
पुरं प्रविश्याश्रुपरीतनेत्रा
भूमौ दशाहं व्यनयन्त दुःखम्॥

↩ वापस: ↩ आ.3 ↩ सूची.62

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 77 › श्लोक 1 उदाहरण नियम वा.रा. 2.77.1

ततो दशाहेऽतिगते कृतशौचो नृपात्मजः।
द्वादशेऽहनि सम्प्राप्ते श्राद्धकर्माण्यकारयत्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 77 › श्लोक 2 उदाहरण वा.रा. 2.77.2

ब्राह्मणेभ्यो धनं रत्नं ददावन्नं च पुष्कलम्।
वासांसि च महार्हाणि रत्नानि विविधानि च।
वास्तिकं बहु शुक्लं च गाश्चापि बहुशस्तदा॥

↩ वापस: ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 77 › श्लोक 3 उदाहरण वा.रा. 2.77.3

दासीर्दासांश्च यानानि वेश्मानि सुमहान्ति च।
ब्राह्मणेभ्यो ददौ पुत्रो राज्ञस्तस्यौर्ध्वदेहिकम्॥

↩ वापस: ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 77 › श्लोक 4 उदाहरण वा.रा. 2.77.4

ततः प्रभातसमये दिवसे च त्रयोदशे।
विललाप महाबाहुर्भरतः शोकमूर्च्छितः॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 77 › श्लोक 5 उदाहरण वा.रा. 2.77.5

शब्दापिहितकण्ठश्च शोधनार्थमुपागतः।
चितामूले पितुर्वाक्यमिदमाह सुदुःखितः॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 77 › श्लोक 22 नियम वा.रा. 2.77.22

त्रयोदशोऽयं दिवसः पितुर्वृत्तस्य ते विभो।
सावशेषास्थिनिचये किमिह त्वं विलम्बसे॥

↩ वापस: ↩ आ.3

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 77 › श्लोक 26 नियम वा.रा. 2.77.26

अश्रूणि परिमृद्नन्तौ रक्ताक्षौ दीनभाषिणौ ।
अमात्यास्त्वरयन्ति स्म तनयौ चापराः क्रियाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.3

आ.4 जटायु के लिए श्रीराम द्वारा किया गया दाह, पिण्डप्रदान, उदकक्रिया

वक्ता / कथन: श्रीराम लक्ष्मण से; शेष वाल्मीकि का कथन उदाहरण नियम पुण्य

- उदाहरण दशरथ की भाँति जटायु भी मेरे लिए पूजनीय हैं — यह कहकर, लकड़ियाँ लाने को कहकर, अग्नि मथकर अपने लिए मरे गृध्रराज का दाह करूँगा — ऐसा श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा (रामा. अरण्य. 68.26–27)।
- पुण्य यज्ञशीलों, आहिताग्नियों, युद्ध से पीठ न फेरने वालों और भूदाताओं को जो गति मिलती है, उसे मेरी अनुमति से, मेरे द्वारा संस्कृत होकर प्राप्त करो — ऐसा श्रीराम ने कहा (रामा. अरण्य. 68.29–30)।
- उदाहरण धर्मात्मा श्रीराम ने दुःखी होकर, अपने बन्धु की भाँति जटायु को जलती चिता पर रखकर उनका दाह किया (रामा. अरण्य. 68.31)।
- उदाहरण लक्ष्मण के साथ वन में जाकर, हरे दर्भ बिछी भूमि पर कुछ अन्य द्रव्यों से पिण्ड बनाकर पक्षी को अर्पित किए (रामा. अरण्य. 68.32–33)।
- नियम पुण्य मृत मनुष्य के स्वर्गगमन के लिए द्विज जिन पितृसम्बन्धी मन्त्रों का उच्चारण करते हैं, उनका श्रीराम ने जप किया (रामा. अरण्य. 68.34)।
- उदाहरण नियम तत्पश्चात् दोनों राजकुमारों ने गोदावरी जाकर, स्नान करके, शास्त्रोक्त विधि से गृध्रराज को उदक दिया (रामा. अरण्य. 68.35–36)।
- पुण्य दुष्कर कीर्तिकर कर्म करके युद्ध में गिरे, महर्षि-तुल्य श्रीराम द्वारा संस्कृत जटायु ने पुण्यमय शुभ गति पाई (रामा. अरण्य. 68.37)।

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 26 उदाहरण वा.रा. 3.68.26

राजा दशरथः श्रीमान् यथा मम महायशाः ।
पूजनीयश्च मान्यश्च तथायं पतगेश्वरः ॥

↩ वापस: ↩ आ.4

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 27 उदाहरण वा.रा. 3.68.27

सौमित्रे हर काष्ठानि निर्मथिष्यामि पावकम् ।
गृध्रराजं दिधक्ष्यामि मत्कृते निधनं गतम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.4

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 29 पुण्य वा.रा. 3.68.29

या गतिर्यज्ञशीलानामाहिताग्नेश्च या गतिः ।
अपरावर्तिनां या च या च भूमिप्रदायिनाम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.4

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 30 पुण्य वा.रा. 3.68.30

मया त्वं समनुज्ञातो गच्छ लोकाननुत्तमान् ।
गृध्रराज महासत्त्व संस्कृतश्च मया व्रज ॥

↩ वापस: ↩ आ.4

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 31 उदाहरण वा.रा. 3.68.31

एवमुक्त्वा चितां दीप्तामारोप्य पतगेश्वरम् ।
ददाह रामो धर्मात्मा स्वबन्धुमिव दुःखितः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.4 ↩ सूची.69

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 32 उदाहरण वा.रा. 3.68.32

रामोऽथ सहसौमित्रिर्वनं गत्वा स वीर्यवान् ।
स्थूलान् हत्वा महारोहीननुतस्तार तं द्विजम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.4

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 33 उदाहरण वा.रा. 3.68.33

रोहिमांसानि चोद्धृत्य पेशीकृत्वा महायशाः।
शकुनाय ददौ रामो रम्ये हरितशाद्वले ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.4 ↩ सूची.69

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 34 नियम पुण्य वा.रा. 3.68.34

यत् तत् प्रेतस्य मर्त्यस्य कथयन्ति द्विजातयः।
तत् स्वर्गगमनं पित्र्यं तस्य रामो जजाप ह ॥

↩ वापस: ↩ आ.4

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 35 उदाहरण नियम वा.रा. 3.68.35

ततो गोदावरीं गत्वा नदीं नरवरात्मजौ।
उदकं चक्रतुस्तस्मै गृध्रराजाय तावुभौ ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.4 ↩ सूची.69

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 36 उदाहरण नियम वा.रा. 3.68.36

शास्त्रदृष्टेन विधिना जलं गृध्राय राघवौ।
स्नात्वा तौ गृध्रराजाय उदकं चक्रतुस्तदा ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.4 ↩ सूची.69

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 68 › श्लोक 37 पुण्य वा.रा. 3.68.37

स गृध्रराजः कृतवान् यशस्करं
सुदुष्करं कर्म रणे निपातितः।
महर्षिकल्पेन च संस्कृतस्तदा
जगाम पुण्यां गतिमात्मनः शुभाम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ आ.4

आ.5 स्वर्गस्थ माताओं के लिए श्रीराम द्वारा किए गए दान

वक्ता / कथन: वाल्मीकि महर्षि (कथन) उदाहरण पुण्य

- उदाहरण बहुत समय के बाद कौसल्या पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर कालधर्म को प्राप्त हुईं; सुमित्रा और कैकेयी भी उनका अनुसरण करके, अनेक धर्मकार्य करके स्वर्ग में दशरथ से मिलीं (रामा. उत्तर. 99.15–17)।
- उदाहरण राम ने अपनी माताओं के लिए किसी में भेद किए बिना, समय-समय पर (काले काले) तपस्वी ब्राह्मणों को महादान दिए (रामा. उत्तर. 99.18)।
- उदाहरण पुण्य धर्मात्मा राम ने पितरों और देवताओं की वृद्धि करते हुए पित्र्य (पितृसम्बन्धी) ब्रह्मरत्न और करने में अत्यन्त कठिन यज्ञ किए (रामा. उत्तर. 99.19)।

श्रीमद्रामायण › उत्तरकाण्ड › सर्ग 99 › श्लोक 15 उदाहरण वा.रा. 7.99.15

अथ दीर्घस्य कालस्य राममाता यशस्विनी।
पुत्रपौत्रैः परिवृता कालधर्ममुपागमत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.5

श्रीमद्रामायण › उत्तरकाण्ड › सर्ग 99 › श्लोक 16 उदाहरण वा.रा. 7.99.16

अन्वियाय सुमित्रा च कैकेयी च यशस्विनी।
धर्मं कृत्वा बहुविधं त्रिदेवे पर्यवस्थिता ॥

↩ वापस: ↩ आ.5

श्रीमद्रामायण › उत्तरकाण्ड › सर्ग 99 › श्लोक 17 उदाहरण वा.रा. 7.99.17

सर्वाः प्रमुदिताः स्वर्गे राज्ञा दशरथेन च ।
समागता महाभागाः सर्वधर्मं च लेभिरे ॥

↩ वापस: ↩ आ.5

श्रीमद्रामायण › उत्तरकाण्ड › सर्ग 99 › श्लोक 18 उदाहरण वा.रा. 7.99.18

तासां रामो महादानं काले काले प्रयच्छति ।
मातृणामविशेषेण ब्राह्मणेषु तपस्विषु ॥

↩ वापस: ↩ आ.5

श्रीमद्रामायण › उत्तरकाण्ड › सर्ग 99 › श्लोक 19 उदाहरण पुण्य वा.रा. 7.99.19

पित्र्याणि ब्रह्मरत्नानि यज्ञान् परमदुस्तरान् ।
चकार रामो धर्मात्मा पितॄन् देवान् विवर्धयन् ॥

↩ वापस: ↩ आ.5

आ.6 सुग्रीव और अंगद द्वारा वाली का राजोचित और्ध्वदेहिक

वक्ता / कथन: लक्ष्मण, श्रीराम और सुग्रीव के वचन; शेष वाल्मीकि का कथन उदाहरण नियम

- नियम लक्ष्मण ने सुग्रीव से कहा कि तारा और अंगद के साथ मिलकर तुरंत वाली का प्रेतकार्य और दाह करो, और सूखी लकड़ियाँ और दिव्य चंदन मँगवाओ (रामा. किष्कि. 25.13–14)।
- उदाहरण पालकी देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा, 'वाली को शीघ्र ले जाओ, प्रेतकार्य करवाओ' (रामा. किष्कि. 25.27)।
- उदाहरण नियम आभूषणों, मालाओं और वस्त्रों से सजाए गए वाली को पालकी में रखकर सुग्रीव ने आज्ञा दी कि बड़े भाई का और्ध्वदेहिक उचित रीति से (अनुकूलतः), पृथ्वी पर राजाओं के लिए दिखने वाली समृद्धि की विशेषताओं के साथ किया जाए (रामा. किष्कि. 25.29–30; 25.32)।
- उदाहरण तार आदि ने उसी स्तर पर तुरंत वाली का और्ध्वदेहिक किया; वानरों ने चिता सजाई (रामा. किष्कि. 25.33; 25.38)।
- उदाहरण नियम अंगद ने रोते हुए सुग्रीव के साथ पिता को चिता पर रखा, विधिवत अग्नि दी और पिता की अपसव्य परिक्रमा की (रामा. किष्कि. 25.49–50)।
- उदाहरण नियम विधिवत दाह के बाद सब पवित्र नदी पर गए, अंगद को आगे रखकर, सुग्रीव और तारा के साथ वाली को जल दिया (रामा. किष्कि. 25.51–52)।
- उदाहरण दीन सुग्रीव के साथ स्वयं भी दीन होकर, उसके दुःख को समान रूप से बाँटते हुए श्रीराम ने प्रेतकार्य करवाए (रामा. किष्कि. 25.53)।

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 13 नियम वा.रा. 4.25.13

कुरु त्वमस्य सुग्रीव प्रेतकार्यमनन्तरम् ।
ताराङ्गदाभ्यां सहितो वालिनो दहनं प्रति ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 14 नियम वा.रा. 4.25.14

समाज्ञापय काष्ठानि शुष्काणि च बहूनि च ।
चन्दनानि च दिव्यानि वालिसंस्कारकारणात् ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 27 उदाहरण वा.रा. 4.25.27

ईदृशीं शिबिकां दृष्ट्वा रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ।
क्षिप्रं विनीयतां वाली प्रेतकार्यं विधीयताम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 29 उदाहरण नियम वा.रा. 4.25.29

आरोप्य शिबिकां चैव वालिनं गतजीवितम् ।
अलंकारैश्च विविधैर्माल्यैर्वस्त्रैश्च भूषितम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 30 उदाहरण नियम वा.रा. 4.25.30

आज्ञापयत् तदा राजा सुग्रीवः प्लवगेश्वरः ।
और्ध्वदेहिकमार्यस्य क्रियतामनुकूलतः ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 32 उदाहरण नियम वा.रा. 4.25.32

राज्ञामृद्धिविशेषा हि दृश्यन्ते भुवि यादृशाः ।
तादृशैरिह कुर्वन्तु वानरा भर्तृसत्क्रियाम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 33 उदाहरण वा.रा. 4.25.33

तादृशं वालिनः क्षिप्रं प्राकुर्वन्नौर्ध्वदेहिकम् ।
अङ्गदं परिरभ्याशु तारप्रभृतयस्तदा ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 38 उदाहरण वा.रा. 4.25.38

चितां चक्रुः सुबहवो वानरा वनचारिणः ।
अवरोप्य ततः स्कन्धाच्छिबिकां वानरोत्तमाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 49 उदाहरण नियम वा.रा. 4.25.49

सुग्रीवेण ततः सार्धं सोऽङ्गदः पितरं रुदन् ।
चितामारोपयामास शोकेनाभिप्लुतेन्द्रियः ॥

↩ वापस: ↩ आ.6 ↩ सूची.73

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 50 उदाहरण नियम वा.रा. 4.25.50

ततोऽग्निं विधिवद् दत्त्वा सोऽपसव्यं चकार ह ।
पितरं दीर्घमध्वानं प्रस्थितं व्याकुलेन्द्रियः ॥

↩ वापस: ↩ आ.6 ↩ सूची.73

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 51 उदाहरण नियम वा.रा. 4.25.51

संस्कृत्य वालिनं तं तु विधिवत् प्लवगर्षभाः ।
आजग्मुरुदकं कर्तुं नदीं शुभजलां शिवाम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 52 उदाहरण नियम वा.रा. 4.25.52

ततस्ते सहितास्तत्र ह्यङ्गदं स्थाप्य चाग्रतः ।
सुग्रीवतारासहिताः सिषिचुर्वालिने जलम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.6 ↩ सूची.73

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 25 › श्लोक 53 उदाहरण वा.रा. 4.25.53

सुग्रीवेणैव दीनेन दीनो भूत्वा महाबलः ।
समानशोकः काकुत्स्थः प्रेतकार्याण्यकारयत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.6

आ.7 वैर मृत्यु के साथ समाप्त होते हैं — श्रीराम की आज्ञा से विभीषण द्वारा रावण का राजोचित दाह-संस्कार (पितृमेध) और तिलोदक

वक्ता / कथन: वाल्मीकि महर्षि (कथन) उदाहरण नियम पुण्य

- उदाहरण श्रीराम ने विभीषण से कहा — "अपने भाई का संस्कार करो, स्त्रियों को सांत्वना दो" (रामा. युद्ध. 111.92).
- उदाहरण विभीषण ने उत्तर दिया कि धर्मव्रत को त्यागने वाले, क्रूर, असत्यवादी, परस्त्री को छूने वाले, भाई के रूप में शत्रु रावण का संस्कार करने के लिए मैं योग्य नहीं हूँ, और वह पूजा के योग्य नहीं है (रामा. युद्ध. 111.93–96).
- नियम तब श्रीराम ने कहा — यह अधर्म और असत्य से युक्त होने पर भी तेजस्वी, बलवान और युद्धों में शूर था; वैर मृत्यु के साथ समाप्त होते हैं, हमारा प्रयोजन सिद्ध हो गया; इसका संस्कार करो, यह जैसे तुम्हारा है वैसे ही मेरा भी है (रामा. युद्ध. 111.97–101).
- नियम पुण्य श्रीराम ने कहा — यह तुम्हारे हाथों से धर्मानुसार शीघ्र विधिपूर्वक संस्कार पाने का अधिकारी है; उससे तुम कीर्ति पाओगे; यह सुनकर विभीषण ने शीघ्रता की (रामा. युद्ध. 111.101–102).
- उदाहरण विभीषण ने युद्ध में मरे बड़े भाई रावण का संस्कार आरंभ किया; लंका में जाकर रावण का अग्निहोत्र, गाड़ियाँ, लकड़ियाँ, अग्नियाँ, याजक, चंदन की लकड़ियाँ, विविध अन्य लकड़ियाँ, अगरु, सुगंधित द्रव्य, मणि–मोती–मूँगे शीघ्र बाहर मँगवाए (रामा. युद्ध. 111.103–106).
- उदाहरण विभीषण ने माल्यवान के साथ मिलकर क्रिया की; आँसुओं से भरे मुखों वाले द्विजों ने रेशमी वस्त्र धारण किए राक्षसराज रावण को दिव्य स्वर्ण-पालकी में रखा; विविध वाद्यघोषों और स्तुति करने वालों से उनका सम्मान हुआ; ध्वजों और फूलों से सजी उस पालकी को, विभीषण के आगे रहते, उठाकर, लकड़ियाँ लेकर सब दक्षिणाभिमुख चले (रामा. युद्ध. 111.107–110).
- उदाहरण नियम अध्वर्युओं द्वारा लाई गई प्रज्वलित अग्नियाँ शव के आगे चलीं; अंतःपुर की स्त्रियाँ रोती हुई पीछे आईं; रावण को पवित्र स्थान पर रखा गया (रामा. युद्ध. 111.110–112).
- उदाहरण नियम चंदन की लकड़ियों, पद्मक, उशीर और चंदन से ब्राह्म विधि से चिता सजाकर, रांकव आस्तरण बिछाकर, राक्षसराज का उत्तम पितृमेध किया; चिता के आग्नेय कोण में वेदी बनाकर अग्नि को यथास्थान रखा (रामा. युद्ध. 111.113–114).
- उदाहरण नियम पृषदाज्य (दही मिला घी) से भरा स्रुवा कंधों पर रखा; पैरों के पास शकट, जाँघों के पास उलूखल, सभी दारुपात्र, अरणि–उत्तरारणि और मूसल यथास्थान रखे (रामा. युद्ध. 111.115–116).
- उदाहरण नियम शास्त्र में कही गई, महर्षियों द्वारा विहित पद्धति से (अन्य द्रव्य से) घी से भिगोई परिस्तरणिका राजा पर रखी; दुःख से रावण को गंध-माल्य और विविध वस्त्रों से अलंकृत करके, आँसुओं के साथ लाजा (खील) बिखेरे (रामा. युद्ध. 111.117–119).
- उदाहरण नियम विभीषण ने विधिपूर्वक चिता को अग्नि दी; फिर स्नान करके, गीले वस्त्र में ही दर्भ मिले तिलों को जल में मिलाकर विधिपूर्वक अर्पित किया (तिलोदक) (रामा. युद्ध. 111.120–121).
- उदाहरण उसके बाद अंतःपुर की स्त्रियों को बार-बार सांत्वना देकर नगर भेजकर, विभीषण विनयपूर्वक राम के पास आकर खड़े हो गए (रामा. युद्ध. 111.121–122).

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 92 उदाहरण वा.रा. 6.111.92

संस्कारः क्रियतां भ्रातुः स्त्रीगणः परिसान्त्व्यताम्।
तमुवाच ततो धीमान् विभीषण इदं वचः॥

↩ वापस: ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 93 उदाहरण वा.रा. 6.111.93

विमृश्य बुद्ध्या प्रश्रितं धर्मार्थसहितं हितम्।
त्यक्तधर्मव्रतं क्रूरं नृशंसमनृतं तथा॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 94 उदाहरण वा.रा. 6.111.94

नाहमर्हामि संस्कर्तुं परदाराभिमर्शनम्।
भ्रातृरूपो हि मे शत्रुरेष सर्वाहिते रतः॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 95 उदाहरण वा.रा. 6.111.95

रावणो नार्हते पूजां पूज्योऽपि गुरुगौरवात्।
नृशंस इति मां राम वक्ष्यन्ति मनुजा भुवि॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 96 उदाहरण वा.रा. 6.111.96

श्रुत्वा तस्यागुणान् सर्वे वक्ष्यन्ति सुकृतं पुनः।
तच्छ्रुत्वा परमप्रीतो रामो धर्मभृतां वरः॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 97 नियम वा.रा. 6.111.97

विभीषणमुवाचेदं वाक्यज्ञं वाक्यकोविदः।
तवापि मे प्रियं कार्यं त्वत्प्रभावान्मया जितम्॥

↩ वापस: ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 98 नियम वा.रा. 6.111.98

अवश्यं तु क्षमं वाच्यो मया त्वं राक्षसेश्वर।
अधर्मानृतसंयुक्तः कामं त्वेष निशाचरः॥

↩ वापस: ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 99 नियम वा.रा. 6.111.99

तेजस्वी बलवाञ्छूरः संग्रामेषु च नित्यशः।
शतक्रतुमुखैर्देवैः श्रूयते न पराजितः॥

↩ वापस: ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 100 नियम वा.रा. 6.111.100

महात्मा बलसम्पन्नो रावणो लोकरावणः।
मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नः प्रयोजनम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 101 नियम पुण्य वा.रा. 6.111.101

क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।
त्वत्सकाशान्महाबाहो संस्कारं विधिपूर्वकम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7 ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 102 नियम पुण्य वा.रा. 6.111.102

क्षिप्रमर्हति धर्मेण त्वं यशोभाग् भविष्यसि।
राघवस्य वचः श्रुत्वा त्वरमाणो विभीषणः॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 103 उदाहरण वा.रा. 6.111.103

संस्कारयितुमारेभे भ्रातरं रावणं हतम्।
स प्रविश्य पुरीं लङ्कां राक्षसेन्द्रो विभीषणः॥

↩ वापस: ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 104 उदाहरण वा.रा. 6.111.104

रावणस्याग्निहोत्रं तु निर्यापयति सत्वरम्।
शकटान् दारुरूपाणि अग्नीन् वै याजकांस्तथा॥

↩ वापस: ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 105 उदाहरण वा.रा. 6.111.105

तथा चन्दनकाष्ठानि काष्ठानि विविधानि च।
अगरूणि सुगन्धीनि गन्धांश्च सुरभींस्तथा॥

↩ वापस: ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 106 उदाहरण वा.रा. 6.111.106

मणिमुक्ताप्रवालानि निर्यापयति राक्षसः।
आजगाम मुहूर्तेन राक्षसैः परिवारितः॥

↩ वापस: ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 107 उदाहरण वा.रा. 6.111.107

ततो माल्यवता सार्धं क्रियामेव चकार सः।
सौवर्णीं शिबिकां दिव्यामारोप्य क्षौमवाससम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 108 उदाहरण वा.रा. 6.111.108

रावणं राक्षसाधीशमश्रुवर्णमुखा द्विजाः।
तूर्यघोषैश्च विविधैः स्तुवद्भिश्चाभिनन्दितम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 109 उदाहरण वा.रा. 6.111.109

पताकाभिश्च चित्राभिः सुमनोभिश्च चित्रिताम्।
उत्क्षिप्य शिबिकां तां तु विभीषणपुरोगमाः॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 110 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.110

दक्षिणाभिमुखाः सर्वे गृह्य काष्ठानि भेजिरे।
अग्नयो दीप्यमानास्ते तदाध्वर्युसमीरिताः॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7 ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 111 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.111

शरणाभिगताः सर्वे पुरस्तात् तस्य ते ययुः।
अन्तःपुराणि सर्वाणि रुदमानानि सत्वरम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 112 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.112

पृष्ठतोऽनुययुस्तानि प्लवमानानि सर्वतः।
रावणं प्रयते देशे स्थाप्य ते भृशदुःखिताः॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 113 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.113

चितां चन्दनकाष्ठैश्च पद्मकोशीरचन्दनैः।
ब्राह्म्या संवर्तयामासू राङ्कवास्तरणावृताम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 114 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.114

प्रचक्रू राक्षसेन्द्रस्य पितृमेधमनुत्तमम्।
वेदिं च दक्षिणाप्राचीं यथास्थानं च पावकम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 115 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.115

पृषदाज्येन सम्पूर्णं स्रुवं स्कन्धे प्रचिक्षिपुः।
पादयोः शकटं प्रापुरूर्वोश्चोलूखलं तदा॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 116 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.116

दारुपात्राणि सर्वाणि अरणिं चोत्तरारणिम् ।
दत्त्वा तु मुसलं चान्यं यथास्थानं विचक्रमुः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 117 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.117

शास्त्रदृष्टेन विधिना महर्षिविहितेन च ।
तत्र मेध्यं पशुं हत्वा राक्षसेन्द्रस्य राक्षसाः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 118 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.118

परिस्तरणिकां राज्ञो घृताक्तां समवेशयन् ।
गन्धैर्माल्यैरलंकृत्य रावणं दीनमानसाः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 119 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.119

विभीषणसहायास्ते वस्त्रैश्च विविधैरपि ।
लाजैरवकिरन्ति स्म बाष्पपूर्णमुखास्तथा ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 120 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.120

स ददौ पावकं तस्य विधियुक्तं विभीषणः ।
स्नात्वा चैवार्द्रवस्त्रेण तिलान् दर्भविमिश्रितान् ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7 ↩ सूची.74

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 121 उदाहरण नियम वा.रा. 6.111.121

उदकेन च सम्मिश्रान् प्रदाय विधिपूर्वकम् ।
ताः स्त्रियोऽनुनयामास सान्त्वयित्वा पुनः पुनः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.7 ↩ आ.7 ↩ सूची.74

श्रीमद्रामायण › युद्धकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 122 उदाहरण वा.रा. 6.111.122

गम्यतामिति ताः सर्वा विविशुर्नगरं ततः ।
प्रविष्टासु पुरीं स्त्रीषु राक्षसेन्द्रो विभीषणः ।
रामपार्श्वमुपागम्य समतिष्ठद् विनीतवत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.7

आ.8 सगरपुत्रों की गंगाजल से उदकक्रिया — पीढ़ी-दर-पीढ़ी का प्रयत्न

वक्ता / कथन: विश्वामित्र श्रीराम से (गरुड अंशुमान से, भगीरथ ब्रह्मा से, ब्रह्मा भगीरथ से) उदाहरण नियम पुण्य

- उदाहरण कपिल द्वारा भस्म किए गए अपने चाचाओं (सगरपुत्रों) की जलक्रिया करने की अंशुमान ने इच्छा की; परंतु पास में कहीं भी जलाशय दिखाई नहीं दिया (रामा. बाल. 41.15).
- नियम गरुड ने कहा कि कपिल द्वारा दग्ध इन लोगों को लौकिक (सामान्य) जल देना उचित नहीं है, हिमवान की बड़ी पुत्री गंगा में ही उनकी सलिलक्रिया करनी चाहिए (रामा. बाल. 41.18–19).
- पुण्य गरुड ने कहा कि लोकपावनी गंगा इन भस्मराशियों को डुबो दे तो उस जल से भीगी भस्म के कारण साठ हज़ार सगरपुत्र स्वर्ग जाएँगे (रामा. बाल. 41.20).
- उदाहरण गंगा को पृथ्वी पर कैसे उतारें, उनकी जलक्रिया कैसे करें, उन्हें कैसे तारें — इस चिंता में दिलीप मग्न हो गए (रामा. बाल. 42.6).
- उदाहरण पुण्य तपस्या से प्रसन्न ब्रह्मा से भगीरथ ने वर माँगा — सभी सगरपुत्र मुझसे जल प्राप्त करें, गंगाजल से उनकी भस्म भीगे और मेरे सभी प्रपितामह शाश्वत स्वर्ग पाएँ (रामा. बाल. 42.18–19).
- पुण्य ब्रह्मा ने कहा कि गंगाजल से भस्म भीगने के बाद सगर के साठ हज़ार पुत्र तरकर देवताओं की भाँति स्वर्ग पहुँच गए, और जब तक लोक में समुद्र का जल रहेगा तब तक वे स्वर्ग में रहेंगे (रामा. बाल. 44.2–4).
- उदाहरण ब्रह्मा ने कहा कि यह मनोरथ भगीरथ के पूर्वज नहीं पा सके, अंशुमान प्रतिज्ञा पूरी नहीं कर सके, और भगीरथ के पिता दिलीप भी गंगा को नहीं ला सके (रामा. बाल. 44.8–9; 44.11).
- नियम ब्रह्मा ने भगीरथ को आदेश दिया कि यहीं सभी पितामहों की सलिलक्रिया करके प्रतिज्ञा पूरी करो (रामा. बाल. 44.7; 44.15).
- उदाहरण राजर्षि भगीरथ ने सगरपुत्रों को क्रम से, यथान्याय उत्तम उदक अर्पित करके, उदकक्रिया पूर्ण कर शुचि होकर अपने नगर लौटकर राज्य का पालन किया (रामा. बाल. 44.17–18).

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 41 › श्लोक 15 उदाहरण — वा.रा. 1.41.15

स तेषां राजपुत्राणां कर्तुकामो जलक्रियाम् ।
स जलार्थी महातेजा न चापश्यज्जलाशयम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 41 › श्लोक 18 नियम — वा.रा. 1.41.18

कपिलेनाप्रमेयेण दग्धा हीमे महाबलाः ।
सलिलं नार्हसि प्राज्ञ दातुमेषां हि लौकिकम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 41 › श्लोक 19 नियम — वा.रा. 1.41.19

गङ्गा हिमवतो ज्येष्ठा दुहिता पुरुषर्षभ ।
तस्यां कुरु महाबाहो पितॄणां सलिलक्रियाम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.8 ↩ तीर्थ.39

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 41 › श्लोक 20 पुण्य — वा.रा. 1.41.20

भस्मराशीकृतानेतान् प्लावयेल्लोकपावनी ।
तया क्लिन्नमिदं भस्म गङ्गया लोककान्तया ।
षष्टिं पुत्रसहस्राणि स्वर्गलोकं गमिष्यति ॥

↩ वापस: ↩ आ.8 ↩ तीर्थ.39

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 42 › श्लोक 6 उदाहरण — वा.रा. 1.42.6

कथं गङ्गावतरणं कथं तेषां जलक्रिया ।
तारयेयं कथं चैतानिति चिन्तापरोऽभवत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 42 › श्लोक 18 उदाहरण पुण्य — वा.रा. 1.42.18

यदि मे भगवान् प्रीतो यद्यस्ति तपसः फलम् ।
सगरस्यात्मजाः सर्वे मत्तः सलिलमाप्नुयुः ॥

↩ वापस: ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 42 › श्लोक 19 उदाहरण पुण्य वा.रा. 1.42.19

गङ्गायाः सलिलक्लिन्ने भस्मन्येषां महात्मनाम् ।
स्वर्गं गच्छेयुरत्यन्तं सर्वे च प्रपितामहाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 2 पुण्य वा.रा. 1.44.2

भस्मन्यथाप्लुते राम गङ्गायाः सलिलेन वै ।
सर्वलोकप्रभुर्ब्रह्मा राजानमिदमब्रवीत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 3 पुण्य वा.रा. 1.44.3

तारिता नरशार्दूल दिवं याताश्च देववत् ।
षष्टिः पुत्रसहस्राणि सगरस्य महात्मनः ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 4 पुण्य वा.रा. 1.44.4

सागरस्य जलं लोके यावत् स्थास्यति पार्थिव ।
सगरस्यात्मजाः सर्वे दिवि स्थास्यन्ति देववत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 7 नियम वा.रा. 1.44.7

पितामहानां सर्वेषां त्वमत्र मनुजाधिप ।
कुरुष्व सलिलं राजन् प्रतिज्ञामपवर्जय ॥

↩ वापस: ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 8 उदाहरण वा.रा. 1.44.8

पूर्वकेण हि ते राजंस्तेनातियशसा तदा ।
धर्मिणां प्रवरेणाथ नैष प्राप्तो मनोरथः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 9 उदाहरण वा.रा. 1.44.9

तथैवांशुमता वत्स लोकेऽप्रतिमतेजसा ।
गङ्गां प्रार्थयता नेतुं प्रतिज्ञा नापवर्जिता ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 11 उदाहरण वा.रा. 1.44.11

दिलीपेन महाभाग तव पित्रातितेजसा ।
पुनर्न शकिता नेतुं गङ्गां प्रार्थयतानघ ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 15 नियम वा.रा. 1.44.15

पितामहानां सर्वेषां कुरुष्व सलिलक्रियाम् ।
स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि स्वं लोकं गम्यतां नृप ॥

↩ वापस: ↩ आ.8

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 17 उदाहरण वा.रा. 1.44.17

भगीरथस्तु राजर्षिः कृत्वा सलिलमुत्तमम् ।
यथाक्रमं यथान्यायं सागराणां महायशाः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.8 ↩ सूची.64

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 44 › श्लोक 18 उदाहरण वा.रा. 1.44.18

कृतोदकः शुची राजा स्वपुरं प्रविवेश ह ।
समृद्धार्थो नरश्रेष्ठ स्वराज्यं प्रशशास ह ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.8 ↩ सूची.64

आ.9 सगरपुत्रों की सद्गति के लिए तीन पीढ़ियों का प्रयत्न – भगीरथ

वक्ता / कथन: लोमश युधिष्ठिर से उदाहरण पुण्य

- उदाहरण कपिल के वर देने पर अंशुमान ने पहले यज्ञ का अश्व, और दूसरा पितरों को पवित्र करने के लिए जल माँगा (अरण्य. 107.27).
- उदाहरण दिलीप ने पितरों के महानिधन के बारे में सुनकर दुःख से संतप्त होकर उनकी गति के विषय में सोचा; गंगावतरण के लिए यथाशक्ति महाप्रयत्न करने पर भी सफल नहीं हो सके (अरण्य. 107.41–42).
- उदाहरण भगीरथ ने कपिल के कारण अपने पितरों के घोर निधन और उन्हें स्वर्ग न मिलने के बारे में सुनकर, राज्य मंत्री को सौंपकर, व्यथित हृदय से तपस्या के लिए हिमवान को प्रस्थान किया (अरण्य. 108.2–3).
- उदाहरण वहाँ फल, मूल और जल को ही आहार बनाकर हज़ार वर्ष घोर तप किया (अरण्य. 108.13).
- उदाहरण प्रकट हुई गंगा से प्रार्थना की — 'सगरपुत्र मेरे पितरों को स्वर्ग पहुँचाओ; उन्हीं के लिए मैं तुमसे याचना कर रहा हूँ' (अरण्य. 108.20).
- उदाहरण गंगा ने कहा कि पितरों के हित के लिए शंकर तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे; तब भगीरथ ने शंकर की आराधना करके, पितरों के स्वर्गवास के उद्देश्य से गंगा-धारण का वर प्राप्त किया (अरण्य. 108.25; 108.28).
- उदाहरण शिव ने कहा — 'तुम्हारे पितरों के पावन के लिए स्वर्ग से गिरती गंगा को मैं धारण करूँगा' (अरण्य. 109.5).
- उदाहरण पुण्य गंगा के साथ समुद्र तक पहुँचकर उसे भरकर, गंगा को पुत्री मानकर, मनोरथ पूर्ण होने पर उन्होंने वहाँ पितरों को उदक दिया (अरण्य. 109.18–19).

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 107, श्लोक 27 उदाहरण KK 3-6-107-27

स वव्रे तुरगं तत्र प्रथमं यज्ञकारणात् ।
द्वितीयमुदकं वव्रे पितॄणां पावनेच्छया ॥

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 107, श्लोक 41 उदाहरण KK 3-6-107-41

दिलीपस्तु ततः श्रुत्वा पितॄणां निधनं महत् ।
पर्यतप्यत दुःखेन तेषां गतिमचिन्तयत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 107, श्लोक 42 उदाहरण KK 3-6-107-42

गङ्गावतरणे यत्नं सुमहञ्चाकरोन्नृपः ।
न चावतारयामास चेष्टमानो यथाबलम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 108, श्लोक 2 उदाहरण KK 3-6-108-2

स शुश्राव महाबाहुः कपिलेन महात्मना ।
पितॄणां निधनं घोरमप्राप्तिं त्रिदिवस्य च ॥

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 108, श्लोक 3 उदाहरण KK 3-6-108-3

स राज्यं सचिवे न्यस्य हृदयेन विदूयता ।
जगाम हिमवत्पार्श्वं तपस्तप्तुं नरेश्वरः ॥

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 108, श्लोक 13 उदाहरण KK 3-6-108-13

स तु तत्र नरश्रेष्ठस्तपो घोरं समाश्रितः ।
फलमूलाम्बुसम्भक्षः सहस्रपरिवत्सरान् ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 108, श्लोक 20 उदाहरण KK 3-6-108-20

स्वर्गं नय महाभागे मत्पितॄन्सगरात्मजान् ।
तेषामर्थेऽभियाचामि त्वामहं वै महानदि ॥

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 108, श्लोक 25 उदाहरण KK 3-6-108-25

स करिष्यति ते कामं पितॄणां हितकाम्यया ।
तपसाऽऽराधितः शम्भुर्भगवाँल्लोकभावनः ॥

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 108, श्लोक 28 उदाहरण KK 3-6-108-28

अगृह्णाच्च वरं तस्माद्गङ्गाया धारणे नृप ।
स्वर्गे वासं समुद्दिश् पितॄणां स नरोत्तमः ॥

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 109, श्लोक 5 उदाहरण KK 3-6-109-5

पितॄणां पावनार्थं ते तामहं मनुजाधिप
पतमानां सरिच्छ्रेष्ठां धारयिष्ये त्रिविष्टपात्

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 109, श्लोक 18 उदाहरण पुण्य KK 3-6-109-18

समासाद्य समुद्रं च गङ्गया सहितो नृपः
पूरयामास वेगेन समुद्रं वरुणालयम्

↩ वापस: ↩ आ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 109, श्लोक 19 उदाहरण पुण्य KK 3-6-109-19

दुहितृत्वे च नृपतिर्गङ्गां समनुकल्पयत्
पितॄणां चोदकं तत्र ददौ पूर्णमनोरथः

↩ वापस: ↩ आ.9

आ.10 परशुराम द्वारा पिता जमदग्नि का प्रेतकार्य

वक्ता / कथन: अकृतव्रण युधिष्ठिर से उदाहरण

- उदाहरण पिता के वध से अत्यंत दुःखी होकर विलाप करने वाले परशुराम ने पिता के लिए करने योग्य सभी प्रेतकार्य किए (अरण्य. 118.5)।
- उदाहरण राम ने पिता का अग्नि में दाह किया (अग्निसंस्कार); और सभी क्षत्रियों के वध की प्रतिज्ञा की (अरण्य. 118.6)।

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 118, श्लोक 5 उदाहरण KK 3-6-118-5

लालप्यैवं सकुरुणं बहु नानाविधं नृप ।
प्रेतकार्याणि सर्वाणि पितुश्चक्रे महातपाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.10

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 118, श्लोक 6 उदाहरण KK 3-6-118-6

ददाह पितरं चाग्नौ रामः परपुरञ्जयः ।
प्रतिजज्ञे वधं चापि सर्वक्षत्रस्य भारत ॥

↩ वापस: ↩ आ.10

आ.11 गंगाद्वार में शन्तनु के लिए भीष्म द्वारा किया गया श्राद्ध

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (उदाहरण) (नियम) (पुण्य)

- उदाहरण पिता शन्तनु की मृत्यु के बाद उनका श्राद्ध करने के लिए भीष्म गंगाद्वार गए और श्राद्धकर्म आरम्भ किया; वहाँ माता गंगादेवी ने सहायता की (अनु. 130.11–12)।
- उदाहरण नियम वहाँ आए तपस्सिद्ध अनेक ऋषियों को बिठाकर, जलप्रदान से आरम्भ करके कार्य सम्पन्न किए, पूर्वकर्म शास्त्रोक्त रीति से पूरा करके पिण्ड-निर्वपण के लिए तैयार हुए (अनु. 130.13–14)।
- उदाहरण तब दर्भों की बिछावन को चीरकर आभूषण पहने एक बाहु ऊपर उठी; पिता स्वयं ग्रहण करने आए हैं — यह देखकर भीष्म अत्यन्त विस्मित हुए (अनु. 130.15–16)।
- नियम किन्तु शास्त्र का विचार करके — हाथ में पिण्ड देना वेदों में विहित नहीं, पितृदेवता मनुष्य से सीधे पिण्ड ग्रहण नहीं करते, पिण्ड को कुशों पर ही रखना चाहिए — ऐसा निश्चय किया (अनु. 130.17–18)।
- उदाहरण पिता का हाथ दिखाई देने पर भी उस पर ध्यान न देकर, शास्त्र-प्रमाण का स्मरण करके, सब कुछ दर्भों पर ही अर्पित किया; तब वह बाहु अदृश्य हो गई (अनु. 130.19–21)।
- पुण्य बाद में स्वप्न में पितृदेवताओं ने दर्शन देकर कहा कि धर्म में मोहित न होकर शास्त्र को प्रमाण मानने से हम प्रसन्न हुए हैं, और तुमने यह कार्य ठीक से आरम्भ किया है (अनु. 130.21–25)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 11 उदाहरण KK 13-1-130-11

पिता मम महातेजाः शतनुर्निधनं गतः।
तस्य दित्सुरहं श्राद्धं गङ्गाद्वारमुपागमम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 12 उदाहरण KK 13-1-130-12

तत्रागम्य पितुः पुत्र श्राद्धकर्म समारभम्।
मातो मे जाह्नवी चात्र साहाय्यमकरोत्तदा॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 13 उदाहरण नियम KK 13-1-130-13

तत्रागतांस्तपस्सिद्धानुपवेश्य बहूनृषीन्।
तोयप्रदानात्प्रभृति कार्याण्यहमथारभम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 14 उदाहरण नियम KK 13-1-130-14

तत्समाप्य यथोद्दिष्टं पूर्वकर्म समाहितः।
दातुं निर्वपणं सम्यग्यथावदहमारभम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 15 उदाहरण KK 13-1-130-15

ततस्तं दर्भविन्यासं भित्त्वा सुरुचिराङ्गदः।
प्रलम्बाभरणो बाहुरुदतिष्ठद्विशाम्पते॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 16 उदाहरण KK 13-1-130-16

मुहूर्तमपि तं दृष्ट्वा परं विस्मयमागमम्।
प्रतिग्रहीता साक्षान्मे पितेति भरतर्षभ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 17 नियम KK 13-1-130-17

ततो मे पुनरेवासीत्सञ्ज्ञा सञ्चिन्त्य शास्त्रतः ।
नायं वेदेषु विहितो विधिर्हस्त इति प्रभो ।
पिण्डो देयो नरेणेह ततो मतिरभून्मम ॥

वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 18 नियम KK 13-1-130-18

साक्षान्नेह मनुष्यस्य पिण्डं हि पितरः क्वचित् ।
गृह्णन्ति विहितं चेत्थं पिण्डो देयः कुशेष्विति ॥

वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 19 उदाहरण KK 13-1-130-19

ततोऽहं तदनादृत्य पितुर्हस्तनिदर्शनम् ।
शास्त्रप्रामाण्यसूक्ष्मं तु विधिं पिण्डस्य संस्मरन् ॥

वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 20 उदाहरण KK 13-1-130-20

ततो दर्भेषु तत्सर्वमददं भरतर्षभ ।
शास्त्रमार्गानुसारेण तद्विद्धि मनुजर्षभ ॥

वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 21 उदाहरण पुण्य KK 13-1-130-21

ततः सोऽन्तर्हितो बाहुः पितुर्मम जनाधिप ।
ततो मां दर्शयामासुः स्वप्नान्ते पितरस्तथा ॥

वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11 ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 22 पुण्य KK 13-1-130-22

प्रीयमाणास्तु मामूचुः प्रीताः स्म भरतर्षभ ।
विज्ञानेन तवानेन यन्न मुह्यसि धर्मतः ॥

वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 23 पुण्य KK 13-1-130-23

त्वया हि कुर्वता शास्त्रं प्रमाणमिह पार्थिव ।
आत्मा धर्मः श्रुतं वेदाः पितरश्चर्षिभिः सह ॥

वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 24 पुण्य KK 13-1-130-24

साक्षात्पितामहो ब्रह्मा गुरवोऽथ प्रजापतिः ।
प्रमाणमुपनीता वै स्थिताश्च न विचालिताः ॥

वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.11

आ.12 शतशृंग में पांडु राजा का प्रेतकर्म

वक्ता / कथन: वैशंपायन जनमेजय से; ऋषि कुरुओं से उदाहरण नियम

- उदाहरण नियम प्रेतकर्म में निपुण पुरोहित ने स्नान करके सोने के टुकड़े, घी, तिल, दही, चावल, उदककुंभ और कुल्हाड़ी मँगवाकर अश्वमेधाग्नि को यथान्याय लाया (आदि. 134.106–107)।
- उदाहरण काश्यप ने पांडु की प्रेतक्रिया करवाई, और पुरोहित के बताए अनुसार युधिष्ठिर ने उस अग्नि से पिता का दाह किया; दुःख से वह भूमि पर गिर पड़ा (आदि. 134.108–109)।
- उदाहरण नियम नया वस्त्र पहनकर भाइयों के साथ पुरोहित के कहे अनुसार युधिष्ठिर ने उदक दिया; शतशृंग-निवासी तापसों और चारणों ने ऋषियों के साथ मिलकर उन पूज्य के लिए करने योग्य कृत्य विधिवत किए (आदि. 134.112–113)।
- उदाहरण ऋषियों ने कुरुओं से कहा कि पांडु आज से सत्रहवें दिन (सत्रह दिन पहले) पितृलोक गए, और उन दोनों के शरीरों पर तथा माता सहित पुत्रों पर क्रियाओं द्वारा अनुग्रह करें (आदि. 135.40; 135.44)।
- उदाहरण नियम ऋषियों ने कहा कि प्रेतकार्य समाप्त होने के बाद धर्मज्ञ पांडु को पितृमेध प्राप्त होना चाहिए (आदि. 135.45)।

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 134, श्लोक 106 उदाहरण नियम KK 1-7-134-106

ततः पुरोहितः स्नात्वा प्रेतकर्मणि पारगः।
हिरण्यशकलानाज्यं तिलं दधि च तण्डुलान्॥

↩ वापस: ↩ आ.12

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 134, श्लोक 107 उदाहरण नियम KK 1-7-134-107

उदकुम्भांश्च परशुं समानीय तपस्विभिः।
अश्वमेधाग्निमाहृत्य यथान्यायं समन्ततः॥

↩ वापस: ↩ आ.12

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 134, श्लोक 108 उदाहरण KK 1-7-134-108

काश्यपः कारयामास पाण्डोः प्रेतस्य तां क्रियाम्।
पुरोहितोक्तविधिना पाण्डोः पुत्रो युधिष्ठिरः॥

↩ वापस: ↩ आ.12

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 134, श्लोक 109 उदाहरण KK 1-7-134-109

तेनाग्निनाऽदहत्पाण्डुं कृत्वा चापि क्रियास्तदा।
रुदञ्छोकाभिसन्तप्तः पपात भुवि पाण्डवः॥

↩ वापस: ↩ आ.12

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 134, श्लोक 112 उदाहरण नियम KK 1-7-134-112

अहताम्बरसंवीतो भ्रातृभिः सहितोऽनघः।
उदकं कृतवांस्तत्र पुरोहितमते स्थितः॥

↩ वापस: ↩ आ.12

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 134, श्लोक 113 उदाहरण नियम KK 1-7-134-113

अर्हतस्तस्य कृत्यानि शतशृङ्गनिवासिनः।
तापसा विधिवच्चक्रुश्चारणा ऋषिभिः सह॥

↩ वापस: ↩ आ.12

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 135, श्लोक 40 उदाहरण KK 1-7-135-40

वर्तमानः सतां वृत्ते पुत्रलाभमवाप च।
पितृलोकं गतः पाण्डुरितः सप्तदशेऽहनि॥

↩ वापस: ↩ आ.12

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 135, श्लोक 44 उदाहरण KK 1-7-135-44

इमे तयोः शरीरे द्वे पुत्राश्चेमे तयोर्वराः ।
क्रियाभिरनुगृह्यन्तां सह मात्रा परन्तपाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.12

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 135, श्लोक 45 उदाहरण नियम KK 1-7-135-45

प्रेतकार्ये निवृत्ते तु पितृमेधं महायशाः ।
लभतां सर्वधर्मज्ञः पाण्डुः कुरुकुलोद्वहः ॥

↩ वापस: ↩ आ.12

आ.13 हस्तिनापुर में पाण्डु का संस्कार, उदकक्रिया, श्राद्ध

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से (धृतराष्ट्र की आज्ञा) उदाहरण नियम

- उदाहरण पाण्डु और माद्री के लिए राजोचित रीति से समस्त प्रेतकार्य करवाने तथा उनके नाम पर माँगने वालों को उनकी इच्छा के अनुसार पशु, वस्त्र, रत्न और विविध धन दान करने को धृतराष्ट्र ने विदुर से कहा (आदि. 136.1–2)।
- उदाहरण विदुर ने भीष्म के साथ मिलकर पवित्र स्थान पर पाण्डु का संस्कार करवाया; और्ध्वदैहिक में सैकड़ों लोगों ने रत्न दान किए (आदि. 136.5; 136.11)।
- उदाहरण नियम याजकों और पुरोहितों ने अश्वमेध की अग्नि से वेदोक्त विधि से समन्त्रक क्रियाएँ कीं; प्रेतकर्म सम्पन्न करने के बाद घी लगाए हुए राजा को माद्री सहित चन्दन आदि सुगन्धित काष्ठों से विधिपूर्वक दाह किया (आदि. 136.23–24; 136.26)।
- उदाहरण भीष्म, विदुर, धृतराष्ट्र, पाण्डवों, कुरु-स्त्रियों और ज्ञातियों ने उदकक्रियाएँ कीं (आदि. 136.31–32)।
- उदाहरण पाण्डवों के साथ सारा नगर बारह रातें आनन्दरहित होकर, दुःख में बिताता रहा (आदि. 136.35)।
- उदाहरण नियम तत्पश्चात् विदुर, भीष्म, व्यास और धृतराष्ट्र ने बन्धुओं के साथ, पुरोहितों की सहायता से यथान्याय पाण्डु का स्वधामृतमय श्राद्ध किया; हज़ारों विप्रों को भोजन कराकर रत्न और श्रेष्ठ ग्राम दान किए (आदि. 137.1–2)।
- उदाहरण श्राद्ध समाप्त होने के बाद दुःख में डूबे लोगों को देखकर व्यास ने माता सत्यवती से बात की (आदि. 137.5)।

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 1 उदाहरण KK 1-7-136-1

पाण्डोर्विदुर सर्वाणि प्रेतकार्याणि कारय ।
राजवद्राजसिंहस्य माद्र्याश्चैव विशेषतः ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 2 उदाहरण KK 1-7-136-2

पशून्वासांसि रत्नानि धनानि विविधानि च ।
पाण्डोः प्रयच्छ माद्र्याश्च येभ्यो यावच्च वाञ्छितम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 5 उदाहरण KK 1-7-136-5

विदुरस्तं तथेत्युक्त्वा भीष्मेण सह भारत ।
पाण्डुं संस्कारयामास देशे परमपूजिते ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 11 उदाहरण KK 1-7-136-11

रत्नानि चाप्युपादाय बहूनि शतशो नराः ।
प्रददुः काङ्क्षमाणेभ्यः पाण्डोस्तस्यौर्ध्वदेहिके ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 23 उदाहरण नियम KK 1-7-136-23

हयमेधाग्निना सर्वे याजकाः सपुरोहिताः ।
वेदोक्तेन विधानेन क्रियांचक्रुः समन्त्रकम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 24 उदाहरण नियम KK 1-7-136-24

याजकैरभ्यनुज्ञाते प्रेतकर्मण्यनुष्ठिते ।
घृतावसिक्तं राजानं सह माद्र्या स्वलङ्कृतम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 26 उदाहरण नियम KK 1-7-136-26

हरिचन्दनकाष्ठैश्च हरिबेरैरुशीरकैः ।
अन्यैश्च विविधैर्गन्धैर्विधिना समदाहयन् ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 31 उदाहरण KK 1-7-136-31

ततो भीष्मोऽथ विदुरो राजा च सह पाण्डवैः ।
उदकं चक्रिरे तस्य सर्वाश्च कुरुयोषितः ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 32 उदाहरण KK 1-7-136-32

चुक्रुशुः पाण्डवाः सर्वे भीष्मः शान्तनवस्तथा ।
विदुरो ज्ञातयश्चैव चक्रुश्चाप्युदकक्रियाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 136, श्लोक 35 उदाहरण KK 1-7-136-35

तद्ननन्दमस्वस्थमाकुमारमहृष्टवत् ।
बभूव पाण्डवैः सार्धं नगरं द्वादश क्षपाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 137, श्लोक 1 उदाहरण नियम KK 1-7-137-1

ततः क्षत्ता च भीष्मश्च व्यासो राजा च बन्धुभिः ।
ददुः श्राद्धं तदा पाण्डोः स्वधामृतमयं तदा ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 137, श्लोक 2 उदाहरण नियम KK 1-7-137-2

पुरोहितसहायास्ते यथान्यायमकुर्वत ।
कुरूंश्च विप्रमुख्यांश्च भोजयित्वा सहस्रशः ।
रत्नौघान्द्विजमुख्येभ्यो दत्त्वा ग्रामवरांस्तथा ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 137, श्लोक 5 उदाहरण KK 1-7-137-5

श्राद्धावसाने तु तदा दृष्ट्वा तं दुःखितं जनम् ।
सम्मूढां दुःखशोकार्तां व्यासो मातरमब्रवीत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.13

आ.14 जरासंध का दाह-संस्कार – सहदेव (मगध राजकुमार)

वक्ता / कथन: वैशंपायन जनमेजय से उदाहरण नियम

- उदाहरण नियम जरासंध की मृत्यु के बाद कृष्ण और भीम-अर्जुन ने उसके पुत्र सहदेव से कहा, 'अपने पिता का संस्कार करवाओ' (सभा. 25.60)।
- उदाहरण सहदेव ने मंत्रियों के साथ नगर में जाकर चंदन, कालेय और सरल नामक लकड़ियों से चिता बनाई (सभा. 25.61)।
- उदाहरण कालागरु जैसे सुगंधित द्रव्य, अनेक तेल, सैकड़ों घी की धाराएँ और पुष्प छिड़कते हुए मगधराज का दाह किया; इसके बाद सहदेव ने अपने छोटे भाइयों के साथ पिता की उदकक्रिया की (सभा. 25.62–63)।

महाभारत › सभापर्व › जरासन्धवधपर्व › अध्याय 25, श्लोक 60 उदाहरण नियम KK 2-2-25-60

क्रियतां संस्क्रिया राजन्पितुस्त इति चाब्रुवन्।
तच्छ्रुत्वा वासुदेवस्य पार्थयोश्च स मागधः॥

↩ वापस: ↩ आ.14

महाभारत › सभापर्व › जरासन्धवधपर्व › अध्याय 25, श्लोक 61 उदाहरण KK 2-2-25-61

प्रविश्य नगरं तूर्णं सह मन्त्रिभिरप्युत।
चितां चन्दनकाष्ठैश्च कालेयसरलैस्तथा॥

↩ वापस: ↩ आ.14

महाभारत › सभापर्व › जरासन्धवधपर्व › अध्याय 25, श्लोक 62 उदाहरण KK 2-2-25-62

कालागरुसुगन्धैश्च तैलैश्च विविधैरपि।
घृतधाराशतैश्चैव सुमनोभिश्च भारत॥

↩ वापस: ↩ आ.14

महाभारत › सभापर्व › जरासन्धवधपर्व › अध्याय 25, श्लोक 63 उदाहरण KK 2-2-25-63

समन्तादेव कीर्यन्तोऽदहन्त मगधाधिपम्।
उदकं तस्य चक्रेऽथ सहदेवः सहानुजः॥

↩ वापस: ↩ आ.14

आ.15 युद्धभूमि में द्रोणाचार्य का दाह

वक्ता / कथन: गान्धारी श्रीकृष्ण से उदाहरण नियम

- उदाहरण पति द्रोण के युद्ध में मारे जाने पर, दुःख से पीड़ित होकर रोती हुई, जटाधारिणी कृपी उनकी देह के पास रहकर उनके प्रेतकृत्य के लिए प्रयत्न कर रही है (स्त्री. 23.36–38)।
- उदाहरण नियम सामग विधिपूर्वक अग्नियों की स्थापना करके, चिता को चारों ओर प्रज्वलित करके, द्रोण को उस पर रखकर तीन सामों का गान कर रहे हैं (स्त्री. 23.39)।
- उदाहरण जटाधारी ब्रह्मचारी धनुषों, शक्तियों, रथ के नीड़ों और विविध बाणों से चिता सजाकर उस महातेजस्वी का दाह कर रहे हैं; द्रोण को लेकर गान करते हुए रो रहे हैं (स्त्री. 23.40–41)।
- उदाहरण नियम कुछ अन्य अन्त में कहे जाने वाले तीन सामों से स्तुति कर रहे हैं; अग्नि में अग्नि रखकर द्रोण को हुताशन में होम कर दिया (स्त्री. 23.42)।

महाभारत › स्त्रीपर्व › स्त्रीविलापपर्व › अध्याय 23, श्लोक 36 उदाहरण KK 11-2-23-36

तां पश्य रुदतीमार्तां मुक्तकेशीमधोमुखीम्।
हतं पतिमुपासन्तीं द्रोणं शस्त्रभृतां वरम्॥

↩ वापस: ↩ आ.15

महाभारत › स्त्रीपर्व › स्त्रीविलापपर्व › अध्याय 23, श्लोक 37 उदाहरण KK 11-2-23-37

बाणैर्भिन्नतनुत्राणं धृष्टद्युम्नेन केशव।
उपास्ते वै मृधे द्रोणं जटिला ब्रह्मचारिणी॥

↩ वापस: ↩ आ.15

महाभारत › स्त्रीपर्व › स्त्रीविलापपर्व › अध्याय 23, श्लोक 38 उदाहरण KK 11-2-23-38

प्रेतकृत्ये च यतते कृपी कृपणमातुरा ।
हतस्य समरे भर्तुः सुकुमारी यशस्विनी ॥

↩ वापस: ↩ आ.15

महाभारत › स्त्रीपर्व › स्त्रीविलापपर्व › अध्याय 23, श्लोक 39 उदाहरण नियम KK 11-2-23-39

अग्नीनाधाय विविधवच्चितां प्रज्वाल्य सर्वतः ।
द्रोणमाधाय गायन्ति त्रीणि सामानि सामगाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.15

महाभारत › स्त्रीपर्व › स्त्रीविलापपर्व › अध्याय 23, श्लोक 40 उदाहरण KK 11-2-23-40

कुर्वन्ति च चितामेते जटिला ब्रह्मचारिणः ।
धनुर्भिः शक्तिभिश्चैव रथनीडैश्च माधव ॥

↩ वापस: ↩ आ.15

महाभारत › स्त्रीपर्व › स्त्रीविलापपर्व › अध्याय 23, श्लोक 41 उदाहरण KK 11-2-23-41

शरैश्च विविधैरन्यैर्धक्ष्यन्ते भूरितेजसम् ।
त एते द्रोणमादाय गायन्ति च रुदन्ति च ॥

↩ वापस: ↩ आ.15

महाभारत › स्त्रीपर्व › स्त्रीविलापपर्व › अध्याय 23, श्लोक 42 उदाहरण नियम KK 11-2-23-42

सामभिस्त्रिभिरन्तस्थैरनुशंसन्ति चापरे ।
अग्नावग्निं समाधाय द्रोणं हुत्वा हुताशने ॥

↩ वापस: ↩ आ.15

आ.16 कुरुक्षेत्र में सबका दाह — अनाथों सहित

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से उदाहरण नियम

- उदाहरण नियम युधिष्ठिर ने सुधर्मा, धौम्य, संजय, विदुर, युयुत्सु, इन्द्रसेन आदि को आज्ञा दी कि कोई भी शरीर नष्ट न हो, ऐसे सबके प्रेतकार्य सम्पूर्ण रूप से कराएँ (स्त्री. 26.24–26)।
- उदाहरण उस आज्ञा पर उन्होंने चन्दन, अगुरु, कालीयक के काष्ठ, घृत, तैल, गन्ध, रेशमी वस्त्र, लकड़ियों के ढेर, टूटे रथ और आयुध एकत्र किए (स्त्री. 26.27–29)।
- उदाहरण नियम प्रयत्न से चिताएँ सजाकर, प्रमुख राजाओं का क्रम से शास्त्रोक्त कर्मविधि से दाह किया — दुर्योधन, उसके भाइयों, शल्य, शल, भूरिश्रवा आदि का (स्त्री. 26.30–31)।
- उदाहरण घृत की धाराओं से प्रज्वलित अग्नियों में हज़ारों राजाओं का दाह किया; कुछ महात्माओं के पितृमेध हुए, सामगान हुआ (स्त्री. 26.38–39)।
- उदाहरण नाना देशों से आकर अनाथ रह गए हज़ारों लोगों को भी एक स्थान पर एकत्र करके, तेल से भीगी लकड़ियों से चिता सजाकर, राजाज्ञा से विदुर ने उनका दाह कराया (स्त्री. 26.42–43)।
- उदाहरण उन सबकी क्रियाएँ कराने के बाद युधिष्ठिर धृतराष्ट्र को आगे करके गंगा की ओर गए (स्त्री. 26.44)।

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 24 उदाहरण नियम KK 11-3-26-24

एवमुक्त्वा महाराज कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।
आदिदेश सुधर्माणं धौम्यं सूतं च सञ्जयम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 25 उदाहरण नियम KK 11-3-26-25

विदुरं च महाबुद्धिं युयुत्सुं चैव कौरवम् ।
इन्द्रसेनमुखान्भृत्यान्सूतांश्चैव सहस्रशः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 26 उदाहरण नियम KK 11-3-26-26

भवन्तः कारयन्त्वेषां प्रेतकार्याण्यशेषतः ।
यथा नाथवतां किञ्चिच्छरीरं न विनश्यति ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 27 उदाहरण KK 11-3-26-27

शासनाद्धर्मराजस्य क्षत्ता सूतश्च सञ्जयः ।
सुधर्मा धौम्यसहित इन्द्रसेनादयस्तथा ॥

↩ वापस: ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 28 उदाहरण KK 11-3-26-28

चन्दनागुरुकाष्ठानि तथा कालीयकान्युत ।
घृतं तैलं च गन्धांश्च क्षौमाणि वसनानि च ॥

↩ वापस: ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 29 उदाहरण KK 11-3-26-29

समाहृत्य महार्हाणि दारुणां चैव सञ्चयान् ।
रथांश्च मृदितांस्तत्र नानाप्रहरणानि च ॥

↩ वापस: ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 30 उदाहरण नियम KK 11-3-26-30

चिताः कृत्वा प्रयत्नेन यथामुख्यान्नराधिपान् ।
दाहयामासुरव्यग्राः शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥

↩ वापस: ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 31 उदाहरण नियम KK 11-3-26-31

दुर्योधनं च राजानं भ्रातॄंश्चास्य महारथान् ।
शल्यं शलं च राजानं भूरिश्रवसमेव च ॥

↩ वापस: ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 38 उदाहरण KK 11-3-26-38

एतांश्चान्यांश्च सुबहून्पार्थिवांश्च सहस्रशः ।
घृतधाराहुतैर्दीप्तैः पावकैः समदाहयन् ।।

↩ वापस: ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 39 उदाहरण KK 11-3-26-39

पितृमेधाश्च केषाञ्चित्प्रावर्तन्त महात्मनाम् ।
सामभिश्चाप्यगायन्त तेऽन्वशासत चापरैः ॥

↩ वापस: ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 42 उदाहरण KK 11-3-26-42

ये चाप्यनाथास्तत्रासन्नानादेशसमागताः ।
तांश्च सर्वान्समानीय राशीकृत्वा सहस्रशः ॥

↩ वापस: ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 43 उदाहरण KK 11-3-26-43

चित्वा दारुभिरव्यग्रैः प्रभूतैः स्नेहपाचितैः ।
दाहयामास तान्सर्वान्विदुरो राजशासनात् ॥

↩ वापस: ↩ आ.16

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 26, श्लोक 44 उदाहरण KK 11-3-26-44

कारयित्वा क्रियास्तेषां कुरुराजो युधिष्ठिरः ।
धृतराष्ट्रं पुरस्कृत्य गङ्गामभिमुखोऽगमत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.16

आ.17 गंगा में कुरु-स्त्रियों की जलांजलि, कर्ण की उदकक्रिया

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से उदाहरण

- उदाहरण सभी पवित्र गंगा के पास पहुँचकर, आभूषण, उत्तरीय, पगड़ियाँ और कवच उतारकर गंगा में उतरे (स्त्री. 27.1–2).
- उदाहरण कुरु-स्त्रियों ने रोते हुए अपने पितरों, भाइयों, पौत्रों, स्वजनों, पुत्रों, बड़ों और पतियों को उदक दिया; धर्मज्ञों ने मित्रों के लिए भी सलिलक्रिया की (स्त्री. 27.3–4).
- उदाहरण वीरपत्नियों के उदक देते समय गंगा उतरने में सुगम घाटों से और अधिक विस्तृत-सी हो गई (स्त्री. 27.5).
- उदाहरण कुन्ती ने पाण्डवों से अनुरोध किया — सत्यसंध, युद्धों में पीठ न दिखाने वाला कर्ण तुम्हारा भाई है; उसे उदक दो (स्त्री. 27.12).
- उदाहरण युधिष्ठिर ने बहुत विलाप करके कर्ण को उदक दिया; कर्ण की स्त्रियों और परिवार को बुलवाकर उनके साथ मिलकर कर्ण का समस्त प्रेतकृत्य विधिवत्, अधिक दक्षिणाओं के साथ किया (स्त्री. 27.27, 29–30).
- उदाहरण धृतराष्ट्र भी श्रद्धा से जल देकर पत्नी के साथ गंगा से बाहर आए (स्त्री. 27.31).

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 27, श्लोक 1 उदाहरण KK 11-3-27-1

ते समासाद्य गङ्गां तु शिवां पुण्यजलान्विताम् ।
ह्लादिनीं च प्रसन्नां च महारूपां महावनाम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.17

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 27, श्लोक 2 उदाहरण KK 11-3-27-2

भूषणान्युत्तरीयाणि वेष्टनान्यवमुच्य च ।
कवचानि विचित्राणि गङ्गामवजगाहिरे ॥

↩ वापस: ↩ आ.17

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 27, श्लोक 3 उदाहरण KK 11-3-27-3

ततः पितॄणां भ्रातॄणां पौत्राणां स्वजनस्य च ।
पुत्राणामार्यकाणां च पतीनां च कुरुस्त्रियः ॥

↩ वापस: ↩ आ.17

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 27, श्लोक 4 उदाहरण KK 11-3-27-4

उदकं चक्रिरे सर्वा रुदन्त्यो भृशदुःखिताः ।
सुहृदां चापि धर्मज्ञाः प्रचक्रुः सलिलक्रियाम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.17

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 27, श्लोक 5 उदाहरण KK 11-3-27-5

उदके क्रियमाणे तु वीराणां विरपत्निभिः ।
सूपतीर्थाऽभवद्गङ्गा भूयो विप्रससार च ॥

↩ वापस: ↩ आ.17

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 27, श्लोक 12 उदाहरण KK 11-3-27-12

कर्णस्य सत्यसन्धस्य सङ्ग्रामेष्वपलायिनः ।
कुरुध्वमुदकं तस्य भ्रातुरक्लिष्टकर्मणः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.17

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 27, श्लोक 27 उदाहरण KK 11-3-27-27

एवं विलप्य बहुलं धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
व्यरुदच्छनकै राजंश्चकारास्योदकं प्रभुः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.17

महाभारत › स्त्रीपर्व › श्राद्धपर्व › अध्याय 27, श्लोक 31 उदाहरण KK 11-3-27-31

स राजा धृतराष्ट्रश्च कृत्वा जलमतन्द्रितः ।
समुत्ततार गङ्गाया भार्यया सह भारत ॥

↩ वापस: ↩ आ.17

आ.18 युद्ध में मरे सभी लोगों के लिए युधिष्ठिर और धृतराष्ट्र द्वारा किए गए श्राद्ध

वक्ता / कथन: वैशंपायन जनमेजय से उदाहरण

- उदाहरण युद्ध में मरे सभी ज्ञातियों के लिए युधिष्ठिर ने प्रत्येक के लिए अलग-अलग श्राद्ध करवाए (शान्ति. 41.1)।
- उदाहरण धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रों के और्ध्वदेहिक के रूप में सभी गुणों से युक्त अन्न, गौएँ, धन और मूल्यवान विचित्र रत्न दान किए (शान्ति. 41.2)।
- उदाहरण युधिष्ठिर ने द्रौपदी के साथ मिलकर द्रोण, कर्ण, धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु, हिडिंबा-पुत्र (घटोत्कच), विराट आदि उपकारी मित्रों, द्रुपद और द्रौपदी-पुत्रों के लिए दान किए (शान्ति. 41.3–4)।
- उदाहरण प्रत्येक के उद्देश्य से उसने हज़ारों ब्राह्मणों को धन, रत्न, गौएँ और वस्त्र देकर तृप्त किया (शान्ति. 41.5)।
- उदाहरण जिनका कोई बंधु-मित्र नहीं था, ऐसे अन्य राजाओं के लिए भी उसने प्रत्येक के उद्देश्य से और्ध्वदेहिक कर्म किया (शान्ति. 41.6)।
- उदाहरण सभी मित्रों के और्ध्वदेहिक के रूप में उसने सभाएँ, प्याऊ (प्रपा) और तरह-तरह के तालाब बनवाए (शान्ति. 41.7)।
- उदाहरण इस प्रकार उन सबका ऋण चुकाकर, लोक में निंदा से रहित होकर, युधिष्ठिर कृतकृत्य हुआ (शान्ति. 41.8)।

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 41, श्लोक 1 उदाहरण KK 12-1-41-1

ततो युधिष्ठिरो राजा ज्ञातीनां ये हता युधि ।
श्राद्धानि कारयामास तेषां पृथगुदारधीः ॥

↩ वापस: ↩ आ.18

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 41, श्लोक 2 उदाहरण KK 12-1-41-2

धृतराष्ट्रो ददौ राजा पुत्राणामौर्ध्वदेहिकम् ।
सर्वकामगुणोपेतमन्नं गाश्च धनानि च ।
रत्नानि च विचित्राणि महार्हाणि महायशाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.18

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 41, श्लोक 3 उदाहरण KK 12-1-41-3

युधिष्ठिरस्तु द्रोणस्य कर्णस्य च महात्मनः ।
धृष्टद्युम्नाभिमन्युभ्यां हेडिम्बस्य च रक्षसः ॥

↩ वापस: ↩ आ.18

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 41, श्लोक 4 उदाहरण KK 12-1-41-4

विराटप्रभृतीनां च सुहृदामुपकारिणाम् ।
द्रुपदद्रौपदेयानां द्रौपद्या सहितो ददौ ॥

↩ वापस: ↩ आ.18

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 41, श्लोक 5 उदाहरण KK 12-1-41-5

ब्राह्मणानां सहस्राणि पृथगेकैकमुद्दिशन्।
धनै रत्नैश्च गोभिश्च वस्त्रैश्च समतर्पयत्॥

↩ वापस: ↩ आ.18

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 41, श्लोक 6 उदाहरण KK 12-1-41-6

ये चान्ये पृथिवीपाला येषां नास्ति सुहृज्जनः।
उद्दिश्योद्दिश्य तेषां च चक्रे राजौर्ध्वदेहिकम्॥

↩ वापस: ↩ आ.18

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 41, श्लोक 7 उदाहरण KK 12-1-41-7

सभाः प्रपाश्च विविधास्तटाकानि च पाण्डवः।
सुहृदां कारयामास सर्वेषामौर्ध्वदेहिकम्॥

↩ वापस: ↩ आ.18

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 41, श्लोक 8 उदाहरण KK 12-1-41-8

स तेषामनृणो भूत्वा गत्वा लोकेष्ववाच्यताम्।
कृतकृत्योऽभवद्राजा प्रजा धर्मेण पालयन्॥

↩ वापस: ↩ आ.18

आ.19 भीष्म का पितृमेध, दाहसंस्कार और उदकक्रिया

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से उदाहरण नियम

- उदाहरण भीष्म के देह त्यागने के बाद पाण्डवों, विदुर और युयुत्सु ने लकड़ियाँ और अनेक सुगन्धित द्रव्य लाकर चिता तैयार की (अनु. 274.10)।
- उदाहरण युधिष्ठिर और धृतराष्ट्र ने उन्हें रेशमी वस्त्रों और मालाओं से ढका; युयुत्सु ने छत्र पकड़ा, भीम और अर्जुन ने चँवर, नकुल और सहदेव ने उष्णीष पकड़े; कुरुवंश की वृद्ध स्त्रियों ने पंखों से हवा की (अनु. 274.11–13)।
- उदाहरण नियम फिर उन महात्मा का विधिपूर्वक पितृमेध किया गया; याजकों ने अग्नि में होम किया, सामगों ने सामगान किया (अनु. 274.14)।
- उदाहरण चन्दन, कालीयक, कालागुरु आदि सुगन्धित काष्ठों से देह को ढककर अग्नि प्रज्वलित की, और धृतराष्ट्र आदि ने चिता की अपसव्य प्रदक्षिणा की (अनु. 274.15–16)।
- उदाहरण दाहसंस्कार समाप्त होने पर, व्यास, नारद, असित, श्रीकृष्ण, भरतवंश की स्त्रियों और पुरवासियों के साथ वे पुण्य भागीरथी को गए (अनु. 274.17–18)।
- उदाहरण वहाँ उन क्षत्रियश्रेष्ठों और वहाँ के सभी लोगों ने भीष्म की विधिपूर्वक उदकक्रिया की; उदक देने के बाद गंगादेवी जल से उठकर शोक करने लगीं (अनु. 274.19–20)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 10 उदाहरण KK 13-2-274-10

ततस्त्वादाय दारूणि गन्धांश्च विविधान्बहून्।
चितां चक्रुर्महात्मानः पाण्डवा विदुरस्तथा।
युयुत्सुश्चापि कौरव्यं प्रेक्षकास्त्वितरेऽभवन्॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 11 उदाहरण KK 13-2-274-11

युधिष्ठिरश्च गाङ्गेयं धृतराष्ट्रश्च दुःखितौ।
छादयामासतुरुभौ क्षौमैर्माल्यैश्च कौरवम्॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 12 उदाहरण KK 13-2-274-12

धारयामास तस्याथ युयुत्सुश्छत्रमुत्तमम् ।
चामरे व्यजने शुभ्रे भीमसेनार्जुनावुभौ ।
उष्णीषे परिगृह्णीतां माद्रीपुत्रावुभौ तथा ॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 13 उदाहरण KK 13-2-274-13

युधिष्ठिरेण सहितो धृतराष्ट्रश्च पादतः ।
वृद्धा स्त्रियः कौरवाणां भीष्मं कुरुकुलोद्वहम् ।
तालवृन्तान्युपादाय पर्यवीजन्त सर्वशः ॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 14 उदाहरण नियम KK 13-2-274-14

ततोस्य विधिवच्चक्रुः पितृमेधं महात्मनः ।
याजका जुहुवुश्चाग्नौ जगुः सामानि समागाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 15 उदाहरण KK 13-2-274-15

ततश्चन्दनकाष्ठैश्च तथा कालीयकैरपि ।
कालागुरुप्रभृतिभिर्गन्धैश्चोच्चावचैस्तथा ॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 16 उदाहरण KK 13-2-274-16

समवच्छाद्य गाङ्गेयं सम्प्रज्वाल्य हुताशनम् ।
अपसव्यमकुर्वन्त धृतराष्ट्रमुखाश्चिताम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 17 उदाहरण KK 13-2-274-17

संस्कृत्य च कुरुश्रेष्ठं गाङ्गेयं कुरुसत्तमाः ।
जग्मुर्भागीरथीं पुण्यामृषिजुष्टां कुरूद्वहाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 18 उदाहरण KK 13-2-274-18

अनुगम्यमाना व्यासेन नारदेनासितेन च ।
कृष्णेन भरतस्त्रीभिर्ये च पौराः समागताः ॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 19 उदाहरण KK 13-2-274-19

उदकं चक्रिरे सर्वे गाङ्गेयस्य महात्मनः ।
विधिवत्क्षत्रियश्रेष्ठाः स च सर्वो जनस्तदा ॥

↩ वापस: ↩ आ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › भीष्मस्वर्गारोहणपर्व › अध्याय 274, श्लोक 20 उदाहरण KK 13-2-274-20

ततो भागीरथी देवी तनयस्योदके कृते ।
उत्थाय सलिलात्तस्माद्रुदती शोकविह्वला ।
परिदेवयती तत्र कौरकवानभ्यभाषत ॥

↩ वापस: ↩ आ.19

आ.20 अभिमन्यु के लिए कुन्ती, वसुदेव और श्रीकृष्ण द्वारा किया गया श्राद्ध

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण वसुदेव से (61); वैशम्पायन जनमेजय से (62) उदाहरण

- उदाहरण कुन्तीदेवी ने सुभद्रा को सांत्वना देकर, असहनीय शोक को त्यागकर अभिमन्यु के श्राद्ध की व्यवस्था की (आश्व. 61.36).
- उदाहरण धर्मराज, भीम और नकुल-सहदेव की अनुमति लेकर उन्होंने अनेक दान किए; ब्राह्मणों को अनेक गौएँ दीं (आश्व. 61.37–38).
- उदाहरण पुत्र (श्रीकृष्ण) का कहा हुआ सुनकर शूर के पुत्र वसुदेव ने शोक त्यागकर उत्तम श्राद्ध किया (आश्व. 62.1).
- उदाहरण श्रीकृष्ण ने भी पिता के अत्यंत प्रिय अपने भानजे अभिमन्यु का और्ध्वदेहिक किया (आश्व. 62.2).
- उदाहरण साठ लाख ब्राह्मणों को विधिपूर्वक सर्वगुणसंपन्न भोजन कराकर, वस्त्र देकर उनकी धन-तृष्णा तृप्त की; सोना, गौएँ, शय्याएँ और वस्त्र देते समय ब्राह्मणों ने स्वयं कहा — 'यह बहुत अधिक है' (आश्व. 62.3–5).
- उदाहरण वासुदेव, बलदेव, सात्यकि और सत्यक ने अभिमन्यु का श्राद्ध किया; वे अत्यंत दुःख से तपते हुए शांति नहीं पा सके (आश्व. 62.6).

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 61, श्लोक 36 उदाहरण KK 14-2-61-36

एवमाश्वासयित्वैनां कुन्ती यदुकुलोद्वह ।
विहाय शोकं दुर्धर्षं श्राद्धमस्य ह्यकल्पयत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.20

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 61, श्लोक 37 उदाहरण KK 14-2-61-37

समनुज्ञाप्य धर्मज्ञं राजानं भीममेव च ।
यमौ यमोपमौ चैव ददौ दानान्यनेकशः ॥

↩ वापस: ↩ आ.20

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 61, श्लोक 38 उदाहरण KK 14-2-61-38

ततः प्रदाय बह्वीर्गा ब्राह्मणेभ्यो यदूद्वह ।
समाहृष्य तु वार्ष्णेयी वैराटीमब्रवीदिदम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.20

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 62, श्लोक 1 उदाहरण KK 14-2-62-1

एतच्छ्रुत्वा तु पुत्रस्य वचः शूरात्मजस्तदा ।
विहाय शोकं धर्मात्मा ददौ श्राद्धमनुत्तमम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.20

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 62, श्लोक 2 उदाहरण KK 14-2-62-2

तथैव वासुदेवश्च स्वस्त्रीयस्य महात्मनः ।
दयितस्य पितुर्नित्यमकरोदौर्ध्वदेहिकम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.20

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 62, श्लोक 3 उदाहरण KK 14-2-62-3

षष्टिं शतसहस्राणि ब्राह्मणानां महौजसाम् ।
विधिवद्भोजयामास भोज्यं सर्वगुणान्वितम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.20

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 62, श्लोक 4 उदाहरण KK 14-2-62-4

आच्छाद्य च महाबाहुर्धनतृष्णामपानुदत् ।
ब्राह्मणानां तदा कृष्णस्तदभूद्रोमहर्षणम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.20

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 62, श्लोक 5 उदाहरण KK 14-2-62-5

सुवर्णं चैव गाश्चैव शयनाच्छादनानि च ।
दीयमानं तदा विप्रः प्रभूतमिति चाब्रुवन् ॥

↩ वापस: ↩ आ.20

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 62, श्लोक 6 उदाहरण KK 14-2-62-6

वासुदेवोऽथ दाशार्हो बलदेवः ससात्यकिः ।
अभिमन्योस्तदा श्राद्धमकुर्वन्सत्यकस्तदा ।
अतीव दुःखसन्तप्ता न शमं चोपलेभिरे ॥

↩ वापस: ↩ आ.20

आ.21 वनवास से पहले धृतराष्ट्र का श्राद्धयज्ञ

वक्ता / कथन: वैशंपायन जनमेजय से (विदुर, अर्जुन, भीम और युधिष्ठिर के वचनों सहित) उदाहरण

- उदाहरण विदुर ने युधिष्ठिर से कहा कि वनवास की दीक्षा लिए धृतराष्ट्र कार्तिक पूर्णिमा आने पर वन जाने से पहले भीष्म, द्रोण, सोमदत्त और बाह्लीक के लिए, अपने सभी पुत्रों के लिए, मारे गए मित्रों के लिए — अनुमति हो तो जयद्रथ के लिए भी — श्राद्ध करना चाहते हैं (आश्रम. 12.3–5)।
- उदाहरण अर्जुन ने भीम से कहा कि वृद्ध धृतराष्ट्र सभी सुहृदों को और्ध्वदेहिक देना चाहते हैं, इसके लिए अनुमति दो (आश्रम. 12.9–10)।
- उदाहरण भीम सहमत नहीं हुआ: उसने कहा कि भीष्म आदि का प्रेतकार्य वे स्वयं देंगे, कर्ण का कुंती देगी, धृतराष्ट्र को श्राद्ध नहीं करने चाहिए (आश्रम. 12.16–18)।
- उदाहरण युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र से कहा, 'आप जितना चाहें धन दीजिए', और अनुमति दी कि पुत्रों के और्ध्वदेहिक के रूप में ब्राह्मणों को अग्रहार, रत्न, गौएँ आदि, और दीनों तथा अंधों को भी दिया जा सकता है (आश्रम. 14.10–12)।
- उदाहरण धृतराष्ट्र ने द्रोण, भीष्म, सोमदत्त, बाह्लीक, दुर्योधन, पुत्रों, जयद्रथ आदि और सुहृदों का नाम ले-लेकर संकीर्तन करके दान किया; युधिष्ठिर की अनुमति से विस्तृत गोधन और धन-रत्नों की दक्षिणा के साथ वह श्राद्धयज्ञ संपन्न हुआ (आश्रम. 15.5–7)।
- उदाहरण युधिष्ठिर की आज्ञा से जहाँ सौ देने को कहा गया वहाँ हज़ार, और हज़ार के स्थान पर दस हज़ार दिए गए; जैसे मेघ बरसता है वैसे धन की धाराओं से धृतराष्ट्र ने ब्राह्मणों को तृप्त किया (आश्रम. 15.9–11)।
- उदाहरण इस प्रकार उसने पुत्र-पौत्रों को, पितरों को, स्वयं को और गांधारी को भी और्ध्वदेहिक दिया; थक जाने तक दान करके उस दानयज्ञ को पूरा किया (आश्रम. 15.15–17)।

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 12, श्लोक 3 उदाहरण KK 15-1-12-3

धृतराष्ट्रो महाराजो वनवासाय दीक्षितः ।
गमिष्यति वनं राजन्नागतां कार्तिकीमिमाम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 12, श्लोक 4 उदाहरण KK 15-1-12-4

स त्वां कुरुकुलश्रेष्ठ किञ्चिदर्थमभीप्सति ।
श्राद्धमिच्छति दातुं स गाङ्गेयस्य महात्मनः ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 12, श्लोक 5 उदाहरण KK 15-1-12-5

द्रोणस्य सोमदत्तस्य बाह्लीकस्य च धीमतः ।
पुत्राणां चैव सर्वेषां ये चान्ये सुहृदो हताः ।
यदि चाप्यनुजानीषे सैन्धवापशदस्य च ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 12, श्लोक 9 उदाहरण KK 15-1-12-9

भीम राजा पिता वृद्धो वनवासाय दीक्षितः ।
दातुमिच्छति सर्वेषां सुहृदामौर्ध्वदेहिकम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 12, श्लोक 10 उदाहरण KK 15-1-12-10

भवता निर्जितं वित्तं दातुमिच्छति कौरवः ।
भीष्मादीनां महाबाहो तदनुज्ञातुमर्हसि ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 12, श्लोक 16 उदाहरण KK 15-1-12-16

वयं भीष्मस्य दास्यामः प्रेतकार्यं तु फल्गुन ।
सोमदत्तस्य नृपतेर्भूरिश्रवस एव च ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 12, श्लोक 17 उदाहरण KK 15-1-12-17

बाह्लीकस्य च राजर्षेर्द्रोणस्य च महात्मनः ।
अन्येषां चैव सुहृदां कुन्ती कर्णाय दास्यति ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 12, श्लोक 18 उदाहरण KK 15-1-12-18

श्राद्धानि पुरुषव्याघ्र मा प्रदात्कौरवो नृपः ।
इति मे वर्तते बुद्धिर्मा वो नन्दन्तु शत्रवः ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 14, श्लोक 10 उदाहरण KK 15-1-14-10

तद्ददातु भवान्वित्तं यावदिच्छसि पार्थिव ।
त्वमीश्वरो नो राज्यस्य प्राणानामपि भारत ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 14, श्लोक 11 उदाहरण KK 15-1-14-11

ब्रह्मदेयाग्रहारांश्च पुत्राणामौर्ध्वदेहिकम् ।
इतो रत्नानि गाश्चैव दासीदासमजाविकम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 14, श्लोक 12 उदाहरण KK 15-1-14-12

अर्चयित्वा कुरुश्रेष्ठो ब्राह्मणेभ्यः प्रयच्छतु ।
दीनान्धकृपणेभ्यश्च तत्रतत्र नृपाज्ञया ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 15, श्लोक 5 उदाहरण KK 15-1-15-5

आदिश्यादिश्य सर्वेभ्यो ददौ स नृपसत्तमः ।
द्रोणं सङ्कीर्त्य भीष्मं च सोमदत्तं च बाह्लिकम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 15, श्लोक 6 उदाहरण KK 15-1-15-6

दुर्योधनं च राजानं पुत्रांश्चैव पृथक्पृथक् ।
जयद्रथपुरोगांश्च सुहृदश्चापि सर्वशः ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 15, श्लोक 7 उदाहरण KK 15-1-15-7

स श्राद्धयज्ञो ववृते बहुगोधनदक्षिणः ।
अनेकधनरत्नौघो युधिष्ठिरमते तदा ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 15, श्लोक 9 उदाहरण KK 15-1-15-9

आज्ञापय किमेतेभ्यः प्रदेयं दीयतामिति ।
तदुपस्थितमेवात्र वचनान्ते ददुस्तदा ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 15, श्लोक 10 उदाहरण KK 15-1-15-10

शते देये दशशतं सहस्रं चायुतं तथा ।
दीयते वचनाद्राज्ञः कुन्तीपुत्रस्य धीमतः ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 15, श्लोक 11 उदाहरण KK 15-1-15-11

एवं स वसुधाराभिर्वर्षमाणो नृपाम्बुदः ।
तर्पयामास विप्रांस्तान्वर्षन्भूमिमिवाम्बुदः ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 15, श्लोक 15 उदाहरण KK 15-1-15-15

ग्रामाग्रहारद्वीपाढ्यो मणिहेमजलार्णवः ।
जगत्संप्लावयामास धृतराष्ट्रोडुपोद्धतः ॥
एवं स पुत्रपौत्राणां पितॄणामात्मनस्तथा ।
गान्धार्याश्च महाराज प्रददावौर्ध्वदेहिकम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 15, श्लोक 16 उदाहरण KK 15-1-15-16

परिश्रान्तो यदासीत्स ददद्दानान्यनेकशः ।
निवर्तयामास तदा दानयज्ञं नराधिपः ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 15, श्लोक 17 उदाहरण KK 15-1-15-17

एवं स राजा कौरव्यश्चक्रे दानमहाक्रतुम् ।
नटनर्तकलास्याढ्यं बह्वन्नरसदक्षिणम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.21

आ.22 वनाग्नि में दग्ध धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्ती के लिए उदकक्रिया, श्राद्ध

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से; 41.1–9 नारद युधिष्ठिर से उदाहरण नियम पुण्य

- नियम पुण्य धृतराष्ट्र वृथा-अग्नि से दग्ध नहीं हुए; अपनी ही अग्नि से युक्त होकर परमगति को प्राप्त हुए, अतः शोक मत करो — ऐसा नारद ने युधिष्ठिर से कहा (आश्रम. 41.1, 5, 7)।
- नियम सभी भाइयों के साथ मिलकर उनके लिए उदकक्रिया करने का नारद ने सुझाव दिया (आश्रम. 41.9)।
- उदाहरण युधिष्ठिर भाइयों और पत्नियों के साथ चल पड़े; पुरवासी और जनपदवासी एक वस्त्र में गंगा गए; सबने जल में उतरकर युयुत्सु को आगे रखकर धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्ती को नाम-गोत्र सहित विधिवत् जल दिया (आश्रम. 41.10–13)।
- नियम शौच (अशौच) काल पूरा करते हुए वे नगर के बाहर ही रहे (आश्रम. 41.13)।
- उदाहरण जहाँ धृतराष्ट्र दग्ध हुए थे उस गंगाद्वार पर विधि जानने वाले विश्वसनीय लोगों को, देने योग्य वस्तुएँ देकर भेजा, और वहीं करने योग्य कर्म करने की युधिष्ठिर ने आज्ञा दी (आश्रम. 41.14–15)।
- उदाहरण नियम बारहवें दिन शौच पूरा करके युधिष्ठिर ने दक्षिणाओं सहित विधिवत् उनके श्राद्ध किए (आश्रम. 41.16)।
- उदाहरण धृतराष्ट्र के उद्देश्य से सोना, चाँदी, गौएँ, मूल्यवान शय्याएँ; गान्धारी और कुन्ती के नाम अलग-अलग संकीर्तन करके, ब्राह्मण ने जितना माँगा उतना शयन, भोजन, यान, मणि-रत्न, धन और वस्त्र दान किए (आश्रम. 41.17–20)।
- उदाहरण अनेक श्राद्ध देने के बाद युधिष्ठिर ने हस्तिनापुर में प्रवेश किया (आश्रम. 41.21)।
- उदाहरण गंगाद्वार गए लोगों ने उनके कुल्यों (अस्थियों) का संकल्प करके, पुष्प-गन्ध से यथाविधि अर्चन करके, उन्हें (यथास्थान) पहुँचाकर लौटकर राजा को सूचित किया (आश्रम. 41.22–23)।

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 1 नियम पुण्य KK 15-3-41-1

नासौ वृथाऽग्निना दग्धो यथा तत्र श्रुतं मया।
वैचित्रवीर्यो नृपतिर्न ते शोच्यो नराधिप॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 9 नियम KK 15-3-41-9

कर्तुमर्हसि राजेन्द्र तेषां त्वमुदकक्रियाम्।
भ्रातृभिः सहितः सर्वैरेतदत्र विधीयताम्॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 10 उदाहरण KK 15-3-41-10

ततः स पृथिवीपालः पाण्डवानां धुरन्धरः।
निर्ययौ सहसोदर्यः सदारश्च नरर्षभः॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 11 उदाहरण KK 15-3-41-11

पौरजानपदाश्चैव राजभक्तिपुरस्कृताः।
गङ्गां प्रजग्मुरभितो वाससैकेन संवृताः॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 12 उदाहरण KK 15-3-41-12

ततोऽवगाह्य सलिले सर्वे तु कुरुपुङ्गवाः।
युयुत्सुमग्रतः कृत्वा ददुस्तोयं महात्मने॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 13 उदाहरण नियम KK 15-3-41-13

गान्धार्याश्च पृथायाश्च विधिवन्नामगोत्रतः।
शौचं निवर्तयन्तस्ते तत्रोषुर्नगराद्बहिः॥

↩ वापस: ↩ आ.22 ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 14 उदाहरण KK 15-3-41-14

प्रेषयामास स नरान्विधिज्ञानाप्तकारिणः ।
गङ्गाद्वारं कुरुश्रेष्ठो यत्र दग्धोऽभवन्नृपः ।

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 15 उदाहरण KK 15-3-41-15

तत्रैव तेषां तुल्यानि गङ्गाद्वारेऽन्वशात्तदा ।
कर्तव्यानीति पुरुषान्दत्तदेयान्महीपतिः ॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 16 उदाहरण नियम KK 15-3-41-16

द्वादशेऽहनि तेभ्यः स कृतशौचो नराधिपः ।
ददौ श्राद्धानि विधिवद्दक्षिणावन्ति पाण्डवः ॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 17 उदाहरण KK 15-3-41-17

धृतराष्ट्रं समुद्दिश्य ददौ स पृथिवीपतिः ।
सुवर्णं रजतं गाश्च शय्याश्च सुमहाधनाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 18 उदाहरण KK 15-3-41-18

गान्धार्याश्चैव तेजस्वी पृथायाश्च पृथक्पृथक् ।
सङ्कीर्त्य नामनी राजा ददौ दानमनुत्तमम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 19 उदाहरण KK 15-3-41-19

यो यदिच्छति यावच्च तावत्स लभते द्विजः ।
शयनं भोजनं यानं मणिरत्नमथो धनम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 20 उदाहरण KK 15-3-41-20

यानमाच्छादनं भोगान्दासीश्च समलङ्कृताः ।
ददौ राजा समुद्दिश्य तयोर्मात्रोर्महीपतिः ॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 21 उदाहरण KK 15-3-41-21

ततः स पृथिवीपालो दत्त्वा श्राद्धान्यनेकशः ।
प्रविवेश पुनर्धीमान्नगरं वारणाह्वयम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 22 उदाहरण KK 15-3-41-22

ते चापि राजवचनात्पुरुषा ये गताऽभवन् ।
सङ्कल्प्य तेषां कुल्यानि पुनः प्रत्यागमंस्ततः ॥

↩ वापस: ↩ आ.22

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › नारदागमनपर्व › अध्याय 41, श्लोक 23 उदाहरण KK 15-3-41-23

माल्यैर्गन्धैश्च विविधैरर्चयित्वा यथाविधि ।
कुल्यानि तेषां संयोज्य तदाचख्युर्महीपतेः ॥

↩ वापस: ↩ आ.22

आ.23 वसुदेव का पितृमेध, बलराम-कृष्ण का दाह — अर्जुन द्वारा

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से (16.7.21: वसुदेव अर्जुन से, श्रीकृष्ण के वचन बताते हुए) उदाहरण नियम

- उदाहरण वसुदेव ने अर्जुन को बताया कि श्रीकृष्ण ने कहा था कि अर्जुन आकर स्त्रियों और बालकों की व्यवस्था करेंगे, और आपका और्ध्वदैहिक भी करेंगे (मौसल. 7.21)।
- उदाहरण वसुदेव को जीवित रहते जो स्थान प्रिय था, उसे चुनकर वहाँ पितृमेध किया गया (मौसल. 8.23)।
- उदाहरण उनकी चार पत्नियाँ चिता पर आरूढ़ हुईं; अर्जुन ने उन्हें उनके साथ चन्दन आदि गन्धों से दाह कराया; सामगान और रोदन की ध्वनि सुनाई दी (मौसल. 8.24–26)।
- उदाहरण वज्र आदि वृष्णि-अन्धक कुमारों और उन महात्मा की स्त्रियों ने उदक दिया (मौसल. 8.27)।
- उदाहरण धर्म का लोप हुए बिना वह कर्म कराकर, अर्जुन उस स्थान पर गए जहाँ वृष्णियों का नाश हुआ था, और प्रधानता के क्रम से सबकी क्रियाएँ कीं (मौसल. 8.28–30)।
- उदाहरण बलराम और वासुदेव के शरीरों को खोजकर विश्वसनीय पुरुषों द्वारा उनका दाह कराया (मौसल. 8.32)।
- उदाहरण नियम उन सबके विधिवत् प्रेतकार्य करके, सातवें दिन अर्जुन रथ पर चढ़कर तुरन्त चल पड़े (मौसल. 8.33)।

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 7, श्लोक 21 उदाहरण KK 16-1-7-21

स स्त्रीषु प्राप्तकालासु पाण्डवो बालकेषु च ।
प्रतिपत्स्यति बीभत्सुर्भवतश्चौर्ध्वदेहिकम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 23 उदाहरण KK 16-1-8-23

यस्तु देशः प्रियस्तस्य जीवतोऽभून्महात्मनः ।
तत्रैनमुपसङ्कल्प्य पितृमेधं प्रचक्रिरे ॥

↩ वापस: ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 24 उदाहरण KK 16-1-8-24

तं चिताग्निगतं वीरं शूरपुत्रं वराङ्गनाः ।
ततोऽन्वारुरुहुः पत्न्यश्चतस्रः पतिलोकगाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 25 उदाहरण KK 16-1-8-25

तं वै चतसृभिः स्त्रीभिरन्वितं पाण्डुनन्दनः ।
अदाहयच्चन्दनैश्च गन्धैरुच्चावचैरपि ॥

↩ वापस: ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 26 उदाहरण KK 16-1-8-26

ततः प्रादुरभूच्छब्दः समिद्धस्य विभावसोः ।
सामगानां च निर्घोषो नराणां रुदतामपि ॥

↩ वापस: ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 27 उदाहरण KK 16-1-8-27

ततो वज्रप्रधानास्ते वृष्ण्यन्धककुमारकाः ।
सर्वे चैवोदकं चक्रुः स्त्रियश्चैव महात्मनः ।

↩ वापस: ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 28 उदाहरण KK 16-1-8-28

अलुप्तधर्मस्तं धर्मं कारयित्वा स फल्गुनः ।
जगाम वृष्णयो यत्र विनष्टा भरतर्षभ ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 29 उदाहरण KK 16-1-8-29

स तान्दृष्ट्वा निपतितान्कदने भृशदुःखितः ।
बभूवातीव कौरव्यः प्राप्तकालं चकार ह ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 30 उदाहरण KK 16-1-8-30

यथाप्रधानतश्चैव चक्रे सर्वास्तथा क्रियाः ।
ये हता ब्रह्मशापेन मुसलैरेरकोद्भवैः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 32 उदाहरण KK 16-1-8-32

ततः शरीरे रामस्य वासुदेवस्य चोभयोः ।
अन्वीक्ष्य दाहयामास पुरुषैराप्तकारिभिः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.23

महाभारत › मौसलपर्व › › अध्याय 8, श्लोक 33 उदाहरण नियम KK 16-1-8-33

स तेषां विधिवत्कृत्वा प्रेतकार्याणि पाण्डवः ।
सप्तमे दिवसे प्रायाद्रथमारुह्य सत्वरः ॥

↩ वापस: ↩ आ.23

आ.24 महाप्रस्थान से पहले युधिष्ठिर का उदकदान और श्राद्ध

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से उदाहरण

- उदाहरण महाप्रस्थान से पहले युधिष्ठिर ने भाइयों के साथ वासुदेव, वृद्ध मामा और बलराम आदि को श्रद्धा से उदक देकर, सभी के उद्देश्य से विधिवत् श्राद्ध किए (महाप्र. 1.10–11).
- उदाहरण हरि के उद्देश्य से व्यास, नारद, मार्कण्डेय, भारद्वाज और याज्ञवल्क्य को शार्ङ्गी के नाम का कीर्तन करते हुए स्वादिष्ट भोजन कराया; ब्राह्मणों को रत्न, वस्त्र, ग्राम, अश्व और रथ दान किए (महाप्र. 1.12–13).

महाभारत › महाप्रस्थानिकपर्व › › अध्याय 1, श्लोक 10 उदाहरण KK 17-1-1-10

इत्युक्त्वा धर्मराजः स वासुदेवस्य धीमतः ।
मातुलस्य च वृद्धस्य रामादीनां तथैव च ॥

↩ वापस: ↩ आ.24

महाभारत › महाप्रस्थानिकपर्व › › अध्याय 1, श्लोक 11 उदाहरण KK 17-1-1-11

भ्रातृभिः सह धर्मात्मा कृत्वोदकमतन्द्रितः ।
श्राद्धान्युद्दिश्य सर्वेषां चकार विदिवत्तदा ॥

↩ वापस: ↩ आ.24

महाभारत › महाप्रस्थानिकपर्व › › अध्याय 1, श्लोक 12 उदाहरण KK 17-1-1-12

द्वैपायनं नारदं च मार्कण्डेयं तपोधनम् ।
भारद्वाजं याज्ञवल्क्यं हरिमुद्दिश्य यत्नवान् ।
अभोजयत्स्वादु भोज्यं कीर्तयित्वा च शार्ङ्गिणं ॥

↩ वापस: ↩ आ.24

महाभारत › महाप्रस्थानिकपर्व › › अध्याय 1, श्लोक 13 उदाहरण KK 17-1-1-13

ददौ रत्नानि वासांसि ग्रामानश्वान्रथांस्तथा ।
स्त्रियश्च द्विजमुख्येभ्यस्तदा शतसहस्रशः ॥

↩ वापस: ↩ आ.24

आ.25 नृसिंह की आज्ञा से प्रह्लाद द्वारा पिता के लिए किए गए प्रेतकार्य

वक्ता / कथन: नृसिंहस्वामी प्रह्लाद से; नारद युधिष्ठिर से उदाहरण नियम पुण्य

- नियम पुण्य नृसिंहस्वामी ने प्रह्लाद को आज्ञा दी कि वह अपने पवित्र पिता के सभी प्रेतकार्य संपूर्ण रूप से करे; उन्होंने कहा कि उनके अंगस्पर्श से पवित्र हुआ और सत्पुत्र वाला वह पिता उत्तम लोकों को जाएगा (भाग. 7.10.23)।
- उदाहरण भगवान के कहे अनुसार ही प्रह्लाद ने पिता का सांपरायिक (परलोक-संबंधी) कर्म किया; इसके बाद श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा अभिषिक्त होकर उसने राज्य किया (भाग. 7.10.25)।

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 10 › श्लोक 23 नियम पुण्य भाग. 7.10.23

कुरु त्वं प्रेतकार्याणि पितुः पूतस्य सर्वशः।
मदङ्गस्पर्शनेनाङ्ग लोकान् यास्यति सुप्रजाः॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ आ.25 ↩ सूची.5

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 10 › श्लोक 25 उदाहरण भाग. 7.10.25

प्रह्लादोऽपि तथा चक्रे पितुर्यत् साम्परायिकम्। यथाऽऽह भगवान् राजन्नभिषिक्तो द्विजोत्तमैः।
प्रह्लादस्तु तथाऽकार्षीद् राज्यं निहतकण्टकम्॥

↩ वापस: ↩ आ.25 ↩ सूची.5

आ.26 वन में अर्चि द्वारा अपने पति पृथु महाराज के लिए की गई चिता की व्यवस्था और उदकदान

वक्ता / कथन: मैत्रेय विदुर से उदाहरण

- उदाहरण पृथु महाराज की पत्नी अर्चि सुकुमारी थीं, धरती पर पैदल चलने योग्य नहीं थीं, फिर भी पति का अनुसरण करती हुई वन को गईं (भाग. 4.23.19).
- उदाहरण पति के शरीर को चेतनाहीन हुआ देखकर, थोड़ा विलाप करके, उस साध्वी ने पर्वत-शिखर पर चिता बनाई और पति के शरीर को उस पर रखा (भाग. 4.23.21).
- उदाहरण करने योग्य क्रिया पूरी करके, नदी के जल में स्नान करके, उन्होंने उदारकर्मा पति को उदक (जलांजलि) दिया (भाग. 4.23.22).

श्रीमद्भागवत › चतुर्थस्कन्ध › अध्याय 23 › श्लोक 19 उदाहरण भाग. 4.23.19

अर्चिर्नाम महाराज्ञी तत्पत्न्यनुगता वनम्।
सुकुमार्यतदर्हा च यत् पद्भ्यां स्पर्शनं भुवः॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.26

श्रीमद्भागवत › चतुर्थस्कन्ध › अध्याय 23 › श्लोक 21 उदाहरण भाग. 4.23.21

देहं विपन्नाखिलचेतनादिकं पत्युः पृथिव्या दयितस्य चात्मनः।
आलक्ष्य किञ्चिच्च विलप्य सा सती चितामथारोपयदद्रिसानुनि॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.26 ↩ सूची.4

श्रीमद्भागवत › चतुर्थस्कन्ध › अध्याय 23 › श्लोक 22 उदाहरण भाग. 4.23.22

विधाय कृत्यं हृदिनीजलाप्लुता दत्त्वोदकं भर्तुरुदारकर्मणः।
नत्वा दिविस्थांस्त्रिदशांस्त्रिः परीत्य विवेश वह्निं ध्यायती भर्तृपादम्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.26 ↩ सूची.4

आ.27 बकराज राजधर्मा का राक्षसराज द्वारा कराया गया दाह-संस्कार

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से उदाहरण

- उदाहरण राक्षसराज के सामने राजधर्मा का अस्थिपंजर (कंकाल) रखा गया; उसे देखकर वह राजा मंत्रियों और परिवार सहित शोकग्रस्त हो गया (शान्ति. 171.16).
- उदाहरण उस विद्वान राजा ने राजधर्मा का संस्कार कराया; अनेक सुगंधों से पूजा करके, बिना व्यग्रता के दाह कराया (शान्ति. 172.1).
- उदाहरण जब राक्षसराज ने उस पक्षिराज का दाह किया, तब चिता के पास खड़ी सुरभि के मुख से गिरा दूध का फेन हवा से उड़कर राजधर्मा की चिता पर आ गिरा; उस अमृत से भीगकर, इन्द्रदेव के वचन के कारण बकराज फिर से जीवित हो गया (शान्ति. 172.2, 172.8–9).

महाभारत › शान्तिपर्व › आपद्धर्मपर्व › अध्याय 171, श्लोक 16 उदाहरण KK 12-2-171-16

ततश्चितां बकपतेः कारयामास राक्षसः ।
रत्नैर्गन्धैश्च बहुभिर्वस्त्रैश्च समलङ्कृताम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.27

महाभारत › शान्तिपर्व › आपद्धर्मपर्व › अध्याय 172, श्लोक 1 उदाहरण KK 12-2-172-1

विद्वान्संस्कारयामास पार्थिवो राजधर्मणः ।
गन्धैर्बहुभिरव्यग्रो दाहयामास पूजितम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.27

महाभारत › शान्तिपर्व › आपद्धर्मपर्व › अध्याय 172, श्लोक 2 उदाहरण KK 12-2-172-2

तस्य देवस्य वचनादिन्द्रस्य बकराडिह ।
तेनैवामृतसिक्ताश्च पुनः सञ्जीवितो बकः ॥

↩ वापस: ↩ आ.27

महाभारत › शान्तिपर्व › आपद्धर्मपर्व › अध्याय 172, श्लोक 8 उदाहरण KK 12-2-172-8

दग्धे राक्षसराजेन खगराजे प्रतापिना ।
चितायाः पार्श्वतो दोग्ध्री सुरभिर्जीवयच्च तम् ॥

↩ वापस: ↩ आ.27

महाभारत › शान्तिपर्व › आपद्धर्मपर्व › अध्याय 172, श्लोक 9 उदाहरण KK 12-2-172-9

तस्या वक्त्राच्च्युतः फेनो दुग्धमात्रस्तदाऽनघ ।
समीरणाहृतो यातश्चितां तां राजधर्मणः ॥

↩ वापस: ↩ आ.27

आ.28 बारह वर्ष के अकाल में भी सारस्वत का पितृतर्पण

वक्ता / कथन: वैशंपायन जनमेजय से (बलराम की तीर्थयात्रा) उदाहरण

- उदाहरण बारह वर्ष की भयंकर अनावृष्टि आई, और भूख से सभी महर्षि जीविका के लिए सब दिशाओं में भाग गए (शल्य. 52.36–37)।
- उदाहरण सारस्वत मुनि भी जाना चाहते थे, तब सरस्वती नदी ने कहा, 'यहाँ से मत जाओ, तुम्हें भोजन मैं सदा दूँगी' (शल्य. 52.38–39)।
- उदाहरण उस अकाल में भी सारस्वत ने पितृदेवताओं और देवताओं का तर्पण करते हुए, नित्य भोजन ग्रहण करते हुए अपने प्राणों और वेदों को बनाए रखा (शल्य. 52.40)।

महाभारत › शल्यपर्व › ह्रदप्रवेशपर्व › अध्याय 52, श्लोक 36 उदाहरण KK 9-2-52-36

अथ काले व्यतिक्रान्ते महत्यतिभयङ्करी ।
अनावृष्टिरनुप्राप्ता राजन्द्वादशवार्षिकी ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.28

महाभारत › शल्यपर्व › ह्रदप्रवेशपर्व › अध्याय 52, श्लोक 37 उदाहरण KK 9-2-52-37

तस्यां द्वादशवार्षिक्यामनावृष्ट्यां महर्षयः ।
वृत्त्यर्थं प्राद्रवन्राजन्क्षुधार्ताः सर्वतोदिशम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.28

महाभारत › शल्यपर्व › ह्रदप्रवेशपर्व › अध्याय 52, श्लोक 38 उदाहरण KK 9-2-52-38

दिग्भ्यस्तान्प्रद्रुतान्दृष्ट्वा मुनिः सारस्वतस्तदा।
गमनाय मतिं चक्रे तं प्रोवाच सरस्वती॥

↩ वापस: ↩ आ.28

महाभारत › शल्यपर्व › ह्रदप्रवेशपर्व › अध्याय 52, श्लोक 39 उदाहरण KK 9-2-52-39

न गन्तव्यमितः पुत्र तवाहारमहं सदा।
दास्यामि मत्स्यप्रवरानुष्यतामिह भारत॥

↩ वापस: ↩ आ.28

महाभारत › शल्यपर्व › ह्रदप्रवेशपर्व › अध्याय 52, श्लोक 40 उदाहरण KK 9-2-52-40

इत्युक्तस्तर्पयामास स पितॄन्देवतास्तथा।
आहारमकरोन्नित्यं प्राणान्वेदांश्च धारयन्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ आ.28

आ.29 शूद्र तापस द्वारा किया गया पितृकार्य – उपदेश देने वाले ऋषि को मिला फल

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से; श्लोक 54–55 राजा (पूर्वजन्म में शूद्र) पुरोहित से उदाहरण नियम पाप

- उदाहरण एक शूद्र ने (अपने पास आए) उस तापस से कहा — 'मैं पितृकार्य करने जा रहा हूँ, उस विषय में मुझ पर अनुग्रह कीजिए'; उस विप्र ने 'ठीक है' कहकर स्वीकार किया (अनु. 31.27–28)।
- उदाहरण उस शूद्र ने शुचि होकर ऋषि के लिए पाद्य लाकर, दर्भ, वन की ओषधियाँ, पवित्र आसन और बृसी (दर्भासन) जुटाए (अनु. 31.28–29)।
- उदाहरण नियम दक्षिण दिशा की ओर मुड़कर, सिरा पश्चिम की ओर रखते हुए बृसी को अन्याय से (विधि-विरुद्ध) बिछाते देखकर ऋषि ने कहा — 'इसे पूर्व की ओर सिरा रखकर बिछाओ; तुम शुचि होकर उत्तराभिमुख बैठो'; शूद्र ने वैसा ही किया (अनु. 31.30–31)।
- उदाहरण दर्भ, अर्घ्य आदि से लेकर सारा हव्य-कव्य विधान उस ऋषि ने उपदेश किया, और शूद्र ने उसका यथाविधि पालन करके पितृकार्य पूरा किया और ऋषि को विदा किया (अनु. 31.32–33)।
- उदाहरण अगले जन्म में राजा के रूप में जन्मे उस शूद्र ने पिता की मृत्यु के बाद शौच (अशौच-निवृत्ति) पूरा करके राज्याभिषेक पाया (अनु. 31.38)।
- पाप पूर्वकाल में पितृकार्य में बृसी, दर्भ, हव्य और कव्य के विषय में (मुझे) उपदेश देने के उसी कर्मदोष के कारण वह ऋषि पुरोहित के रूप में जन्मा — ऐसा राजा ने कहा (अनु. 31.54–55)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 27 उदाहरण KK 13-1-31-27

अथ तं तापसं शूद्रः सोऽब्रवीद्भरतर्षभ।
पितृकार्यं करिष्यामि तत्र मेऽनुग्रहं कुरु॥

↩ वापस: ↩ आ.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 28 उदाहरण KK 13-1-31-28

बाढमित्येव तं विप्र उवाच भरतर्षभ।
शुचिर्भूत्वा स शूद्रस्तु तस्यर्षेः पाद्यमानयत्॥

↩ वापस: ↩ आ.29 ↩ आ.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 29 उदाहरण KK 13-1-31-29

अथ दर्भांश्च वन्यांश्च ओषधीर्भरतर्षभ।
पवित्रमासनं चैव बृसीं च समुपानयत्॥

↩ वापस: ↩ आ.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 30 उदाहरण नियम KK 13-1-31-30

अथ दक्षिणमावृत्य बृसीं चरमशैर्षिकीम् ।
कृतामन्यायतो दृष्ट्वा तं शूद्रमृषिरब्रवीत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 31 उदाहरण नियम KK 13-1-31-31

कुरुष्वैतां पूर्वशीर्षां भवांश्चोदङ्मुखः शुचिः ।
स च तत्कृतवाञ्छूद्रः सर्वं यदृषिरब्रवीत् ॥

↩ वापस: ↩ आ.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 32 उदाहरण KK 13-1-31-32

यथोपदिष्टं मेधावी दर्भार्घादि यथातथम् ।
हव्यकव्यविधिं कृत्स्नमुक्तं तेन तपस्विना ॥

↩ वापस: ↩ आ.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 33 उदाहरण KK 13-1-31-33

ऋषिणा पितृकार्येषु सदा धर्मपथे स्थितः ।
पितृकार्ये कृते चापि विसृष्टः स जगाम ह ॥

↩ वापस: ↩ आ.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 38 उदाहरण KK 13-1-31-38

पितर्युपरते चापि कृतशौचस्तु पार्थिवः ।
अभिषिक्तः प्रकृतिभी राजपुत्रः स पार्थिवः ॥

↩ वापस: ↩ आ.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 54 पाप KK 13-1-31-54

प्रीयता हि तदा ब्रह्मन्ममानुग्रहबुद्धिना ।
पितृकार्ये त्वया पूर्वमुपदेशः कृतोऽनघ ॥

↩ वापस: ↩ आ.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 31, श्लोक 55 पाप KK 13-1-31-55

वृस्यां दर्भेषु हव्ये च कव्ये च मुनिसत्तम ।
एतेन कर्मदोषेण पुरोधास्त्वमजायथाः ॥

↩ वापस: ↩ आ.29

(इ) उल्लंघन से पाप और दुर्गति

प्रेतकर्म (अन्त्येष्टि) न करने पर — कर्ता को पाप, मृतक की दुर्गति

इ.1 उदकक्रिया के बिना सगर-पुत्रों की गति नहीं

वक्ता / कथन: भगीरथ गंगा से (लोमश द्वारा युधिष्ठिर को कहा गया) नियम पाप

- पाप कपिल देव के पास जाकर क्षण भर में मरे उन सगर-पुत्रों को, इस प्रकार नष्ट हुए लोगों को, स्वर्गवास नहीं है (अरण्य. 108.18)।
- नियम पाप 'हे महानदी, जब तक तुम उन शरीरों का जल से अभिषेक नहीं करतीं, तब तक उन सागरों (सगर-पुत्रों) की गति नहीं है' (अरण्य. 108.19)।

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 108, श्लोक 18 पाप KK 3-6-108-18

कपिलं देवमासाद्य क्षणेन निधनं गताः।
तेषामेवं विनष्टानां स्वर्गे वासो न विद्यते॥

↩ वापस: ↩ इ.1

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 108, श्लोक 19 नियम पाप KK 3-6-108-19

यावत्तानि शरीराणि त्वं जलैर्नाभिषिञ्चसि।
तावत्तेषां गतिर्नास्ति सागराणां महानदि॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.1

श्राद्ध-तर्पण न करने से होने वाला पाप

इ.2 सन्तान न होने पर पिण्ड का टूट जाना, पितृदेवताओं का दुःख

वक्ता / कथन: विभिन्न वक्ता (सौति, शकुन्तला, ब्राह्मण परिवार, सत्यवती, पाण्डु) उदाहरण नियम पाप पुण्य

- उदाहरण पाप जरत्कारु ने अपने पितृदेवताओं को गड्ढे में उलटे लटकते हुए देखा; उन्होंने कहा कि सन्तान के क्षीण होने से हम अशुचि नरक में गिर रहे हैं, और उससे कहने का अनुरोध किया कि वह पत्नी स्वीकार करके सन्तान उत्पन्न करे (आदि. 45.3; 45.13; 45.22)।
- नियम पुण्य सन्तान पूर्वज प्रेतों और पितामहों का उद्धार करती है; 'पुत्' नामक नरक से पिता की रक्षा करने वाला होने के कारण 'पुत्र' कहलाता है, ऐसा स्वयम्भू ने कहा (आदि. 98.19–20)।
- नियम पुण्य धर्मकार्य करने वाले पुत्र जन्म लेकर धर्म की नौका बनकर पितृदेवताओं की नरक से रक्षा करते हैं (आदि. 99.27)।
- नियम एकचक्रा के ब्राह्मण ने कहा कि पुत्र 'पिण्डोदक की निधि' है (आदि. 171.60)।
- नियम पाप यदि पिता और छोटा भाई दोनों न हों तो पितृदेवताओं का पिण्ड टूट जाता है, जो उन्हें अप्रिय है; पिता जीवित रहे तो सन्तान और पिण्ड बने रहते हैं, ऐसा ब्राह्मण कन्या ने कहा (आदि. 173.8; 173.10)।
- उदाहरण सत्यवती चिन्तित हुई कि शन्तनु का पिण्ड-विच्छेद न हो, यह कैसे हो; उन्होंने भीष्म से कहा, 'पिण्ड, कीर्ति और सन्तान तुम पर ही टिके हैं' (आदि. 63.55; 112.3)।
- उदाहरण अपने और पूर्वजों के पिण्ड नष्ट न हों, इसके लिए पाण्डु ने कुन्ती से अनुरोध किया कि माद्री को सन्तान प्राप्त कराए (आदि. 133.10)।

महाभारत › आदिपर्व › आस्तीकपर्व › अध्याय 45, श्लोक 3 उदाहरण पाप KK 1-5-45-3

वायुभक्षो निराहारः शुष्यन्नहरहर्मुनिः।
सं ददर्श पितॄनार्ते लम्बमानानधोमुखान्॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › आस्तीकपर्व › अध्याय 45, श्लोक 13 उदाहरण पाप KK 1-5-45-13

अस्ति नस्तात तपसः फलं प्रवदतां वर।
संतानप्रक्षयाद्ब्रह्मन्पतामो निरयेऽशुचौ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › आस्तीकपर्व › अध्याय 45, श्लोक 22 उदाहरण पाप KK 1-5-45-22

पितरस्तेऽवलम्बन्ते गर्ते दीना अधोमुखाः ।
साधु दारान्कुरुष्वेति प्रजायस्वेति चाभि भोः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 98, श्लोक 19 नियम पुण्य KK 1-7-98-19

यदागमवतः पुंसस्तदपत्यं प्रजायते ।
तत्तारयति सन्तत्या पूर्वप्रेतान्पितामहान् ॥

↩ वापस: ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 98, श्लोक 20 नियम पुण्य KK 1-7-98-20

पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात्पितरं त्रायते सुतः ।
तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः पूर्वमेव स्वयम्भुवा ॥

↩ वापस: ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 99, श्लोक 27 नियम पुण्य KK 1-7-99-27

धर्मकृत्यवहा नृणां मनसः प्रीतिवर्धनाः ।
त्रायन्ते नरकाज्जाताः पुत्रा धर्मप्लवाः पितॄन् ॥

↩ वापस: ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › बकवचपर्व › अध्याय 171, श्लोक 60 नियम KK 1-10-171-60

मम पिण्डोदकनिधिं कथं त्यक्ष्यामि पुत्रकम् ।
त्यागोऽयं मम सम्प्राप्तो मम वा मे सुतस्य वा ॥

↩ वापस: ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › बकवधपर्व › अध्याय 173, श्लोक 8 नियम पाप KK 1-10-173-8

तातेपि हि गते स्वर्गं विनष्टे च ममानुजे ।
पिण्डः पितॄणां व्युच्छिद्येत्ततेषां विप्रियं भवेत् ॥

↩ वापस: ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › बकवधपर्व › अध्याय 173, श्लोक 10 नियम पाप KK 1-10-173-10

त्वयि त्वरोगे निर्मुक्तो माता भ्राता च मे शिशुः ।
सन्तानश्चैव पिण्डश्च प्रतिष्ठास्यत्यसंशयम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › अंशावतरणपर्व › अध्याय 63, श्लोक 55 उदाहरण KK 1-6-63-55

ततः सत्यवती चिन्तयामास कथं नु खलु शन्तनोः पिण्डविच्छेदो न स्यादिति ॥

↩ वापस: ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 112, श्लोक 3 उदाहरण KK 1-7-112-3

दुःखार्दिता तु सा देवी मज्जन्ती शोकसागरे ।
शन्तनोर्धर्मनित्यस्य कौरव्यस्य यशस्विनः ।
त्वयि पिण्डश्च कीर्तिश्च सन्तानश्च प्रतिष्ठितः ॥

↩ वापस: ↩ इ.2

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 133, श्लोक 10 उदाहरण KK 1-7-133-10

मम चापिण्डनाशाय पूर्वेषां च महात्मनाम् ।
मत्प्रियार्थं च कल्याणि कुरु कल्याणमुत्तमम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.2

इ.3 अष्टका आदि से पितृपूजा न करने आदि दोषों से संतानहीनता

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से (नियम) (पाप)

- नियम उमादेवी ने पूछा कि कुछ लोग कितना भी प्रयत्न करें, संतान क्यों नहीं पाते (अनु. 221.11).
- पाप पूर्वकाल में प्राणियों के प्रति निर्दयता से व्यवहार करने वाले, गुरुद्वेषी, दूसरों के पुत्रों से ईर्ष्या करने वाले, और शास्त्रोक्त रीति से अष्टका आदि से पितृपूजा न करने वाले — फिर से मनुष्य-जन्म पाने पर संतानहीन होते हैं और पुत्रशोक भोगते हैं (अनु. 221.12–14).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 221, श्लोक 11 नियम KK 13-1-221-11

उमोवाच —

।

भगवन्मानुषाः केचिन्निरपत्याः सुदुःखिताः ।
यतन्तो न लभन्त्येव अपत्यानि यतस्ततः ।
केन कर्मविपाकेन तन्मे शंसितुमर्हसि ॥

↩ वापस: ↩ इ.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 221, श्लोक 12 पाप KK 13-1-221-12

ये पुरा मनुजा देवि सर्वप्राणिषु निर्दयाः ।
घ्नन्ति बालांश्च भुञ्जन्ते मृगाणां पक्षिणामपि ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 221, श्लोक 13 पाप KK 13-1-221-13

गुरुविद्वेषिणश्चैव परपुत्राभ्यसूयकाः ।
पितृपूजां न कुर्वन्ति यथोक्तां चाष्टकादिभिः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 221, श्लोक 14 पाप KK 13-1-221-14

एवंयुक्तसमाचाराः पुनर्जन्मनि शोभने ।
मानुष्यं वा चिरात्प्राप्य निरपत्या भवन्ति ते ।
पुत्रशोकयुताश्चापि नास्ति तत्र विचारणा ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.3

इ.4 कुलनाश से पिंडोदक-क्रियाओं का लोप और पितरों का पतन

वक्ता / कथन: अर्जुन श्रीकृष्ण से (भगवद्गीता) (पाप)

- पाप कुल का नाश करने वालों से उत्पन्न संकर उन्हें और उनके कुल को नरक में ही पहुँचाता है; पिंडोदक-क्रियाओं के लुप्त होने से उनके पितर पतित हो जाते हैं (भीष्म. 25.42)।

महाभारत › भीष्मपर्व › भगवद्गीतापर्व › अध्याय 25, श्लोक 42 पाप KK 6-3-25-42

सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.4

इ.5 पितरों का श्राद्ध न करने वाला मूढ़ है

वक्ता / कथन: विदुर धृतराष्ट्र से पाप

- पाप बड़े लोग कहते हैं कि जो पितरों का श्राद्ध नहीं करता, देवताओं की पूजा नहीं करता और मित्र नहीं बना पाता, वह मूढ़चित्त है (उद्योग. 33.43)।

महाभारत › उद्योगपर्व › प्रजागरपर्व › अध्याय 33, श्लोक 43 पाप KK 5-3-33-43

श्राद्धं पितृभ्यो न ददाति दैवतानि न चार्चति।
सुहृन्मित्रं न लभते तमाहुर्मूढचेतसम्॥

↩ वापस: ↩ अ ↩ इ.5

इ.6 पितृ-देव पूजा छोड़ने वाले नरक को जाते हैं

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से पाप

- पाप पत्नी, अग्नि, सेवकों और अतिथियों को छोड़कर स्वयं पहले खाने वाले, और पितृ-देव पूजा को त्याग देने वाले नरक को जाते हैं (अनु. 62.27)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 62, श्लोक 27 पाप KK 13-1-62-27

पर्यश्नन्ति च ये दारानग्निभृत्यातिथींस्तथा।
उत्सन्नपितृदेवेज्यास्ते वै निरयगामिनः॥

↩ वापस: ↩ इ.6

इ.7 पितृकर्म छोड़कर संन्यास लेने से होने वाला दोष

वक्ता / कथन: भीम, नकुल युधिष्ठिर से; भीष्म युधिष्ठिर से पाप

- पाप महायज्ञ किए बिना, पितरों को स्वधा अर्पित किए बिना, तीर्थों में स्नान किए बिना संन्यास लोगे तो हवा से बिखरे बादल की भाँति दोनों लोकों से भ्रष्ट होकर बीच में ही नष्ट हो जाओगे — ऐसी नकुल ने चेतावनी दी (शान्ति. 12.52–53)।

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 12, श्लोक 52 पाप KK 12-1-12-52

अनिष्ट्वा च महायज्ञैरकृत्वा च पितृस्वधाम्।
तीर्थेष्वनभिसम्प्लुत्य प्रव्रजिष्यसि चेत्प्रभो॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.7

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 12, श्लोक 53 पाप KK 12-1-12-53

छिन्नाभ्रमिव गन्तासि विलयं मारुतेरितम्।
लोकयोरुभयोर्भ्रष्टो ह्यन्तराले व्यवस्थितः॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.7

इ.8 पितृ-देव-अतिथियों को बाँटे बिना खाने वाले दानवों को श्री ने त्याग दिया

वक्ता / कथन: श्रीदेवी इन्द्र से पाप

- पाप वे हव्य-कव्य से रहित हो गए और ज्ञान का अध्ययन छोड़ दिया (शान्ति. 235.78)।
- पाप वेदवेत्ता प्राज्ञ कृषि आदि में डूब गए, और मूर्ख श्राद्धों में भोजन करने लगे (शान्ति. 235.96)।
- पाप ऐसे विपरीत आचारों के कारण श्रीदेवी ने निश्चय किया कि वे दानवों के पास निवास नहीं करेंगी (शान्ति. 235.103)।

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 235, श्लोक 78 पाप KK 12-3-235-78

हव्यकव्यविहीनाश्च ज्ञानाध्ययनवर्जिताः।
देवस्वादानरुचयो ब्रह्मस्वरुचयस्तथा।
स्तुतिमङ्गलहीनानि देवस्थानानि सर्वशः॥

↩ वापस: ↩ इ.8

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 235, श्लोक 96 पाप KK 12-3-235-96

तत्र वेदविदः प्राज्ञा गाम्भीर्ये सागरोपमाः ।
कृष्यादिष्वभवन्सक्ता मूर्खाः श्राद्धान्यभुञ्जत ॥

↩ वापस: ↩ इ.8

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 235, श्लोक 103 पाप KK 12-3-235-103

तेष्वेवमादीनाचारानाचरत्सु विपर्यये ।
नाहं देवेन्द्र वत्स्यामि दानवेष्विति मे मतिः ॥

↩ वापस: ↩ इ.8

इ.9 देव-पितृ कार्य किए बिना खाने वाला कौआ बनकर जन्म लेता है

वक्ता / कथन: बृहस्पति युधिष्ठिर से (भीष्म द्वारा कहा गया) पाप

- पाप देवकार्य या पितृकार्य किए बिना, (उन्हें) निवेदन किए बिना स्वयं भोजन करने वाला मरने के बाद कौआ बनकर जन्म लेता है (अनु. 173.84)।
- पाप सौ वर्ष कौआ, फिर मुर्गा, फिर एक मास सर्प बनकर जन्म लेता है, और उसके बाद ही मनुष्य बनकर जन्म लेता है (अनु. 173.85)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 173, श्लोक 84 पाप KK 13-1-173-84

देवकार्यमकृत्वा तु पितृकार्यमथापि वा ।
अनिर्वाप्य समश्नन्वै मृतो जायति वायसः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.9

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 173, श्लोक 85 पाप KK 13-1-173-85

वायसः शतवर्षाणि ततो जायति कुक्कुटः ।
जायते व्यालकश्चापि मासं तस्मात्तु मानुषः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.9

इ.10 श्राद्ध न करने वाले पूर्वजन्म को याद करके पछताने वाला कीट

वक्ता / कथन: कीट (पूर्वजन्म में शूद्र) व्यास से उदाहरण पाप

- उदाहरण उस कीट ने कहा कि पूर्वजन्म में वह धनवान, क्रूर और लोभी शूद्र था (अनु. 179.19)।
- उदाहरण पाप अपने दुष्कर्मों में उसने बताया कि उसने न देवताओं के लिए और न पितृयज्ञ के लिए श्राद्ध किया, और अन्न माँगने वालों को अन्न नहीं दिया (अनु. 179.22)।
- पाप उसने कहा कि ऐसे क्रूर कर्मों को याद करके वह अब (कीट-जन्म में) पछता रहा है (अनु. 179.26)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 179, श्लोक 19 उदाहरण KK 13-1-179-19

अहमासं मनुष्यो वै शूद्रो बहुधनः प्रभो ।
अब्रह्मण्यो नृशंसश्च कदर्यो बुद्धिजीवनः ॥

↩ वापस: ↩ इ.10

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 179, श्लोक 22 उदाहरण पाप KK 13-1-179-22

देवार्थं पितृयज्ञार्थं न च श्राद्धं कृतं मया ।
न दत्तमन्नकामेषु दत्तमन्नं लुनामि च ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.10

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 179, श्लोक 26 पाप KK 13-1-179-26

नृशंसगुणभूयिष्ठं पुरा कर्म कृतं मया ।
स्मृत्वा तदनुतप्येऽहं हित्वा प्रियमिवात्मजम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.10

इ.11 युगान्त में श्राद्ध का लोप

वक्ता / कथन: मार्कण्डेय युधिष्ठिर से नियम पाप

- नियम पाप युगक्षय में श्राद्ध और दैव कार्यों में नित्य व्रतनिष्ठ रहने वाले भी लोभ से परस्पर भोजन करते हैं (अरण्य. 193.24)।
- नियम पाप युगान्त में सारा लोक म्लेच्छमय हो जाता है, और मनुष्य श्राद्ध में न देवताओं को तृप्त करते हैं न पितरों को (अरण्य. 193.46)।

महाभारत › अरण्यपर्व › मार्कण्डेयसमास्यापर्व › अध्याय 193, श्लोक 24 नियम पाप KK 3-11-193-24

श्राद्धे दैवे च पुरुषा येऽपि नित्यं धृतव्रताः।
तेऽपि लोभसमायुक्ता भोक्ष्यन्तीह परस्परम्॥

↩ वापस: ↩ इ.11

महाभारत › अरण्यपर्व › मार्कण्डेयसमास्यापर्व › अध्याय 193, श्लोक 46 नियम पाप KK 3-11-193-46

म्लेच्छभूतं जगत्सर्वं भविष्यति युधिष्ठिर।
श्राद्धे न देवान्न पितॄंस्तर्पयिष्यन्ति मानवाः॥

↩ वापस: ↩ इ.11

श्राद्ध को गलत ढंग से करने से होने वाला दोष और पाप

इ.12 अपांक्तेय — पंक्ति को दूषित करने वाले ब्राह्मण

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- नियम कुछ पंक्तिदूषक होते हैं, कुछ पंक्तिपावन; मैं अपांक्तेयों को बताता हूँ (अनु. 137.5).
- नियम जुआरी, भ्रूणहत्यारा, यक्ष्मारोगी, पशुपालक, निराकृति, ग्रामसेवक, सूदखोर, गायक, सब कुछ बेचने वाला; घर जलाने वाला, विष देने वाला, कुण्डाशी, सोमविक्रयी, सामुद्रिक, राजसेवक, तैलिक, कूटकारक (कपट-कार्य करने वाला) (अनु. 137.6–7).
- नियम पिता से (संपत्ति का) बँटवारा करने वाला, जिसके घर में उपपति हो, अभिशस्त, चोर, शिल्प से जीविका चलाने वाला; पर्वकार, सूची (सूचक), मित्रद्रोही, परदारगामी, व्रतहीनों का उपाध्याय, काण्डपृष्ठ (अनु. 137.8–9).
- नियम कुत्तों के साथ घूमने वाला, कुत्ते का काटा हुआ, परिवित्ति, दुश्चर्मी, गुरुतल्पग, कुशीलव, देवलक, नक्षत्रों से जीविका चलाने वाला (अनु. 137.10).
- पाप ब्रह्मवादी कहते हैं कि ऐसे अपांक्तेयों द्वारा खाया गया हव्य राक्षसों को पहुँचता है (अनु. 137.11).
- नियम शूद्रों को उपदेश देने वाले अल्पबुद्धि लोगों को भी अपांक्तेय अधम द्विज जानना चाहिए (अनु. 137.17).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 5 नियम KK 13-1-137-5

तेषामन्ये पङ्क्तिदूष्यास्तथाऽन्ये पङ्क्तिपावनाः।
अपाङ्क्तेयास्तु ये राजन्कीर्तयिष्यामि ताञ्शृणु॥

↩ वापस: ↩ इ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 6 नियम KK 13-1-137-6

कितवो भ्रूणहा यक्ष्मी पशुपालो निराकृतिः।
ग्रामप्रेष्यो वार्धुषिको गायनः सर्वविक्रयी॥

↩ वापस: ↩ इ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 7 नियम KK 13-1-137-7

अगारदाही गरदः कुण्डाशी सोमविक्रयी।
सामुद्रिको राजभृत्यस्तैलिकः कूटकारकः॥

↩ वापस: ↩ इ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 8 नियम KK 13-1-137-8

पित्रा विभजमानश्च यस्य चोपपतिर्गृहे ।
अभिशस्तस्तथा स्तेनः शिल्पं यश्चोपजीवति ॥

↩ वापस: ↩ इ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 9 नियम KK 13-1-137-9

पर्वकारश्च सूची च मित्रध्रुक् पारदारिकः ।
अव्रतानामुपाध्यायः काण्डपृष्ठस्तथैव च ॥

↩ वापस: ↩ इ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 10 नियम KK 13-1-137-10

श्वभिश्च यः परिक्रामेद्यः शुना दष्ट एव च ।
परिवित्तिश्च यश्च स्याद्दुश्चर्मा गुरुतल्पगः ।
कुशीलवो देवलको नक्षत्रैर्यश्च जीवति ॥

↩ वापस: ↩ इ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 11 पाप KK 13-1-137-11

ईदृशैर्ब्राह्मणैर्भुक्तमपाङ्क्तैर्युधिष्ठिर ।
रक्षांसि गच्छते हव्यमित्याहुर्ब्रह्मवादिनः ॥

↩ वापस: ↩ इ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 17 नियम KK 13-1-137-17

एतानिमान्विजानीयादपाङ्क्तयान्द्विजाधमान् ।
शूद्राणामुपदेशं च ये कुर्वन्त्यल्पचेतसः ॥

↩ वापस: ↩ इ.12

इ.13 अयोग्यों को श्राद्ध देने पर, श्राद्धभोक्ता के नियम तोड़ने पर — पितरों की दुर्गति

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से पाप

- पाप श्राद्ध खाकर (उस दिन) वेदाध्ययन करने वाला, वृषली की शय्या पर जाने वाला — उनके पितर उस पूरे मास उनके मल में पड़े रहते हैं (अनु. 137.12)।
- पाप सोमविक्रयी को दिया गया मल बन जाता है, वैद्य को दिया गया पीब-रक्त बन जाता है (अनु. 137.13)।
- पाप देवलक को दिया गया नष्ट हो जाता है, ब्याज के व्यापारी को दिया गया टिकता नहीं, व्यापारी को दिया गया न इहलोक में रहता है न परलोक में; पुनर्भू-पुत्र द्विज को दिया गया राख में किए गए होम के समान है (अनु. 137.14)।
- पाप धर्महीनों और चरित्रहीनों को हव्य-कव्य देने वालों का वह (दान) मृत्यु के बाद नष्ट हो जाता है (अनु. 137.15)।
- पाप जानते हुए भी ऐसे लोगों को देने वाले अल्पबुद्धियों के पितर मृत्यु के बाद निश्चय ही मल खाते हैं (अनु. 137.16)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 12 पाप KK 13-1-137-12

श्राद्धं भुक्त्वा त्वधीयीत वृषलीतल्पगश्च यः ।
पुरीषे तस्य ते मासं पितरस्तस्य शेरते ।

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.13

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 13 पाप KK 13-1-137-13

सोमविक्रयिणे विष्ठा भिषजे पूयशोणितम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.13

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 14 पाप KK 13-1-137-14

नष्टं देवलके दत्तमप्रतिष्ठं च वार्धुषे ।
यत्तु वाणिजके दत्तं नेह नामुत्र तद्भवेत् ।
भस्मनीव हुतं हव्यं तथा पौनर्भवे द्विजे ॥

↩ वापस: ↩ इ.13

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 15 पाप KK 13-1-137-15

ये तु धर्मव्यपेतेषु चारित्रापगतेषु च ।
हव्यं कव्यं प्रयच्छन्ति येषां तत्प्रेत्य नश्यति ॥

↩ वापस: ↩ इ.13

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 16 पाप KK 13-1-137-16

ज्ञानपूर्वं तु ये तेभ्यः प्रयच्छन्त्यल्पबुद्धयः ।
पुरीषं भुञ्जते तस्य पितरः प्रेत्य निश्चयः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.13

इ.14 पंक्तिदूषण, आसुर भोजन, तिलरहित श्राद्ध

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- पाप पंक्ति में बैठने पर एक आँख वाला साठ लोगों को, षंड सौ लोगों को, और श्वित्री जितनों को देखता है उतनों को दूषित करता है (अनु. 137.18)।
- पाप पगड़ी बाँधकर, दक्षिणाभिमुख होकर और जूते पहनकर जो कुछ खाया जाता है, वह सब आसुर हो जाता है (अनु. 137.19)।
- पाप ईर्ष्या से और श्रद्धा के बिना जो कुछ दिया जाता है, उसे ब्रह्मा ने असुरेंद्र के भाग के रूप में निर्धारित किया है (अनु. 137.20)।
- नियम ऐसी घिरी हुई जगह में देना चाहिए कि कुत्ते और पंक्तिदूषक न देख सकें, और चारों ओर तिल छिड़कने चाहिए (अनु. 137.21)।
- पाप तिल के बिना और क्रोध से किए गए श्राद्ध की हवि को यातुधान और पिशाच लूट लेते हैं (अनु. 137.22)।
- पाप अपांक्तेय व्यक्ति भोजन करते हुए जितने पांक्तेयों को देखता है, उतने फल से वह मूर्ख दाता को भ्रष्ट कर देता है (अनु. 137.23)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 18 पाप KK 13-1-137-18

षष्टिं काणः शतं षण्डः श्वित्री यावत्प्रपश्यति ।
पङ्क्त्यां समुपविष्टायां तावद्दूषयते नृप ॥

↩ वापस: ↩ इ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 19 पाप KK 13-1-137-19

यद्वेष्टितशिरा भुङ्क्ते यद्भुङ्क्ते दक्षिणामुखः ।
सोपानत्कश्च यद्भुङ्क्ते सर्वं विद्यात्तदासुरम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 20 पाप KK 13-1-137-20

असूयता च यदत्तं यच्च श्रद्धाविवर्जितम् ।
सर्वं तदसुरेन्द्राय ब्रह्मा भागमकल्पयत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 21 नियम KK 13-1-137-21

श्वानश्च पङ्क्तिदूषाश्च नावेक्षेरन्कथञ्चन ।
तस्मात्परिसृते दद्यात्तिलांश्चान्ववकीरयेत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ इ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 22 पाप KK 13-1-137-22

तिलैर्विरहितं श्राद्धं कृतं क्रोधवशेन च ।
यातुधानाः पिशाचाश्च विप्रलुम्पन्ति तद्धविः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 23 पाप KK 13-1-137-23

अपाङ्क्तो यावतः पाङ्क्तान्भुञ्जाननुपश्यति ।
तावत्फलाद्भ्रंशयति दातारं तस्य बालिशम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.14

इ.15 श्राद्ध के अयोग्य ब्राह्मण; अतिथि को निराश करना

वक्ता / कथन: देवता (ऋषियों से; भीष्म द्वारा कहा गया रहस्यधर्म) नियम पाप

- नियम राजसेवक, घाण्टिक (घंटा बजाकर जीविका चलाने वाला), परिचारक, गोरक्षक, व्यापारी, कारु/नट, मित्रद्रोही, वेदाध्ययन-रहित, वृषलीपति — ऐसे ब्राह्मणों को दैव या पित्र्य किसी भी स्थिति में नहीं देना चाहिए (अनु. 189.23–24).
- पाप ऐसा देने वाले के पिण्डदाता क्षीण हो जाते हैं; वह पितरों को तृप्त नहीं कर पाता (अनु. 189.24).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 189, श्लोक 23 नियम KK 13-1-189-23

राजपौरुषिके विप्रे घाण्टिके परिचारिके ।
गोरक्षके वाणिजके तथा कारुकुशीलवे ॥

↩ वापस: ↩ इ.15

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 189, श्लोक 24 नियम पाप KK 13-1-189-24

मित्रद्रुह्यनधीयाने यश्च स्याद्वृषलीपतिः ।
एतेषु दैवं पित्र्यं वा न देयं स्यात्कथञ्चन ।
पिण्डदास्तस्य हीयन्ते न च प्रीणाति वै पितॄन् ॥

↩ वापस: ↩ इ.15 ↩ इ.15

इ.16 मित्रों के लिए किया गया श्राद्ध, अयोग्य दक्षिणा — फल का नाश

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- पाप मित्रों को ही प्रधान बनाकर किए गए श्राद्ध और हवियाँ पितरों और देवताओं को तृप्त नहीं करतीं; वह स्वर्ग नहीं जाता (अनु. 137.42)।
- पाप श्राद्ध में मित्रता के संबंध जोड़ने वाला देवयान मार्ग से नहीं जाता; डंठल से टूटे पीपल के फल की भाँति वह 'श्राद्धमित्र' स्वर्गलोक से गिर पड़ता है (अनु. 137.43)।
- नियम इसलिए श्राद्धकर्ता (श्राद्ध में) मित्र का आदर न करे; मित्रता के लिए मित्रों को अलग से धन दिया जा सकता है; जो न शत्रु है न मित्र, ऐसे मध्यस्थ को हव्य-कव्य में भोजन कराना चाहिए (अनु. 137.44)।
- पाप जैसे ऊसर भूमि में बोया बीज नहीं उगता, वैसे ही अयोग्य लोगों द्वारा खाया गया श्राद्ध इहलोक और परलोक में फल नहीं देता (अनु. 137.45)।
- नियम पाप वेद न पढ़ने वाला ब्राह्मण घास की आग की तरह बुझ जाता है; उसे श्राद्ध नहीं देना चाहिए — राख में होम नहीं किया जाता (अनु. 137.46)।
- पाप 'संभोजनी' (साथ मिलकर खाना) पिशाच-दक्षिणा है; वह देवताओं और पितरों तक न पहुँचकर, बछड़ा खो चुकी गाय की तरह यहीं भटकती रहती है (अनु. 137.47)।
- पाप बुझी हुई अग्नि में डाले गए घी की भाँति, नर्तक और गायक को दिया गया, और असत्य के लिए दी गई दक्षिणा देवताओं और पितरों तक नहीं पहुँचती; ऐसी दक्षिणा दोनों की हिंसा करती है और उनके प्रेतों को देवयान से गिरा देती है (अनु. 137.48–49)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 42 पाप KK 13-1-137-42

यस्य मित्रप्रधानानि श्राद्धानि च हवींषि च ।
न प्रीणन्ति पितॄन्देवान्स्वर्गं च न स गच्छति ॥

↩ वापस: ↩ इ.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 43 पाप KK 13-1-137-43

यश्च श्राद्धे कुरुते सङ्गतानि न देवयानेन पथा स याति ।
स वै मुक्तः पिप्पलं बन्धनाद्वा स्वर्गाल्लोकच्च्यवते श्राद्धमित्रः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 44 नियम KK 13-1-137-44

तस्मान्मित्रं श्राद्धकृन्नाद्रियेत दद्यान्मित्रेभ्यः सङ्ग्रहार्थं धनानि ।
यन्मन्यते नैव शत्रुं न मित्रं तं मध्यस्थं भोजयेद्धव्यकव्ये ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ इ.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 45 पाप KK 13-1-137-45

यथोषरे बीजमुप्तं न रोहेन्नचावप्ता प्राप्नुयाद्बीजभागम् ।
एवं श्राद्धं भुक्तमनर्हमाणैर्न चेह नामुत्र फलं ददाति ॥

↩ वापस: ↩ इ.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 46 नियम पाप KK 13-1-137-46

ब्राह्मणो ह्यनधीयानस्तृणाग्निरिव शाम्यति ।
तस्मै श्राद्धं न दातव्यं न हि भस्मनि हूयते ॥

↩ वापस: ↩ इ.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 47 पाप KK 13-1-137-47

सम्भोजनी नाम पिशाचदक्षिणा सा नैव देवान्न पितॄनुपैति ।
इहैव सा भ्राम्यति हीनपुण्या शालान्तरे गौरिव नष्टवत्सा ॥

↩ वापस: ↩ इ.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 48 पाप KK 13-1-137-48

यथाऽग्नौ शान्ते घृतमाजुहोति तन्नैव देवान्न पितॄनुपैति ।
तथा दत्तं नर्तके गायके च यां चानृते दक्षिणामावृणोति ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 49 पाप KK 13-1-137-49

उभौ हिनस्ति न भुनक्ति चैषा या चानृते दक्षिणा दीयते वै ।
आघातिनी गर्हितैषा पतन्ती तेषां प्रेतान्पातयेद्वेवयानात् ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.16

इ.17 मन्त्ररहित और अन्याय से दिए गए हव्य-कव्य किसे प्राप्त होते हैं

वक्ता / कथन: नारद–मार्कण्डेय संवाद — भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप पुण्य

- नियम पुण्य मन्त्र से पवित्र हव्य और कव्य कभी नष्ट नहीं होते; न्याय से देने वाले से देवता उसे स्वीकार करते हैं; ऐसा देने वाला दाता सब कामनाएँ पाकर स्वर्ग में पूजित होता है (अनु. 54.19–20)।
- पाप मन्त्रहीन और अन्याय से दिया गया — ब्राह्मण दें तो असुरों को, क्षत्रिय दें तो राक्षसों को, वैश्य दें तो प्रेतों को, शूद्र दें तो भूतों को पहुँचता है (अनु. 54.21–22)।
- पाप हीन वर्ण में जन्म लेकर (वर्णावरे जाताः) चातुर्वर्ण्य को उपदेश देने वालों द्वारा दिए गए हव्य-कव्य को न देवता स्वीकार करते हैं न पितर; वे यातुधानों, पिशाचों, भूतों और नैर्ऋतों की वृत्ति के रूप में निर्धारित हैं (अनु. 54.23–25)।
- नियम पुण्य विधिपूर्वक और एकाग्रता से दिए गए हव्य-कव्य को देवता भोगते हैं (अनु. 54.26)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 54, श्लोक 19 नियम पुण्य KK 13-1-54-19

मन्त्रपूतं सदा हव्यं कव्यं चैव न नश्यति।
प्रतिगृह्णन्ति तद्देवा दातुर्न्यायात्प्रयच्छतः॥

↩ वापस: ↩ इ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 54, श्लोक 20 नियम पुण्य KK 13-1-54-20

सत्वयुक्तं च दाता च सर्वान्कामानवाप्नुयात्।
अवाप्तकामः स्वर्गे च महीयेत यथेप्सितम्॥

↩ वापस: ↩ इ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 54, श्लोक 21 पाप KK 13-1-54-21

चत्वारो ह्यथ ये वर्णा हव्यं कव्यं प्रदास्यति।
मन्त्रहीनमपन्यायं तेषां दत्तं क्व गच्छति॥

↩ वापस: ↩ इ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 54, श्लोक 22 पाप KK 13-1-54-22

असुरान्गच्छते दत्तं विप्रै रक्षांसि क्षत्रियैः।
वैश्यैः प्रेतानि वै दत्तं शूद्रैर्भूतानि गच्छति॥

↩ वापस: ↩ इ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 54, श्लोक 23 पाप KK 13-1-54-23

अथ वर्णावरे जाताश्चातुर्वर्ण्योपदेशिनः।
दास्यन्ति हव्यकव्यानि तेषां दत्तं क्व गच्छति

↩ वापस: ↩ इ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 54, श्लोक 24 पाप KK 13-1-54-24

वर्णावराणां भूतानां हव्यकव्यप्रदातृणाम्।
नैव देवा न पितरः प्रतिगृह्णन्ति तत्स्वयम्॥

↩ वापस: ↩ इ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 54, श्लोक 25 पाप KK 13-1-54-25

यातुधानाः पिशाचाश्च भूता ये चापि नैर्ऋताः।
तेषां सा विहिता वृत्तिः पितृदैवतनिर्गताः॥

↩ वापस: ↩ इ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 54, श्लोक 26 नियम पुण्य KK 13-1-54-26

तेषां सर्वप्रदातृणां हव्यकव्यं समाहिताः।
यत्प्रयच्छन्ति विधिवत्तद्वै भुञ्जन्ति देवताः॥

↩ वापस: ↩ इ.17

इ.18 राक्षसों का भाग बनने वाला श्राद्धान्न

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- पाप जिसे लाँघा गया हो, जिसे चाटा गया हो, जिसे रजस्वला ने देखा हो — ऐसा अन्न राक्षसों का भाग है (अनु. 61.4)।
- पाप ढिंढोरा पीटकर (बुलाकर) खिलाया गया, व्रतहीन द्वारा खाया गया, कुत्ते द्वारा छुआ गया; बाल या कीड़े गिरा हुआ, छींका गया, कुत्तों द्वारा देखा गया, रोने के साथ दिया गया, झटका गया — यह राक्षसों का भाग है (अनु. 61.5–6)।
- पाप ओंकार-रहित, शस्त्रधारी और दुरात्मा द्वारा खाया गया; दैव और पित्र्य में दूसरों का जूठा, दूसरों द्वारा खाकर छोड़ा गया — यह राक्षसों का भाग है (अनु. 61.7–8)।
- पाप तीनों वर्णों द्वारा मंत्रहीन और क्रियाहीन रूप से परोसा गया श्राद्ध; आज्याहुति के बिना परोसा गया; दुराचारियों द्वारा खाया गया — यह राक्षसों का भाग है (अनु. 61.9–10)।
- नियम भीष्म ने कहा कि ये राक्षसों के भाग हैं; अब ब्राह्मणों की परीक्षा सुनो (अनु. 61.11)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 4 पाप KK 13-1-61-4

लङ्घितं चावलीढं च लाकपूर्वं च यत्कृतम्।
रजस्वलाभिदृष्टं च तं भागं रक्षसां विदुः॥

↩ वापस: ↩ इ.18

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 5 पाप KK 13-1-61-5

अवघुष्टं च यद्भुक्तमव्रतेन च भारत।
परामृष्टं शुना चैव तं भागं रक्षसां विदुः॥

↩ वापस: ↩ इ.18

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 6 पाप KK 13-1-61-6

केशकीटावपतितं क्षुतं श्वभिरवेक्षितम्।
रुदितं चावधूतं च तं भागं रक्षसां विदुः॥

↩ वापस: ↩ इ.18

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 7 पाप KK 13-1-61-7

निरोङ्कारेण यद्भुक्तं सशस्त्रेण च भारत।
दुरात्मना च यद्भुक्तं तं भागं रक्षसां विदुः॥

↩ वापस: ↩ इ.18

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 8 पाप KK 13-1-61-8

परोच्छिष्टं च यद्भुक्तं परिभुक्तं च यद्भवेत्।
दैवे पित्र्ये च सततं तं भागं रक्षसां विदुः॥

↩ वापस: ↩ इ.18

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 9 पाप KK 13-1-61-9

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यच्छ्राद्धं परिविष्यते।
त्रिभिर्वर्णैर्नरश्रेष्ठ तं भागं रक्षसां विदुः॥

↩ वापस: ↩ इ.18

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 10 पाप KK 13-1-61-10

आज्याहुतिं विना चैव यत्किञ्चित्परिविष्यते।
दुराचारैश्च यद्भुक्तं तं भागं रक्षसां विदुः॥

↩ वापस: ↩ इ.18

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 11 नियम KK 13-1-61-11

ये भागा रक्षसां प्राप्तास्त उक्ता भरतर्षभ।
अत ऊर्ध्वं विसर्गस्य परीक्षां ब्राह्मणे शृणु॥

↩ वापस: ↩ इ.18

इ.19 रजस्वला आदि की दृष्टि पड़ा हुआ हवि

वक्ता / कथन: गार्ग्य (भीष्म द्वारा कहा गया रहस्यधर्म) नियम पाप पुण्य

- नियम श्राद्धकल्प में, दैवकार्य में, तीर्थकार्यों में और पर्वदिनों में पालन करने योग्य यह परम रहस्य है (अनु. 190.12)।
- पाप रजस्वला स्त्री, श्वित्र रोग वाली स्त्री, अपुत्रिका — इनकी दृष्टि पड़े हुए हवि को देवता नहीं खाते; पितृदेवता तेरह वर्षों तक तृप्त नहीं होते (अनु. 190.13)।
- नियम पुण्य श्वेत वस्त्र धारण करके शुचि होकर, ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करवाकर, भारत का कीर्तन करने से हवि अक्षय हो जाता है (अनु. 190.14)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 190, श्लोक 12 नियम KK 13-1-190-12

इदं च परमं गुह्यं सरहस्यं निबोधत।
श्राद्धकल्पे च दैवे च तैर्थिके पर्वणीषु च॥

↩ वापस: ↩ इ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 190, श्लोक 13 पाप KK 13-1-190-13

रजस्वला च या नारी श्वित्रिकाऽपुत्रिका च या।
एताभिश्चक्षुषा दृष्टं हविर्नाश्नन्ति देवताः।
पितरश्च न तुष्यन्ति वर्षाण्यपि त्रयोदश॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 190, श्लोक 14 नियम पुण्य KK 13-1-190-14

शुक्लवासाः शुचिर्भूत्वा ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत्।
कीर्तयेद्भारतं चैव तथा स्यादक्षयं हविः॥

↩ वापस: ↩ इ.19

इ.20 अयोग्य लोगों द्वारा अग्नि और हविस् का संचालन करने पर दोष और प्रायश्चित्त

वक्ता / कथन: वायुदेव (भीष्म द्वारा कहा गया रहस्यधर्म) नियम पाप पुण्य

- पाप वृषल अग्नि का संचालक हो और मूढ़ स्त्रियाँ हविस् की संचालिका हों, और जो इसे ही धर्म मानता है वह अधर्म से लिप्त होता है; उस पर अग्नियाँ कुपित होती हैं, वह शूद्रयोनि प्राप्त करता है (अनु. 191.5–6).
- पाप देवताओं के साथ उसके पितृदेवता भी तृप्त नहीं होते (अनु. 191.7).
- नियम प्रायश्चित्त: तीन दिन निराहार रहकर, एकाग्रता से गोमूत्र, गोमय, दूध और घी से अग्निकार्य करना चाहिए (अनु. 191.7–8).
- पुण्य तब वर्ष पूरा होने पर देवता (उसका हविस्) स्वीकार करते हैं; श्राद्धकाल आने पर उसके पितृदेवता प्रसन्न होते हैं (अनु. 191.9).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 191, श्लोक 5 पाप KK 13-1-191-5

इदं चैवापरं गुह्यमप्रशस्तं निबोधत।
अग्नेस्तु वृषलो नेता हविर्मूढाश्च योषितः॥

↩ वापस: ↩ इ.20

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 191, श्लोक 6 पाप KK 13-1-191-6

मन्यते धर्म एवेति स चाधर्मेण लिप्यते।
अग्नयस्तस्य कुप्यन्ति शूद्रयोनिं स गच्छति॥

↩ वापस: ↩ इ.20

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 191, श्लोक 7 नियम पाप KK 13-1-191-7

पितरश्च न तुष्यन्ति सहदेवैर्विशेषतः ।
प्रायश्चित्तं तु यत्तत्र ब्रुवतस्तन्निबोध मे ।
यत्कृत्वा तु नरः सम्यक्सुखी भवति विज्वरः ॥

↩ वापस: ↩ इ.20 ↩ इ.20

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 191, श्लोक 8 नियम KK 13-1-191-8

गवां मूत्रपुरीषेण पयसा च घृतेन च ।
अग्निकार्यं त्र्यहं कुर्यान्निराहारः समाहितः ॥

↩ वापस: ↩ इ.20

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 191, श्लोक 9 पुण्य KK 13-1-191-9

ततः संवत्सरे पूर्णे प्रतिगृह्णन्ति देवताः ।
हृष्यन्ति पितरश्चास्य श्राद्धकाल उपस्थिते ॥

↩ वापस: ↩ इ.20

इ.21 शूद्रीपति को दिया गया श्राद्ध नष्ट हो जाता है

वक्ता / कथन: नारद संजय से (व्यास द्वारा युधिष्ठिर को कही गई कथा में) पाप

- पाप नारद ने पूछा कि मेरी कही कथा संजय के मन में टिकी या शूद्रीपति (शूद्र स्त्री के पति) को दिए गए श्राद्ध की तरह अन्त में नष्ट हो गई; अर्थात् यह उपमा दिखाती है कि ऐसे व्यक्ति को दिया गया श्राद्ध फलता नहीं (द्रोण. 71.3)।

महाभारत › द्रोणपर्व › अभिमन्युवधपर्व › अध्याय 71, श्लोक 3 पाप KK 7-3-71-3

आहोस्विदन्ततो नष्टं श्राद्धं शूद्रीपताविव ।
स एवमुक्तः प्रत्याह प्राञ्जलिः सृञ्जयस्तदा ॥

↩ वापस: ↩ इ.21

इ.22 परस्त्रीगमन करने वालों का श्राद्ध पितृदेवताओं तक नहीं पहुँचता

वक्ता / कथन: लोमश (भीष्म द्वारा कहा गया रहस्यधर्म) नियम पाप

- पाप विवाह न करके परस्त्रियों में आसक्त रहने वालों के पितृदेवता श्राद्धकाल में निराश होते हैं (अनु. 192.1)।
- पाप परस्त्री में रत, वन्ध्या का सेवन करने वाला, और ब्रह्मस्व का हरण करने वाला — तीनों समान दोषी हैं; वे पितृदेवताओं से बात करने योग्य नहीं हैं; देवता और पितृदेवता उनके हविष्य का आदर नहीं करते (अनु. 192.2–3)।
- नियम इसलिए अपना हित चाहने वाले को परस्त्री और वन्ध्या का त्याग करना चाहिए; ब्रह्मस्व का हरण नहीं करना चाहिए (अनु. 192.4)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 1 पाप KK 13-1-192-1

परदारेषु ये सक्ता अकृत्वा दारसङ्ग्रहम् ।
निराशाः पितरस्तेषां श्राद्धकाले भवन्ति वै ॥

↩ वापस: ↩ इ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 2 पाप KK 13-1-192-2

परदाररतिर्यश्च यश्च वन्ध्यामुपासते ।
ब्रह्मस्वं हरते यश्च समदोषा भवन्ति ते ॥

↩ वापस: ↩ इ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 3 पाप KK 13-1-192-3

असम्भाष्या भवन्त्येते पितॄणां नात्र संशयः ।
देवताः पितरश्चैषां नाभिनन्दन्ति तद्विधिः ॥

↩ वापस: ↩ इ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 4 नियम KK 13-1-192-4

तस्मात्परस्य वै दारांस्त्यजेद्वन्ध्यां च योषितम् ।
ब्रह्मस्वं हि न हर्तव्यमात्मनो हितमिच्छता ॥

↩ वापस: ↩ इ.22

इ.23 परस्त्री से उत्पन्न कुण्ड-गोलकों द्वारा दिए गए हव्य-कव्य राक्षसों को जाते हैं

वक्ता / कथन: नारद मार्कण्डेय से नियम पाप

- पाप उन स्त्रियों (पूर्व श्लोकों में कही गई परामृष्टाओं) के हव्य-कव्य को देवता स्वीकार नहीं करते; उनसे पुत्र उत्पन्न करने वाला उन पुत्रों के कारण पुत्रवान नहीं होता (अनु. 57.7).
- पाप परक्षेत्र में उत्पन्न वे पुत्र इहलोक और परलोक में दिए गए हव्य-कव्य को नष्ट कर देते हैं (अनु. 57.14).
- पाप क्षेत्रिक (पत्नी की रक्षा न करने वाला) और बीजी (परस्त्री-गामी) दोनों नरक जाते हैं; कुण्ड आदि पितृदेवताओं द्वारा निंदित हैं (अनु. 57.16–18).
- पाप ऐसे निंदित पुत्रों द्वारा दिए गए हव्य-कव्य को यातुधान, पिशाच और निशाचर भूत ग्रहण करते हैं (अनु. 57.19–20).
- नियम उनके वंश में साध्वी स्त्रियों से उत्पन्न पुत्र सदाचार के साथ हव्य-कव्य दें तो पितृदेवता तृप्त होते हैं; शुद्ध जनों द्वारा दिए गए हव्य-कव्य को देवता स्वीकार करते हैं (अनु. 57.24–25).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 7 पाप KK 13-1-57-7

न चासां हव्यकव्यानि प्रतिगृह्णन्ति देवताः ।
यस्तासु जनयेत्पुत्रान्न तैः पुत्रमवाप्नुयात् ॥

↩ वापस: ↩ इ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 14 पाप KK 13-1-57-14

ते च जाताः परक्षेत्रे देहिनां प्रेत्य चेह च ।
दत्तानि हव्यकव्यानि नाशयन्त्यथ दातृणाम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 16 पाप KK 13-1-57-16

कस्य ते गर्हिताः पुत्राः पितृणां हव्यकव्यदाः ।
यस्य क्षेत्रे प्रसूयन्ते यो वा ताञ्जनयेत्सुतान् ॥

↩ वापस: ↩ इ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 17 पाप KK 13-1-57-17

क्षेत्रिकश्चैव बीजी च द्वावेतौ निरयं गतौ ।
न रक्षति च यो दारान्परदाराश्च गच्छति ॥

↩ वापस: ↩ इ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 18 पाप KK 13-1-57-18

गर्हितास्ते नरा नित्यं धर्माचारबहिष्कृताः ।
कुण्डो भोक्ता च भोगी च कुत्सिताः पितृदैवतैः ॥

↩ वापस: ↩ इ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 19 पाप KK 13-1-57-19

तथैते गर्हिताः पुत्रा हव्यकव्यानि नारद ।
कस्य नित्यं प्रयच्छन्ति धर्मो वा तेषु किं फलं ॥

↩ वापस: ↩ इ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 20 पाप KK 13-1-57-20

यातुधानाः पिशाचाश्च प्रतिगृह्णन्ति तैर्हुतम् ।
हव्यं कव्यं च तैर्दत्तं ये च भूता निशाचराः ॥

↩ वापस: ↩ इ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 24 नियम KK 13-1-57-24

साध्वीजाताः सुतास्तेषां तां वृत्तिमनुतिष्ठताम् ।
प्रीणन्ति पितृदैवत्यं हव्यकव्यसमाहिताः ॥

↩ वापस: ↩ इ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 25 नियम KK 13-1-57-25

एवं गोलककुण्डाभ्यां ये च वर्णापदेशिनः ।
हव्यं कव्यं च शुद्धानां प्रतिगृह्णन्ति देवताः ॥

↩ वापस: ↩ इ.23

इ.24 श्राद्ध के दिन मैथुन का निषेध; भोक्ता की शुचिता

वक्ता / कथन: पितृदेवता देवदूत से — भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को कहा गया नियम पाप पुण्य

- नियम अश्विनों की आज्ञा से आए देवदूत ने पितृदेवताओं से पूछा: श्राद्ध में दाता और भोक्ता के लिए मैथुन क्यों वर्जित है (अनु. 188.18–20)?
- नियम देवताओं और पितरों ने उस दूत की पूजा करके, उसका प्रश्न गूढ़ार्थ वाला है — यह कहकर स्वागत किया (अनु. 188.22–23)।
- पाप श्राद्ध देकर अथवा खाकर स्त्री के पास जाने वाले पुरुष के पितर उस पूरे मास उस रेतस् में पड़े रहते हैं (अनु. 188.24)।
- नियम उस दिन मैथुन का परिहार करना चाहिए — ऐसा माना जाता है (अनु. 188.40)।
- नियम पुण्य श्राद्ध सदा शुचि होकर ही खाना चाहिए; अतः द्विज को स्नान करके, शुचि होकर, क्षमाशील होकर श्राद्ध का भोजन करना चाहिए; ऐसा देने वाले की संतान वृद्धि पाती है (अनु. 188.41–42)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 18 नियम KK 13-1-188-18

कस्यचित्त्वथ कालस्य देवदूतो यदृच्छया ।
स्थितो ह्यन्तर्हितो भूत्वा पर्यभाषत वासवम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 19 नियम KK 13-1-188-19

यौ तौ कामगुणोपेतावश्विनौ भिषजां वरौ ।
आज्ञयाऽहं तयोः प्राप्तः सनरान्पितृदैवतान् ॥

↩ वापस: ↩ इ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 20 नियम KK 13-1-188-20

कस्माद्धि मैथुनं श्राद्धे दातुर्भोक्तुश्च वर्जितम् ।
केमर्थं च त्रयः पिण्डाः प्रविभक्ताः पृथक्पृथक् ॥

↩ वापस: ↩ इ.24 ↩ उ.6

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 22 नियम KK 13-1-188-22

श्रद्दधानेन दूतेन भाषितं धर्मसंहितम् ।
पूर्वस्थास्त्रिदशाः सर्वे पितरः पूज्य खेचरम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 23 नियम KK 13-1-188-23

पितर ऊचुः
स्वागतं तेऽस्तु भद्रं ते श्रूयतां खेचरोत्तम ।
गूढार्थः परमः प्रश्नो भवता समुदीरितः ॥

↩ वापस: ↩ इ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 24 पाप KK 13-1-188-24

श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा च पुरुषो यः स्त्रियं व्रजेत् ।
पितरस्तस्य तं मासं तस्मिन्नेतसि शेरते ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 40 नियम KK 13-1-188-40

ऋत्विग्यो यजमानस्य पितृत्वमनुगच्छति ।
तस्मिन्नहनि मन्यन्ते परिहार्यं हि मैथुनम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 41 नियम पुण्य KK 13-1-188-41

शुचिना तु सदा श्राद्धं भोक्तव्यं खेचरोत्तम ।
ये मया कथिता दोषास्ते तथा स्युर्न चान्यथा ॥

↩ वापस: ↩ इ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 42 नियम पुण्य KK 13-1-188-42

तस्मात्स्नातः शुचिः क्षान्तः श्राद्धं भुञ्जीत वै द्विजः ।
प्रजा विवर्धते चास्य यश्चैवं सम्प्रयच्छति ॥

↩ वापस: ↩ इ.24

इ.25 श्राद्ध के अवसर पर मैथुन — पापियों के लोक

वक्ता / कथन: संजय धृतराष्ट्र से (संशप्तकों की प्रतिज्ञा) पाप

- पाप संशप्तकों ने प्रतिज्ञा की कि यदि वे अर्जुन को न मार सके तो व्रतहीन, ब्रह्महत्यारे, मद्यपायी, गुरुपत्नीगामी आदि पापियों को मिलने वाले लोक वे पाएँगे (द्रोण. 17.30, 35)।
- पाप उन पापियों की सूची में 'श्राद्धमैथुनिक' (श्राद्ध के अवसर पर मैथुन करने वाले) भी हैं (द्रोण. 17.33)।

महाभारत › द्रोणपर्व › द्रोणाभिषेकपर्व › अध्याय 17, श्लोक 30 पाप KK 7-2-17-30

ये वै लोकाश्चाव्रतिनां ये चैव ब्रह्मघातिनाम् ।
मद्यपस्य च ये लोका गुरुदाररतस्य च ॥

↩ वापस: ↩ इ.25

महाभारत › द्रोणपर्व › द्रोणाभिषेकपर्व › अध्याय 17, श्लोक 33 पाप KK 7-2-17-33

स्वभार्यामृतुकालेषु मोहाद्वै नाभिगच्छताम् ।
श्राद्धमैथुनिकानां च ये चाप्यात्मापहारिणाम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.25

इ.26 श्राद्धभोजन में निषेध

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- नियम दूसरों के श्राद्ध में भोजन नहीं करना चाहिए (अनु. 161.100)।
- पाप पत्नी के गर्भवती होने पर पति यदि समुद्रस्नान, क्षौर और श्राद्धभोजन करे तो उसे पुत्रफल प्राप्त नहीं होता (अनु. 161.138)।
- नियम एकोद्दिष्ट में — विशेषकर प्रथम एकोद्दिष्ट में — भोजन नहीं करना चाहिए; सपिण्डीकरण और मासिक श्राद्धों का भोजन भी वर्ज्य है (अनु. 161.155)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 161, श्लोक 100 नियम KK 13-1-161-100

सायं प्रातश्च भुञ्जीत नान्तराले समाहितः।
वालेन तु न भुञ्जीत परश्राद्धं तथैव च॥

↩ वापस: ↩ इ.26

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 161, श्लोक 138 पाप KK 13-1-161-138

सामुद्रेणाम्भसा स्नानं क्षौरं श्राद्धेषु भोजनम्।
अन्तर्वत्नीपतिः कुर्वन्न पुत्रफलमश्नुते॥

↩ वापस: ↩ इ.26

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 161, श्लोक 155 नियम KK 13-1-161-155

एकोद्दिष्टं न भुञ्जीत प्रथमं तु विशेषतः।
सपिण्डीकरणं वर्ज्यं सविधानं च मासिकम्॥

↩ वापस: ↩ इ.26

इ.27 आमंत्रित ब्राह्मण और आमंत्रित करने वाले के दोष

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- पाप पहले एक ब्राह्मण द्वारा आमंत्रित ब्राह्मण यदि कहीं और भोजन करे तो उसे गोहिंसा का चौथाई पाप लगता है; निम्न वर्णों के यहाँ खाने पर क्रमशः अधिक, और शूद्र के यहाँ चार गुना (अनु. 61.43–44).
- नियम पाप पहले आमंत्रित व्यक्ति कहीं और न खाए; न खाने में भी दोष है; शूद्र का आमंत्रण त्याज्य है; शूद्रान्न से पोषित द्विज ऊर्ध्वगति नहीं पाता (अनु. 61.44–45; 61.52–53).
- नियम अशुचि, नास्तिक और मानहीन व्यक्ति भोजन न करे; लोभवश पहले दिए गए वचन का उल्लंघन न करे (अनु. 61.46).
- पाप बिना स्नान किए दैव और पित्र्य में भोजन करने वाले ब्राह्मण को असत्य का दोष लगता है; आशौच में रहते हुए जानबूझकर लोभवश खाए तो गो-विषयक असत्य का दोष लगता है (अनु. 61.54–55).
- पाप किसी अन्य प्रयोजन से आमंत्रित करने वाले को असत्य का दोष लगता है; वेदव्रताचार-रहित लोगों को मंत्रपूर्वक परोसे तो गो-विषयक असत्य का दोष लगता है (अनु. 61.56–57).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 43 पाप KK 13-1-61-43

वैश्यस्य दैवे वक्तव्यं प्रीयन्तां देवता इति।
गोहिंसायां चतुर्भागं पूर्वं विप्रातिकेतिनः॥

↩ वापस: ↩ इ.27

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 44 नियम पाप KK 13-1-61-44

वर्णावरेषु भुञ्जानं क्रमाच्छूद्रे चतुर्गुणम्।
नान्यत्र ब्राह्मणो ब्रूयात्पूर्वं विप्रेण केतितः॥

↩ वापस: ↩ इ.27 ↩ इ.27

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 45 नियम पाप KK 13-1-61-45

अभोजने च दोषः स्याद्वर्जयेच्छूद्रकेतनम्।
शूद्रान्नरसपुष्टाङ्गो द्विजो नोर्ध्वां गतिं लभेत्॥

↩ वापस: ↩ इ.27

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 46 नियम KK 13-1-61-46

अशुचिर्नैव चाश्नीयान्नास्तिको मानवर्जितः ।
न पूर्वं लङ्घयेल्लोभादेकवर्णोऽपि पार्थिव ॥

↩ वापस: ↩ इ.27

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 52 नियम पाप KK 13-1-61-52

नान्यत्र ब्राह्मणोऽश्नीयात्पूर्वं विप्रेण केतितः ।
यवीयान्पशुहिंसायां तुल्यधर्मा भवेत्स हि ॥

↩ वापस: ↩ इ.27

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 53 नियम पाप KK 13-1-61-53

तथा राजन्यवैश्याभ्यां यद्यश्नीयात्तु केतितः ।
यवीयान्पशुहिंसायां भागार्धं समवाप्नुयात् ॥

↩ वापस: ↩ इ.27

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 54 पाप KK 13-1-61-54

दैवं वाऽप्यथवा पित्र्यं योऽश्नीयाद्ब्राह्मणादिषु ।
अस्नातो ब्राह्मणो राजंस्तस्याधर्मोऽनृतं स्मृतम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.27

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 55 पाप KK 13-1-61-55

आशौचो ब्राह्मणो राजन्योऽश्नीयाद्ब्राह्मणादिषु ।
ज्ञानपूर्वमथो लोभात्तस्याधर्मो गवानृतम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.27

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 56 पाप KK 13-1-61-56

अर्थेनान्येन यो लिप्सेत्कर्मार्थं चैव भारत ।
आमन्त्रयति राजेन्द्र तस्याधर्मोऽनृतं स्मृतम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.27

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 57 पाप KK 13-1-61-57

अवेदव्रतचारित्रास्त्रिभिर्वर्णैर्युधिष्ठिर ।
मन्त्रवत्परिविष्यन्ते तस्याधर्मो गवानृतम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.27

इ.28 अशौचान्न और एकोद्दिष्टान्न खाने का दोष

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से (नियम) (पाप)

- नियम अभोज्य अन्नों में सूतकान्न (अशौच वाले घर का अन्न) भी है (आश्व. 107.15)।
- पाप मृतसूतक वालों के अन्न से और शूद्रान्न से शरीर का पोषण करने वाले द्विज की गति मुझे भी ज्ञात नहीं — ऐसा भगवान ने कहा (आश्व. 110.16)।
- नियम पाप मरण और जनन के अशौच वालों का अन्न खाने पर चान्द्रायण करना चाहिए (आश्व. 112.35)।
- नियम पाप एकोद्दिष्ट का भोजन करने वाले द्विज को चान्द्रायण करना चाहिए (आश्व. 112.41)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 107, श्लोक 15 नियम KK 14-3-107-15

चिकित्सकस्य दूतस्य तथा चोच्छिष्टभोजिनः ।
उग्रान्नं सूतकान्नं च शूद्रोच्छेषणमेव च ॥

↩ वापस: ↩ इ.28

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 16 पाप KK 14-3-110-16

मृतसूतकपुष्टाङ्गो यश्च शूद्रान्नभुग्द्विजः ।
अहं चापि न जानामि गतिं तस्य नराधिप ॥

↩ वापस: ↩ इ.28

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 112, श्लोक 35 नियम पाप KK 14-3-112-35

अनिर्दशाया गोः क्षीरमौष्ट्रमाविकमेव च ।
मृतसूतकयोश्चान्नं भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥

↩ वापस: ↩ इ.28

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 112, श्लोक 41 नियम पाप KK 14-3-112-41

एकोद्दिष्टं तु यो भुङ्क्ते जनमध्यगतोऽपि यः ।
भिन्नभाण्डेषु यो भुङ्क्ते द्विजश्चान्द्रायणं चरेत् ॥

↩ वापस: ↩ इ.28

इ.29 श्राद्ध में भोजन का क्रम बिगड़े तो — उत्तम ब्राह्मण स्वीकार नहीं करते

वक्ता / कथन: कौसल्या दशरथ से (उपमा के रूप में) नियम पाप

- नियम कौसल्या ने एक प्रसिद्ध बात के रूप में कहा कि कुछ लोग श्राद्ध में पहले अपने बन्धुओं को ही भोजन कराते हैं, और अपना काम हो जाने के बाद ही उत्तम ब्राह्मणों की ओर देखते हैं (रामा. अयो. 61.12)।
- नियम पाप ऐसे में गुणवान और विद्वान ब्राह्मण उसके बाद अमृत जैसा अन्न भी स्वीकार नहीं करते; जैसे उत्तम वृषभ सींग काटे जाने को सहन नहीं करते, वैसे ही प्राज्ञ द्विजोत्तम दूसरों (भले ही वे ब्राह्मण हों) के खाकर बचे हुए को स्वीकार नहीं करते (रामा. अयो. 61.13–14)।

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 61 › श्लोक 12 नियम वा.रा. 2.61.12

भोजयन्ति किल श्राद्धे केचित् स्वानेव बान्धवान् ।
ततः पश्चात् समीक्षन्ते कृतकार्या द्विजोत्तमान् ॥

↩ वापस: ↩ इ.29

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 61 › श्लोक 13 नियम पाप वा.रा. 2.61.13

तत्र ये गुणवन्तश्च विद्वांसश्च द्विजातयः ।
न पश्चात् तेऽभिमन्यन्ते सुधामपि सुरोपमाः ॥

↩ वापस: ↩ इ.29

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 61 › श्लोक 14 नियम पाप वा.रा. 2.61.14

ब्राह्मणेष्वपि वृत्तेषु भुक्तशेषं द्विजोत्तमाः ।
नाभ्युपेतुमलं प्राज्ञाः शृङ्गच्छेदमिवर्षभाः ॥

↩ वापस: ↩ इ.29

इ.30 पराई भूमि में श्राद्ध नहीं करना चाहिए

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप पुण्य

- पाप पराई भूमि में पितरों के लिए निवाप (पिंड) रखने वाले का श्राद्धकर्म उस भूमि (के स्वामी) के पितरों द्वारा नष्ट कर दिया जाता है (अनु. 101.33)।
- नियम पुण्य इसलिए विवेकी को थोड़ी-सी ही सही, भूमि खरीदकर देनी चाहिए; उस भूमि में पितरों को दिया गया पिंड शाश्वत हो जाता है (अनु. 101.34)।
- नियम कहा जाता है कि वन, पर्वत, नदियाँ और तीर्थ किसी के स्वामित्व में नहीं हैं (अनु. 101.35)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 101, श्लोक 33 पाप KK 13-1-101-33

पारक्ये भूमिदेशे तु पितॄणां निर्वपेत्तु यः ।
तद्भूमिं वाऽपि पितृभिः श्राद्धकर्म विहन्यते ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ इ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 101, श्लोक 34 नियम पुण्य KK 13-1-101-34

तस्मात्क्रीत्वा महीं दद्यात्स्वल्पामपि विचक्षणः ।
पिण्डः पितृभ्यो दत्तो वै तस्यां भवति शाश्वतः ॥

↩ वापस: ↩ इ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 101, श्लोक 35 नियम KK 13-1-101-35

अटवी पर्वताश्चैव नद्यस्तीर्थानि यानि च ।
सर्वाण्यस्वामिकान्याहुर्न हि तत्र परिग्रहः ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ इ.30

इ.31 श्राद्ध में अशुचि अन्न परोसने पर पौष्य को शाप

वक्ता / कथन: सौति (उत्तंक और पौष्य का संवाद) उदाहरण नियम पाप

- उदाहरण गुणवान अतिथि उत्तंक के आने पर पौष्यराज ने निवेदन किया — 'बहुत समय बाद सुपात्र मिला है, मैं श्राद्ध करना चाहता हूँ, समय दीजिए' (आदि. 3.114).
- उदाहरण उत्तंक के स्वीकार करने पर पौष्य ने तैयार अन्न से उन्हें भोजन कराया (आदि. 3.115).
- पाप उस अन्न को बालों से युक्त और ठंडा देखकर, उसे अशुचि जानकर उत्तंक ने शाप दिया — 'अशुचि अन्न परोसने के कारण तुम अंधे हो जाओगे' (आदि. 3.116).
- उदाहरण पौष्य ने प्रतिशाप दिया, तब उत्तंक ने कहा कि अशुचि अन्न परोसकर प्रतिशाप देना उचित नहीं है, अन्न को स्वयं देख लो (आदि. 3.117–118).
- नियम पाप बाल खुले रखने वाली स्त्री के लाने के कारण वह अन्न ठंडा और बालों से अशुचि था — यह समझकर पौष्य ने क्षमा माँगी (आदि. 3.119–120).
- पाप उत्तंक ने 'अंधे होकर शीघ्र ही फिर से दृष्टि पा लोगे' कहकर शाप को कम कर दिया (आदि. 3.121).

महाभारत › आदिपर्व › › अध्याय 3, श्लोक 114 उदाहरण KK 1-3-3-114

भगवंश्चिरेण पात्रमासाद्यते भवाश्च गुणवानतिथिस्तदिच्छे श्राद्धं कर्तुं क्रियतां क्षण इति ॥

↩ वापस: ↩ इ.31

महाभारत › आदिपर्व › › अध्याय 3, श्लोक 115 उदाहरण KK 1-3-3-115

तमुत्तङ्कः प्रत्युवाच कृतक्षण एवास्मि शीघ्रमिच्छामि यथोपपन्नमन्नमुपस्कृतं भवतेति स तथेत्युक्त्वा यथोपपन्नेनान्नेनैनं भोजयामास ॥

↩ वापस: ↩ इ.31

महाभारत › आदिपर्व › › अध्याय 3, श्लोक 116 पाप KK 1-3-3-116

अथोत्तङ्कः सकेशं शीतमन्नं दृष्ट्वा अशुच्येतदिति मत्वा तं पौष्यमुवाच ।
यस्मान्मे अशुच्यन्नं ददासि तस्मादन्धो भविष्यसीति ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.31

महाभारत › आदिपर्व › › अध्याय 3, श्लोक 117 उदाहरण KK 1-3-3-117

तं पौष्यः प्रत्युवाच ।

यस्मात्त्वमदुष्टमन्नंदूषयसि तस्मादनपत्यो भविष्यसीति तमुत्तङ्कः प्रत्युवाच ॥

↩ वापस: ↩ इ.31

महाभारत › आदिपर्व › › अध्याय 3, श्लोक 118 उदाहरण KK 1-3-3-118

न युक्तं भवताऽन्नमशुचि दत्त्वा प्रतिशापं दातुं तस्मादन्नमेव प्रत्यक्षीकुरु ।

ततः पौष्यस्तदन्नमशुचि दृष्ट्वा तस्याशुचिभावमपरोक्षयामास ॥

↩ वापस: ↩ इ.31

महाभारत › आदिपर्व › › अध्याय 3, श्लोक 119 नियम पाप KK 1-3-3-119

अथ तदन्नं मुक्तकेश्या स्त्रियोपहृतमनुष्णं सकेशं चाशुच्येतदिति मत्वा तमृषिमुत्तङ्कं प्रसादयामास ॥

↩ वापस: ↩ इ.31

महाभारत › आदिपर्व › › अध्याय 3, श्लोक 120 नियम पाप KK 1-3-3-120

भगवन्नेतदज्ञानादन्नं सकेशमुपाहृतं शीतं च ।

तत्क्षामये भवन्तं न भवेयमन्ध इति ।

C तमुत्तङ्कः प्रत्युवाच ॥

↩ वापस: ↩ इ.31

महाभारत › आदिपर्व › › अध्याय 3, श्लोक 121 पाप KK 1-3-3-121

न मृषा ब्रवीमि भूत्वा त्वमन्धो नचिरादनन्धो भविष्यसीति ।

ममापि शापो भवता दत्तो न भवेदिति ॥

↩ वापस: ↩ इ.31

इ.32 अधर्म के धन से किए गए और्ध्वदैहिक कर्म का फल कर्ता को नहीं मिलता

वक्ता / कथन: विदुर धृतराष्ट्र से पाप

- पाप अधर्म से कमाए धन से और्ध्वदैहिक कर्म करने वाला, क्योंकि वह धन दुर्मार्ग से आया है, मृत्यु के बाद उसका फल स्वयं नहीं भोगता (उद्योग. 39.67)।

महाभारत › उद्योगपर्व › प्रजागरपर्व › अध्याय 39, श्लोक 67 पाप KK 5-3-39-67

अधर्मोपार्जितैरर्थैर्यः करोत्यौर्ध्वदेहिकम् ।

न स तस्य फलं प्रेत्य भुङ्क्तेऽर्थस्य दुरागमात् ॥

↩ वापस: ↩ इ.32

इ.33 अष्टका श्राद्ध के द्रव्य को पहले ही खा लेने वाला विकुक्षि - देश से निष्कासन

वक्ता / कथन: शुक महर्षि परीक्षित से (उदाहरण) (नियम) (पाप)

- उदाहरण एक बार अष्टका श्राद्ध के अवसर पर इक्ष्वाकु महाराज ने अपने पुत्र विकुक्षि को आज्ञा दी कि श्राद्ध के योग्य कुछ पवित्र द्रव्य (अन्य द्रव्य) बिना विलम्ब के ले आओ (भाग. 9.7.6)।
- उदाहरण पाप विकुक्षि ने वन में जाकर कर्म के योग्य द्रव्य प्राप्त किए; परन्तु थका हुआ, भूखा होने के कारण और भूलवश उसने उनमें से एक को स्वयं खा लिया, और शेष पिता को समर्पित किया (भाग. 9.7.7–8)।
- नियम पाप जब राजा ने प्रोक्षण करने को कहा, तो उनके गुरु ने कहा, 'यह दूषित है, कर्म के योग्य नहीं है' (भाग. 9.7.8)।
- पाप गुरु के कहने से पुत्र का कार्य जानकर राजा ने विधि का त्याग करने वाले उस पुत्र को क्रोध से देश से निष्कासित कर दिया (भाग. 9.7.9)।

श्रीमद्भागवत › नवमस्कन्ध › अध्याय 7 › श्लोक 6 उदाहरण — भाग. 9.7.6

स एकदाऽष्टकाश्राद्ध इक्ष्वाकुः सुतमादिशत्।
मांसमानीयतां मेध्यं विकुक्षे गच्छ मा चिरम्॥

↩ वापस: ↩ इ.33

श्रीमद्भागवत › नवमस्कन्ध › अध्याय 7 › श्लोक 7 उदाहरण पाप — भाग. 9.7.7

तथेति सवनं गत्वा मृगान् हत्वा क्रियार्हणान्।
श्रान्तो बुभुक्षितो वीरः शशमाददपस्मृतिः॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.33

श्रीमद्भागवत › नवमस्कन्ध › अध्याय 7 › श्लोक 8 उदाहरण नियम पाप — भाग. 9.7.8

शेषं निवेदयामास पित्रे तेन च तद्गुरुः।
चोदितः प्रोक्षणायाह दुष्टमेतदकर्मकम्॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.33 ↩ इ.33

श्रीमद्भागवत › नवमस्कन्ध › अध्याय 7 › श्लोक 9 पाप — भाग. 9.7.9

ज्ञात्वा पुत्रस्य तत्कर्म गुरुणाऽभिहितं नृपः।
देशान्निस्सारयामास सुतं त्यक्तविधिं रुषा॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.33

इ.34 जमदग्नि के श्राद्ध के दूध को दूषित करने वाले क्रोध को पितृशाप

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से (उदाहरण) (नियम) (पाप)

- उदाहरण पूर्वकाल में जमदग्नि महर्षि ने श्राद्ध का संकल्प किया; होमधेनु स्वयं आई तो उन्होंने स्वयं दूध दुहकर उसे नए, मज़बूत और शुचि पात्र में रखा (आश्व. 95.3–4)।
- उदाहरण ऋषि की परीक्षा लेने के लिए क्रोध नेवले के रूप में आया और उस पात्र को गिराकर दूध को दूषित कर दिया (आश्व. 95.4–5)।
- उदाहरण यह जानते हुए भी कि वह क्रोध है, मुनि को क्रोध नहीं आया; क्रोध ने ब्राह्मण का रूप धारण करके कहा कि मैं हार गया, और अनुग्रह करने की प्रार्थना की (आश्व. 95.6–8)।
- नियम जमदग्नि ने कहा, 'तुमने मेरा कोई अपकार नहीं किया, मुझे क्रोध नहीं है; यह दूध जिनके उद्देश्य से मैंने संकल्पित किया था, उन महानुभाव पितृदेवताओं की बात समझो, जाओ' (आश्व. 95.9–10)।
- पाप भयभीत क्रोध वहीं अदृश्य हो गया, और पितृदेवताओं के शाप (अभिषंग) से नेवले का रूप पा गया (आश्व. 95.11)।
- उदाहरण शाप के अन्त के लिए उसने पितृदेवताओं को प्रसन्न किया, तो उन्होंने कहा कि धर्म पर आक्षेप करने पर शाप दूर होगा; यज्ञभूमियों और धर्मारण्य में घूमकर, युधिष्ठिर के यज्ञ में सक्तुप्रस्थ के प्रसंग से धर्मराज पर आक्षेप करके वह शाप से मुक्त हुआ (आश्व. 95.12–14)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 3 उदाहरण — KK 14-2-95-3

श्राद्धं सङ्कल्पयामास जमदग्निः पुरा किल।
होमधेनुस्तमागाच्च स्वयमेव दुदोह ताम्॥

↩ वापस: ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 4 उदाहरण KK 14-2-95-4

तत्पयः स्थापयामास नवे भाण्डे दृढे शुचौ ।
क्रोधो नकुलरूपेण पिठरं पर्यकर्षयत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.34 ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 5 उदाहरण KK 14-2-95-5

जिज्ञासुस्तमृषिश्रेष्ठं किं कुर्याद्विप्रिये कृते ।
इति सञ्चिन्त्य दुर्मेधा धर्षयामास तत्पयः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 6 उदाहरण KK 14-2-95-6

तमाज्ञाय मुनिः क्रोधं नैवास्य स चुकोप ह ।
स तु क्रोधस्ततो राजन्ब्राह्मणीं मूर्तिमास्थितः ॥

↩ वापस: ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 7 उदाहरण KK 14-2-95-7

जितोस्मीति भृगुश्रेष्ठ भृगवो ह्यतिरोषणाः ।
लोके मिथ्याप्रवादोयं यत्त्वयाऽस्मि विनिर्जितः ॥

↩ वापस: ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 8 उदाहरण KK 14-2-95-8

वशे स्थितोऽहं त्वय्यद्य क्षमावति महात्मनि ।
बिभेमि तपसः साधो प्रसादं कुरु मे प्रभो ॥

↩ वापस: ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 9 नियम KK 14-2-95-9

जमदग्निरुवाच
साक्षाद्दृष्टोसि मे क्रोध गच्छ त्वं विगतज्वरः ।
न त्वयापकृतं मेऽद्य न च मे मन्युरस्ति वै ॥

↩ वापस: ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 10 नियम KK 14-2-95-10

यान्समुद्दिश्य सङ्कल्पः पयसोस्य कृतो मया ।
पितरस्ते महाभागास्तेभ्यो बुद्ध्यस्व गम्यताम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 11 पाप KK 14-2-95-11

इत्युक्तो जातसन्त्रासस्तत्रैवान्तरधीयत ।
पितृणामभिषङ्गाच्च नकुलत्वमुपागतः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 12 उदाहरण KK 14-2-95-12

स तान्प्रसादयामास शापस्यान्तो भवेदिति ।
तैश्चाप्युक्तः क्षिपन्धर्मं शापस्यान्तमवाप्स्यसि ॥

↩ वापस: ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 13 उदाहरण KK 14-2-95-13

तैश्चोक्तो यज्ञियान्देशान्धर्मारण्यं तथैव च ।
जुगुप्समानो धावन्स तं यज्ञं समुपासदत् ॥

↩ वापस: ↩ इ.34

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 95, श्लोक 14 उदाहरण KK 14-2-95-14

धर्मपुत्रमथाक्षिप्य सक्तुप्रस्थेन तेन सः ।
मुक्तः शापात्ततः क्रोधो धर्मो ह्यासीद्युधिष्ठिरः ॥

↩ वापस: ↩ इ.34

इ.35 जमदग्नि की शपथ में श्राद्ध के दोष

वक्ता / कथन: जमदग्नि अगस्त्य से (पुष्करहरण शपथ-कथा; भीष्म द्वारा कहा गया) पाप

- पाप जमदग्नि ने शपथ ली, 'तुम्हारा कमल चुराने वाला अनध्याय के दिनों में वेद पढ़ने वाला, श्राद्ध में मित्र को भोजन कराने वाला, और शूद्र के श्राद्ध में भोजन करने वाला हो'; अर्थात् ये दोषपूर्ण कार्य बताए गए हैं (अनु. 143.25)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 143, श्लोक 25 पाप KK 13-1-143-25

जमदग्निरुवाच
अनध्यायेष्वधीयीत मित्रं श्राद्धे च भोजयेत् ।
श्राद्धे शूद्रस्य चाश्नीयाद्यस्ते हरति पुष्करम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.35

इ.36 योग्य पड़ोसी को श्राद्ध न देना, अयोग्यों को देना

वक्ता / कथन: अर्जुन (जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा), संजय द्वारा धृतराष्ट्र को कहा गया पाप

- पाप योग्य पड़ोसी को श्राद्ध न देने वाला, और अयोग्यों को तथा वृषलीपति (शूद्र स्त्री के पति) को श्राद्ध देने वाला — मद्यपों, कृतघ्नों आदि के साथ — जो घोर गति पाता है, वही गति जयद्रथ को न मारने पर मैं पाऊँ — ऐसी अर्जुन ने प्रतिज्ञा की (द्रोण. 73.42–43)।

महाभारत › द्रोणपर्व › प्रतिज्ञापर्व › अध्याय 73, श्लोक 42 पाप KK 7-4-73-42

अर्हते प्रातिवेश्याय श्राद्धं यो न ददाति च ।
अनर्हेभ्यश्च यो दद्याद्वृषलीपतये तथा ॥

↩ वापस: ↩ इ.36

महाभारत › द्रोणपर्व › प्रतिज्ञापर्व › अध्याय 73, श्लोक 43 पाप KK 7-4-73-43

मद्यपो भिन्नमर्यादः कृतघ्नो भर्तृनिन्दकः ।
तेषां गतिमियां क्षिप्रं न चेद्धन्यां जयद्रथम् ॥

↩ वापस: ↩ इ.36

इ.37 हिंसा से प्राप्त मांस से पितृदेवता आदि का यजन करने वाले खल हैं

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण उद्धव से नियम पाप

- नियम पाप हिंसा में आनन्द लेने वाले दुष्ट (खल) अपने सुख के लिए ही पशुओं का आलम्भन (हिंसा) करके, उनसे यज्ञ करके देवताओं, पितृदेवताओं और भूतपतियों का यजन करते हैं (भाग. 11.21.30)।

श्रीमद्भागवत › एकादशस्कन्ध › अध्याय 21 › श्लोक 30 नियम पाप भाग. 11.21.30

हिंसाविहारा ह्यालब्धैः पशुभिः स्वसुखेच्छया ।
यजन्ते देवता यज्ञैः पितॄन् भूतपतीन् खलाः ॥

↩ वापस: ↩ इ.37

इ.38 महापातकियों और मृत्युदंड पाए महासाहसिकों के लिए पिण्डदान का निषेध

वक्ता / कथन: ब्रह्मा भार्गव से (शान्ति. 14 का राजधर्म भाग) नियम पाप

- नियम दंड के प्रसंग में — अंगविहीन किए गए (दंडित) तीनों वर्णों के लोगों को चाण्डालों के साथ बसाया जाए, और ऐसे लोग जब प्रेत हों तो कोई उन्हें पिण्डदान न दे — ऐसा कहा गया है (शान्ति. 14.101–102).
- नियम पाप राजाज्ञा से बुलाने पर भी सभा में न आने वाले, किसी बलवान का आश्रय लेकर शस्त्र लिए खड़े होकर पराजित हुए महासाहसिक को दंड से जीतकर, शरीर से और सर्वस्व से अलग करके परलोक भेज देना चाहिए; मरने पर उसे भी कोई पिण्डदान न दे; जो दे, वह 'मध्यमं पूर्वसाहसम्' कहा गया दंड चुकाए (शान्ति. 14.110–112).

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 14, श्लोक 101 नियम KK 12-1-14-101

विकलेन्द्रियांस्त्रिवर्णांश्च चण्डालैः सह वासयेत्।
तैश्च यः सम्पिबेत्कश्चित्स पिबन्ब्रह्महा भवेत्॥

↩ वापस: ↩ इ.38

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 14, श्लोक 102 नियम KK 12-1-14-102

प्रेतानां न च देयानि पिण्डदानानि केनचित्॥

↩ वापस: ↩ इ.38

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 14, श्लोक 110 नियम पाप KK 12-1-14-110

राजाज्ञया समाहूतो यो न गच्छेत्सभां नरः।
बलवन्तमुपाश्रित्य सायुधः स पराजितः॥

↩ वापस: ↩ इ.38

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 14, श्लोक 111 नियम पाप KK 12-1-14-111

तं दण्डेन विनिर्जित्य महासाहसिकं नरम्।
वियुक्तदेहसर्वस्वं परलोकं विसर्जयेत्॥

↩ वापस: ↩ इ.38

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 14, श्लोक 112 नियम पाप KK 12-1-14-112

मृतस्यापि न देयानि पिण्डदानानि केनचित्।
दत्त्वा दण्डं प्रयच्छेत मध्यमं पूर्वसाहसम्॥

↩ वापस: ↩ इ.38

(ई) विधिपूर्वक करने से होने वाला पुण्य और सद्गति

कर्ता को मिलने वाला पुण्य

ई.1 माता, पिता, गुरु — तीनों गुरुओं की पूजा; गुरुओं के पूजित होने पर पितृदेवताओं सहित ऋषि और देवता प्रसन्न होते हैं

वक्ता / कथन: भीष्म धर्मराज से (129वें अध्याय में यम गौतम से) नियम पाप पुण्य

- नियम भीष्म ने कहा कि माता-पिता और गुरुओं की पूजा ही मुझे सबसे अधिक मान्य है; उसमें लगा रहने वाला लोकों और महान कीर्ति को प्राप्त करता है (शान्ति. 108.3)।
- नियम ये ही तीन लोक, तीन आश्रम, तीन वेद और तीन अग्नियाँ हैं; पिता गार्हपत्य अग्नि, माता दक्षिणाग्नि और गुरु आहवनीय अग्नि हैं (शान्ति. 108.6–7)।
- पुण्य इन तीनों के विषय में प्रमाद न करो तो तीनों लोकों को जीत लोगे: पिता की सेवा से इस लोक को, माता की सेवा से परलोक को, और गुरु की सेवा से ब्रह्मलोक को (शान्ति. 108.8–9)।
- पाप पुण्य इन तीनों का आदर करने वाले ने मानो सब लोकों का आदर किया; इन तीनों का अनादर करने वाले की सारी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं (शान्ति. 108.12)।
- पाप जिसके द्वारा ये तीनों गुरु नित्य सम्मानित नहीं होते, उसके लिए न यह लोक है, न परलोक, न कीर्ति (शान्ति. 108.13)।
- पुण्य पिता को प्रसन्न करने वाले कर्म से प्रजापति प्रसन्न होते हैं; माता को प्रसन्न करने वाले कर्म से भूदेवी पूजित होती हैं (शान्ति. 108.25)।
- पुण्य गुरुओं के पूजित होने पर ऋषि और देवता पितृदेवताओं के साथ प्रसन्न होते हैं; इसलिए गुरु सबसे अधिक पूज्य हैं (शान्ति. 108.27)।
- पाप अपना पालन करने वाले माता-पिता का पालन न करने वाले औरस पुत्र को भ्रूणहत्या से भी अधिक पाप लगता है; उससे बड़ा पापी लोक में नहीं है (शान्ति. 108.31)।
- नियम जब गौतम ने पूछा कि क्या करने से माता-पिता के ऋण से मुक्ति मिलती है, तो यम ने कहा कि तपस्या, शौच और सत्यधर्म में स्थित रहते हुए प्रतिदिन माता-पिता की पूजा करनी चाहिए (शान्ति. 129.9–10)।

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 3 नियम KK 12-1-108-3

मातापित्रोर्गुरूणां च पूजा बहुमता मम।
अत्र वर्तन्नरो लोकान्यशश्च महदश्नुते॥

↩ वापस: ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 6 नियम KK 12-1-108-6

एत एव त्रयो लोका एत एवाश्रमास्त्रयः।
एत एव त्रयो वेदा एत एव त्रयोऽग्नयः॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 7 नियम KK 12-1-108-7

पिता वै गार्हपत्योऽग्निर्माताऽग्निर्दक्षणः स्मृतः।
गुरुराहवनीयस्तु साऽग्नित्रेता गरीयसी॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 8 पुण्य KK 12-1-108-8

त्रिष्वप्रमाद्यन्नेतेषु त्रींल्लोकानपि जेष्यसि।
पितृवृत्त्या त्विमं लोकं मातृवृत्त्या तथा परम्॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 9 पुण्य KK 12-1-108-9

ब्रह्मलोकं गुरोर्वृत्त्या नियमेन तरिष्यसि।
सम्यगेतेषु वर्तस्व त्रिषु लोकेषु भारत॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 12 पाप पुण्य KK 12-1-108-12

सर्वे तस्यादृता लोका यस्यैते त्रय आदृताः ।
अनादृतास्तु यस्यैते सर्वास्तस्याफलाः क्रियाः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 13 पाप KK 12-1-108-13

न चायं न परो लोको न यशस्तस्य भारत ।
अमानिता नित्यमेव यस्यैते गुरवस्त्रयः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 25 पुण्य KK 12-1-108-25

येन प्रीणन्ति पितरस्तेन प्रीतः प्रजापतिः ।
प्रीणाति जननी येन पृथिवी तेन पूजिता ॥

↩ वापस: ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 27 पुण्य KK 12-1-108-27

ऋषयश्च हि देवाश्च प्रीयन्ते पितृभिः सह ।
पूज्यमानेषु गुरुषु तस्मात्पूज्यतमो गुरुः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 108, श्लोक 31 पाप KK 12-1-108-31

भृतो भर्तारं यो न बिभर्ति पुत्रः स्वयोनिजः पितरं मातरं च ।
तस्य पापं भ्रूणहत्याविशिष्टं तस्मान्नान्यः पापकृदस्ति लोके ॥

↩ वापस: ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 129, श्लोक 9 नियम KK 12-1-129-9

मातापितृभ्यामानृण्यं किं कृत्वा समवाप्नुयात् ।
कथं च लोकानाप्नोति पुरुषो दुर्लभाञ्शुभान् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.1

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 129, श्लोक 10 नियम KK 12-1-129-10

तपः शौचवता नित्यं सत्यधर्मरतेन च ।
मातापित्रोरहरहः पूजनं कार्यमञ्जसा ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.1

ई.2 पिता की सेवा के समान कोई यज्ञ नहीं — माता-पिता की सेवा करने वालों को उत्तम लोक

वक्ता / कथन: श्रीराम सीतादेवी से नियम पुण्य

- नियम अपने अधीन माता, पिता और गुरु को लाँघकर, अधीन न रहने वाले दैव की आराधना किस प्रकार की जा सकती है? ये तीनों ही तीन लोक हैं; इनके समान पवित्र पृथ्वी पर और कुछ नहीं है (रामा. अयो. 30.33–34)।
- नियम न सत्य, न दान, न मान, न दक्षिणाओं सहित यज्ञ — कोई भी पिता की सेवा जितना बल नहीं देता (रामा. अयो. 30.35)।
- पुण्य गुरुओं की सेवा का अनुसरण करने वाले के लिए स्वर्ग, धन, धान्य, विद्या, पुत्र और सुख — कुछ भी दुर्लभ नहीं है (रामा. अयो. 30.36)।
- पुण्य माता-पिता की सेवा में लगे महात्मा देवलोक, गंधर्वलोक, गोलोक, ब्रह्मलोक और अन्य लोकों को प्राप्त करते हैं (रामा. अयो. 30.37)।

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 30 › श्लोक 33 नियम वा.रा. 2.30.33

अस्वाधीनं कथं दैवं प्रकारैरभिराध्यते ।
स्वाधीनं समतिक्रम्य मातरं पितरं गुरुम् ॥

↩ वापस: ↩ ई.2

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 30 › श्लोक 34 नियम वा.रा. 2.30.34

यत्र त्रयं त्रयो लोकाः पवित्रं तत्समं भुवि ।
नान्यदस्ति शुभापाङ्गे तेनेदमभिराध्यते ॥

↩ वापस: ↩ ई.2

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 30 › श्लोक 35 नियम वा.रा. 2.30.35

न सत्यं दानमानौ वा यज्ञो वाप्याप्तदक्षिणाः ।
तथा बलकराः सीते यथा सेवा पितुर्मता ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.2

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 30 › श्लोक 36 पुण्य वा.रा. 2.30.36

स्वर्गो धनं वा धान्यं वा विद्या पुत्राः सुखानि च ।
गुरुवृत्त्यनुरोधेन न किंचिदपि दुर्लभम् ॥

↩ वापस: ↩ ई.2

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 30 › श्लोक 37 पुण्य वा.रा. 2.30.37

देवगन्धर्वगोलोकान् ब्रह्मलोकांस्तथापरान् ।
प्राप्नुवन्ति महात्मानो मातापितृपरायणाः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ ई.2

ई.3 पितृमेध का फल — आयु, संतान, स्वर्ग

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से नियम पुण्य

- नियम पुण्य यह संक्षेप में कहा गया सनातन पितृयज्ञ है; उससे पितर तृप्त होते हैं और कर्ता फल पाता है (अनु. 238.33).
- नियम प्रतिदिन, या प्रति मास, या वर्ष में दो बार या चार बार शक्ति के अनुसार करना चाहिए (अनु. 238.34).
- पुण्य पितृमेध से दीर्घायु, आरोग्य, पुत्र, अनेक सेवक और प्रचुर धन-धान्य प्राप्त होते हैं (अनु. 238.35).
- पुण्य श्राद्धदाता बाद में निर्मल, विविध रूपों वाले, अप्सरागणों से गुंजायमान, रजोरहित स्वर्ग को प्राप्त करता है (अनु. 238.36).
- पुण्य पुष्टि की कामना से श्राद्ध करने वाले पंडितों को पितर सदा पुष्टि और संतान देते हैं (अनु. 238.37).
- पुण्य मनीषी कहते हैं कि श्राद्ध धन्य है, यश, आयु और स्वर्ग देने वाला है, शत्रुनाशक है, कुल को बनाए रखने वाला है (अनु. 238.38).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 33 नियम पुण्य KK 13-1-238-33

एष प्रोक्तः समासेन पितृयज्ञः सनातनः ।
पितरस्तेन तुष्यन्ति कर्ता च फलमाप्नुयात् ॥

↩ वापस: ↩ ई.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 34 नियम KK 13-1-238-34

अहन्यहनि वा कुर्यान्मासे मासेऽथवा पुनः ।
संवत्सरं द्विः कुर्याच्च चतुर्वाऽपि स्वशक्तितः ॥

↩ वापस: ↩ ई.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 35 पुण्य KK 13-1-238-35

दीर्घायुश्च भवेत्स्वस्थः पितृमेधेन वा पुनः ।
सपुत्रो बहुभृत्यश्च प्रभूतधनधान्यवान् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 36 पुण्य KK 13-1-238-36

श्राद्धदः स्वर्गमाप्नोति निर्मलं विविधात्मकम् ।
अप्सरोगणसङ्घुष्टं विरजस्कमनन्तरम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 37 पुण्य KK 13-1-238-37

श्राद्धानि पुष्टिकामा वै ये प्रकुर्वन्ति पण्डिताः ।
तेषां पुष्टिं प्रजां चैव दास्यन्ति पितरः सदा ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 38 पुण्य KK 13-1-238-38

धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं शत्रुविनाशनम् ।
कुलसन्धारकं चेति श्राद्धमाहुर्मनीषिणः ॥

↩ वापस: ↩ ई.3

ई.4 पितृपूजा से कर्ता को मिलने वाला पुण्य

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (110, 65); श्रीभगवान (210) पुण्य

- पुण्य संतान की कामना से प्रत्येक तिथि को शुद्ध मन से श्राद्ध करने वाले दुर्गम कष्टों को पार कर जाते हैं (शान्ति. 110.20).
- पुण्य नित्यकर्म (आह्निक), पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और मनुष्ययज्ञ विस्तार से करने वाले राजा को वानप्रस्थ-आश्रम का फल प्राप्त होता है (शान्ति. 65.10).

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 20 पुण्य KK 12-1-110-20

ये च श्राद्धानि कुर्वन्ति तिथ्यांतिथ्यां प्रजार्थिनः ।
सुविशुद्धेन मनसा दुर्गाण्यतितरन्ति ते ॥

↩ वापस: ↩ ई.4

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 65, श्लोक 10 पुण्य KK 12-1-65-10

आह्निकं पितृयज्ञांश्च भूतयज्ञान्समानुषान् ।
कुर्वतः पार्थ विपुलान्वन्याश्रमपदं भवेत् ॥

↩ वापस: ↩ ई.4

ई.5 नित्यश्राद्ध, पितृ-तर्पण – कर्ता को फल

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (92); नारद (98) पुण्य

- पुण्य नित्यश्राद्ध से संतति प्राप्त होती है (अनु. 92.12)।
- पुण्य पितरों, देवताओं, ऋषियों, ब्राह्मणों और अतिथियों को अन्न से तृप्त करने वाले को महान पुण्यफल मिलता है (अनु. 98.15)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 92, श्लोक 12 पुण्य KK 13-1-92-12

पयोभक्षो दिवं याति दानेन द्रविणाधिकः ।
गुरुशुश्रूषया विद्या नित्यश्राद्धेन सन्ततिः ॥
पयोभक्षो दिवं याति दानेन द्रविणाधिकः ।
गुरुशुश्रूषया विद्या नित्यश्राद्धेन सन्ततिः ॥
पयोभक्षो दिवं याति दानेन द्रविणाधिकः ।
गुरुशुश्रूषया विद्या नित्यश्राद्धेन सन्ततिः ॥

↩ वापस: ↩ ई.5

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 98, श्लोक 15 पुण्य KK 13-1-98-15

पितॄन्देवानृषीन्विप्रानतिथींश्च जनाधिप ।
यो नरः प्रीणयत्यन्नैस्तस्य पुण्यफलं महत् ॥

↩ वापस: ↩ ई.5

ई.6 कामना से पितृदेवताओं की आराधना करने वालों की गति: पितृलोक और पुनर्जन्म

वक्ता / कथन: कपिल भगवान देवहूति से (नियम) (पुण्य)

- नियम काम से मूढ़ होकर भगवद्धर्म से विमुख हुआ व्यक्ति भी श्रद्धा के साथ यज्ञों द्वारा देवताओं और पितृदेवताओं की आराधना करता है (भाग. 3.33.2)।
- पुण्य उस श्रद्धा से पितृ-देव-व्रती बना वह चंद्रलोक जाकर सोमपान करता है और फिर लौट आता है (भाग. 3.33.3)।
- नियम रजोगुण से कुंठित मन वाले, कामासक्त, इंद्रियों को न जीतने वाले लोग घर की आसक्ति से प्रतिदिन पितृदेवताओं की आराधना करते हैं (भाग. 3.33.17)।
- नियम पुण्य वे अर्यमा के दक्षिण मार्ग से पितृलोक जाते हैं; श्मशान-क्रिया तक के संस्कार करने वाले वे फिर अपनी ही संतान में जन्म लेते हैं (भाग. 3.33.20)।
- नियम पुण्य क्षीण होते ही वे देवताओं द्वारा गिरा दिए जाते हैं और विवश होकर फिर इस लोक में आते हैं (भाग. 3.33.21)।

श्रीमद्भागवत › तृतीयस्कन्ध › अध्याय 33 › श्लोक 2 (नियम) — भाग. 3.33.2

स चापि भगवद्धर्मात् काममूढः पराङ्मुखः।
यजते क्रतुभिर्देवान् पितॄंश्च श्रद्धयाऽन्वितः॥

↩ वापस: (↩ ई.6)

श्रीमद्भागवत › तृतीयस्कन्ध › अध्याय 33 › श्लोक 3 (पुण्य) — भाग. 3.33.3

तच्छ्रद्धयाऽऽक्रान्तमतिः पितृदेवव्रतः पुमान्।
गत्वा चान्द्रमसं लोकं सोमपाः पुनरेष्यति॥

↩ वापस: (↩ ई.6)

श्रीमद्भागवत › तृतीयस्कन्ध › अध्याय 33 › श्लोक 17 (नियम) — भाग. 3.33.17

रजसा कुण्ठमनसः कामात्मानोऽजितेन्द्रियाः।
पितॄन् यजन्त्यनुदिनं गृहेष्वभिरताशयाः॥

↩ वापस: (↩ ई.6)

श्रीमद्भागवत › तृतीयस्कन्ध › अध्याय 33 › श्लोक 20 (नियम) (पुण्य) — भाग. 3.33.20

दक्षिणेन पथाऽर्यम्णः पितृलोकं व्रजन्ति ते।
प्रजायां तु प्रजायन्ते श्मशानान्तक्रियाकृतः॥

↩ वापस: (↩ ई.6)

श्रीमद्भागवत › तृतीयस्कन्ध › अध्याय 33 › श्लोक 21 (नियम) — भाग. 3.33.21

ततस्ते क्षीणसुकृताः पुनर्लोकमिमं सति।
पतन्ति विवशा देवैः सद्यो विभ्रंशितोदयाः॥

↩ वापस: (↩ ई.6)

ई.7 वंशवृद्धि चाहने वाले को पितृदेवताओं की आराधना करनी चाहिए

वक्ता / कथन: शुक परीक्षित से (नियम) (पुण्य)

- नियम पुण्य धर्म चाहने वाले को उत्तमश्लोक भगवान की, और वंशवृद्धि चाहने वाले को पितृदेवताओं की आराधना करनी चाहिए (भाग. 2.3.8)।

श्रीमद्भागवत › द्वितीयस्कन्ध › अध्याय 3 › श्लोक 8 (नियम) (पुण्य) — भाग. 2.3.8

धर्मार्थमुत्तमश्लोकं तन्तुं तन्वन् पितॄन् यजेत्।
रक्षाकामः पुण्यजनान् ओजस्कामो मरुद्गणान्॥

↩ वापस: (↩ ई.7)

ई.8 पितृव्रती पितृदेवताओं को प्राप्त होते हैं

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण अर्जुन से (भगवद्गीता) नियम पुण्य

- नियम पुण्य श्रीकृष्ण ने कहा कि जैसे देवव्रती देवताओं को प्राप्त होते हैं, वैसे ही पितृदेवताओं की व्रत रूप से आराधना करने वाले पितृदेवताओं को प्राप्त होते हैं; उनकी आराधना करने वाले उन्हीं को प्राप्त होते हैं (भीष्म. 33.25)।

महाभारत › भीष्मपर्व › भगवद्गीतापर्व › अध्याय 33, श्लोक 25 नियम पुण्य KK 6-3-33-25

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोपि माम् ॥

↩ वापस: ↩ ई.8

ई.9 वर्षाकाल के चार महीने तिलोदक

वक्ता / कथन: वायुदेव (भीष्म द्वारा कहा गया रहस्यधर्म) नियम पुण्य

- नियम अग्निकार्य करना चाहिए, परमान्न से भोजन कराना चाहिए, और पितृदेवताओं के लिए तिलोदक सहित दीप रखना चाहिए (अनु. 191.2)।
- पुण्य जो इस विधि से श्रद्धा और एकाग्रता के साथ वर्षाकाल के चार महीने तिलोदक देते हुए, वेदपारग ब्राह्मण को यथाशक्ति भोजन कराता है, वह सौ यागों का संपूर्ण फल पाता है (अनु. 191.3–4)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 191, श्लोक 2 नियम KK 13-1-191-2

अग्निकार्यं च कर्तव्यं परमान्नेन भोजनम् ।
दीपकश्चापि कर्तव्यः पितॄणां सतिलोदकः ॥

↩ वापस: ↩ ई.9

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 191, श्लोक 3 पुण्य KK 13-1-191-3

एतेन विधिना मर्त्यः श्रद्दधानः समाहितः ।
चतुरो वार्षिकान्मासान्यो ददाति तिलोदकाम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.9

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 191, श्लोक 4 पुण्य KK 13-1-191-4

भोजनं च यथाशक्त्या ब्राह्मणे वेदपारगे ।
पशुबन्धशतस्येह फलं प्राप्नोति पुष्कलम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.9

ई.10 पितृकार्य में वामन-चरित्र का कीर्तन - सुकृत

वक्ता / कथन: शुक महर्षि परीक्षित से पुण्य

- पुण्य बड़े लोग कहते हैं कि दैव, पित्र्य और मानुष कर्म होते समय जहाँ यह (वामन) चरित्र कीर्तित होता है, वह उनके लिए सुकृत बन जाता है (भाग. 8.21.31)।

श्रीमद्भागवत › अष्टमस्कन्ध › अध्याय 21 › श्लोक 31 पुण्य भाग. 8.21.31

क्रियमाणे कर्मणीदं दैवे पित्र्येऽथ मानुषे ।
यत्र यत्रानुकीर्त्येत तत्तेषां सुकृतं विदुः ॥

↩ वापस: ↩ ई.10

मृतकों और पितरों को मिलने वाली सद्गति और तृप्ति

ई.11 पितरों को तृप्त करने वाले दान

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (93, 97, 103); नारद (99); वसिष्ठ (114) नियम पुण्य

- नियम पुण्य पितरों का हित चाहकर यम दीपदान की प्रशंसा करते हैं; नित्य दीप देने वाला पितरों का उद्धार करता है; देवताओं और पितरों को सदा दीप देने चाहिए, वह नेत्रों के लिए हितकर है (अनु. 103.28–29)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 103, श्लोक 28 नियम पुण्य KK 13-1-103-28

तथा प्रशंसते दीपान्यमः पितृहितेप्सया।
तस्माद्दीपप्रदो नित्यं सन्तारति वै पितॄन्॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 103, श्लोक 29 नियम पुण्य KK 13-1-103-29

दातव्याः सततं दीपास्तस्माद्भरतसत्तम।
देवतानां पितॄणां च चक्षुष्यं चात्मनां विभो॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.11

ई.12 पितृदेवताओं का सुझाव: सुवर्णदान वंश को तारता है

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम उन पितृदेवताओं ने भीष्म को भूमि और गौओं के लिए सोना दान करने का सुझाव दिया; उन्होंने कहा कि इससे वे स्वयं, धर्म और उनके पितामह सभी पावन हो जाएँगे (अनु. 130.25–26)।
- पुण्य पितृदेवताओं ने कहा कि सोना दान करने वाले पहले की दस पीढ़ियों और बाद की दस पीढ़ियों को तार देते हैं; जागने पर भीष्म ने सुवर्णदान में मन लगाया (अनु. 130.27–28)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 25 नियम पुण्य KK 13-1-130-25

तदिदं सम्यगारब्धं त्वयाऽद्य भरतर्षभ।
किन्तु भूमेर्गवां चार्थे सुवर्णं दीयतामिति॥

↩ वापस: ↩ आ.11 ↩ ई.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 26 नियम KK 13-1-130-26

एवं वयं च धर्मश्च सर्वे चास्मत्पितामहाः।
पाविता वै भविष्यन्ति पावनं हि परं हि तत्॥

↩ वापस: ↩ ई.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 27 पुण्य KK 13-1-130-27

दश पूर्वान्दशैवान्यांस्तथा सन्तारयन्ति ते।
सुवर्णं ये प्रयच्छन्ति एवं मत्पितरोऽब्रुवन्॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 130, श्लोक 28 पुण्य KK 13-1-130-28

ततोऽहं विस्मितो राजन्प्रतिबुद्धो विशाम्पते।
सुवर्णदानेऽकरवं मतिं च भरतर्षभ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.12

ई.13 तिलपात्र-दान, मधु सहित तिलोदक, दीप, कृसर

वक्ता / कथन: लोमश (भीष्म द्वारा कहा गया रहस्यधर्म) नियम पुण्य

- नियम प्रातः उठकर स्नान करके श्वेत वस्त्र पहनकर, एकाग्रता से ब्राह्मणों को तिलपात्र दान करना चाहिए (अनु. 192.10)।
- नियम पितृदेवताओं को मधु मिला तिलोदक देना चाहिए; दीप और कृसर (तिल-चावल का अन्न) भी देना चाहिए (अनु. 192.11)।
- पुण्य देवता मानते हैं कि तिलपात्र-दान गोदान, शाश्वत भूदान और बहुदक्षिणा वाले अग्निष्टोम के समान है (अनु. 192.12–13)।
- पुण्य श्राद्ध में दिए गए तिलोदक को पितृदेवता सदा अक्षय मानते हैं; दीप और कृसर से उसके पितामह तृप्त होते हैं (अनु. 192.14)।
- पुण्य यह स्वर्ग में और पितृलोक में पितृदेवताओं और देवताओं द्वारा पूजित है; ऋषियों द्वारा देखी गई प्राचीन विधि है (अनु. 192.15)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 10 नियम KK 13-1-192-10

कल्यमुत्थाय यो मर्त्यः स्नातः शुक्लेन वाससा।
तिलपात्रं प्रयच्छेत ब्राह्मणेभ्यः समाहितः॥

↩ वापस: ↩ ई.13

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 11 नियम KK 13-1-192-11

तिलोदकं च यो दद्यात्पितृणां मधुना सह।
दीपकं कृसंर चैव श्रूयतां तस्य यत्फलम्॥

↩ वापस: ↩ ई.13

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 12 पुण्य KK 13-1-192-12

तिलपात्रे फलं प्राह भगवान्पाकशासनः।
गोप्रदानं च यः कुर्याद्भूमिदानं च शाश्वतम्॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.13

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 13 पुण्य KK 13-1-192-13

अग्निष्टोमं च यो यज्ञं यजेत बहुदक्षिणम्।
तिलपात्रं सहैतेन समं मन्यन्ति देवताः॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.13

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 14 पुण्य KK 13-1-192-14

तिलोदकं सदा श्राद्धे मन्यन्ते पितरोऽक्षयम्।
दीपे च कृसरे चैव तुष्यन्तेऽस्य पितामहाः॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.13

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 192, श्लोक 15 पुण्य KK 13-1-192-15

स्वर्गे च पितृलोके च पितृदेवाभिपूजितम्।
एवमेतन्मयोद्दिष्टमृषिदृष्टं पुरातनम्॥

↩ वापस: ↩ ई.13

ई.14 नीलवृषभ-विमोचन, वर्षाकाल में दीपदान, अमावस्या को तिलोदक — पितृ-ऋण से मुक्ति

वक्ता / कथन: पितृदेवता देवताओं से और वृद्धगार्ग्य से — भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को कहा गया नियम पुण्य

- नियम देवताओं और ऋषियों ने पितरों से पूछा कि अल्पबुद्धि मनुष्यों द्वारा पितर किससे तृप्त होते हैं, और्ध्वदेहिक दान अक्षय कैसे होता है, और पितृ-ऋण कैसे चुकता है (अनु. 188.66–69)।
- नियम पुण्य नीलवृषभ-विमोचन (नीलषंड-प्रमोक्ष), अमावस्या को तिलोदक और वर्षाकाल में दीपदान — इनसे पितृ-ऋण चुकता है; यह अक्षय और महाफल वाला दान है, हमारी तृप्ति अक्षय है (अनु. 188.70–71)।
- पुण्य श्रद्धा से संतान की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले मनुष्य अपने प्रपितामहों को दुर्गम नरक से तार देते हैं (अनु. 188.72)।
- पुण्य वृद्धगार्ग्य के पूछने पर पितरों ने कहा: छोड़ा गया नीलवृषभ यदि पूँछ से जल ऊपर उछाले, तो पितर साठ हज़ार वर्ष तक तृप्त होते हैं (अनु. 188.73–75)।
- पुण्य यदि वह सींगों से किनारे का कीचड़ उठाकर खड़ा हो, तो पितर निस्संदेह सोमलोक जाते हैं (अनु. 188.76)।
- पुण्य वर्षाकाल में दीपदान करने वाला चंद्रमा की तरह प्रकाशित होता है; उसके लिए अंधकार नहीं रहता (अनु. 188.77)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 66 नियम KK 13-1-188-66

ततः सर्वा महाभाग देवताः समरुद्गणाः।
ऋषयश्च महाभागाः पृच्छन्ति स्म पितॄंस्ततः॥

↩ वापस: ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 67 नियम KK 13-1-188-67

पितरः केन तुष्यन्ति मर्त्यानामल्पचेतसाम्।
अक्षयं च कथं दानं भवेच्चैवौर्ध्वदेहिकम्॥

↩ वापस: ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 68 नियम KK 13-1-188-68

आनृण्यं वा कथं मर्त्या गच्छेयुः केन कर्मणा।
एतदिच्छामहे श्रोतुं परं कौतूहलं हि नः॥

↩ वापस: ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 69 नियम KK 13-1-188-69

पितर ऊचुः
न्यायतो वै महाभागाः संशयः समुदाहृतः।
श्रूयतां येन तुष्यामो मर्त्यानां साधुकर्मणाम्॥

↩ वापस: ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 70 नियम पुण्य KK 13-1-188-70

नीलषण्डप्रमोक्षेण अमावास्यां तिलोदकैः।
वर्षासु दीपकैश्चैव पितॄणामनृणो भवेत्॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 71 नियम पुण्य KK 13-1-188-71

अक्षयं निर्व्यलीकं च दानमेतन्महाफलम्।
अस्माकं परितोषश्च अक्षयः परिकीर्त्यते॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 72 पुण्य KK 13-1-188-72

श्रद्धधानाश्च ये मर्त्या आहरिष्यन्ति सन्ततिम्।
दुर्गात्ते तारयिष्यन्ति नरकात्प्रपितामहान्॥

↩ वापस: ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 73 पुण्य KK 13-1-188-73

पितॄणां भाषितं श्रुत्वा हृष्टरोमा तपोधनः ।
वृद्धगार्ग्यो महातेजास्तानेवं वाक्यमब्रवीत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 74 पुण्य KK 13-1-188-74

के गुणा नीलषण्डस्य प्रमुक्तस्य तपोधनाः ।
वर्षासु दीपदानेन तथैव च तिलोदकैः ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 75 पुण्य KK 13-1-188-75

पितर ऊचुः
नीलषण्डस्य लाङ्गूलं तोयमभ्युद्धरेद्यदि ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि पितरस्तेन तर्पिताः ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 76 पुण्य KK 13-1-188-76

यस्तु शृङ्गगतं पङ्कं कूलादुद्धृत्य तिष्ठति ।
पितरस्तेन गच्छन्ति सोमलोकमसंशयम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 77 पुण्य KK 13-1-188-77

वर्षासु दीपदानेन शशीवच्छोभते नरः ।
तमोरूपं न तस्यास्ति दीपकं यः प्रयच्छति ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.14

ई.15 श्राद्ध में भारत सुनाने से श्राद्ध अक्षय होता है

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से पुण्य

- पुण्य जो श्राद्ध में ब्राह्मणों को इस भारत का कम से कम एक पाद भी सुनाता है, उसका श्राद्ध अक्षय होकर पितृदेवताओं तक पहुँचता है (आदि. 62.40)।

महाभारत › आदिपर्व › अंशावतरणपर्व › अध्याय 62, श्लोक 40 पुण्य KK 1-6-62-40

श्रावयेद्ब्राह्मणाञ्श्राद्धे यश्चेमं पादमन्ततः ।
अक्षय्यं तस्य तच्छ्राद्धमुपावर्तेत्पितॄनिह ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ ई.15

ई.16 श्राद्धकाल में पुण्यकथा का पाठ

वक्ता / कथन: ऋषि (44.4); भीष्म युधिष्ठिर से (97) नियम पुण्य

- पुण्य श्राद्धकाल में शुचि होकर ब्राह्मणों को यह (गरुड़) कथा सुनाई जाए तो वहाँ राक्षसों और असुरों का भाग नहीं रहता (अनु. 44.4)।
- पुण्य वेदसम्मित इस (भूमि की) वाणी को जानने वाला ब्राह्मण, जब श्राद्ध हवन बनता है, ब्रह्मभाव को प्राप्त करता है (अनु. 97.37)।
- नियम पुण्य श्राद्ध में यह भूमिदान-स्तुति सुनाई जाए तो राक्षसों और असुरों का भाग नहीं रहता; पितरों को दिया गया अक्षय हो जाता है; इसलिए श्राद्ध में भोजन कर रहे ब्राह्मणों को इसे सुनाना चाहिए (अनु. 97.98–99)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 44, श्लोक 4 पुण्य KK 13-1-44-4

श्राद्धकाले च विप्राणां य इमां श्रावयेच्छुचिः ।
न तत्र रक्षसां भागो नासुराणां च विद्यते ॥

↩ वापस: ↩ ई.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 97, श्लोक 37 पुण्य KK 13-1-97-37

य इमां व्याहृतिं वेद ब्राह्मणो वेदसम्मिताम् ।
श्राद्धस्य हूयमानस्य ब्रह्मभूयं स गच्छति ॥

↩ वापस: ↩ ई.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 97, श्लोक 98 नियम पुण्य KK 13-1-97-98

य इदं श्रावयेच्छ्राद्धे भूमिदानस्य संस्तवम् ।
न तस्य रक्षसां भागो नासुराणां भवत्युत ॥

↩ वापस: ↩ ई.16

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 97, श्लोक 99 नियम पुण्य KK 13-1-97-99

अक्षयं च भवेद्दत्तं पितृभ्यस्तन्न संशयः ।
तस्माच्छ्राद्धेष्विदं विद्वान्भुञ्जतः श्रावयेद्द्विजान् ॥

↩ वापस: ↩ ई.16

ई.17 श्राद्धकाल में पुण्यकथाओं/नामों का पाठ

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (129, 255); विष्णु (197) नियम पुण्य

- पुण्य इसे (इस गोमाहात्म्य को) हव्य-कव्यों में, यज्ञों में, पितृकार्यों में एकाग्रता से ब्राह्मणों को नित्य सुनाने वाले के पितरों को सर्वकामप्रद, अक्षय (फल) प्राप्त होता है (अनु. 129.45–46)।
- पुण्य पर्वदिनों में नियमपूर्वक इस रहस्यधर्म को श्रेष्ठ ब्राह्मणों को सुनाने वाले के हव्य-कव्य को देवता और पितृदेवता अक्षय रूप से भोगते हैं; वह ऋषियों, देवताओं और पितृदेवताओं का सदा प्रिय होता है (अनु. 197.12–13)।
- नियम दैवकार्य में अथवा श्राद्धकाल में कर्मसिद्धि के लिए क्या जपना चाहिए — यह युधिष्ठिर ने भीष्म से पूछा (अनु. 255.2)।
- पुण्य इन्हें (भीष्म द्वारा कहे गए इस जप्य को) दैवकार्य और पित्र्यकार्य में पढ़ने वाले का कव्य पितर और हव्य देवता भोगते हैं (अनु. 255.66)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 129, श्लोक 45 पुण्य KK 13-1-129-45

कीर्तितं पुरुषव्याघ्र सर्वपापविमोचनम् ।
य इदं कथयेन्नित्यं ब्राह्मणेभ्यः समाहितः ॥

↩ वापस: ↩ ई.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 129, श्लोक 46 पुण्य KK 13-1-129-46

हव्यकव्येषु यज्ञेषु पितृकार्येषु चैव ह ।
सार्वकामिकमक्षय्यं पितॄंस्तस्योपतिष्ठते ॥

↩ वापस: ↩ ई.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 197, श्लोक 12 पुण्य KK 13-1-197-12

भुञ्जते पितरो देवा हव्यं कव्यमथाक्षयम् ।
श्रावयंश्चापि विप्रेन्द्रान्पर्वसु प्रयतो नरः ॥

↩ वापस: ↩ ई.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 197, श्लोक 13 पुण्य KK 13-1-197-13

ऋषीणां देवतानां च पितॄणां चैव नित्यदा ।
भवत्यभिमतः श्रीमान्धर्मेषु प्रयतः सदा ॥

↩ वापस: ↩ ई.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 255, श्लोक 2 नियम KK 13-1-255-2

प्रस्थाने वा प्रवेशे वा प्रवृत्ते वाऽपि कर्मणि ।
दैवे वा श्राद्धकाले वा किं जप्यं कर्मसाधनम् ॥

↩ वापस: ↩ ई.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 255, श्लोक 66 पुण्य KK 13-1-255-66

एतान्दैवे च पित्र्ये च पठतः पुरुषस्य हि।
भुञ्जते पितरः कव्यं हव्यं च त्रिदिवौकसः॥

↩ वापस: ↩ ई.17

ई.18 श्राद्ध में कपिलादान अध्याय का पाठ

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से पुण्य

- पुण्य इस (कपिलादान) अध्याय का पाठ करते हुए जो श्राद्ध में ब्राह्मणों को तृप्त करता है, उसके पितृदेवता अत्यन्त हर्ष से अमृत का भोजन करते हैं (आश्व. 106.16)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 16 पुण्य KK 14-3-106-16

इदमावर्तमानस्तु श्राद्धे यस्तर्पयेद्द्विजान्।
तस्याप्यमृतमश्नन्ति पितरोऽत्यन्तहर्षिताः॥

↩ वापस: ↩ ई.18

(उ) नियम — कैसे, कब, कहाँ

(अ) सामान्य श्राद्ध-विधि — आमन्त्रण, ब्राह्मण, द्रव्य, पिण्डप्रदान, वर्ज्य

उ.1 अत्रि द्वारा कही गई श्राद्धविधि — अग्नि, सोम, वरुण, विश्वेदेव के भाग

वक्ता / कथन: अत्रि निमि से — भीष्म युधिष्ठिर से (नियम) (पुण्य)

- नियम पहले मन्त्रपूर्वक अग्निकार्य करके अग्नि, सोम, वरुण और पितरों के साथ विचरने वाले विश्वेदेवों को भाग देने चाहिए — इन्हें स्वयम्भू ने ही कल्पित किया (अनु. 138.23–24)।
- नियम लोक को धारण करने वाली पृथ्वी की वैष्णवी, काश्यपी, अक्षया कहकर स्तुति करनी चाहिए; जल लाते समय वरुण की स्तुति करनी चाहिए; अग्नि और सोम की आराधना करनी चाहिए (अनु. 138.25–26)।
- नियम पुण्य स्वयम्भू द्वारा रचे गए पितर ही ऊष्मप देवता हैं; उनके लिए भाग कल्पित किया गया है; श्राद्ध से पूजित होकर वे पाप से मुक्त होते हैं; सात पितृवंशों को स्वयम्भू ने पहले ही देख लिया था (अनु. 138.27–28)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 23 नियम KK 13-1-138-23

कृत्वाऽग्निशरणं पूर्वं मन्त्रपूर्वं तपोधन।
ततोऽग्नयेऽथ सोमाय वरुणाय च नित्यशः॥

↩ वापस: (↩ उ.1)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 24 नियम KK 13-1-138-24

विश्वेदवाश्च ये नित्यं पितृभिः सह गोचराः।
तेभ्यः सङ्कल्पिता भागाः स्वयमेव स्वयम्भुवा॥

↩ वापस: (↩ उ.1)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 25 नियम KK 13-1-138-25

स्तोतव्या चेह पृथिवी लोकस्यैव तु धारिणी।
वैष्णवी काश्यपी चेति तथैवेहाक्षयेति च॥

↩ वापस: (↩ उ.1)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 26 नियम KK 13-1-138-26

उदकानयने चैव स्तोतव्यो वरुणो विभुः।
ततोऽग्निश्चैव सोमश्च आराध्याविह तेऽनघ॥

↩ वापस: (↩ उ.1)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 27 नियम पुण्य KK 13-1-138-27

देवास्तु पितरो नाम निर्मिता ये स्वयम्भुवा।
ऊष्मपा ये महाभागास्तेषां भागः प्रकल्पितः॥

↩ वापस: (↩ अ.0 · पितृदेवता) (↩ उ.1)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 28 नियम पुण्य KK 13-1-138-28

ते श्राद्धेनार्च्यमाना वै विमुच्यन्ते ह किल्बिषात्।
सप्तकाः पितृवंशास्तु पूर्वदृष्टाः स्वयम्भुवा॥

↩ वापस: (↩ उ.1)

उ.2 श्राद्ध के दिन कर्मों का क्रम

वक्ता / कथन: भूदेवी श्रीकृष्ण से (भीष्म द्वारा कहा गया) नियम

- नियम जिस दिन पितृदेवताओं का श्राद्ध करना हो, उस दिन श्राद्धकर्म पूरा होने के बाद ही (बलि आदि) करने चाहिए (अनु. 154.16)।
- नियम पहले पितृदेवताओं का तर्पण करके, फिर विधिपूर्वक बलि, उसके बाद वैश्वदेव और अंत में ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिए (अनु. 154.17)।
- नियम बचे हुए अन्न से अर्घ्यपूर्वक अतिथियों को भी भोजन कराना चाहिए (अनु. 154.18)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 154, श्लोक 16 नियम KK 13-1-154-16

यदा श्राद्धं पितृभ्योपि दातुमिच्छेत मानवः।
तदा पश्चात्प्रकुर्वीत निवृत्ते श्राद्धकर्मणि॥

↩ वापस: ↩ उ.2

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 154, श्लोक 17 नियम KK 13-1-154-17

पितॄन्सन्तर्पयित्वा तु बलिं कुर्याद्विधानतः।
वैश्वदेवं ततः कुर्यात्पश्चाद्ब्राह्म्णभोजनम्॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.2

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 154, श्लोक 18 नियम KK 13-1-154-18

ततोऽन्नेनावशेषेण भोजयेदतिथीनपि।
अर्घ्यपूर्वं महाराज ततः प्रीणाति मानवान्।
अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते॥

↩ वापस: ↩ उ.2

उ.3 पितृकार्य से पहले शौच, पितृतीर्थ, समय

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम

- नियम अँगूठे का मूल ब्राह्मतीर्थ है, कनिष्ठिका के पीछे देवतीर्थ; अँगूठे और तर्जनी के बीच के भाग से (पितृतीर्थ), विधिवत् जल स्पर्श करके सभी पितृकार्य करने चाहिए (अनु. 161.109–110).
- नियम अपने तीर्थ से तीन बार आचमन करके, दो बार पोंछकर, इन्द्रियों का एक बार स्पर्श करके, तीन बार प्रोक्षण करके, वेदविहित रीति से पितृकार्य और दैवकार्य करना चाहिए (अनु. 161.114–115).
- नियम ऐश्वर्य चाहने वाला रात्रि में पितृकार्य न करे (अनु. 161.128).
- नियम शिरःस्नान करने के बाद ही दैवकार्य और पितृकार्य करना चाहिए (अनु. 161.134).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 161, श्लोक 109 नियम KK 13-1-161-109

अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्तमुदाहृतम्।
कनिष्ठिकायाः पश्चात्तु देवतीर्थमिहोच्यते॥

↩ वापस: ↩ उ.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 161, श्लोक 110 नियम KK 13-1-161-110

अङ्गुष्ठस्य च यन्मध्यं प्रदेशिन्याश्च भारत।
तेन पित्र्याणि कुर्वीत स्पृष्ट्वाऽऽपो न्यायतः सदा॥

↩ वापस: ↩ उ.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 161, श्लोक 114 नियम KK 13-1-161-114

स्वेस्वे तीर्थे समाचम्य कार्ये समुपकल्पिते।
त्रिः पीत्वाऽऽपो द्विः प्रमृज्य कृतशौचो भवेन्नरः॥

↩ वापस: ↩ उ.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 161, श्लोक 115 नियम KK 13-1-161-115

इन्द्रियाणि सकृत्स्पृश्य त्रिरभ्युक्ष्य च मानवः ।
कुर्वीत पित्र्यं दैवं च वेददृष्टेन कर्मणा ॥

↩ वापस: ↩ उ.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 161, श्लोक 128 नियम KK 13-1-161-128

नक्तं न कुर्यात्पित्र्याणि नक्तं चैव प्रसाधनम् ।
पानीयस्य क्रिया नक्तं न कार्या भूतिमिच्छता ॥

↩ वापस: ↩ उ.3

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 161, श्लोक 134 नियम KK 13-1-161-134

शिरःस्नातोथ कुर्वीत दैवं पित्र्यमथापि च ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.3

उ.4 ब्राह्मणों के आसन, पिंडदान और श्राद्ध-समाप्ति का वचन

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- नियम ब्राह्मण प्रागुदीचीमुख (पूर्व–उत्तर की ओर मुख करके) और विश्वेदेव-स्थान वाले दक्षिण की ओर (दक्षिणाः) बैठें, तब (मंत्र) सुनाकर, उनके भली-भाँति तृप्त हो जाने के बाद दक्षिणा सहित पिंड देना चाहिए (अनु. 61.39)।
- नियम श्राद्ध-समाप्ति में ब्राह्मण कर्ता के विषय में 'आपके दाता बने रहें', क्षत्रिय के लिए 'पितर प्रसन्न हों', वैश्य के लिए 'अक्षय्यम्' और शूद्र के लिए 'स्वस्ति' कहना चाहिए (अनु. 61.40–41)।
- पाप समाप्ति के समय उचित वचन न कहने वाले द्विज को गौ के विषय में असत्य बोलने का अधर्म लगता है (अनु. 61.33)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 33 पाप KK 13-1-61-33

क्रियमाणेऽपवर्गे च यो द्विजो भरतर्षभ ।
न व्याहरति यद्युक्तं तस्याधर्मो गवानृतम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.4

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 39 नियम KK 13-1-61-39

प्रागुदीचीमुखा विप्राः विश्वेदेवे च दक्षिणाः ।
श्रावितेषु सुतृप्तेषु पिण्डं दद्यात्सदक्षिणम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.4

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 40 नियम KK 13-1-61-40

श्राद्धापवर्गे विप्रस्य दातारो वोस्त्वितीरयेत् ।
क्षत्रियस्यापि यो ब्रूयात्प्रीयन्तां पितरस्त्विति ॥

↩ वापस: ↩ उ.4

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 41 नियम KK 13-1-61-41

अपवर्गे तु वैश्यस्य श्राद्धकर्मणि भारत ।
अक्षय्यमभिधातव्यं स्वस्ति शूद्रस्य भारत ॥

↩ वापस: ↩ उ.4

उ.5 पिण्डों का क्रम, मन्त्र, निवाप में उपस्थित न रहने योग्य स्त्रियाँ

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम

- नियम हुताशन (अग्नि) के रहते राक्षस वृद्धि नहीं पाते; पहले पिता को, फिर पितामह को, फिर प्रपितामह को पिण्ड देना चाहिए — यही श्राद्धविधि है (अनु. 139.13–14)।
- नियम प्रत्येक पिण्ड पर एकाग्रता से सावित्री का उच्चारण करना चाहिए; 'सोमाय', 'पितृमते' भी कहना चाहिए (अनु. 139.14)।
- नियम रजस्वला स्त्री और कटे कानों वाली स्त्री निवाप के पास न रहे; दूसरे वंश की स्त्री को (इस कार्य के लिए) न लिया जाए (अनु. 139.15)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 13 नियम KK 13-1-139-13

रक्षांसि नाभिवर्धन्ते स्थिते देवे हुताशने।
पूर्वं पिण्डं पितुर्दद्यात्ततो दद्यात्पितामहे॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.5

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 14 नियम KK 13-1-139-14

प्रपितामहाय च तत एष श्राद्धविधिः स्मृतः।
ब्रूयाच्छ्राद्धे च सावित्रीं पिण्डे पिण्डे समाहितः।
सोमायेति च वक्तव्यं तथा पितृमतेति च॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.5 ↩ उ.5

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 15 नियम KK 13-1-139-15

रजस्वला च या नारी व्यङ्गिता कर्णयोश्च या।
निवापे नोपतिष्ठेत सङ्गाह्या नान्यवंशजा॥

↩ वापस: ↩ उ.5

उ.6 तीन पिण्डों का विभाग

वक्ता / कथन: पितृदेवता देवदूत से — भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को कहा गया नियम पुण्य

- नियम दूत ने पूछा कि तीन पिण्ड अलग-अलग क्यों हैं, और पहला, मध्यम और अंतिम किसके लिए है (अनु. 188.20–21).
- नियम एक पिण्ड नीचे जाकर जल में प्रवेश करके पोषण करता है; मध्यम पिण्ड को केवल पत्नी खाती है; तीसरा पिण्ड अग्नि में डालना चाहिए — धर्म का लोप न हो, इसके लिए यही श्राद्धविधि है (अनु. 188.25–26).
- पुण्य ऐसा करने वाले के पितर सदा प्रसन्न रहते हैं; उसकी संतान बढ़ती है; अक्षय फल मिलता है (अनु. 188.27).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 21 नियम KK 13-1-188-21

प्रथमः कस्य दातव्यो मध्यमः क्व च गच्छति।
उत्तरश्च स्मृतः कस्य एतदिच्छामि वेदितुम्॥

↩ वापस: ↩ उ.6

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 25 नियम KK 13-1-188-25

प्रविभागं तु पिण्डानां प्रवक्ष्याम्यनुपूर्वशः।
पिण्डो ह्यधस्ताद्गच्छंस्तु अप आविश्य भावयेत्॥

↩ वापस: ↩ उ.6

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 26 नियम KK 13-1-188-26

पिण्डं तु मध्यमं तत्र पत्नीत्वेका समश्नुते।
पिण्डस्तृतीयो यस्तेषां तं दद्याज्जातवेदसि।
एष श्राद्धविधिः प्रोक्तो यथा धर्मो न लुप्यते॥

↩ वापस: ↩ उ.6

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 27 पुण्य KK 13-1-188-27

पितरस्तस्य तुष्यन्ति प्रहृष्टमनसः सदा ।
प्रजा विवर्धते चास्य अक्षयं चोपतिष्ठति ॥

↩ वापस: ↩ उ.6

उ.7 पिण्डप्रदान की विधि — आरम्भ से शेषभोजन तक

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से नियम पुण्य

- नियम क्षौर करवाकर सिर से स्नान किए हुए ब्राह्मणों को क्रम से आसनों पर बिठाकर, सुगन्ध, पुष्पमालाओं और आभूषणों से अलंकृत करके, पिण्डावाप के विषय में निवेदन करना चाहिए (अनु. 238.24–25)।
- नियम दक्षिणाभिमुख दर्भों का प्रस्तर बिछाकर, उसके पास अग्नि प्रज्वलित करके स्वधा-होम करना चाहिए; पास ही अग्नीषोम और पितरों के लिए होम करना चाहिए (अनु. 238.26)।
- नियम दक्षिणाभिमुख होकर, अपसव्य होकर, (अपांगुष्ठ होकर), नाम पहले उच्चारित करते हुए दर्भों पर तीन पिण्ड रखने चाहिए (अनु. 238.27)।
- नियम पुण्य इस प्रकार दिया गया पितरों के लिए अक्षय होता है; उसके बाद नियमपूर्वक, शुचि होकर, यथाशक्ति दक्षिणा और सामग्री से ब्राह्मणों को प्रसन्न करते हुए उनकी पूजा करनी चाहिए (अनु. 238.28)।
- नियम जहाँ श्राद्ध हो रहा हो वहाँ व्यर्थ बातचीत नहीं करनी चाहिए, आपस में कानाफूसी नहीं करनी चाहिए; वाणी और देह को संयमित करके श्राद्धकर्म आरम्भ करना चाहिए (अनु. 238.29)।
- नियम निर्वपण समाप्त होने के बाद उन पिण्डों को ब्राह्मण, अग्नि, बकरी या गाय खाए, अथवा उन्हें जल में डाल देना चाहिए (अनु. 238.30)।
- नियम पुण्य पुत्र चाहने वाले को मध्यम पिण्ड पत्नी को खिलाना चाहिए — 'हे पितरो, पुष्करमाला धारण किए कुमार को गर्भ में स्थापित करो' (अनु. 238.31)।
- नियम तृप्त ब्राह्मणों को उठाकर, शेष अन्न निवेदित करना चाहिए; उस शेष को बाद में सेवकों सहित अनेक लोगों के साथ मिलकर खाना चाहिए (अनु. 238.32)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 24 नियम KK 13-1-238-24

श्मश्रुकर्मशिरः स्नातान्समारोप्यासनं क्रमात् ।
सुगन्धमाल्याभरणैः स्रग्भिरेतान्विभूषयेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.7

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 25 नियम KK 13-1-238-25

अलङ्कृत्योपविष्टांस्तान्पिण्डावापं निवेदयेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.7

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 26 नियम KK 13-1-238-26

ततः प्रस्तीर्य दर्भाणां प्रस्तरं दक्षिणामुखम् ।
तत्समीपेऽग्निमिद्धा च स्वधां च जुहुयात्ततः ।
समीपे त्वग्नीषोमाभ्यां पितृभ्यो जुहुयात्तदा ॥

↩ वापस: ↩ उ.7

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 27 नियम KK 13-1-238-27

तथा दर्भेषु पिण्डांस्त्रीन्निर्वपेद्दक्षिणामुखः ।
अपसव्यमपाङ्गुष्ठं नामधेयपुरस्कृतम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.7

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 28 नियम पुण्य KK 13-1-238-28

एतेन विधिना दत्तं पितृणामक्षयं भवेत्।
ततो विप्रान्यथाशक्ति पूजयेन्नियतः शुचिः।
सदक्षिणं ससम्भारं यथा तुष्यन्ति ते द्विजाः॥

↩ वापस: ↩ उ.7

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 29 नियम KK 13-1-238-29

यत्र तत्क्रियते तत्र न जल्पन्न जपेन्मिथः।
नियम्य वाच्यं देहं च श्राद्धकर्म समारभेत्॥

↩ वापस: ↩ उ.7

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 30 नियम KK 13-1-238-30

ततो निर्वपने वृत्ते तान्पिण्डांस्तदनन्तरम्।
ब्राह्मणोऽग्निरजो गौर्वा भक्षयेदप्सु वा क्षिपेत्॥

↩ वापस: ↩ उ.7

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 31 नियम पुण्य KK 13-1-238-31

पत्नीं वा मध्यमं पिण्डं पुत्रकामो हि प्राशयेत्।
आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्रजम्॥

↩ वापस: ↩ उ.7

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 32 नियम KK 13-1-238-32

तृप्तानुत्थाप्य तान्विप्रानन्नशेषं निवेदयेत्।
तच्छेषं बहुभिः पश्चात्सभृत्यो भक्षयेन्नरः॥

↩ वापस: ↩ उ.7

उ.8 श्राद्ध में तीन पवित्र: दौहित्र, कुतप, तिल

वक्ता / कथन: ययाति (स्वर्गारोहण के समय) दौहित्रों और माधवी से उदाहरण नियम पुण्य

- उदाहरण ययाति ने कहा कि पुत्री के द्वारा और महात्मा दौहित्रों के द्वारा उनका उद्धार हुआ (आदि. 87.28)।
- नियम इसलिए आज से पितृकार्य में दौहित्र पवित्र है; श्राद्ध में दौहित्र, कुतप और तिल ये तीनों पवित्र हैं (आदि. 87.29)।
- नियम श्राद्ध में शौच, क्रोध का अभाव और जल्दबाज़ी न करना ये तीनों प्रशंसनीय हैं; भोजन करने वाले, परोसने वाले और (मन्त्र) सुनाने वाले पवित्र होने चाहिए (आदि. 87.30)।
- नियम पुण्य दिन के आठवें भाग में जब सूर्य मन्द पड़ता है, उस वेला का नाम 'कुतप' है; उस काल में पितृदेवताओं को दिया गया अक्षय हो जाता है (आदि. 87.31)।
- नियम पुण्य तिल पिशाचों से, दर्भ राक्षसों से और श्रोत्रिय पंक्ति की रक्षा करते हैं; यतियों का भोजन किया हुआ अक्षय है (आदि. 87.32)।
- नियम जब विद्वान, श्रोत्रिय, सुव्रत और शुचि पात्र मिले, तभी वह (दान का) काल है; उस काल में दिया गया ही कालोचित रूप से दिया गया है; अन्य प्रकार से काल स्वीकार नहीं किया जाता (आदि. 87.33)।

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 87, श्लोक 28 उदाहरण KK 1-7-87-28

ययातिरुवाच
यदि धर्मफलं ह्येतच्छोभनं भविता तव।
दुहित्रा चैव दौहित्रैस्तारितोऽहं महात्मभिः॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.8

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 87, श्लोक 29 नियम KK 1-7-87-29

तस्मात्पवित्रं दौहित्रमद्यप्रभृति पैतृके।
त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः॥

↩ वापस: ↩ उ.8

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 87, श्लोक 30 नियम KK 1-7-87-30

त्रीणि चात्र प्रशंसन्ति शौचमक्रोधमत्वराम्।
भोक्तारः परिवेष्टारः श्राविताराः पवित्रकाः॥

↩ वापस: ↩ उ.8

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 87, श्लोक 31 नियम पुण्य KK 1-7-87-31

दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति भास्करे।
स कालः कुतपो नाम पितॄणां दत्तमक्षयम्॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.8

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 87, श्लोक 32 नियम पुण्य KK 1-7-87-32

तिलाः पिशाचाद्रक्षन्ति दर्भा रक्षन्ति राक्षसात्।
रक्षन्ति श्रोत्रियाः पङ्क्तिं यतिभिर्भुक्तमक्षयम्॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.8

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 87, श्लोक 33 नियम KK 1-7-87-33

लब्ध्वा पात्रं तु विद्वांसं श्रोत्रियं सुव्रतं शुचिम्।
स कालः कालतो दत्तं नान्यथा काल इष्यते॥

↩ वापस: ↩ उ.8

उ.9 श्राद्ध में तिल

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (101); यम ब्राह्मण से (103) नियम पुण्य

- नियम पुण्य स्वयम्भू (ब्रह्मा) ने तिलों को पितरों के प्रथम भोज्य के रूप में रचा; इसलिए तिलदान से पितृपक्ष (पितर) प्रसन्न होते हैं (अनु. 101.7)।
- नियम पुण्य तिलों से पितरों की आराधना करने वाला मानो सभी सत्रयाग कर लेता है; तिलों से श्राद्ध कभी 'अकामेन' (कामना के बिना) नहीं देना चाहिए (अनु. 101.9)।
- नियम श्राद्ध में तिलों की प्रशंसा की जाती है, यह सर्वोत्तम दान है; इन्हें विधि के अनुसार ब्राह्मणों को देना चाहिए — ऐसा यम ने कहा (अनु. 103.17)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 101, श्लोक 7 नियम पुण्य KK 13-1-101-7

पितॄणां प्रथमं भोज्यं तिलाः सृष्टाः स्वयम्भुवा।
तिलदानेन वै तस्मात्पितृपक्षः प्रमोदते॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.9

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 101, श्लोक 9 नियम पुण्य KK 13-1-101-9

सर्वसत्रैश्च यजते यस्तिलैर्यजते पितॄन्।
न चाकामेन दातव्यं तिलैः श्राद्धं कदाचन॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.9

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 103, श्लोक 17 नियम KK 13-1-103-17

तिलाञ्श्राद्धे प्रशंसन्ति दानमेतद्ध्यनुत्तमम्।
तान्प्रयच्छस्व विप्रेभ्यो विधिदृष्टेन कर्मणा॥

↩ वापस: ↩ उ.9

उ.10 श्राद्ध में तिल की महिमा; दुरुपयोग का पाप

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से नियम पाप पुण्य

- नियम पुण्य तिल पवित्र हैं, पापनाशक हैं, नारायण से उत्पन्न हैं; श्राद्ध में तिलों की प्रशंसा की जाती है; यह सर्वोत्तम दान है (आश्व. 109.34)।
- नियम पाप खरीदे हुए या दान में मिले तिलों को द्विज न बेचें; भोजन, अभ्यंग और दान के अतिरिक्त किसी अन्य काम में तिलों का प्रयोग करने वाला कुत्ते के मल में कीड़ा बनकर अपने पितृदेवताओं सहित डूब जाता है (आश्व. 109.36)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 109, श्लोक 34 नियम पुण्य KK 14-3-109-34

तिलाः पिवित्राः पापघ्ना नारायणसमुद्भवाः ।
तिलाञ्श्राद्धे प्रशंसनति दानमेतदनुत्तमम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.10

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 109, श्लोक 36 नियम पाप KK 14-3-109-36

क्रीत्वा प्रतिगृहीत्वा वा न विक्रेया द्विजातिभिः ।MM-KK-14-03-109-036c भोजनाभ्यञ्जनाद्दानाद्योन्यत्तु कुरुते तिलैः ।
कृमिर्भूत्वा श्वविष्ठायां पितृभिः सह मज्जति ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ उ.10

उ.11 श्राद्ध के द्रव्य — पितरों की तृप्ति की अवधि

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम युधिष्ठिर ने पूछा कि पितरों को दिया गया क्या अक्षय होता है, क्या बहुफल देता है, क्या अनंत होता है; तब भीष्म ने श्राद्धविदों द्वारा जाने गए काम्य हविस् बताए (अनु. 135.1–2).
- नियम पुण्य तिल, धान, जौ, उड़द, जल, मूल और फलों से किए गए श्राद्ध से पितर एक मास तक प्रसन्न रहते हैं (अनु. 135.3).
- नियम पुण्य मनु ने कहा है कि जिस श्राद्ध में तिल अधिक हों वह अक्षय होता है; सभी भोज्यों में तिल ही प्रधान हैं (अनु. 135.4).
- पुण्य कहा गया है कि कुछ अन्य हविस् से पितरों को दो मास से ग्यारह मास तक, एक वर्ष तक तृप्ति होती है (अनु. 135.5–8).
- पुण्य घी से युक्त पायस भी वर्ष भर की तृप्ति देता है; कुछ अन्य हविस् से बारह वर्ष की तृप्ति होती है (अनु. 135.9).
- पुण्य पितृक्षय के दिन कालशाक और कुछ अन्य हविस् अनंत तृप्ति देते हैं (अनु. 135.10).
- पुण्य पितृक्षय के दिन जल, मूल, फल, अन्न, अन्य द्रव्य — कुछ भी मधु मिलाकर दिया जाए तो अनंत फल होता है (अनु. 135.15).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 1 नियम KK 13-1-135-1

किंस्विद्दत्तं पितृभ्यो वै भवत्यक्षयमीश्वरः ।
किंस्विद्बहुफलं प्रोक्तं किमानन्त्याय कल्पते ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 2 नियम KK 13-1-135-2

हवींषि श्राद्धकल्पे तु यानि श्राद्धविदो विदुः ।
तानि मे शृणु काम्यानि फलं चैषां युधिष्ठिर ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 3 नियम पुण्य KK 13-1-135-3

तिलैर्व्रीहियवैर्माषैरद्भिर्मूलफलैस्तथा ।
दत्तेन मासं प्रीयन्ते श्राद्धेन पितरो नृप ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 4 नियम पुण्य KK 13-1-135-4

वर्धमानतिलं श्राद्धमक्षयं मनुरब्रवीत् ।
सर्वेष्वेव तु भोज्येषु तिलाः प्राधान्यतः स्मृताः ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 5 पुण्य KK 13-1-135-5

द्वौ मासौ तु भवेत्तृप्तिर्मत्स्यैः पितृगणस्य ह ।
त्रीन्मासानाविकेनाहुश्चतुर्मासं शशेन ह ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 6 पुण्य KK 13-1-135-6

आजेन मासान्प्रीयन्ते पञ्चैव पितरो नृप ।
वाराहेण तु षण्मासान्सप्त वै शाकुलेन तु ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 7 पुण्य KK 13-1-135-7

मासानष्टौ पार्षतेन रौरवेण नव प्रभो ।
गवयस्य तु मांसेन तृप्तिः स्याद्दशमासिकी ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 8 पुण्य KK 13-1-135-8

मांसेनेकादश प्रीतिः पितॄणां माहिषेण तु ।
गव्येन दत्ते श्राद्धे तु संवत्सरमिहोच्यते ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 9 पुण्य KK 13-1-135-9

यथा गव्यं तथा युक्तं पायसं सर्पिषा सह ।
वाध्रीणसस्य मांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 10 पुण्य KK 13-1-135-10

आन्त्याय भवेद्दत्तं खड्गमांसं पितृक्षये ।
कालशाकं च लौहं चाप्यानन्त्यं छाग उच्यते ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 15 पुण्य KK 13-1-135-15

आपो मूलं फलं मांसमन्नं वाऽपि पितृक्षये ।
यत्किञ्चिन्मधुसम्मिश्रं तदानन्त्याय कल्पते ॥

↩ वापस: ↩ उ.11

उ.12 द्रव्यों से पितरों की तृप्ति का काल; आहार की तैयारी

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से नियम पुण्य

- पुण्य कुछ अन्य हविष्यों से, मूँग, उड़द और जौ से पितर प्रसन्न होते हैं; कुछ अन्य हविष्यों से छह मास की तृप्ति होती है (अनु. 238.19)।
- पुण्य गव्य हविष्य और पायस से एक वर्ष की तृप्ति; कुछ अन्य हविष्यों से बारह वर्ष की तृप्ति (अनु. 238.20)।
- पुण्य पितृक्षय के दिन दिया गया एक अन्य हविष्य अनन्त तृप्ति देता है; तिल और मधु मिला पायस उस हविष्य के समान है; कालशाक और कुछ और अन्य हविष्य अनन्त फल देते हैं (अनु. 238.21–22)।
- नियम अपूपों और अन्य द्रव्यों से युक्त स्निग्ध आहार तैयार करके, उसके बाद ब्राह्मणों की अर्चना करनी चाहिए (अनु. 238.23)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 19 पुण्य KK 13-1-238-19

मांसैः प्रीणन्ति पितरो मुद्गमाषयवैरिह ।
शशरौरवमांसेन षण्मासं तृप्तिरिष्यते ॥

↩ वापस: ↩ उ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 20 पुण्य KK 13-1-238-20

संवत्सरं च गव्येन हविषा पायसेन च ।
वार्ध्रीणसस्य मांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥

↩ वापस: ↩ उ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 21 पुण्य KK 13-1-238-21

आनन्त्याय भवेद्दत्तं खड्गमांसं पितृक्षये ।
पायसं सतिलं क्षौद्रं खड्गमांसेन सम्मितम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 22 पुण्य KK 13-1-238-22

महाशकलिनो मस्याश्छागो वा सर्वलोहितः ।
कालशाकमितीत्येव तदानन्त्याय कल्पितम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.12

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 23 नियम KK 13-1-238-23

सापूपं सामिषं स्निग्धमाहारमुपकल्पयेत् ।
उपकल्प्य तदाहारं ब्राह्मणानर्चयेत्ततः ॥

↩ वापस: ↩ उ.12

उ.13 पितृदेवताओं को अर्पित किया जाने वाला एक द्रव्य — उसका फल

वक्ता / कथन: विश्वामित्र श्रीराम से (अग्नि द्वारा पितृदेवताओं से कही गई बात) नियम पुण्य

- नियम पुण्य पितृदेवताओं की प्रसन्नता के लिए एक विशेष द्रव्य अर्पित करने वाले मनुष्यों को वे अक्षय और समृद्ध फल देंगे — ऐसा अग्नि ने पितृदेवताओं से कहा (रामा. बाल. 49.7)।
- नियम पुण्य तब से पितृदेवता उस द्रव्य को स्वीकार करते हुए, अर्पित करने वालों को फलों से युक्त करते रहे (रामा. बाल. 49.9)।

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 49 › श्लोक 7 नियम पुण्य वा.रा. 1.49.7

अफलस्तु कृतो मेषः परां तुष्टिं प्रदास्यति ।
भवतां हर्षणार्थं च ये च दास्यन्ति मानवाः ।
अक्षयं हि फलं तेषां यूयं दास्यथ पुष्कलम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.13

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 49 › श्लोक 9 नियम पुण्य वा.रा. 1.49.9

तदाप्रभृति काकुत्स्थ पितृदेवाः समागताः ।
अफलान् भुञ्जते मेषान् फलैस्तेषामयोजयन् ॥

↩ वापस: ↩ उ.13

उ.14 श्राद्ध में वर्जित द्रव्य और व्यक्ति

वक्ता / कथन: अत्रि निमि से — भीष्म युधिष्ठिर से उदाहरण नियम पाप

- नियम श्राद्ध के लिए अयोग्य धान्य — कोद्रव, पुलक; व्यंजनों में हींग का द्रव (हिंगुद्रव); मूलों में लहसुन, प्याज़ (पलाण्डु), सौभांजनक (सहजन), गृंजनक आदि; कूष्माण्ड जाति, लौकी (अलाबु), काला नमक (अनु. 138.38–39)।
- नियम कुछ अन्य द्रव्य, बिना प्रोक्षण किए हुए, जीरा, शीतपाकी, अंकुर आदि, और शृंगाटक वर्ज्य हैं; सब प्रकार का नमक, जामुन, और छींक या रोने से छुए गए पदार्थ श्राद्ध में वर्जित करने चाहिए (अनु. 138.40–41)।
- पाप निवाप में और हव्य-कव्य में जो निन्दित है, उसे पितर और देवता प्रसन्नता से स्वीकार नहीं करते (अनु. 138.42)।
- नियम निवाप के समय चाण्डाल, श्वपच, काषायवस्त्रधारी, कुष्ठरोगी, पतित, ब्रह्महत्यारा, संकीर्ण योनि में जन्मा विप्र और पतित बन्धु — इन्हें वर्जित करना चाहिए (अनु. 138.43–44)।
- उदाहरण ऐसा कहकर अत्रि ब्रह्मसभा को चले गए (अनु. 138.45)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 38 नियम KK 13-1-138-38

अश्राद्धेयानि धान्यानि कोद्रवाः पुलकास्तथा।
हिङ्गुद्रवेषु शाकेषु मूलानां लशुनं तथा॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 39 नियम KK 13-1-138-39

पलाण्डुः सौभाञ्जनकस्तथा गृञ्जनकादयः।
कूश्माण्डजात्यलाबुं च कृष्णं लवणमेव च॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 40 नियम KK 13-1-138-40

ग्राम्यवाराहमांसं च यच्चैवाप्रोक्षितं भवेत्।
कृष्णाजं जीरकं चैव शीतपाकी तथैव च।
अङ्कुराद्यास्तथा वर्ज्या इह शृङ्गाटकानि च॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 41 नियम KK 13-1-138-41

वर्जयेल्लवणं सर्वं तथा जम्बूफलानि च।
अवक्षुतावरुदितं तथा श्राद्धे च वर्जयेत्।।

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 42 पाप KK 13-1-138-42

निवापे हव्यकव्ये वा गर्हितं च सुदर्शनम्।
पितरश्च हि देवाश्च नाभिनन्दन्ति तद्विदः॥

↩ वापस: ↩ उ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 43 नियम KK 13-1-138-43

चण्डालश्वपचौ वर्ज्यौ निवापे समुपस्थिते।
काषायवासाः कुष्ठी वा पतितो ब्रह्महाऽपि वा॥

↩ वापस: ↩ उ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 44 नियम KK 13-1-138-44

सङ्कीर्णयोनिर्विप्रश्च सम्बन्धी पतितश्च यः।
वर्जनीय बुधैरेते निवापे समुपस्थिते॥

↩ वापस: ↩ उ.14

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 45 उदाहरण KK 13-1-138-45

इत्येवमुक्त्वा भगवान्स्ववंश्यं तमृषिं पुरा ।
पितामहसभां दिव्या जगामात्रिस्तपोधनः ॥

↩ वापस: ↩ उ.14

उ.15 आमंत्रित, श्राद्ध में पवित्र वस्तुएँ और वर्ज्य

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से नियम पाप

- नियम पाप अपांक्तेय द्विजों को वर्जित करना चाहिए, पंक्तिपावनों को लेना चाहिए; पापिष्ठों को श्राद्धों में भोजन कराने वाला नरक जाता है (अनु. 238.11)।
- नियम शील, श्रुत और कुल वाले, पत्नियों सहित, गुणवान, योग्य श्रोत्रिय ब्राह्मणों को विषम संख्या में लेना चाहिए; उन्हें पहले दिन या उसी दिन प्रातः आमंत्रित करके, फिर यथाविधि श्राद्धक्रिया आरंभ करनी चाहिए (अनु. 238.12–13)।
- नियम श्राद्ध में तीन पवित्र हैं — दौहित्र, कुतप और तिल; तीन प्रशंसनीय हैं — शौच, क्रोध का अभाव और जल्दबाज़ी न करना (अनु. 238.14)।
- नियम कुतप, खड्गपात्र, कुश, दर्भ, तिल, मधु, कालशाक और गजच्छाया — श्राद्धकर्मों में पवित्र हैं (अनु. 238.15)।
- नियम वहाँ अनेक रंगों के तिल चारों ओर छिड़कने चाहिए; अशुद्ध पितृयज्ञ भी तिलों से शुद्ध हो जाता है (अनु. 238.16)।
- नियम नीला या काषाय वस्त्र पहने व्यक्ति, भिन्नवर्ण, नए घाव वाला, अंगहीन और अशुचि — इन्हें दूर रखना चाहिए; मुर्गे, सूअर, नग्न, क्लीब, रजस्वला, लोहा, राँगा और सीसा (के पात्र) श्राद्धकर्म में वर्जित करने चाहिए (अनु. 238.17–18)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 11 नियम पाप KK 13-1-238-11

अपाङ्क्तेया द्विजा वर्ज्या ग्राह्यास्ते पङ्क्तिपावनाः ।
भोजयेद्यदि पापिष्ठाञ्श्राद्धेषु नरकं व्रजेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.15

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 12 नियम KK 13-1-238-12

वृत्तश्रुतकुलोपेतान्सकलत्रान्गुणान्वितान् ।
तदर्हाञ्श्रोत्रियान्विद्धि ब्राह्मणानयुजः शुभे ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.15

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 13 नियम KK 13-1-238-13

एतान्निमन्त्रयेद्विद्वान्पूर्वेद्युः प्रातरेव वा ।
तत्र श्राद्धक्रियां पश्चादारभेत यथाविधि ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.15

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 14 नियम KK 13-1-238-14

त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः ।
त्रीणि चात्र प्रशंसन्ति शौचमक्रोधमत्वरा ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.15

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 15 नियम KK 13-1-238-15

कुतपः खड्गपात्रं च कुशा दर्भास्तिला मधु ।
कालशाकं गजच्छाया पवित्रं श्राद्धकर्मसु ॥

↩ वापस: ↩ उ.15

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 16 नियम KK 13-1-238-16

तिलानवकिरेत्तत्र नानावर्णान्समन्ततः ।
अशुद्धं पितृयज्ञश्च तिलैः शुध्यति शोभने ॥

↩ वापस: ↩ उ.15

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 17 नियम KK 13-1-238-17

नीलकाषायवस्त्रं च भिन्नवर्णं नवव्रणम्।
हीनाङ्गमशुचिं वाऽपि वर्जयेत्तत्र दूरतः॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.15

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 18 नियम KK 13-1-238-18

कुक्कुटांश्च वराहांश्च नग्नं क्लीबं रजस्वलाम्।
आयसं त्रपुसीसं च श्राद्धकर्मणि वर्जयेत्॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.15

उ.16 श्राद्ध में मांस निषिद्ध — मुनियों का अन्न ही श्रेष्ठ

वक्ता / कथन: नारद युधिष्ठिर से नियम

- नियम धर्मतत्त्व जानने वाला श्राद्ध में मांस अर्पित न करे, स्वयं भी न खाए; मुनियों के आहार से ही पितरों को परम प्रीति होती है, पशुहिंसा से नहीं (भाग. 7.15.7).
- नियम मन, वाणी और शरीर से किसी भी प्राणी को हानि न पहुँचाना ही सद्धर्म चाहने वालों के लिए परम धर्म है (भाग. 7.15.8).
- नियम द्रव्ययज्ञों से यजन करने जा रहे व्यक्ति को देखकर प्राणी डरते हैं कि 'यह दयाहीन, तत्त्व न जानने वाला, केवल अपने प्राणों की तृप्ति चाहने वाला मुझे अवश्य मार डालेगा' (भाग. 7.15.10).
- नियम इसलिए धर्मज्ञ दैववश प्राप्त मुनियों के अन्न से ही संतुष्ट होकर प्रतिदिन नित्य और नैमित्तिक कर्म करे (भाग. 7.15.11).

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 15 › श्लोक 7 नियम भाग. 7.15.7

न दद्यादामिषं श्राद्धे न चाद्याद् धर्मतत्त्ववित्।
मुनीनां स्यात् परा प्रीतिर्यथा, न पशुहिंसया॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.16

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 15 › श्लोक 8 नियम भाग. 7.15.8

नैतादृशः परो धर्मो नृणां सद्धर्ममिच्छताम्।
न्यासो दण्डस्य भूतेषु मनोवाक्कायजस्य यः॥

↩ वापस: ↩ उ.16

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 15 › श्लोक 10 नियम भाग. 7.15.10

द्रव्ययज्ञैर्यक्ष्यमाणं दृष्ट्वा भूतानि बिभ्यति।
एष माकरुणो हन्यादतज्ज्ञो ह्यसुतृप् ध्रुवम्॥

↩ वापस: ↩ उ.16

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 15 › श्लोक 11 नियम भाग. 7.15.11

तस्माद् दैवोपपन्नेन मुन्यन्नेनैव धर्मवित्।
सन्तुष्टोऽहरहः कुर्यान्नित्यनैमित्तिकाः क्रियाः॥

↩ वापस: ↩ उ.16

उ.17 श्राद्ध में मांस — अहिंसा का संदेह और उसका समाधान

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (युधिष्ठिर के प्रश्न के साथ) नियम

- नियम युधिष्ठिर ने पूछा कि आपने अहिंसा को परमधर्म कहा है, और यह भी कहा कि श्राद्धों में पितरों को मांस प्रिय है तथा अनेक प्रकार के मांसों से श्राद्धविधि भी बताई है; बिना मारे मांस कैसे मिलेगा — ये दोनों कैसे संगत होते हैं (अनु. 177.1–2)।
- नियम मन्त्रों से संस्कारित और प्रोक्षित शुचि हविष्य को, वेदप्रमाण के अनुसार केवल पितृकार्यों में, प्रवृत्तिधर्म में स्थित व्यक्ति खा सकता है; अन्य प्रकार से नहीं, ऐसा मनु ने कहा (अनु. 177.51)।
- नियम प्रजा का हित चाहकर महात्मा अगस्त्य ने वन्य मृगों का सभी देवताओं के लिए प्रोक्षण किया; इसलिए पितृ-देव सम्बन्धी क्रियाएँ लुप्त नहीं होतीं, और न्यायपूर्वक मांस से तृप्त हुए पितर प्रसन्न होते हैं (अनु. 177.57–58)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 177, श्लोक 1 नियम KK 13-1-177-1

अहिंसा परमो धर्म इत्युक्तं बहुशस्त्वया।
श्राद्धेषु च भवानाह पितॄणां मांसमीप्सितम्॥

↩ वापस: ↩ उ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 177, श्लोक 2 नियम KK 13-1-177-2

मांसैर्बहुविधैः प्रोक्तस्त्वया श्राद्धविधिः पुरा।
अहत्वा च कुतो मांसमेवमेतद्विरुध्यते॥

↩ वापस: ↩ उ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 177, श्लोक 51 नियम KK 13-1-177-51

हविर्यत्संस्कृतं मन्त्रैः प्रोक्षिताभ्युक्षितं शुचि।
वेदोक्तेन प्रमाणेन पितॄणां प्रक्रियासु च।
प्रवृत्तिधर्मिणा भक्ष्यं नान्यथा मनुरब्रवीत्॥

↩ वापस: ↩ उ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 177, श्लोक 57 नियम KK 13-1-177-57

प्रजानां हितकामेन त्वगस्त्येन महात्मना।
आरण्याः सर्वदैवत्याः प्रोक्षितास्तापसैर्मृगाः॥

↩ वापस: ↩ उ.17

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 177, श्लोक 58 नियम KK 13-1-177-58

क्रिया ह्येवं न हीयन्ते पितृदैवतसंश्रिताः।
प्रीयन्ते पितरश्चैव न्यायतो मांसतर्पिताः॥

↩ वापस: ↩ उ.17

उ.18 श्राद्ध में छाता और पादुकाओं का दान

वक्ता / कथन: युधिष्ठिर भीष्म से नियम

- नियम श्राद्धकृत्यों में और अन्य पुण्यकार्यों में भी छाता और पादुकाएँ दान की जाती हैं; यह आचार किसके द्वारा, कैसे और क्यों आरंभ हुआ — ऐसा युधिष्ठिर ने पूछा (अनु. 144.1–2).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 144, श्लोक 1 नियम KK 13-1-144-1

यदिदं श्राद्धकृत्येषु दीयते भरतर्षभ।
छत्रं चोपानहौ चैव केनैतत्सम्प्रवर्तितम्॥

↩ वापस: ↩ उ.18

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 144, श्लोक 2 नियम KK 13-1-144-2

कथं चैतत्समुत्पन्नं किमर्थं चैव दीयते।
न केवलं श्राद्धकृत्ये पुण्यकेष्वपि दीयते॥

↩ वापस: ↩ उ.18

उ.19 श्राद्ध में ब्राह्मण की परीक्षा

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम

- नियम युधिष्ठिर ने पूछा कि कैसे ब्राह्मणों को श्राद्ध देना चाहिए (अनु. 137.1)।
- नियम दैवकर्म में क्षत्रिय को ब्राह्मणों की परीक्षा नहीं करनी चाहिए — देवता अपने तेज से पवित्र कर देते हैं; परन्तु पित्र्यकर्म में परीक्षा करना न्यायसंगत कहा जाता है (अनु. 137.2–3)।
- नियम श्राद्ध में विवेकी को ब्राह्मणों की कुल, शील, आयु, रूप, विद्या और वंश से परीक्षा करनी चाहिए (अनु. 137.4)।
- नियम इसलिए पूरे प्रयत्न से परीक्षा करके — स्वकर्मनिरत, दान्त, सत्कुल में जन्मे और बहुश्रुत द्विजों को आमन्त्रित करना चाहिए (अनु. 137.41)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 1 नियम KK 13-1-137-1

कीदृशेभ्यः प्रदातव्यं भवेच्छ्राद्धं पितामह।
द्विजेभ्यः कुरुशार्दूल तन्मे व्याख्यातुमर्हसि॥

↩ वापस: ↩ उ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 2 नियम KK 13-1-137-2

ब्राह्मणान्न परीक्षेत क्षत्रियो दानधर्मवित्।
दैवे कर्मणि पित्र्ये तु न्यायमाहुः परीक्षणम्॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 3 नियम KK 13-1-137-3

देवताः पावयन्तीह दैवेनैवेह तेजसा।
उपेत्य तस्माद्देवेभ्यः सर्वेभ्यो दापयेन्नरः॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 4 नियम KK 13-1-137-4

श्राद्धे त्वथ महाराज परीक्षेद्ब्राह्मणान्बुधः।
कुलशीलवयोरूपैर्विद्ययाऽभिजनेन च॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.19

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 41 नियम KK 13-1-137-41

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन परीक्ष्यामन्त्रयेद्द्विजान्।
स्वकर्मनिरतान्दान्तान्कुले जातान्बहुश्रुतान्॥

↩ वापस: ↩ उ.19

उ.20 श्राद्ध में ब्राह्मण का चयन – श्रोत्रिय ही अधिकारी

वक्ता / कथन: मार्कण्डेय युधिष्ठिर से नियम पाप पुण्य

- पुण्य पितृदेवताओं की पूजा और ब्राह्मणों का अर्चन करने वाला निःसन्देह अनन्त पुण्यलोक को पहुँचता है (अरण्य. 203.15)।
- नियम पुण्य और स्वर्ग चाहने वाले को ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिए; श्राद्धकाल में निन्दारहित ब्राह्मणों को ही प्रयत्नपूर्वक भोजन कराना चाहिए (अरण्य. 203.16)।
- नियम दुर्बल, खराब नखों वाला, कुष्ठरोगी, मायावी, कुण्ड, गोलक, काण्डपृष्ठ (शस्त्रजीवी) – इन्हें प्रयत्नपूर्वक वर्जित करना चाहिए (अरण्य. 203.17)।
- पाप निन्दित श्राद्ध वैसे ही जला देता है जैसे अग्नि लकड़ियों को जलाती है (अरण्य. 203.18)।
- नियम गूँगे, अन्धे, बहरे आदि, जो श्राद्ध में पूजित नहीं होते, वे भी वेदपारगों के साथ मिलाकर नियुक्त करने योग्य हैं (अरण्य. 203.19)।
- नियम पुण्य हव्य हो या कव्य, श्रोत्रिय ही अधिकारी है; साधु श्रोत्रिय को दिया गया मानो प्रज्वलित अग्नि में होम किया गया (अरण्य. 203.77)।

महाभारत › अरण्यपर्व › मार्कण्डेयसमास्यापर्व › अध्याय 203, श्लोक 15 पुण्य KK 3-11-203-15

पितृदैवतपूजाभिर्ब्राह्मणाभ्यर्चनेन च।
अनन्तं पुण्यलोकं तु गन्ताऽसौ तु न संशयः।
श्लेष्मादिभिर्व्याप्ततनुर्म्रियमाणोऽविचेतनः॥

↩ वापस: ↩ उ.20

महाभारत › अरण्यपर्व › मार्कण्डेयसमास्यापर्व › अध्याय 203, श्लोक 16 नियम KK 3-11-203-16

ब्राह्मणा एव सम्पूज्याः पुण्यं स्वर्गमभीप्सता।
श्राद्धकाले तु यत्नेन भोक्तव्या ह्यजुगुप्सिताः॥

↩ वापस: ↩ उ.20

महाभारत › अरण्यपर्व › मार्कण्डेयसमास्यापर्व › अध्याय 203, श्लोक 17 नियम KK 3-11-203-17

दुर्बलः कुनखी कुष्ठी मायावी कुण्डगोलकौ।
वर्जनीयाः प्रयत्नेन काण्डपृष्ठाश्च देहिनः॥

↩ वापस: ↩ उ.20

महाभारत › अरण्यपर्व › मार्कण्डेयसमास्यापर्व › अध्याय 203, श्लोक 18 पाप KK 3-11-203-18

जुगुप्सितं हि यच्छ्राद्धं दहत्यग्निरिवेन्धनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.20

महाभारत › अरण्यपर्व › मार्कण्डेयसमास्यापर्व › अध्याय 203, श्लोक 19 नियम KK 3-11-203-19

ये ये श्राद्धे न पूज्यन्ते मूकान्धबधिरादयः।
तेऽपिसर्वे नियोक्तव्या मिश्रिता वेदपारगैः॥

↩ वापस: ↩ उ.20

महाभारत › अरण्यपर्व › मार्कण्डेयसमास्यापर्व › अध्याय 203, श्लोक 77 नियम पुण्य KK 3-11-203-77

हव्यं कव्यं च यत्किञ्चित्सर्वं तच्छ्रोत्रियोऽर्हति।
दत्तं हि श्रोत्रिये साधौ ज्यलितेऽग्नौ यथा हुतम्॥

↩ वापस: ↩ उ.20

उ.21 श्राद्ध के निमन्त्रण के अयोग्य

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम

- नियम पतित, जड और उन्मत्त दैव-पित्र्य कर्मों में निमन्त्रण के योग्य नहीं; श्वित्री, क्लीब, कुष्ठरोगी, यक्ष्मरोगी, अपस्मारी और अन्धे भी योग्य नहीं (अनु. 61.12–13)।
- नियम वैद्य, देवलक (विग्रह-पूजा को वृत्ति बनाने वाले), वृथा नियम धारण करने वाले, सोम बेचने वाले; गायक, नर्तक, प्लवक, वादक, कथक और योद्धा श्राद्ध के योग्य नहीं (अनु. 61.14–15)।
- नियम वृषलों के होता, वृषलों के अध्यापक, वृषलों के शिष्य; वेतन लेकर पढ़ाने वाला और पढ़ने वाला (ब्रह्मविक्रयी) योग्य नहीं (अनु. 61.16–17)।
- नियम पहले निम्न वर्ण का परिग्रह करने वाला ब्राह्मण, भले ही सर्वविद्य हो; अग्निरहित, शवों को बाहर ले जाने वाले, चोर और पतित योग्य नहीं (अनु. 61.18–19)।
- नियम पहले से अपरिचित, गणपूर्व, पुत्रिकापूर्व पुत्र; ऋणकर्ता, ब्याज का व्यापारी, प्राणियों को बेचकर जीने वाला; स्त्रीपूर्व, काण्डपृष्ठ (शस्त्रजीवी) और आजप श्राद्ध के योग्य नहीं (अनु. 61.20–22)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 12 नियम KK 13-1-61-12

यावन्तः पतिता विप्रा जडोन्मत्तास्तथैव च।
दैवे वाऽप्यथ पित्र्ये वा राजन्नार्हन्ति केतनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 13 नियम KK 13-1-61-13

श्वित्री क्लीबश्च कुष्ठी च तता यक्ष्महतश्च यः।
अपस्मारी च यश्चान्धो राजन्नार्हन्ति केतनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 14 नियम KK 13-1-61-14

चिकित्सका देवलका वृथा नियमधारिणः।
सोमविक्रयिणश्चैव श्राद्धे नार्हन्ति केतनम्॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 15 नियम KK 13-1-61-15

गायना नर्तकाश्चैव प्लवका वादकास्तथा।
कथका योधकाश्चैव राजन्नार्हन्ति केतनम्॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 16 नियम KK 13-1-61-16

होतारो वृषलानां च वृषलाध्यापकास्तथा।
तथा वृषलशिष्याश्च राजन्नार्हन्ति केतनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 17 नियम KK 13-1-61-17

अनुयोक्ता च यो विप्रो अनुयुक्तश्च भारत।
नार्हतस्तावपि श्राद्धं ब्रह्मविक्रयिणौ हि तौ॥

↩ वापस: ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 18 नियम KK 13-1-61-18

अग्रणीर्यः कृतः पूर्वं वर्णावरपरिग्रहः।
ब्राह्मणः सर्वविद्योऽपि राजन्नार्हति केतनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 19 नियम KK 13-1-61-19

अनग्नयश्च ये विप्रा मृतनिर्यातकाश्च ये ।
स्तेनाश्च पतिताश्चैव राजन्नार्हन्ति केतनम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 20 नियम KK 13-1-61-20

अपरिज्ञातपूर्वाश्च गणपूर्वाश्च भारत ।
पुत्रिकापूर्वपुत्राश्च श्राद्धे नार्हन्ति केतनम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 21 नियम KK 13-1-61-21

ऋणकर्ता च यो राजन्यश्च वार्धुषिको नरः ।
प्राणिविक्रयवृत्तिश्च राजन्नार्हन्ति केतनम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.21

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 22 नियम KK 13-1-61-22

स्त्रीपूर्वाः काण्डपृष्ठाश्च यावन्तो भरतर्षभ ।
आजपा ब्राह्मणाश्चैव श्राद्धे नार्हन्ति केतनम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.21

उ.22 आमन्त्रण के योग्य ब्राह्मण; श्राद्ध के लिए अयोग्य धन

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम

- नियम श्राद्ध और दैव में निर्दिष्ट ब्राह्मण के विषय में दाता और ग्रहीता दोनों के लिए अनुग्रह (छूट) सुनो (अनु. 61.23)।
- नियम व्रत का आचरण करने वाले, गुणवान, सावित्री जानने वाले, क्रियावान लोग कृषक हों तो भी आमन्त्रण के योग्य हैं (अनु. 61.24)।
- नियम युद्ध में क्षात्रधर्म का पालन करने वाले कुलीन ब्राह्मण को आमन्त्रित किया जा सकता है; परन्तु व्यापारी को श्राद्ध में कभी आमन्त्रित नहीं करना चाहिए (अनु. 61.25)।
- नियम अग्निहोत्री, ग्रामवासी, चोरी न करने वाला, अतिथिपूजा जानने वाला; तीनों कालों में सावित्री जपने वाला, भिक्षावृत्ति वाला, क्रियावान; सूर्योदय और सूर्यास्त का पालन करने वाला, अहिंसक, अल्पदोषी; कपट और कुतर्क से रहित — ये आमन्त्रण के योग्य हैं (अनु. 61.26–29)।
- नियम व्रतहीन, जुआरी, चोर, प्राणियों को बेचने वाला, व्यापारी हो तो भी — प्रायश्चित्त करके फिर सोमपान करने वाला योग्य है; क्रूर कर्मों से धन कमाकर बाद में सबकी अतिथिपूजा करने वाला भी योग्य है (अनु. 61.30–31)।
- नियम वेद बेचकर पाया गया धन, स्त्री द्वारा कमाया गया धन और क्लैब्य से कमाया गया धन पितरों और ब्राह्मणों को नहीं देना चाहिए (अनु. 61.32)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 23 नियम KK 13-1-61-23

श्राद्धे दैवे च निर्दिष्टो ब्राह्मणो भरतर्षभ ।
दातुः प्रतिग्रहीतुश्च शृणुष्वानुग्रहं पुनः ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 24 नियम KK 13-1-61-24

चीर्णव्रता गुणैर्युक्ता भवेयुर्येऽपि कर्षकाः ।
सावित्रीज्ञाः क्रियावन्तस्ते राजन्केतनक्षमाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 25 नियम KK 13-1-61-25

क्षात्रधर्मिणमप्याजौ केतयेत्कुलजं द्विजम् ।
न त्वेव वणिजं तात श्राद्धे च परिकल्पयेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 26 नियम KK 13-1-61-26

अग्निहोत्री च यो विप्रो ग्रामवासी च यो भवेत् ।
अस्तेनश्चातिथिज्ञश्च स राजन्केतनक्षमः ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 27 नियम KK 13-1-61-27

सावित्रीं जपते यस्तु त्रिकालं भरतर्षभ ।
भिक्षावृत्तिः क्रियावांश्च स राजन्केतनक्षमः ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 28 नियम KK 13-1-61-28

उदितास्तमितो यश्च तथैवास्तमितोदितः ।
अहिंस्रश्चाल्पदोषश्च स राजन्केतनक्षमः ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 29 नियम KK 13-1-61-29

अकल्ककॊ ह्यतर्कश्च ब्राह्मणो भरतर्षभ ।
संसर्गे भैक्ष्यवृत्तिश्च स राजन्केतनक्षमः ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 30 नियम KK 13-1-61-30

अव्रती कितवः स्तेनः प्राणिविक्रयिको वणिक् ।
सनिष्कृतिः पुनः सोमं पीतवान्केतनक्षमः ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 31 नियम KK 13-1-61-31

अर्जयित्वा धनं पूर्वं दारुणैरपि कर्मभिः ।
भवेत्सर्वातिथिः पश्चात्स राजन्केतनक्षमः ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 32 नियम KK 13-1-61-32

ब्रह्मविक्रयनिर्दिष्टं स्त्रिया यच्चार्जितं धनम् ।
अदेयं पितृविप्रेभ्यो यच्च क्लैब्यादुपार्जितम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.22

उ.23 पंक्तिपावन — किन्हें आमन्त्रित करें

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम मैं पंक्तिपावनों को कारण सहित बताता हूँ, उनकी परीक्षा करो; विद्या, वेद और व्रत के स्नातक तथा सदाचारी ब्राह्मण सबको पवित्र करते हैं (अनु. 137.24–25)।
- नियम त्रिणाचिकेत, पंचाग्नि, त्रिसुपर्ण, षडंगवित्, ब्रह्मदेयानुसन्तान, छन्दोग, ज्येष्ठसामग, माता-पिता का आज्ञाकारी, दस पीढ़ियों का श्रोत्रिय (अनु. 137.26–27)।
- नियम केवल ऋतुकाल में धर्मपत्नी के पास जाने वाला, वेदविद्या-व्रत का स्नातक, अथर्वशिरस् का अध्ययन करने वाला, ब्रह्मचारी, सत्यवादी, धर्मशील और स्वकर्मनिरत पंक्ति को पवित्र करते हैं (अनु. 137.28–29)।
- नियम पुण्यतीर्थों में स्नान करके श्रम करने वाले, मन्त्रयुक्त यज्ञों में अवभृथ स्नान करने वाले; क्रोध और चपलता से रहित, क्षमाशील, दान्त, जितेन्द्रिय, सर्वभूतहितैषी — इन्हें श्राद्धों में आमन्त्रित करना चाहिए (अनु. 137.30–31)।
- पुण्य इन्हें दिया गया अक्षय है; ये पंक्तिपावन हैं (अनु. 137.32)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 24 नियम KK 13-1-137-24

इमे तु भरतश्रेष्ठ विज्ञेयाः पङ्क्तिपावनाः ।
हेतुतस्तान्प्रवक्ष्यामि परीक्षस्वेह तान्द्विजान् ॥

↩ वापस: ↩ उ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 25 नियम KK 13-1-137-25

विद्यावेदव्रतस्नाता ब्राह्मणाः सर्व एव हि ।
सदाचारपराश्चैव विज्ञेयाः सर्वपावनाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 26 नियम KK 13-1-137-26

पाङ्क्तेयांस्तु प्रवक्ष्यामि ज्ञेयास्ते पङ्क्तिपावनाः ।
त्रिणाचिकेतः पञ्चाग्निस्त्रिसुपर्णः षडङ्गवित् ॥

↩ वापस: ↩ उ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 27 नियम KK 13-1-137-27

ब्रह्मदेयानुसन्तानश्छन्दोगो ज्येष्ठसामगः ।
मातापित्रोर्यश्च वश्यः श्रोत्रियो दशपूरुषः ॥

↩ वापस: ↩ उ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 28 नियम KK 13-1-137-28

ऋतुकालाभिगामी च धर्मपत्नीषु यः सदा ।
वेदविद्याव्रतस्नातो विप्रः पङ्क्तिं पुनात्युत ॥

↩ वापस: ↩ उ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 29 नियम KK 13-1-137-29

अथर्वशिरसोऽध्येता ब्रह्मचारी यतव्रतः ।
सत्यवादी धर्मशीलः स्वकर्मनिरतश्च सः ॥

↩ वापस: ↩ उ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 30 नियम KK 13-1-137-30

ये च पुण्येषु तीर्थेषु अभिषेककृतश्रमाः ।
मखेषु च समन्त्रेषु भवन्त्यवभृथप्लुताः ॥

↩ वापस: ↩ उ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 31 नियम KK 13-1-137-31

अक्रोधना ह्यचपलाः क्षान्ताः दान्ता जितेन्द्रियाः ।
सर्वभूतहिता ये च श्राद्धेष्वेतान्निमन्त्रयेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.23

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 32 पुण्य KK 13-1-137-32

एतेषु दत्तमक्षय्यमेते वै पङ्क्तिपावनाः ।
इमे परे महाभागा विज्ञेयाः पङ्क्तिपावनाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.23

उ.24 पंक्तिपावन — यति, भागवत, पौराणिक

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- नियम मोक्षधर्म जानने वाले यति, व्रत का आचरण करने वाले योगी, पंचरात्रविद्, भागवत, वैदिक आचार का पालन करने वाले वैखानस; श्रेष्ठ द्विजों को इतिहास सुनाने वाले (अनु. 137.33–34)।
- नियम भाष्यविद्, व्याकरण में निरत, पुराण और धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने वाले, पढ़े हुए का विधिपूर्वक आचरण करने वाले, गुरुकुल में वास कर चुके, सत्यवादी, वेदों और प्रवचनों में अग्रगण्य — ये जितनी दूर तक देखते हैं उतनी पंक्ति को पवित्र करते हैं (अनु. 137.35–37)।
- नियम पंक्ति को पवित्र करने के कारण ही 'पंक्तिपावन' कहलाते हैं; ब्रह्मदेयानुसन्तान अकेला ही ढाई कोस तक पवित्र करता है — ऐसा ब्रह्मविद् कहते हैं (अनु. 137.38)।
- नियम पाप जो न ऋत्विक् है न उपाध्याय, वह (श्राद्ध में) अग्रासन पर बैठे — ऋत्विजों की अनुमति से बैठा हो तब भी — तो उस पंक्ति के सभी लोगों का दुष्कृत स्वयं पाता है (अनु. 137.39)।
- नियम किन्तु जो वेदविद् है, सभी पंक्तिदोषों से रहित है, पतित नहीं है (उसके अग्रासन पर बैठने में भी दोष नहीं) — वह पंक्तिपावन ही है (अनु. 137.40)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 33 नियम KK 13-1-137-33

यतयो मोक्षधर्मज्ञा योगिनश्चरितव्रताः ।
पञ्चरात्रविदो मुख्यास्तथा भागवताः परे ॥

↩ वापस: ↩ उ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 34 नियम KK 13-1-137-34

वैखानसाः कुलश्रेष्ठा वैदिकाचारचारिणः ।
ये चेतिहासं प्रयताः श्रावयन्ति द्विजोत्तमान् ॥

↩ वापस: ↩ उ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 35 नियम KK 13-1-137-35

ये च भाष्यविदः केचिद्ये च व्याकरणे रताः ।
अधीयते पुराणं ये धर्मशास्त्राण्यथापि च ॥

↩ वापस: ↩ उ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 36 नियम KK 13-1-137-36

अधीत्य च यथान्यायं विधिवत्तस्य कारिणः ।
उपपन्नो गुरुकुले सत्यवादी सहस्रशः ॥

↩ वापस: ↩ उ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 37 नियम KK 13-1-137-37

अग्र्याः सर्वेषु वेदेषु सर्वप्रवचनेषु च ।
यावदेते प्रपश्यन्ति पङ्क्त्यास्तावत्पुनन्त्युत ॥

↩ वापस: ↩ उ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 38 नियम KK 13-1-137-38

ततो हि पावनात्पङ्क्त्याः पङ्क्तिपावन उच्यते।
क्रोशादर्धतृतीयाच्च पावयेदेक एव हि।
ब्रह्मदेयानुसन्तान इति ब्रह्मविदो विदुः॥

↩ वापस: ↩ उ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 39 नियम पाप KK 13-1-137-39

अनृत्विगनुपाध्यायः स चेदग्रासनं व्रजेत्।
ऋत्विग्भिरभ्यनुज्ञातः पङ्क्त्या हरति दुष्कृतम्॥

↩ वापस: ↩ उ.24

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 40 नियम KK 13-1-137-40

अथ चेद्वेदवित्सर्वैः पङ्क्तिदोषैर्विवर्जितः।
न च स्यात्पतितो राजन्पङ्क्तिपावन एव सः॥

↩ वापस: ↩ उ.24

उ.25 कव्य ज्ञाननिष्ठों को; निंदकों को भोजन के लिए न बुलाएँ

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- नियम ऋषियों के आचार का पालन करने वाले, सर्वधर्मज्ञों को देवता ब्राह्मण मानते हैं; वे स्वाध्याय, ज्ञान, तप और कर्म में निष्ठा वाले होते हैं (अनु. 137.50–51).
- नियम कव्य ज्ञाननिष्ठों को अर्पित करने चाहिए (अनु. 137.52).
- नियम पाप वचनों से (ब्राह्मणों की) निंदा करने वालों को श्राद्धों में भोजन नहीं कराना चाहिए; निंदित ब्राह्मण तीन पीढ़ियों के कुल को नष्ट कर देते हैं (अनु. 137.53).
- नियम वैखानस ऋषियों का वचन है कि वेदपारग ब्राह्मणों की दूर से ही परीक्षा करनी चाहिए; वे प्रिय हों या द्वेष्य, श्राद्ध उन्हीं को देना चाहिए (अनु. 137.54–55).
- नियम ऋचाएँ न जानने वाले हज़ार-हज़ार (दस लाख) लोगों को भोजन कराने पर भी, मंत्रविद् एक व्यक्ति प्रसन्न हो तो वह उन सबके बराबर है (अनु. 137.56).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 50 नियम KK 13-1-137-50

ऋषीणां समये नित्यं ये चरन्ति युधिष्ठिर।
निश्चिताः सर्वधर्मज्ञास्तान्देवा ब्राह्मणान्विदुः॥

↩ वापस: ↩ उ.25

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 51 नियम KK 13-1-137-51

स्वाध्यायनिष्ठा ऋषयो ज्ञाननिष्ठास्तथैव च।
तपोनिष्ठाश्च बोद्धव्याः कर्मनिष्ठाश्च भारत॥

↩ वापस: ↩ उ.25

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 52 नियम KK 13-1-137-52

कव्यानि ज्ञाननिष्ठेभ्यः प्रतिष्ठाप्यानि भारत।
तत्र ये ब्राह्मणान्केचिन्न सीदन्ति हि ते नराः॥

↩ वापस: ↩ उ.25

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 53 नियम पाप KK 13-1-137-53

ये तु निन्दन्ति जल्पेषु न ताञ्श्राद्धेषु भोजयेत्।
ब्राह्मणा निन्दिता राजन्हन्युस्त्रैपुरुषं कुलम्॥

↩ वापस: ↩ उ.25

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 54 नियम KK 13-1-137-54

वैखानसानां वचनमृषीणां श्रूयते नृप।
दूरादेव परीक्षेत ब्राह्मणान्वेदपारगान्॥

↩ वापस: ↩ उ.25

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 55 नियम KK 13-1-137-55

प्रियो वा यदि वा द्वेष्यस्तेषां तु श्राद्धमावपेत्॥

↩ वापस: ↩ उ.25

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 137, श्लोक 56 नियम KK 13-1-137-56

यः सहस्रं सहस्राणां भोजयदेनृचो नरः।
एकस्तान्मन्त्रवित्प्रीतः सर्वानर्हति भारत॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.25

उ.26 श्राद्ध के योग्य और अयोग्य ब्राह्मण; पितृकाल

वक्ता / कथन: युधिष्ठिर के प्रश्न का श्रीकृष्ण द्वारा उत्तर नियम पाप

- नियम युधिष्ठिर ने पूछा कि हव्य-कव्य का काल कौन-सा है, कौन पूजा के योग्य हैं, और कौन-से ब्राह्मण वर्जनीय हैं (आश्व. 106.70)।
- नियम पाप दैवकर्म पूर्वाह्ण में और पितृकर्म अपराह्ण में करना चाहिए; कहते हैं कि समय चूककर दिया गया दान राजस होता है (आश्व. 106.71)।
- नियम पाप जो घोषणा करके परोसा गया हो, असत्य से युक्त हो, या जिसे कुत्ते ने छुआ हो, उसे राक्षस-भाग जानना चाहिए (आश्व. 106.72)।
- नियम पतित, जड़, उन्मत्त आदि दैव और पित्र्य कर्मों में सत्कार के योग्य नहीं हैं (आश्व. 106.73)।
- नियम नपुंसक, 'प्लंगी' (इस शब्द का अर्थ अस्पष्ट है), कुष्ठरोगी, राजयक्ष्मा वाला और अपस्मार-रोगी — ये पित्र्य में सत्कार के योग्य नहीं हैं (आश्व. 106.74)।
- नियम वैद्यवृत्ति करने वाले, देवलक, कपट-नियम धारण करने वाले और सोम बेचने वाले श्राद्ध में योग्य नहीं हैं (आश्व. 106.75)।
- नियम पाप एकोद्दिष्ट में अन्न खाने वाले ब्राह्मण चांद्रायण करने तक फिर से सत्कार के योग्य नहीं होते (आश्व. 106.76)।
- नियम गायक, नर्तक, प्लवक, वादक, कथावाचक और योद्धा श्राद्ध में योग्य नहीं हैं (आश्व. 106.77)।
- नियम अग्निहोत्र-रहित, शव ढोने वाले, चोर और निषिद्ध कर्म करने वाले योग्य नहीं हैं (आश्व. 106.78)।
- नियम पहले से अपरिचित, गणपुत्र और पुत्रिकापुत्र श्राद्ध में योग्य नहीं हैं (आश्व. 106.79)।
- नियम युद्ध करने वाला ब्राह्मण, वाणिज्य करने वाला द्विज और प्राणियों को बेचकर जीने वाला श्राद्ध में योग्य नहीं हैं (आश्व. 106.80)।
- नियम व्रतों का आचरण करने वाले, नित्य स्वाध्याय में रहने वाले, सावित्री को जानने वाले और कर्मनिष्ठ श्राद्ध-सत्कार के योग्य हैं (आश्व. 106.81)।
- नियम ब्राह्मण (का मिलना ही) श्राद्ध का काल है; इसी प्रकार दही, घी, दर्भ, पुष्प और क्षेत्र मिलने पर — उस समय श्राद्ध देना चाहिए (आश्व. 106.82)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 70 नियम KK 14-3-106-70

देवदेवेश दैत्यघ्न कालः को हव्यकव्ययोः।
के तत्रि पूजामर्हन्ति वर्जनीयाश्च के द्विजाः॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 71 नियम पाप KK 14-3-106-71

भगवानुवाच —

।
दैवं पूर्वाह्णिकं ज्ञेयं पैतृकं चापराह्णिकम्।
कालहीनं च यद्दानं तद्दानं राजसं विदुः॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 72 नियम पाप KK 14-3-106-72

अवघुष्टं च यद्भुक्तमनृतेन च भारत ।
परामृष्टं शुना वाऽपि तद्भागं राक्षसं विदुः ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 73 नियम KK 14-3-106-73

यावन्तः पतिता विप्रा जडोन्मत्तादयोपि च ।
दैवे च पित्र्ये ते विप्रा राजन्नार्हन्ति सत्क्रियां ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 74 नियम KK 14-3-106-74

क्लीबः प्लङ्गी च कृष्ठी च राजयक्ष्मान्वितश्च यः ।
अपस्मारी च यश्चापि पित्र्ये नार्हति सत्कृतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 75 नियम KK 14-3-106-75

चिकित्सका देवलका मिथ्यानियमधारिणः ।
सोमविक्रयिणश्चापि श्राद्धे नार्हन्ति सत्कृतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 76 नियम पाप KK 14-3-106-76

एकोद्दिष्टे च ये चान्नं भुञ्जते विधिवद्द्बिजाः ।
चान्द्रायणमकृत्वा ते पुनर्नार्हन्ति सत्कृतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 77 नियम KK 14-3-106-77

गायका नर्तकाश्चैव प्लवका वादकास्तथा ।
कथका यौधिकाश्चैव श्राद्धे नार्हन्ति सत्कृतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 78 नियम KK 14-3-106-78

अनग्नयश्च ये विप्राः शवनिर्यातकाश्च ये ।
स्तेनाश्चापि विकर्मस्था राजन्नार्हन्ति सत्कृतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 79 नियम KK 14-3-106-79

अपरिज्ञातपूर्वाश्च गणपुत्राश्च ये द्विजाः ।
पुत्रिकापुत्रकाश्चापि श्राद्धे नार्हन्ति सत्कृतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 80 नियम KK 14-3-106-80

रणकर्ता च यो विप्रो यश्च वाणिज्यको द्विजः ।
प्राणिविक्रयवृत्तिश्च श्राद्धे नार्हन्ति सत्कृतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 81 नियम KK 14-3-106-81

चीर्णव्रतगुणैर्युक्ता नित्यं स्वाध्यायतत्पराः ।
सावित्रीज्ञाः क्रियावन्तस्ते श्राद्धे सत्कृतिक्षमाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.26

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 106, श्लोक 82 नियम KK 14-3-106-82

श्राद्धस्य ब्राह्मणः कालः प्राप्तं दधि घृतं तथा।
दर्भाः सुमनसः क्षेत्रं तत्काले श्राद्धदो भवेत्॥

↩ वापस: ↩ उ.26

उ.27 श्राद्ध के लिए ब्राह्मणों का चयन — पंक्तिपावन और निषिद्ध

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से नियम पाप पुण्य

- नियम पाप ऐसे विप्र को दैवकर्म में और श्राद्ध में बिना जुगुप्सा के नियुक्त करना चाहिए; जुगुप्सित व्यक्ति श्राद्ध को वैसे ही जला देता है जैसे अग्नि लकड़ी को जलाती है (आश्व. 98.71).
- नियम जिसके मुख द्वारा देवता हव्य और पितृदेवता कव्य भोगते हैं, उस ब्राह्मण से बढ़कर कौन-सा प्राणी है? (आश्व. 98.84).
- नियम दुष्टयोनि से उत्पन्न लोग दैव और पित्र्य कर्मों, दान, सहभोजन, संभाषण और संबंध के योग्य नहीं हैं (आश्व. 99.13).
- नियम हव्य-कव्य में अपने से श्रेष्ठ लोगों को विधिपूर्वक भोजन कराना चाहिए; अन्नदाता प्राणदाता है (आश्व. 101.77).
- पुण्य इन्द्रियनिग्रह वाले ऐसे अध्यात्मनिष्ठ ब्राह्मण श्राद्धों में तृप्त हों तो उनकी तृप्ति से पितामह तृप्त होते हैं (आश्व. 104.114).
- नियम हव्य-कव्य के लिए विधिपूर्वक निमंत्रित विप्र अन्य द्रव्यों को भी भोजन में ग्रहण करे तो भी प्रायश्चित्त का भागी नहीं होता (आश्व. 110.5).
- नियम युधिष्ठिर ने पूछा कि कैसे विप्र प्रशस्त हैं, कौन निंदित हैं, और अष्टका का काल कौन-सा है (आश्व. 110.9).
- नियम पुण्य ये अग्रासन पर बैठकर पहले भोजन करते हैं; उस पंक्ति के अन्य लोगों को दर्शनमात्र से पवित्र कर देते हैं; मेरे भक्त द्विजश्रेष्ठ पंक्तिपावन हैं, विशेष रूप से पूज्य हैं (आश्व. 110.12–13).

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 98, श्लोक 71 नियम पाप KK 14-3-98-71

दैवे श्राद्धेऽपि विप्रः स नियोक्तव्योऽजुगुप्सया।
जुगुप्सितस्तु यः श्राद्धं दहत्यग्निरिवेन्धनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.27

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 98, श्लोक 84 नियम KK 14-3-98-84

यस्याऽऽस्येन समश्नन्ति हव्यानि त्रिदिवौकसः।
कव्यानि चैव पितरः किं भूतमधिकं ततः॥

↩ वापस: ↩ उ.27

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 99, श्लोक 13 नियम KK 14-3-99-13

दैवे पित्र्ये तथा दाने भोजने सहभाषणे।
शयने सहसम्बन्धे न योग्या दृष्टयोनिजाः॥

↩ वापस: ↩ उ.27

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 101, श्लोक 77 नियम KK 14-3-101-77

भोजयेदात्मनः श्रेष्ठान्विधिवद्धव्यकव्ययोः।
अन्नं प्राणो मनुष्यणामन्नदः प्राणदो भवेत्।
तस्मादन्नं विशेषेण दातव्यं भूतिमिच्छता॥

↩ वापस: ↩ उ.27

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 114 पुण्य KK 14-3-104-114

ईदृशाध्यात्मिनो ये तु ब्राह्मणा नियतेन्द्रियाः।
तेषां श्राद्धेषु तृप्यन्ति तेन तृप्ताः पितामहाः॥

↩ वापस: ↩ उ.27

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 5 नियम KK 14-3-110-5

निमन्त्रितस्तु यो विप्रो विधिवद्धव्यकव्ययोः ।
मांसादीन्यपि भुञ्जानः प्रायश्चित्तीयते न च ॥

↩ वापस: ↩ उ.27

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 9 नियम KK 14-3-110-9

प्रशस्याः कीदृशा विप्रा निन्द्याश्चापि सुरेश्वर ।
अष्टकायाश्च कः कालस्तन्मे कथय सुव्रत ॥

↩ वापस: ↩ उ.27

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 12 नियम पुण्य KK 14-3-110-12

एते चाग्रासनस्थास्ते भुञ्जानाः प्रथमं द्विजाः ।
तस्यां पङ्क्त्यां तु ये चान्ये तान्पुनन्त्येव दर्शनात् ॥

↩ वापस: ↩ उ.27

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 13 नियम पुण्य KK 14-3-110-13

मद्भक्ता ये द्विजश्रेष्ठा मद्भक्ता मत्परायणाः ।
तान्पङ्क्तिपावनान्विद्धि पूज्यांश्चैव विशेषतः ॥

↩ वापस: ↩ उ.27

उ.28 वेदाध्ययन-रहित विप्र श्राद्ध के योग्य नहीं

वक्ता / कथन: विदुर धृतराष्ट्र से नियम

- नियम जैसे वेद न पढ़ा हुआ ब्राह्मण श्राद्धभोजन के योग्य नहीं होता, वैसे ही षाड्गुण्य न जानने वाला मंत्रणा के योग्य नहीं होता (उद्योग. 38.23).

महाभारत › उद्योगपर्व › प्रजागरपर्व › अध्याय 38, श्लोक 23 नियम KK 5-3-38-23

अनधीत्य यथा वेदान्न विप्रः श्राद्धमर्हति ।
एवमश्रुतषाड्गुण्यो न मन्त्रं श्रोतुमर्हति ॥

↩ वापस: ↩ उ.28

उ.29 हव्य-कव्य के अधिकारी और अनधिकारी

वक्ता / कथन: व्यास युधिष्ठिर से (35); भीष्म युधिष्ठिर से (62); व्यास शुक से (249) नियम पाप

- नियम वेद न पढ़ने वाला ब्राह्मण लकड़ी से बने हाथी की भाँति नाममात्र का ब्राह्मण है; वेदहीन ब्राह्मण को दिया गया दान निष्प्रयोजन है, पात्रदोष के कारण फलित नहीं होता (शान्ति. 35.45–46)।
- पाप ऐसा मूर्ख देवताओं के हव्य और पितरों के कव्य का नाश करने वाला है; वह पुण्यलोक नहीं पाता (शान्ति. 35.49)।
- नियम दुराचारी होकर धर्म छोड़ चुके ब्राह्मण शूद्रों के समान हैं; देवकार्यों में उन्हें वर्जित करना चाहिए (शान्ति. 62.5)।
- नियम पाप मर्यादाहीन, वाणी में कपटी, क्रूर, हिंसाप्रिय, स्वधर्म छोड़ चुका — ऐसे व्यक्ति को हव्य, कव्य आदि नहीं देने चाहिए (शान्ति. 62.6)।
- नियम वेदविद्या-व्रत पूर्ण कर चुके श्रोत्रिय, वेदपारग, स्वकर्म से जीने वाले, दान्त, क्रियावान और तपस्वी पूज्य हैं; उन्हीं के सत्कार के लिए हव्य और कव्य का विधान किया गया है (शान्ति. 249.8–9)।

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 35, श्लोक 45 नियम KK 12-1-35-45

निष्कारणं स्मृतं दत्तं ब्राह्मणे ब्रह्मवर्जिते ।
न फलेत्पात्रदोषेण न चात्रास्ति विचारणा ॥

↩ वापस: ↩ उ.29

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 35, श्लोक 46 नियम KK 12-1-35-46

यथा दारुमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ।
ब्राह्मणश्चानधीयानस्त्रयस्ते नामधारकाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.29

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 35, श्लोक 49 पाप KK 12-1-35-49

देवतानां पितॄणां च हव्यकव्यविनाशकः ।
सर्वथाऽर्थहरो मूर्खो न लोकान्प्राप्तुमर्हति ॥

↩ वापस: ↩ उ.29

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 62, श्लोक 5 नियम KK 12-1-62-5

एवंविधो ब्राह्मणः कौरवेन्द्र वृत्तापेतो यो भवेन्मन्दचेताः ।
जपन्वेदानजपंश्चापि राजन्समः शूद्रैर्दासवच्चापि भोज्यः ।
एते सर्वे शूद्रसमा भवन्ति राजन्नेतान्वर्जयेद्देवकृत्ये ॥

↩ वापस: ↩ उ.29

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 62, श्लोक 6 नियम पाप KK 12-1-62-6

निर्मर्यादे वाक्छठे क्रूरवृत्तौ हिंसाकामे त्यक्तवृत्तस्वधर्मे ।
हव्यं कव्यं यानि चान्यानि राजन्देयान्यदेयानि भवन्ति तस्मिन् ॥

↩ वापस: ↩ उ.29

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 249, श्लोक 8 नियम KK 12-3-249-8

तथास्यातिथयः पूज्या हव्यकव्यवहाः सदा ।
वेदविद्याव्रतस्नाताः श्रोत्रिया वेदपारगाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.29

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 249, श्लोक 9 नियम KK 12-3-249-9

स्वकर्मजीविनो दान्ताः क्रियावन्तस्तपस्विनः ।
तेषां हव्यं च कव्यं चाप्यर्हणार्थं विधीयते ॥

↩ वापस: ↩ उ.29

उ.30 हव्य-कव्य देने के अधिकारी पुत्र

वक्ता / कथन: कद्रू (22.16); नारद मार्कंडेय से (55–59); भीष्म युधिष्ठिर से (80.13) नियम पुण्य

- नियम पुण्य कद्रू ने कहा कि पुत्र इस लोक में भी और मृत्यु के बाद भी पितरों को तार देता है; इसीलिए वह 'पुत्र' (पवित्र करने वाला) कहलाता है (अनु. 22.16)।
- नियम वह कन्या 'पुनर्भू' कहलाती है; पुत्रों वाली वह 'हव्यकव्यदा' (हव्य-कव्य देने वाली) है; संतान के विषय में वह दूष्य नहीं है (अनु. 55.7)।
- नियम कन्या से जन्मे कानीन पुत्र उस कन्या के पिता को हव्य-कव्य देने वाले होते हैं; गर्भवती से विवाह करने पर वह पुत्र 'सहोढ़' होता है (अनु. 55.11–12)।
- नियम जो अपने वर्ण से कन्या लाकर विवाह करता है, उसके लिए वह हव्य-कव्य देने वाले पुत्र को जन्म देती है (अनु. 55.21)।
- नियम धर्मसम्मत आठ भार्यागम हैं; उनमें से पुत्रों वाली स्त्रियाँ इहलोक और परलोक में हितकारी और हव्य-कव्य देने वाली होती हैं (अनु. 56.2)। पुनर्भार्या बनने वाले पाँच भार्यागमों की स्त्रियों के पुत्र भी हव्य-कव्य देने वाले ही हैं (अनु. 56.6)।
- नियम इस प्रकार वे स्त्रियाँ दोषी नहीं हैं; वे धर्मपत्नी बनती हैं, और पुत्रों वाली होकर हव्य-कव्य देने वाली बनती हैं (अनु. 57.4)।
- नियम वह उसकी पत्नी बनती है; उसके पुत्र हव्य-कव्य देने वाले होते हैं; दासता में फँसे उसके सभी बंधु दास्यकर्म से मुक्त हो जाते हैं (अनु. 59.45)।
- नियम दौहित्र (बेटी का बेटा) अपने पिता को और माता के पिता को भी पिंड देता है; धर्म की दृष्टि से पुत्र और दौहित्र में कोई भेद नहीं है (अनु. 80.13)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 22, श्लोक 16 नियम पुण्य KK 13-1-22-16

इह वा तारयेत्पुत्रः प्रेत्य वा तारयेत्पितॄन्।
नात्र चित्रं भवेत्किञ्चित्पुनातीति च पुत्रकः॥

↩ वापस: ↩ उ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 55, श्लोक 7 नियम KK 13-1-55-7

पुनर्भूर्नाम सा कन्या सपुत्रा हव्यकव्यदा।
अदूष्या सा प्रसूतीषु प्रजानां दारकर्मणि॥

↩ वापस: ↩ उ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 55, श्लोक 11 नियम KK 13-1-55-11

कथं कन्यासु ये जाता बन्धूनां दूषिताः सदा।
कस्य ते हव्यकव्यानि प्रदास्यन्ति महामुने॥

↩ वापस: ↩ उ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 55, श्लोक 12 नियम KK 13-1-55-12

कन्यायास्तु पितुः पुत्राः कानीना हव्यकव्यदाः।
अन्तर्वत्न्यास्तु यः पाणिं गृह्णीयात्स सहोढजः॥

↩ वापस: ↩ उ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 55, श्लोक 21 नियम KK 13-1-55-21

आनयित्वा स्वकाद्वर्णात्कन्यकां यो भजेन्नरः।
दातारं हव्यकव्यानां पुत्रकं या प्रसूयति॥

↩ वापस: ↩ उ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 56, श्लोक 2 नियम KK 13-1-56-2

अष्टौ भार्यागमा धर्म्या नराणां दारकर्मणि।
प्रेत्येह च हिता यास्तु सपुत्रा हव्यकव्यदाः॥

↩ वापस: ↩ उ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 56, श्लोक 6 नियम KK 13-1-56-6

एता भार्यागमाः पञ्च पुनर्भार्या भवन्ति याः ।
एता भार्या नृणां गम्यास्तत्पुत्रा हव्यकव्यदाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 57, श्लोक 4 नियम KK 13-1-57-4

एवं नार्यो न दुष्यन्ति नराणां तत्प्रसूतिषु ।
धर्मपत्न्यो भवन्त्येताः सपुत्रा हव्यकव्यदाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 59, श्लोक 45 नियम KK 13-1-59-45

सा तस्य भार्या पुत्रा ये हव्यकव्यप्रदास्तु ते ।
तस्या ये बान्धवाः केचिद्विषक्ताः प्रेष्यतां गताः ।
सर्वे तस्यास्तु सम्बन्धा मुच्यन्ते प्रेष्यकर्मसु ॥

↩ वापस: ↩ उ.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 80, श्लोक 13 नियम KK 13-1-80-13

ददाति हि स पिण्डान्वै पितुर्मातामहस्य च ।
पुत्रदौहित्रयोरेव विशेषो नास्ति धर्मतः ॥

↩ वापस: ↩ उ.30

उ.31 कव्य (श्राद्ध) के योग्य ब्राह्मण

वक्ता / कथन: नारद मार्कण्डेय से (59); भीष्म युधिष्ठिर से (60, 94) नियम पाप पुण्य

- नियम पाप यह पूछे जाने पर कि वेदविहीन और वेदमन्त्रों से बहिष्कृत लोग हव्य-कव्य के लिए नियुक्त हों तो वह दान कैसे फलेगा — नारद ने कहा कि सावित्री (उपनयन/गायत्री) से रहित द्विज हव्य-कव्य के योग्य नहीं हैं; व्रात्यों को अन्न देना शूद्रों को देने के समान है (अनु. 59.31–32)।
- नियम पुण्य धर्मात्मा श्रोत्रिय सभी हव्य-कव्यों के योग्य है; साधु श्रोत्रिय को दिया गया जलती अग्नि में डाली गई आहुति के समान है (अनु. 59.35)।
- नियम यह कहकर कि श्रद्धा से देने वाला पवित्र हो जाता है, भीष्म ने कहा कि पण्डित कहते हैं, दैवकार्यों में ब्राह्मण की परीक्षा आवश्यक नहीं, परन्तु कव्यप्रदान (पितृकार्य) में ब्राह्मण की परीक्षा करनी चाहिए (अनु. 60.3–5)।
- नियम पुण्य योग्य लोगों को दिया जाने वाला निवाप (पितृ-अर्पण) दान के समान है; उन्हें निवेदन करके पूजा करने वाला ऋण से मुक्त हो जाता है (अनु. 94.21)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 59, श्लोक 31 नियम पाप KK 13-1-59-31

सर्वस्त्रीषु प्रवृत्ताश्च साधुवेदविवर्जिताः ।
मानवाः काण्डपृष्ठाश्च वेदमन्त्रबहिष्कृताः ।
नियुक्ता हव्यकव्येषु तेषां दत्तं कथं भवेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.31

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 59, श्लोक 32 नियम पाप KK 13-1-59-32

नार्हन्ति हव्यकव्यानि सावित्रीवर्जिता द्विजाः ।
व्रात्येष्वन्नप्रदानं तद्यथा शूद्रेषु वै तथा ॥

↩ वापस: ↩ उ.31

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 59, श्लोक 35 नियम पुण्य KK 13-1-59-35

हव्यं कव्यं च धर्मात्मा सर्वं तच्छ्रोत्रियोऽर्हति ।
दत्तं हि श्रोत्रिये साधौ ज्वलिताग्नाविवाहुतिः ॥

↩ वापस: ↩ उ.31

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 60, श्लोक 3 नियम KK 13-1-60-3

श्रद्धया परयाऽपूतो यः प्रयच्छेद्द्विजातये ।
हव्यं कव्यं तथा दानं को दोषः स्यात्पितामह ॥

↩ वापस: ↩ उ.31

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 60, श्लोक 4 नियम KK 13-1-60-4

श्रद्धापूतो नरस्तात दुर्दान्तोऽपि न संशयः ।
पूतो भवति सर्वत्र किमुत त्वं महाद्युते ॥

↩ वापस: ↩ उ.31

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 60, श्लोक 5 नियम KK 13-1-60-5

न ब्राह्मणं परिक्षेत दैवेषु सततं नरः ।
कव्यप्रदाने तु बुधाः परीक्ष्यं ब्राह्मणं विदुः ॥

↩ वापस: ↩ उ.31

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 94, श्लोक 21 नियम पुण्य KK 13-1-94-21

निवापो दानसदृशः सदृशेषु युधिष्ठिर ।
निवेदयन्पूजयन्वै तेष्वानृण्यं निगच्छति ॥

↩ वापस: ↩ उ.31

उ.32 पितृकार्यों में दान के योग्य पात्र

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से नियम पुण्य

- नियम शुद्ध, दांत, क्रोध को जीतने वाला, दीन कुल में जन्मा, श्रुत और चारित्र वाला, बहुकलत्रवान, नित्य पंचयज्ञ करने वाला, शरीर-विकार से रहित — ये पात्र के गुण हैं (अनु. 234.6–7)।
- पुण्य ऐसे पात्र को पितृकार्यों, देवकार्यों और अग्निकार्यों में दिया गया दान महाफल देता है (अनु. 234.8)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 234, श्लोक 6 नियम KK 13-1-234-6

शुद्धो दान्तो जितक्रोधस्तथा दीनकुलोद्भवः ।
श्रुतचारित्रसम्पन्नस्तथा बहुकलत्रवान् ॥

↩ वापस: ↩ उ.32

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 234, श्लोक 7 नियम KK 13-1-234-7

पञ्चयज्ञपरो नित्यं निर्विकारशरीरवान् ।
एतान्पात्रगुणान्विद्धि तादृक्पात्रं प्रशस्यते ॥

↩ वापस: ↩ उ.32

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 234, श्लोक 8 पुण्य KK 13-1-234-8

पितृदेवाग्निकार्येषु तस्य दत्तं महाफलम् ।
यद्यदर्हति यो लोके पात्रं तस्य भवेच्च सः ।
मुच्येदापद आपन्नो येन पात्रं तदस्य तु ॥

↩ वापस: ↩ उ.32

उ.33 श्राद्ध में ब्राह्मणों की संख्या, पात्रता; आडंबर नहीं

वक्ता / कथन: नारद युधिष्ठिर से (नियम) (पाप) (पुण्य)

- नियम पुण्य अनन्त फल चाहने वाले को कव्य (पितृदेवताओं के उद्देश्य से दिया जाने वाला भोजन) ज्ञाननिष्ठ ब्राह्मण को ही देना चाहिए; दैवकार्य में भी ऐसा ही; ऐसे व्यक्ति न मिलें तो योग्यता के अनुसार दूसरों को दिया जा सकता है (भाग. 7.15.2)।
- नियम दैवकार्य में दो को, पितृकार्य में तीन को, अथवा दोनों में एक-एक को ही भोजन कराना चाहिए; कोई कितना भी सम्पन्न हो, श्राद्ध को विस्तार से नहीं करना चाहिए (भाग. 7.15.3)।
- नियम पाप विस्तार करने से और स्वजनों को खिलाने से देश, काल, श्रद्धा, द्रव्य, पात्र और सत्कार ठीक से नहीं सधते (भाग. 7.15.4)।
- नियम पुण्य उचित देश-काल में प्राप्त द्रव्य को श्रीहरि को देवता मानकर, श्रद्धा से, विधिपूर्वक योग्य व्यक्ति को अर्पित किया जाए तो वह कामनाएँ पूरी करने वाला और अक्षय हो जाता है (भाग. 7.15.5)।
- नियम देवताओं, ऋषियों, पितृदेवताओं, भूतों, स्वयं और स्वजनों में अन्न बाँटते हुए सर्वत्र परमपुरुष को ही देखना चाहिए (भाग. 7.15.6)।

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 15 › श्लोक 2 (नियम) (पुण्य) — भाग. 7.15.2

ज्ञाननिष्टाय देयानि कव्यान्यानन्त्यमिच्छता।
दैवे च तदभावे स्यादितरेभ्यो यथाऽर्हतः॥

↩ वापस: (↩ उ.33)

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 15 › श्लोक 3 (नियम) — भाग. 7.15.3

द्वौ दैवे पितृकार्ये त्रीनेकैकमुभयत्र वा।
भोजयेत् सुसमृद्धोऽपि श्राद्धे कुर्यान्न विस्तरम्॥

↩ वापस: (↩ अ.4 · नियम) (↩ उ.33)

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 15 › श्लोक 4 (नियम) (पाप) — भाग. 7.15.4

देशकालोचितश्रद्धाद्रव्यपात्रार्हणानि च।
सम्यग् भवन्ति नैतानि विस्तरात् स्वजनार्पणात्॥

↩ वापस: (↩ उ.33)

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 15 › श्लोक 5 (नियम) (पुण्य) — भाग. 7.15.5

देशे काले च सम्प्राप्तमुत्पन्नं हरिदैवतम्।
श्रद्धया विधिवत् पात्रे न्यस्तं कामधुगक्षयम्॥

↩ वापस: (↩ उ.33)

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 15 › श्लोक 6 (नियम) — भाग. 7.15.6

देवर्षिपितृभूतेभ्य आत्मने स्वजनाय च।
अन्नं संविभजन् पश्येत् सर्वतः पुरुषात्मकम्॥

↩ वापस: (↩ उ.33)

उ.34 स्त्रियाँ – श्राद्ध, हव्य-कव्य

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (विदेहराज की पुत्री की गाथा का उदाहरण देते हुए) (नियम)

- नियम ब्राह्मण के घर में पति के लिए स्नान, अलंकरण, हव्य-कव्य आदि धर्मकार्य ब्राह्मण पत्नी को ही करने चाहिए; उसके रहते दूसरी पत्नी को नहीं करने चाहिए (अनु. 82.33–34)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 82, श्लोक 33 (नियम) — KK 13-1-82-33

स्नानं प्रसाधनं भर्तुर्दन्तधावनमुञ्छनम्।
हव्यं कव्यं च यच्चान्यद्धर्मयुक्तं गृहे भवेत्॥

↩ वापस: (↩ उ.34)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 82, श्लोक 34 नियम KK 13-1-82-34

न तस्यां जातु तिष्ठन्त्यामन्या तत्कर्तुमर्हति ।
ब्राह्मणीत्वेव कुर्याद्वा ब्राह्मणस्य युधिष्ठिर ॥

↩ वापस: ↩ उ.34

उ.35 विवाह से पहले पितृकार्य (श्राद्ध)

वक्ता / कथन: जनक दशरथ से; दशरथ जनक से; कवि का वर्णन उदाहरण नियम

- नियम जनक ने दशरथ से कहा कि राम और लक्ष्मण से गोदान कराकर, पितृकार्य भी करके, उसके बाद ही विवाह सम्पन्न कराइए (रामा. बाल. 71.23)।
- नियम जनक ने कहा कि आज मघा नक्षत्र है, तीसरे दिन उत्तर फल्गुनी नक्षत्र में विवाह कीजिए, और राम-लक्ष्मण के लिए सुखोदय करने वाले दान कीजिए (रामा. बाल. 71.24)।
- उदाहरण 'अपने निवास पर जाकर हम श्राद्धकर्म विधिवत् करेंगे' ऐसा दशरथ ने जनक से कहा, और निवास पहुँचकर विधानपूर्वक श्राद्ध करके, अगली सुबह उत्तम गोदान किया (रामा. बाल. 72.19; 72.21)।

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 71 › श्लोक 23 नियम वा.रा. 1.71.23

रामलक्ष्मणयो राजन् गोदानं कारयस्व ह ।
पितृकार्यं च भद्रं ते ततो वैवाहिकं कुरु ॥

↩ वापस: ↩ उ.35

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 71 › श्लोक 24 नियम वा.रा. 1.71.24

मघा ह्यद्य महाबाहो तृतीयदिवसे प्रभो ।
फल्गुन्यामुत्तरे राजंस्तस्मिन् वैवाहिकं कुरु ।
रामलक्ष्मणयोरर्थे दानं कार्यं सुखोदयम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.35

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 72 › श्लोक 19 उदाहरण वा.रा. 1.72.19

स्वस्ति प्राप्नुहि भद्रं ते गमिष्यामः स्वमालयम् ।
श्राद्धकर्माणि विधिवद्विधास्य इति चाब्रवीत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.35

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 72 › श्लोक 21 उदाहरण वा.रा. 1.72.21

स गत्वा निलयं राजा श्राद्धं कृत्वा विधानतः ।
प्रभाते काल्यमुत्थाय चक्रे गोदानमुत्तमम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.35 ↩ सूची.63

उ.36 भारत-श्रवण पूर्ण होने के बाद श्राद्ध

वक्ता / कथन: वैशम्पायन जनमेजय से (भारत-श्रवण का फल) नियम

- नियम इस इतिहास को यथाक्रम, संयम के साथ, शुचि होकर सुनकर पूरा करने के बाद, उसमें कहे गए लोगों के उद्देश्य से ब्राह्मणों को यथाशक्ति, भक्ति के साथ श्राद्ध अर्पित करने चाहिए (स्वर्गा. 6.11–12).

महाभारत › स्वर्गारोहणपर्व › › अध्याय 6, श्लोक 11 नियम KK 18-1-6-11

इतिहासमिमं श्रुत्वा यथावदनुपूर्वशः ।
संयतात्मा शुचिर्भूत्वा पारं गत्वा च भारते ॥

↩ वापस: ↩ उ.36

महाभारत › स्वर्गारोहणपर्व › › अध्याय 6, श्लोक 12 नियम KK 18-1-6-12

तेषां श्राद्धानि देयानि श्रुत्वा भारत भारतम्।
ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्त्या भक्त्या च भरतर्षभ॥

↩ वापस: ↩ उ.36

उ.37 श्राद्धों में रामायण सुनानी चाहिए

वक्ता / कथन: वाल्मीकि महर्षि (फलश्रुति) नियम पुण्य

- नियम रामायण वेद के समान है; बुद्धिमान को श्राद्धों में इसे सुनाना चाहिए (रामा. उत्तर. 111.4)।
- पुण्य यह आख्यान आयु और सौभाग्य देता है, पापों का नाश करता है (रामा. उत्तर. 111.4)।

श्रीमद्रामायण › उत्तरकाण्ड › सर्ग 111 › श्लोक 4 नियम पुण्य वा.रा. 7.111.4

इदमाख्यानमायुष्यं सौभाग्यं पापनाशनम्।
रामायणं वेदसमं श्राद्धेषु श्रावयेद् बुधः॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.37 ↩ उ.37

उ.38 श्राद्धान्न और मृतकान्न खाने वाले ब्राह्मण के लिए प्रायश्चित्त

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप

- नियम युधिष्ठिर ने कहा कि हव्य-कव्य के प्रतिग्रह में और विविध भोज्यों में ब्राह्मणों के लिए प्रायश्चित्त बताइए (अनु. 199.2).
- नियम पाप और्ध्वदेहिक में पादुकाएँ और छाता स्वीकार करने वाला एकाग्रता से सौ बार जप करके उस पाप से मुक्त होता है (अनु. 199.10).
- नियम पाप क्षेत्र-प्रतिग्रह में, ग्रह (ग्रहण) और सूतक में स्वीकार करे तो तीन रात उपवास करके पापमुक्त होता है (अनु. 199.11).
- नियम पाप कृष्णपक्ष में पितृश्राद्ध का अन्न खाने वाला द्विज एक दिन-रात के बाद पवित्र होता है; उस समय संध्योपासन और जप न करे, उस अन्न को न मिलाए; तब वह शुद्ध होता है (अनु. 199.12–13).
- नियम इसीलिए पितरों का श्राद्ध अपराह्ण में कहा गया है — पहले आमंत्रित ब्राह्मण भोजन करते हैं (अनु. 199.14).
- नियम पाप मृतक के तीसरे दिन अन्न खाने वाला ब्राह्मण तीन बार स्नान करके बारह दिनों में शुद्ध होता है; बारह दिनों के बाद शौच करके ब्राह्मणों को हविस् देकर उस पाप से मुक्त होता है (अनु. 199.15–16).
- नियम मृतक के दशरात्र के विषय में (दशरात्रेण) सावित्री, रैवती इष्टि, कूष्माण्ड, अघमर्षण — ये प्रायश्चित्त कराने चाहिए (अनु. 199.17).
- नियम पाप मृतक के त्रिरात्र (निर्दिष्ट) समय में खाने वाला सात दिन त्रिषवण स्नान (दिन में तीन समय स्नान) करके पवित्र होता है; महान सिद्धि पाता है, आपदा नहीं पाता (अनु. 199.18–19).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 2 नियम KK 13-1-199-2

ब्राह्मणानां विशेषेण हव्यकव्यप्रतिग्रहे।
नानाविधेषु भोज्येषु प्रायश्चित्तानि शंस मे॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 10 नियम पाप KK 13-1-199-10

उपानहौ च च्छत्रं च प्रतिगृह्यौर्ध्वदेहिके।
जपेच्छतं समायुक्तस्तेन मुच्येत पाप्मना॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 11 नियम पाप KK 13-1-199-11

क्षेत्रप्रतिग्रहे चैव ग्रहसूतकयोस्तथा।
त्रीणि रात्राण्युपोषित्वा तेन पापाद्विमुच्यते॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 12 नियम पाप KK 13-1-199-12

कृष्णपक्षे तु यः श्राद्धं पितृणामश्नुते द्विजः ।
अन्नमेतदहोरात्रात्पूतो भवति ब्राह्मणः ॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 13 नियम पाप KK 13-1-199-13

न च सन्ध्यामुपासीत न च जाप्यं प्रवर्तयेत् ।
न सङ्किरेत्तदन्नं च ततः पूयेत ब्राह्मणः ॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 14 नियम KK 13-1-199-14

इत्यर्थमपराह्णे तु पितृणां श्राद्धमुच्यते ।
यथोक्तानां यदश्नीयुर्ब्राह्मणाः पूर्वकेतिताः ॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 15 नियम पाप KK 13-1-199-15

मृतकस्य तृतीयाहे ब्राह्मणो योऽन्नमश्नुते ।
स त्रिवेलं समुन्मज्ज्य द्वादशाहेन शुध्यति ॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 16 नियम पाप KK 13-1-199-16

द्वादशाहे व्यतीते तु कृतशौचो विशेषतः ।
ब्राह्मणेभ्यो हविर्दत्त्वा मुच्यते तेन पाप्मना ॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 17 नियम KK 13-1-199-17

मृतस्य दशरात्रेण प्रायश्चित्तानि दापयेत् ।
सावित्रीं रैवतीमिष्टिं कूश्माण्डमघमर्षणम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 18 नियम पाप KK 13-1-199-18

मृतकस्य त्रिरात्रे यः समुद्दिष्टे समश्नुते ।
सप्तत्रिषवणं स्नात्वा पूतो भवति ब्राह्मणः ॥

↩ वापस: ↩ उ.38

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 199, श्लोक 19 नियम पाप KK 13-1-199-19

सिद्धिमाप्नोति विपुलामापदं चैव नाप्नुयात् ॥

↩ वापस: ↩ उ.38

उ.39 नदी में पितृतर्पण — क्रम, नाव में जलदान

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम जल पार करते समय पितामहों के नाम स्मरण करने चाहिए; नदी के पास पहुँचकर पितरों का पितृतर्पण करना चाहिए (अनु. 139.16)।
- नियम पहले अपने वंश वालों का जल से तर्पण करके, फिर मित्रों और बंधुवर्गों को जलांजलि देनी चाहिए (अनु. 139.17)।
- नियम चितकबरे बैलों की जोड़ी से जल पार करने वाले से और नाव पर चढ़े व्यक्ति से पितर (जल की) इच्छा करते हैं; यह जानने वाले नाव में रहते हुए एकाग्रता से सदा जल देते हैं (अनु. 139.18–19)।
- नियम पुण्य कृष्णपक्ष नामक मासार्ध में निर्वपण (पिंडप्रदान) करने चाहिए; पितृभक्ति से पुष्टि, आयु, वीर्य और संपदा प्राप्त होती है (अनु. 139.19–20)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 16 नियम KK 13-1-139-16

जलं प्रतरमाणश्च कीर्तयेत पितामहान्।
नदीमासाद्य कुर्वीत पितृणां पितृतर्पणम्॥

↩ वापस: ↩ उ.39

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 17 नियम KK 13-1-139-17

पूर्वं स्ववंशजानां तु कृत्वाऽद्भिस्तर्पणं पुनः।
सुहृत्सम्बन्धिवर्गाणां ततो दद्याज्जलाञ्जलिम्॥

↩ वापस: ↩ उ.39

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 18 नियम KK 13-1-139-18

कल्माषगोयुगेनाथ युक्तेन तरतो जलम्।
पितरोऽभिलषन्ते वै नावं चाप्यधिरोहिताः॥

↩ वापस: ↩ उ.39

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 19 नियम पुण्य KK 13-1-139-19

सदा नावि जलं तज्ज्ञाः प्रयच्छन्ति समाहिताः।
मासार्धे कृष्णपक्षस्य कुर्यान्निर्वपणानि वै॥

↩ वापस: ↩ उ.39 ↩ उ.39

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 20 नियम पुण्य KK 13-1-139-20

पुष्टिरायुस्तथा वीर्यं श्रीश्चैव पितृभक्तितः॥

↩ वापस: ↩ उ.39

उ.40 अमावास्या को औदुम्बर पात्र से मधुमिश्रित तिलोदक

वक्ता / कथन: पितृदेवता देवदूत से — भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को कहा गया नियम पुण्य

- नियम पुण्य अमावास्या को औदुम्बर (गूलर) का पात्र लेकर मधु मिला तिलोदक देने वाले मानो रहस्यसहित, यथार्थ रूप से श्राद्ध कर लेते हैं (अनु. 188.78)।
- पुण्य उनकी संतान सदा प्रसन्न और पुष्ट रहती है; कुल-वंश की वृद्धि पिण्डदाता का फल है; श्रद्धा से करने वाला पितृऋण से मुक्त हो जाता है (अनु. 188.79)।
- नियम इस प्रकार श्राद्धकाल का क्रम, विधि, पात्र और फल यथाविधि कहा गया (अनु. 188.80)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 78 नियम पुण्य KK 13-1-188-78

अमावास्यां तु ये मर्त्याः प्रयच्छन्ति तिलोदकम्।
पात्रमौदुम्बरं गृह्य मधुमिश्रं तपोधन।
कृतं भवति तैः श्राद्धं सरहस्यं यथार्थवत्॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.40

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 79 पुण्य KK 13-1-188-79

हृष्टपुष्टमनास्तेषां प्रजा भवति नित्यदा।
कुलवंशस्य वृद्धिस्तु पिण्डदस्य फलं भवेत्।
श्रद्दधानस्तु यः कुर्यात्पितॄणामनृणो भवेत्॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.40

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 80 नियम KK 13-1-188-80

एवमेव समुद्दिष्टः श्राद्धकालक्रमस्तथा।
विधिः पात्रं फलं चैव यथावदनुकीर्तितम्॥

↩ वापस: ↩ उ.40

उ.41 हाथ के तीर्थ – पितृतीर्थ

वक्ता / कथन: नारद मार्कण्डेय से नियम पुण्य

- नियम मनुष्यों के हाथ में देव, ऋषि, पितृ, ब्राह्म (बीच में) और वैष्णव — ये पाँच तीर्थ हैं (अनु. 59.25).
- नियम पुण्य इनमें वैष्णव भाग पहला है; वहाँ आचमन करने से चारों वर्णों के लोगों का कुल बढ़ता है, और इहलोक-परलोक में पितृकार्य तथा देवकार्य वृद्धि पाते हैं (अनु. 59.26).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 59, श्लोक 25 नियम KK 13-1-59-25

देवर्षिपितृतीर्थानि ब्राह्मं मध्येऽथ वैष्णवम्।
नृणां तीर्थानि पञ्चाहुः पाणौ सन्निहितानि वै॥

↩ वापस: ↩ उ.41

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 59, श्लोक 26 नियम पुण्य KK 13-1-59-26

आद्यतीर्थं तु तीर्थानां वैष्णवो भाग उच्यते।
यत्रोपस्पृश्य वर्णानां चतुर्णां वर्धते कुलम्।
पितृदैवतकार्याणि वर्धन्ते प्रेत्य चेह च॥

↩ वापस: ↩ उ.41

उ.42 तिलोदक के लिए ताम्रपात्र

वक्ता / कथन: देवता (ऋषियों से; भीष्म द्वारा कहा गया रहस्यधर्म) नियम पाप

- नियम उपवास में और बलि में ताम्रपात्र श्रेष्ठ है; बलि, भिक्षा, अर्घ्य, पितृदेवताओं को तिलोदक — ये सब ताँबे के पात्र से देने चाहिए (अनु. 189.21–22)।
- पाप अन्यथा कम फल मिलता है (अनु. 189.22)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 189, श्लोक 21 नियम KK 13-1-189-21

उपवासे बलौ चापि ताम्रपात्रं विशिष्यते।
बलिर्भिक्षा तथाऽर्घ्यं च पितॄणां च तिलोदकम्।।

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.42

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 189, श्लोक 22 नियम पाप KK 13-1-189-22

ताम्रपात्रेण दातव्यमन्यथाऽल्पफलं भवेत्।
गुह्यमेतत्समुद्दिष्टं यथा तुष्यन्ति देवताः॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.42 ↩ उ.42

(इ) प्रेतकर्म — दहन, उदकक्रिया, दशाह, आशौच

उ.43 मरणसमय और दाह की विधि; उदक, अष्टकाश्राद्ध

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से नियम पुण्य

- नियम स्वाभाविक मृत्यु के बाद मृतकों के लिए किए जाने वाले कार्य को शिव ने बताया; मरणासन्न मनुष्य की देह को भूमि पर लिटाना चाहिए (अनु. 242.27–28)।
- नियम प्राण निकलते ही देह को वस्त्र से ढककर पुष्पमालाओं, गन्ध और सोने से अलंकृत करना चाहिए (अनु. 242.29)।
- नियम श्मशान के दक्षिण भाग में चिता की अग्नि में शव का दाह करना चाहिए; अथवा प्राणहीन शरीर को भूमि में निक्षेप करना चाहिए (अनु. 242.30)।
- नियम मरने वालों के लिए दिन, शुक्लपक्ष और उत्तरायण प्रशस्त हैं; इनके विपरीत निन्दित है (अनु. 242.31)।
- नियम पुण्य बहुत से लोग मिलकर जो उदकदान और अष्टकाश्राद्ध करते हैं, वे मृतकों को परलोक में पोषण और शुभ प्रदान करते हैं (अनु. 242.32)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 242, श्लोक 27 नियम KK 13-1-242-27

स्वभावं मरणं नाम न तु चात्मेच्छया भवेत्।
यथा मृतानां यत्कार्यं तन्मे शृणु यथाविधि॥

↩ वापस: ↩ उ.43

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 242, श्लोक 28 नियम KK 13-1-242-28

तत्रापि मरणं त्यागो मूढत्यागाद्विशिष्यते।
भूमौ संवेशयेद्देहं नरस्य विनशिष्यतः॥

↩ वापस: ↩ उ.43

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 242, श्लोक 29 नियम KK 13-1-242-29

निर्जीवं वृणुयात्सद्यो वाससा तु कलेवरम्।
माल्यगन्धैरलङ्कृत्य सुवर्णेन च भामिनि॥

↩ वापस: ↩ उ.43

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 242, श्लोक 30 नियम KK 13-1-242-30

श्मशाने दक्षिणे देशे चिताग्नौ प्रदहेन्मृतम्।
अथवा निक्षिपेद्भूमौ शरीरं जीववर्जितम्॥

↩ वापस: ↩ उ.43

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 242, श्लोक 31 नियम KK 13-1-242-31

दिवा च शुक्लपक्षश्च उत्तरायणमेव च।
मुमूर्षूणां प्रशस्तानि विपरीतं तु गर्हितम्॥

↩ वापस: ↩ उ.43

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 242, श्लोक 32 नियम पुण्य KK 13-1-242-32

औदकं चाष्टकाश्राद्धं बहुभिर्बहुभिः कृतम्।
आप्यायनं मृतानां तत्परलोके भवेच्छुभम्।
एतत्सर्वं मया प्रोक्तं मानुषाणां हितं वचः॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.43

उ.44 अशौच के आहार, दाह और पिण्डदान के नियम

वक्ता / कथन: व्यास युधिष्ठिर से (35); भीष्म युधिष्ठिर से (59); पराशर जनक से (303) नियम

- नियम प्रेतान्न, सूतकान्न और दस दिन न बीते हुए (अनिर्दश) किसी भी आहार को नहीं खाना चाहिए; ब्याने के बाद दस दिन न बीती हुई गाय का दूध भी नहीं पीना चाहिए (शान्ति. 35.26)।
- नियम सन्तानहीन (शूद्र सेवक को स्वामी) पिण्ड दे; वृद्धों और दुर्बलों का पोषण करे; परन्तु शूद्र किसी भी आपत्ति में स्वामी को न छोड़े (शान्ति. 59.38)।
- नियम घर में प्राण त्यागने वालों को बाहर ले जाना, वाहन से श्मशान पहुँचाना, और पवित्र स्थान पर विधिपूर्वक दाह करना प्रशस्त है (शान्ति. 303.38)।

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 35, श्लोक 26 नियम KK 12-1-35-26

प्रेतान्नं सूतकान्नं च यच्च किञ्चिदनिर्दशम्।
अभोज्यं चाप्यपेयं च धेनोर्दुग्धमनिर्दशम्॥

↩ वापस: ↩ उ.44

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 59, श्लोक 38 नियम KK 12-1-59-38

देयः पिण्डोऽनपत्याय भर्तव्यौ वृद्धदुर्बलौ।
शूद्रेण तु न हातव्यो भर्ता कस्याञ्चिदापदि॥

↩ वापस: ↩ उ.44

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 303, श्लोक 38 नियम KK 12-3-303-38

गृहेषु येषामसवः पतन्ति तेषामथो निर्हरणं प्रशस्तम्।
यानेन वै प्रापणं च श्मशाने शुचौ देशे विधिना चैव दाहः॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.44

उ.45 मृतकों के लिए भी वेदमंत्रों वाले कर्म हैं — स्यूमरश्मि का तर्क

वक्ता / कथन: स्यूमरश्मि कपिल से (भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को सुनाया गया संवाद) नियम

- नियम स्यूमरश्मि का तर्क है कि (मृत्यु के बाद) दहन, पात्रों को भोजन, गौओं या अन्य पशुओं का दान, पिंडों को जल में छोड़ना — ये भी मंत्रपूर्वक ही होते हैं (शान्ति. 275.14)। इस श्लोक में कुछ शब्दों का अर्थ अस्पष्ट है।
- नियम अर्चिष्मान, बर्हिषद और क्रव्याद नामक पितर मृतक के विषय में भी मंत्रों को स्वीकार करते हैं; मंत्र ही कारण हैं (शान्ति. 275.15)।
- नियम स्यूमरश्मि ने प्रश्न किया कि जब मनुष्य पितरों, देवताओं और द्विजों के ऋणी हैं, और वेद ऐसा घोषित करते हैं, तब मोक्ष किसे और कैसे? (शान्ति. 275.16)।

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 275, श्लोक 14 नियम KK 12-3-275-14

दाहे पुनः संश्रयणे संश्रिते पात्रभोजने।
दानं गवां पशूनां वा पिण्डानामप्सु मज्जनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.45

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 275, श्लोक 15 नियम KK 12-3-275-15

अर्चिष्मन्तो बर्हिषदः क्रव्यादाः पितरस्तथा।
मृतस्याप्यनुमन्यन्ते मन्त्रा मन्त्राश्च कारणम्॥

↩ वापस: ↩ उ.45

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 275, श्लोक 16 नियम KK 12-3-275-16

एवं क्रोशत्सु वेदेषु कुतो मोक्षोऽस्ति कस्यचित्।
ऋणवन्तो यदा मर्त्याः पितृदेवद्विजातिषु॥

↩ वापस: ↩ उ.45

उ.46 सभी मृतों के लिए क्रमानुसार प्रेतकार्य कराने चाहिए

वक्ता / कथन: संजय धृतराष्ट्र से (नियम)

- नियम संजय ने धृतराष्ट्र से कहा कि युद्ध में मरे पितरों, पुत्रों, पौत्रों, ज्ञातियों, मित्रों, गुरुओं और अन्य अनुचरों — सभी के क्रमानुसार सारे प्रेतकार्य कराइए (स्त्री. 1.8); पुत्रों, पौत्रों, पितरों — सभी के क्रमानुसार प्रेतकार्य कराने के लिए राजा से फिर कहा गया (स्त्री. 8.7).

महाभारत › स्त्रीपर्व › जलप्रदानिकपर्व › अध्याय 1, श्लोक 8 नियम — KK 11-1-1-8

पितॄणां पुत्रपौत्राणां ज्ञातीनां सुहृदां तथा ।
गुरूणां चानुपूर्व्येण ये चान्येऽनुचरा हताः ।
प्रेतकार्याणि सर्वाणि कारयस्व नराधिप ॥

↩ वापस: ↩ उ.46

महाभारत › स्त्रीपर्व › जलप्रदानिकपर्व › अध्याय 8, श्लोक 7 नियम — KK 11-1-8-7

मित्रनाशेऽर्थनाशे च ज्ञातिसम्बन्धिनामपि ।
प्राप्यते सुमहद्दुःखं विषाग्निप्रतिमं विभो ॥
पुत्राणामथ पौत्राणां पितॄणां च महीपते ।
अानुपूर्व्येण सर्वेषां प्रेतकार्याणि कारय ।।

↩ वापस: ↩ उ.46

उ.47 पुत्र द्वारा अन्त्यसंस्कार — उसका महत्त्व

वक्ता / कथन: कवि-वर्णन; दशरथ कैकेयी से; लक्ष्मण गुह से; गुह भरत से (नियम) (पुण्य)

- नियम सब कुछ जानने वाले मन्त्री पुत्र के बिना राजा का दाहसंस्कार करना नहीं चाहते थे; अतः आज्ञा के अनुसार राजा की देह को तेल से भरी द्रोणी में रखकर सुरक्षित किया (रामा. अयो. 66.14–15)।
- नियम वहाँ एकत्र हुए सुहृदों ने भी पुत्र के बिना राजा के दाह की सम्मति नहीं दी; इसीलिए राजा को उसी शयन में रखा गया (रामा. अयो. 66.27)।
- नियम यदि राम का वनवास भरत को प्रिय हो, तो मेरी मृत्यु के बाद भरत मेरा प्रेतकृत्य न करे — ऐसा दशरथ ने कैकेयी से कहा (रामा. अयो. 12.92)।
- नियम पुण्य वह समय आने पर मृत पिता के सभी प्रेतकार्यों में संस्कार करने वाले ही सिद्धार्थ (कृतार्थ) हैं — ऐसा लक्ष्मण ने कहा; यही बात गुह ने भरत को बताई (रामा. अयो. 51.20; 86.18)।

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 66 › श्लोक 14 नियम — वा.रा. 2.66.14

तैलद्रोण्यां तदामात्याः संवेश्य जगतीपतिम् ।
राज्ञः सर्वाण्यथादिष्टाश्चक्रुः कर्माण्यनन्तरम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.47

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 66 › श्लोक 15 नियम — वा.रा. 2.66.15

न तु संकालनं राज्ञो विना पुत्रेण मन्त्रिणः ।
सर्वज्ञाः कर्तुमीषुस्ते ततो रक्षन्ति भूमिपम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.47

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 66 › श्लोक 27 नियम — वा.रा. 2.66.27

ऋते तु पुत्राद् दहनं महीपते-
र्नारोचयंस्ते सुहृदः समागताः ।
इतीव तस्मिन् शयने न्यवेशयन्
विचिन्त्य राजानमचिन्त्यदर्शनम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.47

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 12 › श्लोक 92 नियम वा.रा. 2.12.92

प्रियं चेद् भरतस्यैतद् रामप्रव्राजनं भवेत् ।
मा स्म मे भरतः कार्षीत् प्रेतकृत्यं गतायुषः ॥

↩ वापस: ↩ उ.47

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 51 › श्लोक 20 नियम पुण्य वा.रा. 2.51.20

सिद्धार्थाः पितरं वृत्तं तस्मिन् काले ह्युपस्थिते ।
प्रेतकार्येषु सर्वेषु संस्करिष्यन्ति राघवम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.47

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 86 › श्लोक 18 नियम पुण्य वा.रा. 2.86.18

सिद्धार्थाः पितरं वृत्तं तस्मिन् काले ह्युपस्थिते ।
प्रेतकार्येषु सर्वेषु संस्करिष्यन्ति भूमिपम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.47

उ.48 पुत्रहीन के लिए दौहित्र उदक और पिंड देकर दाय प्राप्त करें

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण अक्रूर से नियम

- नियम सत्राजित के पुत्र न होने के कारण, उसकी पुत्री के पुत्र (दौहित्र) जलांजलि और पिंड समर्पित करके, ऋण को पूर्ण रूप से चुकाकर, उसकी संपत्ति (दाय) ग्रहण करें (भाग. 10.61.44)।

श्रीमद्भागवत › दशमस्कन्ध › अध्याय 61 › श्लोक 44 नियम भाग. 10.61.44

सत्राजितोऽनपत्यत्वाद् गृह्णीयुर्दुहितुः सुताः। दायं निनीयापः पिण्डान् विमुच्यर्णमशेषतः।
तथापि दुर्धरो ह्यन्यैस्त्वय्यास्तां प्रापितो मणिः॥

↩ वापस: ↩ उ.48

उ.49 नष्ट हुए लोगों का श्राद्ध करते हैं – कुन्ती का वचन

वक्ता / कथन: कुन्ती कृष्ण से उदाहरण

- उदाहरण धनंजय, जुड़वाँ भाइयों (नकुल-सहदेव) और वृकोदर का उल्लेख करते हुए — कुन्ती ने कहा कि प्राण खोकर नष्ट हुए लोगों का मनुष्य श्राद्ध करते हैं (उद्योग. 90.71).

महाभारत › उद्योगपर्व › भगवद्यानपर्व › अध्याय 90, श्लोक 71 उदाहरण KK 5-6-90-71

धनञ्जयं च गोविन्द यमौ तं च वृकोदरम् ।
जीवनाशं प्रनष्टानां श्राद्धं कुर्वन्ति मानवाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.49

उ.50 विदेश में मरे और जिनका शरीर न मिला हो, उनका पलाश-प्रतिमा से संस्कार

वक्ता / कथन: युधिष्ठिर के प्रश्न का श्रीकृष्ण द्वारा उत्तर नियम

- नियम युधिष्ठिर ने पूछा कि यदि विप्र देशांतर में मर जाए और उसका शरीर नष्ट हो जाए, तो उसका प्रेतकर्म कैसे हो (आश्व. 118.1)।
- नियम ऐसे आहिताग्नि के लिए शास्त्र के कहे अनुसार पलाश की डंठलों से प्रतिमा बनाकर संस्कार करना चाहिए (आश्व. 118.2)।
- नियम कहते हैं कि शरीर में तीन सौ साठ हड्डियाँ हैं; उन्हें शास्त्र के अनुसार बाँटकर सजाना चाहिए (आश्व. 118.3)।
- नियम सिर के लिए चालीस, गर्दन के लिए दस, भुजाओं के लिए सौ, उँगलियों के लिए दस (आश्व. 118.4); छाती के लिए तीस, उदर के लिए बीस, गुह्यांगों के लिए छह और चार (आश्व. 118.5)।
- नियम जाँघों के लिए सौ, घुटनों और पिंडलियों के लिए तीस, पैरों के लिए दस — यही प्रेतनिष्कृति है (आश्व. 118.6)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 118, श्लोक 1 नियम KK 14-3-118-1

देशान्तरगते विप्रे संयुक्ते कालधर्मणा।
शरीरनाशे सम्प्राप्ते कथं प्रेतत्वकल्पना॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.50

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 118, श्लोक 2 नियम KK 14-3-118-2

भगवानुवाच —
।
श्रूयतामाहिताग्नेस्तु तथाभूतस्य संस्क्रिया।
पालाशबृन्दैः प्रतिमा कर्तव्या कल्पचोदिता॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.50

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 118, श्लोक 3 नियम KK 14-3-118-3

त्रीणि षष्टिशतान्याहुरस्थीन्यस्य युधिष्ठिर।
तेषां विकल्पना कार्या यथाशास्त्रं विनिश्चितम्॥

↩ वापस: ↩ उ.50

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 118, श्लोक 4 नियम KK 14-3-118-4

अशीत्यर्धं शिरसि च ग्रीवायां दश एव च।
बाह्वोश्चापि शतं दद्यादङ्गुलीषु पुनर्दश॥

↩ वापस: ↩ उ.50

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 118, श्लोक 5 नियम KK 14-3-118-5

उरसि त्रिंशतं दद्याज्जठरे वाऽपि विंशतिम्।
वृषणे द्वादशार्धं तु शिश्ने चाष्टार्धमेव च॥

↩ वापस: ↩ उ.50

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 118, श्लोक 6 नियम KK 14-3-118-6

दद्यात्तु शतमूर्वोस्तु षष्ट्यर्धं जानुजङ्घयोः।
दश दद्याच्चरणयोरेषा प्रेतस्य निष्कृतिः॥

↩ वापस: ↩ उ.50

उ.51 अत्यधिक शोक पितामहों को सन्तप्त करता है; स्वधा से पितृतृप्ति

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से (नियम) (पाप)

- पाप मन में अत्यधिक शोक करने से वह पहले मृत हुए पितामहों को सन्तप्त करता है (आश्व. 2.2)।
- नियम श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा कि शोक छोड़कर अच्छी दक्षिणाओं वाले यज्ञ करो, और सोम से देवताओं को तथा स्वधा से पितृदेवताओं को तृप्त करो (आश्व. 2.3)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अश्वमेधपर्व › अध्याय 2, श्लोक 2 पाप KK 14-1-2-2

अतीव मनसा शोकः क्रियमाणो जनाधिप।
सन्तपयति चैतस्य पूर्वप्रेतान्पितामहान्॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.51

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अश्वमेधपर्व › अध्याय 2, श्लोक 3 नियम KK 14-1-2-3

यजस्व विविधैर्यज्ञैर्बहुभिः स्वाप्तदक्षिणैः।
देवांस्तर्पय सोमेन स्वधया च पितॄनपि॥

↩ वापस: ↩ उ.51

उ.52 पालने वाली माता के पिंड का लोप न कर सकने की बात कहने वाला कर्ण

वक्ता / कथन: कर्ण कृष्ण से (नियम) (पाप)

- नियम पाप कर्ण ने कहा कि धर्मशास्त्र सुनने वाला उसके जैसा व्यक्ति, उसे पालने वाली राधा को पिंड (पिंडप्रदान) से वंचित कैसे कर सकता है (उद्योग. 141.7)।

महाभारत › उद्योगपर्व › › अध्याय 141, श्लोक 7 नियम पाप KK 5-6-141-7

तस्याः पिण्डव्यपनयं कुर्यादस्मद्विधः कथम्।
धर्मविद्धर्मशास्त्राणां श्रवणे सततं रतः॥

↩ वापस: ↩ उ.52

(ई) विशेष दिन और काल — तिथि, नक्षत्र, अमावस्या, कृष्णपक्ष, मघा, ग्रहण

उ.53 पित्र्यकर्म का काल अपराह्ण ही

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (नियम) (पाप)

- नियम श्राद्धकाल में दैव और पित्र्य कर्मों की विधि युधिष्ठिर ने पूछी (अनु. 61.1)।
- नियम दैवकर्म पूर्वाह्ण में, पितृकर्म अपराह्ण में, मंगलाचार के साथ, शौच करके, प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए; मनुष्यों को मध्याह्न में देना चाहिए (अनु. 61.2–3)।
- पाप समय चूककर दिया गया दान राक्षसों का भाग बन जाता है (अनु. 61.3)।
- नियम दिन को तीन-तीन मुहूर्तों के भागों में बाँटें तो — प्रातः, संगव, मध्याह्न; चौथा अपराह्ण (तीन मुहूर्त) पित्र्यकाल है; श्राद्ध सदा इसी अपराह्ण में करना चाहिए (अनु. 61.35–38)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 1 नियम KK 13-1-61-1

श्राद्धकाले च दैवे च पित्र्येऽपि च पितामह।
इच्छामीह त्वयाऽऽख्यातं विहितं यत्सुरर्षिभिः॥

↩ वापस: ↩ उ.53

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 2 नियम KK 13-1-61-2

दैवं पौर्वाह्णिके कुर्यादपराह्णे तु पैतृकम्।
मङ्गलाचारसम्पन्नः कृतशौचः प्रयत्नवान्॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.53

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 3 नियम पाप KK 13-1-61-3

मनुष्याणां तु मध्याह्ने प्रदद्यादुपपत्तिभिः ।
कालहीनं तु यद्दानं तं भागं रक्षसां विदुः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.53 ↩ उ.53

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 35 नियम KK 13-1-61-35

मुहूर्तानां त्रयं पूर्वमह्नः प्रातरिति स्मृतम् ।
जपध्यानादिभिस्तस्मिन्विप्रैः कार्यं शुभव्रतम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.53

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 36 नियम KK 13-1-61-36

सङ्गवाख्यं त्रिभागं तु मध्याह्नस्त्रिमुहूर्तकः ।
लौकिकं सङ्गवेऽर्धं च स्नानादि ह्यथ मध्यमे ॥

↩ वापस: ↩ उ.53

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 37 नियम KK 13-1-61-37

चतुर्थमपराह्णं तु त्रिमुहूर्तं तु पित्र्यकम् ।
सायाह्नस्त्रिमुहूर्तं च मध्यमं कविभिः स्मृतम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.53

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 38 नियम KK 13-1-61-38

चतुर्थे त्वपराह्णाख्ये श्राद्धं कुर्यात्सदा नृप ॥

↩ वापस: ↩ उ.53

उ.54 कृष्णपक्ष और अपराह्ण श्रेष्ठ हैं

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम

- नियम कृष्णपक्ष में दशमी से, चतुर्दशी को छोड़कर, तिथियाँ श्राद्ध के लिए प्रशस्त हैं; अन्य उतनी नहीं (अनु. 134.20)।
- नियम जैसे शुक्लपक्ष से कृष्णपक्ष विशिष्ट है, वैसे ही श्राद्ध के लिए पूर्वाह्ण से अपराह्ण विशिष्ट है (अनु. 134.21)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 20 नियम KK 13-1-134-20

कृष्णपक्षे दशम्यादौ वर्जयित्वा चतुर्दशीम् ।
श्राद्धकर्मणि तिथ्यस्तु प्रशस्ता न तथेतराः ॥

↩ वापस: ↩ उ.54

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 21 नियम KK 13-1-134-21

यथा चैवापरः पक्षः पूर्वपक्षाद्विशिष्यते ।
तथा श्राद्धस्य पूर्वाह्णादपराह्णो विशिष्यते ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.54

उ.55 तिथियों के अनुसार श्राद्धफल

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप पुण्य

- नियम भीष्म ने बताया कि किन तिथियों में श्राद्ध करने से कौन-सा फल मिलता है (अनु. 134.9)।
- पुण्य प्रतिपदा — सुंदर, अच्छी संतान जनने वाली स्त्रियाँ घर आती हैं; द्वितीया — पुत्रियाँ जन्म लेती हैं; तृतीया — घोड़े; चतुर्थी — छोटे पशु अधिक होते हैं (अनु. 134.10–11)।
- पुण्य पंचमी — अनेक पुत्र; षष्ठी — तेज; सप्तमी — कृषि-लाभ; अष्टमी — वाणिज्य में लाभ (अनु. 134.12–13)।
- पुण्य नवमी — एक खुर वाले पशु अधिक; दशमी — गौओं की वृद्धि; एकादशी — कुप्य (धातु) संपदा और ब्रह्मवर्चस वाले पुत्र; द्वादशी — चाँदी, धन और सोना (अनु. 134.14–16)।
- पाप पुण्य त्रयोदशी — ज्ञातियों में श्रेष्ठ होता है; किंतु कहा गया है कि उसके घर में युवक अवश्य मरते हैं; चतुर्दशी — युद्धभागी होता है (अनु. 134.17–18)।
- पुण्य अमावस्या को पिंड देने पर सभी कामनाएँ प्राप्त होती हैं (अनु. 134.19)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 9 नियम KK 13-1-134-9

प्रवक्ष्यामि तु ते सर्वांस्तिथ्यांतिथ्यां दिने गुणान्।
येष्वहःसु कृतैः श्राद्धैर्यत्फलं प्राप्यतेऽनघ।
तत्सर्वं कीर्तयिष्यामि यथावत्तन्निबोध मे॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 10 पुण्य KK 13-1-134-10

पितॄनर्च्य प्रतिपदि प्राप्नुयात्स्वगृहे स्त्रियः।
अभिरूपप्रजायिन्यो दर्शनीया बहुप्रजाः॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 11 पुण्य KK 13-1-134-11

स्त्रियो द्वितीयां जायन्ते तृतीयायां तु वाजिनः।
चतुर्थ्यां क्षुद्रपशवो भवन्ति बहवो गृहे॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 12 पुण्य KK 13-1-134-12

पञ्चम्यां बहवः पुत्रा जायन्ते कुर्वतां नृप।
कुर्वाणास्तु नराः षष्ठ्यां भवन्ति द्युतिभागिनः॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 13 पुण्य KK 13-1-134-13

कृषिभागी भवेच्छ्राद्धं कुर्वाणः सप्तमीं नृप।
अष्टम्यां तु प्रकुर्वाणो वाणिज्ये लाभमाप्नुयात्॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 14 पुण्य KK 13-1-134-14

नवम्यां कुर्वतः श्राद्धं भवत्येकशफं बहु।
विवर्धन्ते तु दशमीं गावः श्राद्धानि कुर्वतः॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 15 पुण्य KK 13-1-134-15

कुप्यभागी भवेन्मर्त्यः कुर्वन्नेकादशीं नृप।
ब्रह्मवर्चस्विनः पुत्रा जायन्ते तस्य वेश्मनि॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 16 पुण्य KK 13-1-134-16

द्वादश्यामीहमानस्य नित्यमेव प्रदृश्यते ।
रजतं बहुवित्तं च सुवर्णं च मनोरमम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 17 पाप पुण्य KK 13-1-134-17

ज्ञातीनां तु भवेच्छ्रेष्ठः कुर्वञ्श्राद्धं त्रयोदशीम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 18 पाप पुण्य KK 13-1-134-18

अवश्यं तु युवानोऽस्य प्रमीयन्ते नरा गृहे ।
युद्धभागी भवेन्मर्त्यः कुर्वञ्श्राद्धं चतुर्दशीम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.55

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 19 पुण्य KK 13-1-134-19

अमावास्यां तु निवपन्सर्वकामानवाप्नुयात् ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.55

उ.56 नक्षत्रों के अनुसार काम्य श्राद्धफल (कृत्तिका–अनुराधा)

वक्ता / कथन: यम द्वारा शशबिंदु को कहा गया — भीष्म युधिष्ठिर से नियम पाप पुण्य

- नियम यम द्वारा शशबिंदु को नक्षत्रों के अनुसार बताए गए काम्य श्राद्ध (अनु. 136.1)।
- पुण्य कृत्तिका में निरंतर श्राद्ध करने वाला अग्नियों की स्थापना करके, संतान सहित, दुःख के बिना यज्ञ करता है (अनु. 136.2)।
- पाप पुण्य रोहिणी — संतान; मृगशिरा — तेज; आर्द्रा में श्राद्ध देने वाला क्रूरकर्मा होता है (अनु. 136.3)।
- पुण्य पुनर्वसु — कृषि-लाभ; पुष्य — पुष्टि; आश्लेषा — धीर पुत्र; मघा — ज्ञातियों में श्रेष्ठता (अनु. 136.4–5)।
- पुण्य पूर्वा फाल्गुनी — सौभाग्य; उत्तरा फाल्गुनी — संतान; हस्त — फलप्राप्ति; चित्रा — रूपवान पुत्र; स्वाती — वाणिज्य से जीविका (अनु. 136.6–7)।
- पुण्य विशाखा — पुत्र चाहने वाला बहुपुत्र होता है; अनुराधा — राज्यचक्र चलाता है (अनु. 136.8)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 1 नियम KK 13-1-136-1

यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.56

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 2 पुण्य KK 13-1-136-2

श्राद्धं यः कृत्तिकायोगे कुर्वीत सततं नरः ।
अग्नीनाधाय सापत्यो यजेत विगतज्वरः ॥

↩ वापस: ↩ उ.56

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 3 पाप पुण्य KK 13-1-136-3

अपत्यकामो रोहिण्यां तेजस्कामो मृगोत्तमे ।
क्रूरकर्मा ददच्छ्राद्धमार्द्रायां मानवो भवेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.56

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 4 पुण्य KK 13-1-136-4

कृषिभागी भवेन्मर्त्यः कुर्वञ्श्राद्धं पुनर्वसौ ।
पुष्टिकामोऽथ पुष्येण श्राद्धमीहेत मानवः ॥

↩ वापस: ↩ उ.56

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 5 पुण्य KK 13-1-136-5

आश्लेषायां ददच्छ्राद्धं धीरान्पुत्रान्प्रजायते ।
ज्ञातीनां तु भवेच्छ्रेष्ठो मघासु श्राद्धमावपन् ॥

↩ वापस: ↩ उ.56

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 6 पुण्य KK 13-1-136-6

फल्गुनीषु ददच्छ्राद्धं सुभगः श्राद्धदो भवेत् ।
अपत्यभागुत्तरासु हस्तेन फलभाग्भवेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.56

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 7 पुण्य KK 13-1-136-7

चित्रायां तु ददच्छ्राद्धं लभेद्रूपवतः सुतान् ।
स्वातियोगे पितॄनर्च्य वाणिज्यमुपजीवति ॥

↩ वापस: ↩ उ.56

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 8 पुण्य KK 13-1-136-8

बहुपुत्रो विशाखासु पुत्रमीहन्भवेन्नरः ।
अनुराधासु कुर्वाणो राज्यचक्रं प्रवर्तयेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.56

उ.57 नक्षत्रों के अनुसार काम्य श्राद्ध का फल (ज्येष्ठा–भरणी); शशबिन्दु का फल

वक्ता / कथन: यम द्वारा शशबिन्दु को कहा गया — भीष्म युधिष्ठिर से उदाहरण पुण्य

- पुण्य ज्येष्ठा — (समृद्ध होकर, दम को आगे रखकर श्राद्ध देने वाले मनुष्य को) आधिपत्य; मूल — आरोग्य; पूर्वाषाढ़ा — उत्तम यश; उत्तराषाढ़ा — शोकरहित होकर पृथ्वी पर विचरता है (अनु. 136.9–10)।
- पुण्य अभिजित् — श्रेष्ठ विद्या; श्रवण — मृत्यु के बाद वह गति पाता है; धनिष्ठा — राज्यभाग; शतभिषा (वारुण नक्षत्र) — वैद्यसिद्धि (अनु. 136.11–12)।
- पुण्य पूर्वाभाद्रपदा — अनेक बकरियाँ और भेड़ें; उत्तराभाद्रपदा — हज़ारों गौएँ; रेवती — कुप्य (धातु) धन; अश्विनी — घोड़े; भरणी — उत्तम आयु (अनु. 136.13–14)।
- उदाहरण पुण्य यह श्राद्धविधि सुनकर शशबिन्दु ने वैसा ही किया और बिना श्रम के पृथ्वी को जीतकर उसका शासन किया (अनु. 136.15)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 9 पुण्य KK 13-1-136-9

आधिपत्यं व्रजेन्मर्त्यो ज्येष्ठायामपवर्जयन् ।
नरः कुरुकुलश्रेष्ठ ऋद्धो दमपुरःसरः ॥

↩ वापस: ↩ उ.57

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 10 पुण्य KK 13-1-136-10

मूले त्वारोग्यमृच्छेत यशोऽषाढासु चोत्तमम् ।
उत्तरासु त्वषाढासु वीतशोकश्चरेन्महीम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.57

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 11 पुण्य KK 13-1-136-11

श्राद्धं त्वभिजितौ कुर्वन्विद्यां श्रेष्ठामवाप्नुयात् ।
श्रवणेषु ददच्छ्राद्धं प्रेत्य गच्छेत्स तद्गतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.57

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 12 पुण्य KK 13-1-136-12

राज्यभागी धनिष्ठायां भवेत नियतं नरः ।
नक्षत्रे वारुणे कुर्वन्भिषक्सिद्धिमवाप्नुयात् ॥

↩ वापस: ↩ उ.57

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 13 पुण्य KK 13-1-136-13

पूर्वप्रोष्ठपदाः कुर्वन्बहून्विन्दत्यजाविकान् ।
उत्तरासु प्रकुर्वाणो विन्दते गाः सहस्रशः ॥

↩ वापस: ↩ उ.57

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 14 पुण्य KK 13-1-136-14

बहुकुप्यकृतं वित्तं विन्दते रेवतीं श्रितः ।
अश्विनीष्वश्वान्विन्देत भरणीष्वायुरुत्तमम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.57

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 136, श्लोक 15 उदाहरण पुण्य KK 13-1-136-15

इमं श्राद्धविधिं श्रुत्वा शशबिन्दुस्तथाऽकरोत् ।
अक्लेसेनाजयच्चापि महीं सोऽनुशशास ह ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.57

उ.58 श्राद्ध के लिए उचित समय

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम

- नियम योग्य ब्राह्मण का मिलना, दही और घी का मिलना, सोमक्षय (अमावस्या), वन से कुछ अन्य हवियों का मिलना — ये श्राद्ध के काल हैं (अनु. 61.34)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 61, श्लोक 34 नियम KK 13-1-61-34

श्राद्धस्य ब्राह्मणः कालः प्राप्तं दधि घृतं तथा ।
सोमक्षयश्च मांसं च यदारण्यं युधिष्ठिर ॥

↩ वापस: ↩ उ.58

उ.59 श्राद्ध के लिए विशेष काल — ग्रहण, अयन, मघा, गया

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से नियम पाप पुण्य

- नियम पुण्य ग्रहण में, विषुव में, अयनान्त में, पित्र्य में, मघा में, अपने पुत्र के जन्म के समय, गया में और पिण्ड(प्रदान) में दिया गया हज़ार निष्कों के बराबर हो जाता है (आश्व. 110.27)।
- नियम वैशाख मास की तृतीया, कार्तिक शुक्लपक्ष की तिथि (मुद्रित पाठ 'अनवद्याऽसौ'; पुराणों के समान श्लोक में 'नवम्यसौ' – नवमी), नभस्य (भाद्रपद) मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी, और माघ में पंचदशी (आश्व. 110.28)।
- नियम पुण्य चन्द्र और सूर्य ग्रहण तथा दोनों अयन श्राद्धकाल हैं; उन समयों में शुचि होकर तिल मिला जल भी पितृदेवताओं को दिया जाए तो हज़ार वर्ष श्राद्ध करने के समान होता है — यह स्वयं पितृदेवताओं द्वारा कहा गया रहस्य है (आश्व. 110.29)।
- पाप एक ही पंक्ति में स्नेह, भय या धन के कारण भेदभाव से परोसने वाले को कवि क्रूर, दुराचारी, आत्मनिग्रह-रहित और ब्रह्मघ्न कहते हैं (आश्व. 110.30)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 27 नियम पुण्य KK 14-3-110-27

ग्रहोपरागे विषुवेऽयनान्ते पित्र्ये मघासु स्वसुते च जाते ।
गयेषु पिण्डेषु च पाण्डुपुत्र दत्तं भवेन्निष्कसहस्रतुल्यम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.59

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 28 नियम KK 14-3-110-28

वैशाखमासस्य तु या तृतीयाऽनवद्याऽसौ कार्तिकशुक्लपक्षे ।
नभस्यमासस्य च कृष्णपक्षे त्रयोदशी पञ्चदशी च माघे ॥

↩ वापस: ↩ उ.59

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 29 नियम पुण्य KK 14-3-110-29

उपप्लवे चन्द्रमसो रवेश्च श्राद्धस्य कालो ह्ययनद्वये च ।
पानीयमप्यत्र तिलैर्विमिश्रं दद्यात्पितृभ्यः प्रयतो मनुष्यः ।
श्राद्धं कृतं तेन समासहस्रं रहस्यमेतत्पितरो वदन्ति ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.59

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 110, श्लोक 30 पाप KK 14-3-110-30

यस्त्वेकपङ्क्त्यां विषमं ददाति स्नेहाद्भयाद्वा यदि वाऽर्थहेतोः ।
क्रूरं दुराचारमनात्मवन्तं ब्रह्मघ्नमेनं कवयो वदन्ति ॥

↩ वापस: ↩ उ.59

उ.60 भाद्रपद कृष्णपक्ष का श्राद्ध, श्राद्ध आदि सत्कर्मों के लिए विशेष काल

वक्ता / कथन: नारद युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम द्विज को भाद्रपद (प्रोष्ठपद) मास के कृष्णपक्ष (अपरपक्ष) में अपने माता-पिता का अपनी शक्ति के अनुसार श्राद्ध करना चाहिए; यदि वह धनवान हो तो उनके बन्धुओं का भी करना चाहिए (भाग. 7.14.20)।
- नियम अयन (उत्तरायण और दक्षिणायन का आरम्भ), विषुव, कुहू (अमावस्या), व्यतीपात, दिनक्षय, चन्द्र और सूर्य ग्रहण, द्वादशी और श्रवण नक्षत्र भी विशेष काल हैं (भाग. 7.14.21)।
- नियम शुक्लपक्ष की तृतीया, कार्तिक मास की नवमी, और हेमन्त तथा शिशिर ऋतुओं की चार अष्टकाएँ भी ऐसे ही काल हैं (भाग. 7.14.22)।
- नियम माघ शुक्ल सप्तमी, वह दिन जब मघा नक्षत्र पूर्णिमा से युक्त हो, और वे दिन जब मास-नक्षत्र पूर्णिमा (राका) से या अनुमति से युक्त हों, ये भी विशेष काल हैं (भाग. 7.14.23)।
- नियम वे दिन जब अनुराधा, श्रवण और तीनों उत्तरा नक्षत्र द्वादशी से युक्त हों, वे दिन जब वे तीनों उत्तरा एकादशी से युक्त हों, और शुभ योग से युक्त जन्म-नक्षत्र का दिन भी विशेष काल हैं (भाग. 7.14.24)।
- नियम पुण्य ये काल मनुष्यों के श्रेय को बढ़ाने वाले हैं; इनमें पूरी शक्ति से सत्कर्म करना चाहिए, वह जीवन के लिए कभी व्यर्थ न होने वाला श्रेय बन जाता है (भाग. 7.14.25)।
- पुण्य इन कालों में किया गया स्नान, जप, होम, व्रत, देव और ब्राह्मणों की पूजा, तथा पितृदेवताओं, देवताओं, मनुष्यों और भूतों को दिया गया दान नष्ट नहीं होता (भाग. 7.14.26)।
- नियम पत्नी, सन्तान और स्वयं के संस्कारों का समय, प्रेत-संस्कार (प्रेतसंस्था), मृताह (मृत्यु का दिन), और अभ्युदय कर्म का समय भी (ऐसे ही काल हैं) (भाग. 7.14.27)।

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 14 › श्लोक 20 नियम भाग. 7.14.20

कुर्यादपरपक्षीयं मासि प्रोष्ठपदे द्विजः ।
श्राद्धं पित्रोर्यथावित्तं तद्बन्धूनां च वित्तवान् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.60

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 14 › श्लोक 21 नियम भाग. 7.14.21

अयने विषुवे कुह्वां व्यतीपाते दिनक्षये ।
चन्द्रादित्योपरागे च द्वादश्यां श्रवणेषु च ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.60

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 14 › श्लोक 22 नियम भाग. 7.14.22

तृतीयायां शुक्लपक्षे नवम्यामथ कार्तिके ।
चतसृष्वप्यष्टकासु हेमन्ते शिशिरे तथा ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.60

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 14 › श्लोक 23 नियम भाग. 7.14.23

माघे च सितसप्तम्यां मघाराकासमागमे ।
राकया वाऽनुमत्या वा मासर्क्षाणि युतान्यपि ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.60

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 14 › श्लोक 24 नियम भाग. 7.14.24

द्वादश्यामनुराधा स्यात् श्रवणस्तिस्र उत्तराः ।
तिसृष्वेकादशी चासु जन्मर्क्षं सौम्ययोगयुक् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.60

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 14 › श्लोक 25 नियम पुण्य भाग. 7.14.25

त एते श्रेयसः काला नृणां श्रेयोविवर्धनाः ।
कुर्यात् सर्वात्मनैतेषु श्रेयोऽमोघं तदायुषः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.60

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 14 › श्लोक 26 पुण्य भाग. 7.14.26

येषु स्नानं जपो होमो व्रतं देवद्विजार्चनम् ।
पितृदेवनृभूतेभ्यो यद् दत्तं तद्ध्यनश्वरम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.60

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 14 › श्लोक 27 नियम भाग. 7.14.27

संस्कारकालो जायाया अपत्यस्यात्मनस्तथा ।
प्रेतसंस्था मृताहश्च कर्मण्यभ्युदये नृप ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.60

उ.61 भाद्रपद कृष्णपक्ष में मघा के दिन परमान्न का निवेदन

वक्ता / कथन: अग्निदेव (भीष्म द्वारा कहा गया रहस्यधर्म) नियम पुण्य

- नियम भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष में जब मघा नक्षत्र हो, पूर्व की ओर गजच्छाया में, कुतप काल में, दक्षिणाभिमुख होकर परमान्न से पितृदेवताओं को निवेदन देना चाहिए — यह परम रहस्य है (अनु. 189.31–32)।
- पुण्य ऐसा देने वाला तेरह वर्ष तक महाश्राद्ध करने के बराबर फल प्राप्त करता है (अनु. 189.33)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 189, श्लोक 31 नियम KK 13-1-189-31

एते दोषा मया प्रोक्तास्त्रिषु यः पादमुत्सृजेत् ।
श्रूयतां परमं गुह्यं रहस्यं धर्मसंहितम् ।
परमान्नेन यो दद्यात्पितॄणामौपहारिकम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.61

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 189, श्लोक 32 नियम KK 13-1-189-32

गजच्छायायां पूर्वस्यां कुतपे दक्षिणामुखः ।
यदा भाद्रपदे मासि भवते बहुले मघा ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.61

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 189, श्लोक 33 पुण्य KK 13-1-189-33

श्रूयतां तस्य दानस्य यादृशो गुणविस्तरः ।
कृतं तेन महच्छ्राद्धं वर्षाणीह त्रयोदश ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.61

उ.62 पितृगाथा — मघा त्रयोदशी का पायस, गया यात्रा

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (सनत्कुमार द्वारा कही गई पितृगीत गाथा) नियम पुण्य

- नियम पितरों द्वारा गाई गई गाथाएँ पूर्वकाल में सनत्कुमार ने भीष्म को सुनाईं (अनु. 135.11)।
- नियम पुण्य पितर कामना करते हैं, 'दक्षिणायन में मघा नक्षत्र से युक्त त्रयोदशी के दिन घी से युक्त पायस हमें देने वाला हमारे कुल में जन्म ले' (अनु. 135.12)।
- नियम अथवा मघा में ही, व्रत-नियम से, हस्तिच्छाया में (हस्तिच्छायासु), (हाथी के) कानों के पंखे से हवा किए जाते हुए, कुछ अन्य हविष्यों से यथाविधि देने वाला (अनु. 135.13)।
- पुण्य अनेक पुत्रों की कामना करनी चाहिए — उनमें से एक भी अक्षयवट के लिए प्रसिद्ध गया जाए तो पर्याप्त है (अनु. 135.14)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 11 नियम KK 13-1-135-11

गाथाश्चाप्यत्र गायन्ति पितृगीता युधिष्ठिर।
सनत्कुमारो भगवान्पुरा मय्यभ्यभाषत॥

↩ वापस: ↩ उ.62

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 12 नियम पुण्य KK 13-1-135-12

अपि नः स्वकुले जायाद्यो नो दद्यात्त्रयोदशीम्।
मघासु सर्पिःसंयुक्तं पायसं दक्षिणायने॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.62

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 13 नियम KK 13-1-135-13

आजेन वाऽपि लौहेन मघास्वेव यतव्रतः।
हस्तिच्छायासु विधिवत्कर्णव्यजनवीजितम्॥

↩ वापस: ↩ उ.62

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 135, श्लोक 14 पुण्य KK 13-1-135-14

एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोपि गयां व्रजेत्।
यत्रासौ प्रथितो लोकेष्वक्षय्यकरणो वटः॥

↩ वापस: ↩ उ.62

उ.63 अष्टकाएँ पितृदेवत्य हैं

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम

- नियम भीष्म द्वारा कहे गए सदाचार में संस्कारित पायस, यावक और कृसर हविस् के रूप में, पितृदेवताओं से संबंधित अष्टकाएँ और ग्रहपूजा उल्लिखित हैं (अनु. 268.30).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 268, श्लोक 30 नियम KK 13-1-268-30

संस्कृतं पायसं नित्यं यावकं कृसरं हविः।
अष्टकाः पितृदैवत्या ग्रहाणामभिपूजनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.63

उ.64 पितृमेध के लिए श्रेष्ठ काल, निषिद्ध काल

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से (नियम) (पुण्य)

- नियम श्राद्धकर्म के लिए माघ और प्रोष्ठपद (भाद्रपद) मास पूजित हैं; पक्षों में कृष्णपक्ष शुक्लपक्ष से श्रेष्ठ है (अनु. 238.7)।
- नियम पुण्य अमावास्या, त्रयोदशी, नवमी, प्रतिपदा — इन तिथियों में दिए गए से पितामह तृप्त होते हैं (अनु. 238.8)।
- नियम पूर्वाह्ण में, शुक्लपक्ष में, रात्रि में, जन्मदिनों में और सम संख्या वाले दिनों में विद्वान को श्राद्ध नहीं करना चाहिए (अनु. 238.9)।
- नियम यह पितृमेध के लिए पूजित काल है; योग्य ब्राह्मण पात्र दिखाई दे, वह समय भी श्राद्धकाल ही है (अनु. 238.10)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 7 नियम KK 13-1-238-7

माघप्रोष्ठपदौ मासौ श्राद्धकर्मणि पूजितौ।
पक्षयोः कृष्णपक्षश्च पूर्वपक्षात्प्रशस्यते॥

↩ वापस: (↩ अ.0 · पितृदेवता) (↩ अ.4 · नियम) (↩ उ.64)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 8 नियम पुण्य KK 13-1-238-8

अमावास्यां त्रयोदश्यां नवम्यां प्रतिपत्सु च।
तिथिष्वेतासु तुष्यन्ति दत्तेनेह पितामहाः॥

↩ वापस: (↩ उ.64)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 9 नियम KK 13-1-238-9

पूर्वाह्णे शुक्लपक्षे च रात्रौ जन्मदिनेषु वा।
युग्मेष्वहस्सु च श्राद्धं न च कुर्वीत पण्डितः॥

↩ वापस: (↩ उ.64)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 10 नियम KK 13-1-238-10

एष कालो मया प्रोक्तः पितृमेधस्य पूजितः।
यस्मिंश्च ब्राह्मणं पात्रं पश्येत्कालः स च स्मृतः॥

↩ वापस: (↩ उ.64)

उ.65 अमावस्या के सूर्यग्रहण में सन्निहति पर श्राद्ध

वक्ता / कथन: पुलस्त्य भीष्म से (नारद द्वारा युधिष्ठिर को कहा गया) (नियम) (पुण्य)

- नियम कुएँ, बावड़ियाँ, तीर्थ और मन्दिर सब प्रत्येक मास अमावस्या के दिन सन्निहति में निःसन्देह मिलते हैं; तीर्थों के सन्निधान के कारण ही उसका नाम 'सन्निहति' है (अरण्य. 81.194–195)।
- पुण्य वहाँ स्नान करके उस जल को पीने वाला स्वर्गलोक में पूजित होता है (अरण्य. 81.196)।
- नियम पुण्य अमावस्या के दिन जब सूर्य राहुग्रस्त हो (सूर्यग्रहण), वहीं श्राद्ध करने वाला, स्नान करके श्राद्ध करने मात्र से हज़ार अश्वमेध विधिवत् करने का फल प्राप्त करता है (अरण्य. 81.196–198)।

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 194 नियम KK 3-6-81-194

उदपानानि वाप्यश्च तीर्थान्यायतनानि च।
निःसंशयममावास्यां समेष्यन्ति नराधिप॥

↩ वापस: (↩ उ.65)

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 195 नियम KK 3-6-81-195

मासिमासि नरव्याघ्र सन्निहत्यां न संशयः।
तीर्थसन्निहनादेव सन्निहत्येति विश्रुता॥

↩ वापस: (↩ उ.65)

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 196 नियम पुण्य KK 3-6-81-196

तत्र स्नात्वा च पीत्वा च स्वर्गलोके महीयते।
अमावास्यां तु तत्रैव राहुग्रस्ते दिवाकरे॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.65 ↩ उ.65

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 197 नियम पुण्य KK 3-6-81-197

यः श्राद्धं कुरुते मर्त्यस्तस्य पुण्यफलं शृणु ।
अश्वमेधसहस्रस्य सम्यगिष्टस्य यत्फलम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.65

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 198 नियम पुण्य KK 3-6-81-198

स्नात एव समाप्नोति कृत्वा श्राद्धं च मानवः ।
यत्किञ्चिद्दुष्कृतं कर्म स्त्रिया वा पुरुषेण वा ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.65

उ.66 हाथी की छाया में (गजच्छाया) श्राद्ध – अक्षय फल

वक्ता / कथन: मार्कण्डेय युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम पुण्य श्रुति-स्मृतियों में कहे गए दान के रहस्य सुनो: हाथी की छाया में (गजच्छाया में) किया गया, पंखा झलते हुए (परिवीजित) किया गया श्राद्धकर्म दस अयुत (एक लाख) कल्पों तक क्षीण नहीं होता (अरण्य. 203.121)।

महाभारत › अरण्यपर्व › मार्कण्डेयसमास्यापर्व › अध्याय 203, श्लोक 121 नियम पुण्य KK 3-11-203-121

शृणु दानरहस्यानि श्रुतिस्मृत्युदितानि च ।
छायायां करिणः श्राद्धं तत्कर्म परिवीजितम् ।
दशकल्पायुतानीह न क्षीयेत युधिष्ठिर ॥

↩ वापस: ↩ उ.66

उ.67 नवाग्रयण से पितृदेवताओं की पूजा — पापनाश

वक्ता / कथन: लक्ष्मण श्रीराम से (हेमंत-वर्णन) नियम पुण्य

- नियम पुण्य हेमंत ऋतु में सज्जनों ने नई फसल से की जाने वाली आग्रयण-पूजाओं से पितृदेवताओं की अर्चना की, और समय पर आग्रयण करके पापरहित हो गए (रामा. अरण्य. 16.6)।

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 16 › श्लोक 6 नियम पुण्य वा.रा. 3.16.6

नवाग्रयणपूजाभिरभ्यर्च्य पितृदेवताः ।
कृताग्रयणकाः काले सन्तो विगतकल्मषाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.67

(उ) विशेष क्षेत्र — गया आदि

उ.68 गया – अक्षयवट, महानदी में तर्पण, 'एष्टव्या बहवः पुत्राः'

वक्ता / कथन: पुलस्त्य भीष्म से (नारद द्वारा युधिष्ठिर को कहा गया) नियम पुण्य

- नियम पुण्य गया पहुँचकर ब्रह्मचर्य और एकाग्रता से रहने वाला अश्वमेध का फल पाकर अपने कुल का उद्धार करता है (अरण्य. 82.81)।
- नियम पुण्य वहाँ तीनों लोकों में प्रसिद्ध अक्षयवट है; वहाँ पितरों को दिया गया अक्षय होता है — ऐसा कहा गया है (अरण्य. 82.82)।
- नियम पुण्य महानदी के जल का स्पर्श (स्नान) करके पितृदेवताओं का तर्पण करने वाला अक्षय लोकों को पाकर कुल का उद्धार करता है (अरण्य. 82.83)।
- पुण्य कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्ष गया में निवास करने वाला अपने कुल को सातवीं पीढ़ी तक पवित्र करता है; इसमें सन्देह नहीं (अरण्य. 82.95)।
- नियम अनेक पुत्रों की कामना करनी चाहिए – उनमें से एक भी गया जा सकता है, या गौरी कन्या से विवाह कर सकता है, या नील वृषभ का उत्सर्ग कर सकता है (अरण्य. 82.96)।

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 81 नियम पुण्य KK 3-6-82-81

ततो गयां समासाद्य ब्रह्मचारी समाहितः।
अश्वमेधमवाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत्॥

↩ वापस: ↩ उ.68

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 82 नियम पुण्य KK 3-6-82-82

तत्राक्षयवटो नाम त्रिषु लोकेषु विश्रुतः।
तत्र दत्तं पितृभ्यस्तु भवत्यक्षयमुच्यते॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.68

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 83 नियम पुण्य KK 3-6-82-83

महानद्यामुपस्पृश्य तर्पयेत्पितृदेवताः।
अक्षयान्प्राप्नुयाल्लोकान्कुलं चैव समुद्धरेत्॥

↩ वापस: ↩ उ.68

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 95 पुण्य KK 3-6-82-95

कृष्णशुक्लावुभौ पक्षौ गयायां यो वसेन्नरः।
पुनात्यासप्तमं राजन्कुलं नास्त्यत्र संशयः॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.68

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 96 नियम KK 3-6-82-96

एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोपि गयां व्रजेत्।
गौरीं वा वरयेत्कन्यां नीलं वा वृषमुत्सृजेत्॥

↩ वापस: ↩ उ.68

उ.69 गया – अक्षय्यकरण वट, फल्गु नदी

वक्ता / कथन: धौम्य युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम गया के विषय में ही प्राचीन लोग गाते हैं — 'अनेक पुत्रों की कामना करनी चाहिए, उनमें से एक भी गया जा सकता है' (अरण्य. 85.9).
- नियम पुण्य अथवा गौरी कन्या का वरण कर सकता है, अथवा नील वृषभ छोड़ सकता है; ऐसी संतान पहले की दस पीढ़ियों और बाद की दस पीढ़ियों को तार देती है (अरण्य. 85.10).
- नियम वहीं महानदी और गयशिर हैं; वहाँ के वटवृक्ष को विप्र 'अक्षय्यकरण वट' कहकर गाते हैं (अरण्य. 85.11).
- पुण्य वहाँ पितरों को दिया गया अन्न अक्षय हो जाता है; वहीं पुण्यजल वाली फल्गु नामक महानदी है (अरण्य. 85.12).

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 85, श्लोक 9 नियम KK 3-6-85-9

यदर्थे पुरुषव्याघ्र कीर्तयन्ति पुरातनाः ।
एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोपि गयां व्रजेत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.69

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 85, श्लोक 10 नियम पुण्य KK 3-6-85-10

गौरीं वा वरयेत्कन्यां नीलं वा वृषमुत्सृजेत् ।
उत्तारयति सन्तत्या दश पूर्वान्दशावरान् ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.69

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 85, श्लोक 11 नियम KK 3-6-85-11

महानदी च तत्रैव तथा गयशिरो नृप ।
यत्रासौ कीर्त्यते विप्रैरक्षय्यकरणो वटः ॥

↩ वापस: ↩ उ.69

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 85, श्लोक 12 पुण्य KK 3-6-85-12

यत्र दत्तं पितृभ्योऽन्नमक्षय्यं भवति प्रभो ।
सा च पुण्यजला तत्र फल्गुनामा महानदी ॥

↩ वापस: ↩ उ.69

उ.70 गया जाने वाला पुत्र — 'पुत्र' शब्द का अर्थ, राजा गय की श्रुति

वक्ता / कथन: श्रीराम भरत से नियम पुण्य

- नियम श्रीराम ने भरत से कहा — (दिवंगत) पिता के दिए वचन को निभाकर उन्हें ऋण से मुक्त करो; पिता की रक्षा करो, माता को आनंदित करो (रामा. अयो. 107.10).
- नियम श्रीराम ने कहा — गय देश में यज्ञ करते हुए यशस्वी राजा गय ने पितृदेवताओं के उद्देश्य से जो श्रुति कही थी, वह सुनी जाती है (रामा. अयो. 107.11).
- नियम पुण्य 'पुत्' नामक नरक से पिता की रक्षा करता है, इसलिए सब प्रकार से पितृदेवताओं की रक्षा करने वाला 'पुत्र' कहलाता है (रामा. अयो. 107.12).
- नियम पुण्य गुणवान और बहुश्रुत अनेक पुत्रों की कामना करनी चाहिए; उनमें से कम से कम एक तो गया जाएगा (रामा. अयो. 107.13).
- नियम श्रीराम ने भरत से कहा — सभी राजर्षियों ने ऐसा ही विश्वास किया; इसलिए पिता की नरक से रक्षा करो (रामा. अयो. 107.14).

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 107 › श्लोक 10 नियम वा.रा. 2.107.10

ऋणान्मोचय राजानं मत्कृते भरत प्रभुम् ।
पितरं त्राहि धर्मज्ञ मातरं चाभिनन्दय ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.70

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 107 › श्लोक 11 नियम वा.रा. 2.107.11

श्रूयते धीमता तात श्रुतिर्गीता यशस्विना ।
गयेन यजमानेन गयेष्वेव पितॄन् प्रति ॥

↩ वापस: ↩ उ.70

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 107 › श्लोक 12 नियम पुण्य वा.रा. 2.107.12

पुन्नाम्नो नरकाद् यस्मात् पितरं त्रायते सुतः ।
तस्मात् पुत्र इति प्रोक्तः पितॄन् यः पाति सर्वतः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.70

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 107 › श्लोक 13 नियम पुण्य वा.रा. 2.107.13

एष्टव्या बहवः पुत्रा गुणवन्तो बहुश्रुताः ।
तेषां वै समवेतानामपि कश्चिद् गयां व्रजेत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.70

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 107 › श्लोक 14 नियम वा.रा. 2.107.14

एवं राजर्षयः सर्वे प्रतीता रघुनन्दन ।
तस्मात् त्राहि नरश्रेष्ठ पितरं नरकात् प्रभो ॥

↩ वापस: ↩ उ.70

उ.71 गंगा – पितृ तर्पण की महिमा

वक्ता / कथन: सिद्ध, शिलवृत्ति नामक ब्राह्मण से (भीष्म द्वारा उद्धृत) नियम पुण्य

- पुण्य (गंगाजल से) तर्पित अन्य देवता, मुनि, प्रेत और पितर तीनों लोकों में तृप्त होते हैं (अनु. 65.39).
- पुण्य गंगा-तट पर तप, श्राद्ध, पारायण आदि के लिए गंगाद्वार आदि गंगा-तीर्थों से बढ़कर कुछ नहीं है (अनु. 65.67).
- नियम प्रातः और सायं गंगा का स्मरण करना चाहिए; नित्यस्नान में उनका कीर्तन करना चाहिए; तर्पण में, पितृपूजा में और मृत्यु के समय भी स्मरण करना चाहिए (अनु. 65.68).
- नियम पुण्य जो जन्म, जीवन और विद्या को सफल करना चाहता है, वह गंगा जाकर पितरों और देवताओं का तर्पण करे (अनु. 65.70).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 65, श्लोक 39 पुण्य KK 13-1-65-39

अन्ये च देवा मुनयः प्रेतानि पितृभिः सह ।
तर्पितास्तृप्तिमायान्ति त्रिषु लोकेषु सर्वशः ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.71

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 65, श्लोक 67 पुण्य KK 13-1-65-67

तत्तीरगानां तपसा श्राद्धपारायणादिभिः ।
गङ्गाद्वारप्रभृतिभिस्तत्तीर्थैर्न परं नृणाम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.71

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 65, श्लोक 68 नियम KK 13-1-65-68

सायं प्रातः स्मरेद्गङ्गां नित्यं स्नाने तु कीर्तयेत् ।
तर्पणे पितृपूजासु मरणे चापि संस्मरेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.71

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 65, श्लोक 70 नियम पुण्य KK 13-1-65-70

य इच्छेत्सफलं जन्म जीवितं श्रुतमेव च ।
स पितॄंस्तर्पयेद्गङ्गामभिगम्य सुरांस्तथा ॥

↩ वापस: ↩ उ.71

(ऊ) नित्य पितृकर्तव्य — पंचमहायज्ञ, नित्य तर्पण

उ.72 पंच महायज्ञों में तर्पण और पितृयज्ञ

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से (नियम) (पुण्य)

- नियम पुण्य पंच महायज्ञों के द्वारा ही गृहस्थ ब्रह्मसालोक्य पाता है (आश्व. 104.8)।
- नियम ऋभुयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, भूतयज्ञ, नृयज्ञ और पितृयज्ञ — ये पंच यज्ञ हैं (आश्व. 104.9)।
- नियम तर्पण ही ऋभुयज्ञ है; स्वाध्याय ब्रह्मयज्ञ है; बलि भूतयज्ञ है; अतिथि-पूजा नृयज्ञ है; पितृदेवताओं के उद्देश्य से किया जाने वाला कर्म पितृयज्ञ है (आश्व. 104.10)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 8 नियम पुण्य KK 14-3-104-8

श्रीभगवानुवाच —

।

शृणु पञ्च महायज्ञान्कीर्त्यमानान्युधिष्ठिर।
यैरेव ब्रह्मसालोक्यं लभ्यते गृहमेधिना॥

↩ वापस: (↩ उ.72)

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 9 नियम KK 14-3-104-9

ऋभुयज्ञं ब्रह्मयज्ञं भूतयज्ञं च पाण्डव।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च पञ्च यज्ञान्प्रचक्षते॥

↩ वापस: (↩ उ.72)

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 10 नियम KK 14-3-104-10

तर्पणं ऋभुयज्ञः स्यात्स्वाध्यायो ब्रह्मयज्ञकः।
भूतयज्ञो बलिर्यज्ञो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।
पितॄनुद्दिश्य यत्कर्म पितृयज्ञः प्रकीर्तितः॥

↩ वापस: (↩ अ.0 · पितृदेवता) (↩ अ.4 · नियम) (↩ उ.72)

उ.73 गृहस्थ का नित्य पितृयज्ञ

वक्ता / कथन: नारद युधिष्ठिर से (नियम)

- नियम गृहस्थ को प्रतिदिन देवताओं, ऋषियों, भूतों, पितृदेवताओं और स्वयं को — इन रूपों में विद्यमान परमपुरुष को — अपनी वृत्ति से प्राप्त धन द्वारा अलग-अलग आराधना करनी चाहिए (भाग. 7.14.16)।

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 14 › श्लोक 16 नियम भाग. 7.14.16

देवानृषींश्च भूतानि पितॄनात्मानमन्वहम्।
स्ववृत्त्याऽगतवित्तेन यजेत पुरुषं पृथक्॥

↩ वापस: (↩ उ.73)

उ.74 गृहस्थ प्रतिदिन स्वधा आदि से पितृदेवताओं का अर्चन करे

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण उद्धव से (नियम)

- नियम वेदाध्ययन करने वाला गृहस्थ अपनी शक्ति के अनुसार स्वधा, स्वाहा, बलि, अन्न आदि से देवताओं, ऋषियों, पितृदेवताओं और भूतों को अपने (भगवान के) रूप मानकर प्रतिदिन अर्चन करे (भाग. 11.17.50).

श्रीमद्भागवत › एकादशस्कन्ध › अध्याय 17 › श्लोक 50 नियम भाग. 11.17.50

वेदाध्यायी स्वधास्वाहाबल्यन्नाद्यैर्यथोदयम्।
देवर्षिपितृभूतानि मद्रूपाण्यन्वहं यजेत्॥

↩ वापस: (↩ अ.0 · पितृदेवता) (↩ उ.74)

उ.75 गृहस्थ का नित्य पितृकर्तव्य — हव्य-कव्य, स्वधा

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (60, 75, 156); भृगु भरद्वाज से (189); पराशर जनक से (301, 302); नारद गालव से (293) नियम

- नियम गृहस्थ को दान्त होकर, हव्य-कव्य में प्रमाद न करते हुए, द्विजों को नित्य अन्नदान करते रहना चाहिए (शान्ति. 60.12)।
- नियम हव्य-कव्य के नियमों के अनुसार अर्जित धन से गृहस्थ को गार्हस्थ्य चलाना चाहिए; गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का मूल है (शान्ति. 189.10)।
- नियम गृहस्थ को स्वधर्म में रहते हुए हव्य-कव्य के लिए कुशलता से, पूर्ण मन से कर्म करना चाहिए (शान्ति. 301.38)।
- नियम श्राद्धकर्म, अतिथि-सत्कार, अहिंसा, सत्य आदि सभी वर्णों के लिए सामान्य धर्म हैं (शान्ति. 302.23)।
- नियम नित्य स्वाहा, नित्य स्वधा — पितर और देवता इन दोनों की पुत्रों से नित्य आशा रखते हैं (शान्ति. 75.25)।

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 60, श्लोक 12 नियम KK 12-1-60-12

दान्तो विधेयो हव्यकव्याप्रमत्तो ह्यन्नस्य दाता सततं द्विजेभ्यः।
अमत्सरी सर्वलिङ्गप्रदाता वैताननित्यश्च गृहाश्रमी स्यात्॥

↩ वापस: ↩ उ.75

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 189, श्लोक 10 नियम KK 12-3-189-10

गार्हस्थ्यं खलु द्वितीयमाश्रमं वदन्ति। तस्य समुदाचारलक्षणं सर्वमनुव्याख्यास्यामः। समावृत्तानां सदाचाराणां सहधर्मचर्याफलार्थिनां गृहाश्रमो विधीयते। धर्मार्थकामावाप्त्यर्थं त्रिवर्गसाधनमपेक्ष्यागर्हितेन कर्मणा धनान्यादाय स्वाध्यायोपलब्धप्रकर्षेण वा ब्रह्मर्षिनिर्मितेन वा। हव्यकव्यनियमाभ्यां दैवतपूजासमाधिप्रसादविध्युपलब्धेन धनेन गृहस्थो गार्हस्थ्यं वर्तयेत्। तद्धि सर्वाश्रमाणां मूलमुदाहरन्ति। गुरुकुलनिवासिनः परिव्राजका ये चान्ये सङ्कल्पितव्रतनियमधर्मानुष्ठायिनस्तेषामप्यत एव भिक्षाबलिसंविभागाः प्रवर्तन्ते॥

↩ वापस: ↩ उ.75

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 301, श्लोक 38 नियम KK 12-3-301-38

सर्वात्मनाऽनुकुर्वीत गृहस्थः कर्मनिश्चयम्।
दाक्ष्येण हव्यकव्यार्थं स्वधर्मे विचरन्नृप॥

↩ वापस: ↩ उ.75

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 302, श्लोक 23 नियम KK 12-3-302-23

आनृशंस्यमहिंसा चाप्रमादः संविभागिता।
श्राद्धकर्मातिथेयं च सत्यमक्रोध एव च॥

↩ वापस: ↩ उ.75

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 75, श्लोक 25 नियम KK 12-1-75-25

नित्यं स्वाहा स्वधा नित्यं चोभे मानुषदैवते।
पुत्रेष्वाशासते नित्यं पितरो दैवतानि च॥

↩ वापस: ↩ अ ↩ उ.75

उ.76 गृहस्थ-वानप्रस्थ धर्म में पितृपूजा

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से नियम

- नियम वानप्रस्थ के धर्म में अतिथियों की पाद्य और आसन से पूजा, समय पर ग्राम्य न होने वाला आहार पकाना, और पितृदेवताओं की अर्चना सम्मिलित हैं (अनु. 209.17)।
- नियम धर्म के लिए निर्धारित धन के भाग को यज्ञ, अन्नदान, दीनों पर अनुग्रह, देव-ब्राह्मण पूजा और पितृपूजा के लिए उपयोग करना चाहिए (अनु. 216.36)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 209, श्लोक 17 नियम KK 13-1-209-17

पाद्यासनाभ्यां सम्पूज्य तथाऽऽहारनिमन्त्रणम्।
अग्राम्यपचनं काले पितृदेवार्चनं तथा॥

↩ वापस: ↩ उ.76

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 216, श्लोक 36 नियम KK 13-1-216-36

यज्ञार्थं चान्नदानार्थं दीनानुग्रहकारणात् ।
देवब्राह्मणपूजार्थं पितृपूजार्थमेव च ॥

↩ वापस: ↩ उ.76

उ.77 पितृ ऋण, नित्य पितृ पूजा

वक्ता / कथन: नारद कृष्ण से (66.34); भीष्म युधिष्ठिर से (66.37, 72, 95) नियम पुण्य

- नियम पुण्य देवताओं, अतिथियों, सेवकों और पितरों के अर्चन में निरत रहकर केवल शिष्टान्न (बचा हुआ) खाने वाले कष्टों को पार कर जाते हैं (अनु. 66.34).
- नियम पुण्य भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा — इसलिए पितृ, देव, द्विज और अतिथियों की नित्य भली-भाँति पूजा करते रहोगे तो तुम मनचाही गति प्राप्त करोगे (अनु. 66.37).
- नियम देवता, ऋषि, पितर, ब्राह्मण, अतिथि — इन पाँचों का ऋण क्रमशः शुद्ध कर्म से चुकाने वाला गृहस्थ धर्म से च्युत नहीं होता (अनु. 72.18–19).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 66, श्लोक 34 नियम पुण्य KK 13-1-66-34

देवतातिथिभृत्यानां पितॄणां चार्चने रताः ।
शिष्टान्नभोजिनो ये च दुर्गाण्यतितरन्ति ते ॥

↩ वापस: ↩ उ.77

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 66, श्लोक 37 नियम पुण्य KK 13-1-66-37

तस्मात्त्वमपि कौन्तेय पितृदेवद्विजातिथीन् ।
सम्यक्पूजयसे नित्यं गतिमिष्टामवाप्स्यसि ॥

↩ वापस: ↩ उ.77

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 72, श्लोक 18 नियम KK 13-1-72-18

ऋणमुन्मुच्य देवानामृषीणां च तथैव च ।
पितॄणामथ विप्राणामतिथीनां च पञ्चमम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.77

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 72, श्लोक 19 नियम KK 13-1-72-19

पर्यायेण विमुक्तो यः सुनिर्णिक्तेन कर्मणा ।
एवं गृहस्थः कर्माणि कुर्वन्धर्मान्न हीयते ॥

↩ वापस: ↩ उ.77

उ.78 नित्य पितृतर्पण, नित्य श्राद्ध

वक्ता / कथन: भूदेवी श्रीकृष्ण से (भीष्म द्वारा कहा गया) नियम

- नियम भूदेवी ने कहा कि ऋषि, पितृदेवता, देवता और मनुष्य — ये सभी पूजनीय हैं (अनु. 154.5).
- नियम देवताओं को यज्ञ से, मनुष्यों को आतिथ्य से और पितृदेवताओं को तर्पण से नित्य संतुष्ट करना चाहिए (अनु. 154.6).
- नियम नित्य अग्नि की परिचर्या करके, भोजन से पहले ही बलिकर्म और देवकार्य करना चाहिए (अनु. 154.7–8).
- नियम प्रतिदिन अन्न आदि से और जल से श्राद्ध करना चाहिए; अथवा दूध, कंद-मूल और फलों से ही पितृदेवताओं को प्रसन्न करना चाहिए (अनु. 154.8–9).
- नियम पके हुए अन्न से अग्नि में विधिपूर्वक वैश्वदेव करना चाहिए (अनु. 154.9).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 154, श्लोक 5 नियम KK 13-1-154-5

पृथिव्युवाच
ऋषयः पितरो देवा मनुष्याश्चैव माधव।
पूज्याश्चैवार्चनीयाश्च यथा चैव निबोध मे॥

↩ वापस: ↩ उ.78

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 154, श्लोक 6 नियम KK 13-1-154-6

सदा यज्ञेन देवांश्च सदाऽऽतिथ्येन मानुषान्।
छन्दतस्तर्पणेनापि पितॄन्युञ्जन्ति नित्यशः॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.78

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 154, श्लोक 7 नियम KK 13-1-154-7

तेन ह्यृषिगणाः प्रीता ब्रह्मचर्येण चानघ।
नित्यमग्निं परिचरेदभुक्त्वा बलिकर्म च॥

↩ वापस: ↩ उ.78

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 154, श्लोक 8 नियम KK 13-1-154-8

कुर्यात्तथैव देवान्वै प्रियं मे मधुसूदन।
कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन च॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.78 ↩ उ.78

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 154, श्लोक 9 नियम KK 13-1-154-9

पयोमूलफलैर्वाऽपि पितॄणां प्रीतिमावहेत्।
सिद्धान्नाद्वैश्वदेवं वै कुर्यादग्नौ यथाविधि॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.78 ↩ उ.78

उ.79 नित्य तर्पण विधि — स्नानवस्त्र निचोड़ने से पहले तर्पण

वक्ता / कथन: श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से नियम पाप

- नियम सन्ध्योपासना के बाद जल से ब्रह्मा, मुझ (श्रीकृष्ण), शंकर, प्रजापति, देवताओं, देवमुनियों, अंगसहित वेदों, इतिहास-पुराणों, संवत्सर, नदियों, समुद्रों, पर्वतों, ओषधियों आदि का तर्पण करना चाहिए (आश्व. 104.51–53)।
- नियम देवताओं के लिए उपवीती होकर, बाएँ हाथ से दाहिने हाथ को छूते हुए, प्रत्येक को 'तृप्यताम्' कहकर तर्पण करना चाहिए (आश्व. 104.54)।
- नियम मन्त्रद्रष्टा ऋषियों, मरीचि आदि और नारद आदि ऋषियों का निवीती होकर (यज्ञोपवीत को माला की तरह धारण करके) तर्पण करना चाहिए (आश्व. 104.55)।
- नियम प्राचीनावीती होकर कव्यवाहन अग्नि, सोम, वैवस्वत, अर्यमा, अग्निष्वात्तों और सोमपों का दर्भों पर तिल मिले जल से 'तृप्यताम्' कहकर तर्पण करके, उसके बाद अपने पितृदेवताओं का तर्पण करना चाहिए (आश्व. 104.56–57)।
- नियम पिता, पितामह, प्रपितामह, पितामही, प्रपितामही, माता, गुरु, आचार्य, बुआ, मौसी, नानी — इनका तर्पण करना चाहिए (आश्व. 104.58–59)।
- नियम दिवंगत उपाध्यायों, मित्रों, बन्धुओं, शिष्यों, ऋत्विजों और ज्ञातियों का भी दया से, मत्सर के बिना तर्पण करना चाहिए (आश्व. 104.60)।
- नियम तर्पण के बाद आचमन करके स्नानवस्त्र निचोड़ना चाहिए; वह जल भृत्यजनों के स्नान-पान के रूप में उन्हें प्राप्त होता है — ऐसा बड़े कहते हैं (आश्व. 104.61)।
- पाप तर्पण करने से पहले स्नानवस्त्र नहीं निचोड़ना चाहिए; मोहवश पहले ही निचोड़ दे तो देवता, ऋषिगण और पितृदेवता निराश होकर शाप देकर जिस मार्ग से आए उसी से लौट जाते हैं (आश्व. 104.62)।

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 51 नियम KK 14-3-104-51

ततस्तु तर्पयेदद्भिर्ब्रह्माणं मां च शङ्करम्।
प्रजापतिं च देवांश्च तथा देवमुनीनपि॥

↩ वापस: ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 52 नियम KK 14-3-104-52

साङ्गानपि तथा वेदानितिहासान्क्रतूनपि।
पुराणानि च सर्वाणि कुलान्यप्सरसां तथा॥

↩ वापस: ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 53 नियम KK 14-3-104-53

क्रतून्संवत्सरं चैव कलाकाष्ठात्मकं तथा।
भूतग्रामांश्च भूतानि सरितः सागरांस्तथा।
शैलाञ्शैलस्थितान्देवानोषधीः सवनस्पतीः॥

↩ वापस: ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 54 नियम KK 14-3-104-54

तर्पयेदुपवीती च प्रत्येकं तृप्यतामिति।
अन्वारभ्य च सव्येन पाणिना दक्षिणेन तु॥

↩ वापस: ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 55 नियम KK 14-3-104-55

निवीती तर्पयेद्विद्वानृषीन्मन्त्रकृतस्तथा।
मरीच्यादीनृषींश्चैव नारदाद्यान्समाहितः॥

↩ वापस: ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 56 नियम KK 14-3-104-56

प्राचीनावीत्यथैतास्तु तर्पयेद्देवताः पितॄत्।
ततस्तु कव्यवाडग्निं सों वैवस्वतं तथा॥

↩ वापस: ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 57 नियम KK 14-3-104-57

ततश्चार्यमणं चापि ह्यग्निष्वात्तांस्तथैव च।
सोमपांश्चैव दर्भेषु सतिलैरेव वारिभिः।
तृप्यतामिति पश्चात्तु स पितॄंस्तर्पयेत्ततः॥

↩ वापस: ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 58 नियम KK 14-3-104-58

पितॄन्पितामहांश्चैव तथैव प्रपितामहान्।
पितामहीस्तता चापि तथैव प्रपितामहीः॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 59 नियम KK 14-3-104-59

मातरं चात्मनश्चैव गुरुमाचार्यमेव च।
पितृमातृष्वसारौ च तथा मातामहीमपि॥

↩ वापस: ↩ अ.4 · नियम ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 60 नियम KK 14-3-104-60

उपाध्यायान्सखीन्बन्धूञ्शिष्यर्त्विग्ज्ञातिबान्धवान्।
प्रमीतानानृशंस्यार्थं तर्पयेत्तानमत्सरः॥

↩ वापस: ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 61 नियम KK 14-3-104-61

तर्पयित्वा तथाऽऽचम्य स्नानवस्त्रं प्रपीडयेत्।
वृत्तिं भृत्यजनस्याहुः स्नानं पानं च तद्विदः॥

↩ वापस: ↩ उ.79

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › वैष्णवधर्मपर्व › अध्याय 104, श्लोक 62 पाप KK 14-3-104-62

अतर्पयित्वा तान्पूर्वं स्नानवस्त्रं न पीडयेत्।
पीडयेच्चेत्पुरा मोहाद्देवाः सर्पिगणास्तथा।
पितरस्तु निराशास्ते शप्त्वा यान्ति यथागतं॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ उ.79

उ.80 देव-पितृ-अतिथियों की पूजा; उनसे पहले भोजन नहीं करना चाहिए

वक्ता / कथन: विदुर धृतराष्ट्र से नियम पाप पुण्य

- नियम पुण्य देवता, पितर, मनुष्य, भिक्षु और अतिथि – इन पाँचों की पूजा करने वाला लोक में कीर्ति पाता है (उद्योग. 33.82)।
- नियम पाप पितृ-देव-अतिथियों से पहले भोजन करने वाला हमारे कुल में कोई न हो (ऐसी इच्छा कही गई है) (उद्योग. 36.32)।

महाभारत › उद्योगपर्व › प्रजागरपर्व › अध्याय 33, श्लोक 82 नियम पुण्य KK 5-3-33-82

पञ्चैव पूजयँल्लोके यशः प्राप्नोति केवलम्।
देवान्पितॄन्मनुष्यांश्च भिक्षूनतिथिपञ्चमान्॥

↩ वापस: ↩ उ.80

महाभारत › उद्योगपर्व › प्रजागरपर्व › अध्याय 36, श्लोक 32 नियम पाप KK 5-3-36-32

मा नः कुले वैरकृत्कश्चिदस्तु राजा बद्धो मा परस्वापहारी।
मित्रद्रोही नैकृतिकोऽनृती वा पूर्वाशी वा पितृदेवातिथिभ्यः॥

↩ वापस: ↩ उ.80

उ.81 पितृ-देव-अतिथियों को देकर शेष बचा भोजन करना (विघसाशन)

वक्ता / कथन: पक्षी रूप में इन्द्र (11); भीष्म युधिष्ठिर से (226); व्यास युधिष्ठिर से (35); नारद गालव से (293) नियम पुण्य

- नियम अतिथियों, देवताओं, पितरों और स्वजनों को देकर शेष बचा भोजन करने वालों को विघसाशी कहते हैं (शान्ति. 11.24; 226.15)।
- पुण्य ऐसे लोगों को ब्रह्मसदन में अनन्त लोक प्राप्त होते हैं; अप्सराओं सहित देवता उनके समीप आते हैं (शान्ति. 226.16)।
- पुण्य देवताओं और पितरों के साथ (उन्हें अर्पित करके) भोजन करने वाले पुत्र-पौत्रों के साथ आनन्दित होते हैं; उनकी गति सर्वोत्तम है (शान्ति. 226.17)।
- नियम देवताओं, ऋषियों, मनुष्यों, पितरों और गृहदेवताओं की पूजा करने के बाद ही गृहस्थ को भोजन करना चाहिए (शान्ति. 35.34)।

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 11, श्लोक 24 नियम KK 12-1-11-24

दत्त्वाऽतिथिभ्यो देवेभ्यः पितृभ्यः स्वजनाय च।
अवशिष्टानि येऽश्नन्ति तानाहुर्विघसाशिनः॥

↩ वापस: ↩ उ.81

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 226, श्लोक 15 नियम KK 12-3-226-15

अभुक्त्वा दैवतेभ्यश्च यो न भुङ्क्ते सदैवतम्।
देवताभ्यः पितृभ्यश्च भृत्येभ्योऽतिथिभिः सह।
अवशिष्टं तु योऽश्नाति तमाहुर्विघसाशिनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.81

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 226, श्लोक 16 पुण्य KK 12-3-226-16

तेषां लोका ह्यपर्यन्ताः सदने ब्रह्मणा सह।
उपस्थिताश्चाप्सरोभिः परियान्ति दिवौकसः॥

↩ वापस: ↩ उ.81

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 226, श्लोक 17 पुण्य KK 12-3-226-17

देवताभिश्च ये सार्धं पितृभ्यश्चोपभुञ्जते।
रमन्ते पुत्रपौत्रैश्च तेषां गतिरनुत्तमा॥

↩ वापस: ↩ उ.81

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 35, श्लोक 34 नियम KK 12-1-35-34

देवानृषीन्मनुष्यांश्च पितॄन्गृह्याश्च देवताः।
पूजयित्वा ततः पश्चाद्गृहस्थो भोक्तुमर्हति॥

↩ वापस: ↩ उ.81

उ.82 देव-पितृ-आश्रितों को देकर बचा हुआ खाने वाला (विघसाशी)

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम देवताओं, पितृदेवताओं और आश्रितों को देने के बाद केवल बचा हुआ खाने वाले को विघसाशी कहते हैं (अनु. 140.15)।
- पुण्य ऐसे लोगों को ब्रह्मसदन में अनंत लोक मिलते हैं; वे देवताओं, अतिथियों और पितृदेवताओं के साथ भोजन करते हैं, पुत्र-पौत्रों के साथ आनंद करते हैं; उनकी गति सर्वोत्तम है (अनु. 140.16–17)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 140, श्लोक 15 नियम KK 13-1-140-15

देवेभ्यश्च पितृभ्यश्च संश्रितेभ्यस्तथैव च।
अवशिष्टानि यो भुङ्क्ते तमाहुर्विघसाशिनम्॥

↩ वापस: ↩ उ.82

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 140, श्लोक 16 पुण्य KK 13-1-140-16

तेषां लोका ह्यपर्यन्ताः सदने ब्रह्मणः स्मृताः।
उपस्थिता ह्यप्सरसो गन्धर्वैश्च जनाधिप॥

↩ वापस: ↩ उ.82

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 140, श्लोक 17 पुण्य KK 13-1-140-17

देवतातिथिभिः सार्धं पितृभिश्चोपभुञ्जते ।
रमन्ते पुत्रपौत्रैश्च तेषां गतिरनुत्तमा ॥

↩ वापस: ↩ उ.82

उ.83 राजा, वनवासी और दस्यु भी करें पितृयज्ञ

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (62); इंद्र मांधाता से (64); युधिष्ठिर अर्जुन से (9) उदाहरण नियम

- नियम राजा को दूसरा आश्रम ग्रहण करने से पहले श्राद्धों और पितृयज्ञों से विधिपूर्वक पितरों की, यज्ञों से देवताओं की और वेदों से ऋषियों की प्रयत्नपूर्वक अर्चना करनी चाहिए (शान्ति. 62.20)।
- नियम दस्यु (वनजातियाँ) भी पितृयज्ञ करें; कुएँ, प्याऊ, शय्याएँ और दान उचित समय पर द्विजों को दें (शान्ति. 64.19)।
- उदाहरण वनवास चाहने वाले युधिष्ठिर ने कहा कि वह वन में मिलने वाले पदार्थों, वाणी और जल से पितरों और देवताओं को तृप्त करते हुए जीएगा (शान्ति. 9.10)।

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 62, श्लोक 20 नियम KK 12-1-62-20

अर्चयित्वा पितॄञ्श्राद्धैः पितृयज्ञैर्यथाविधि ।
देवान्यज्ञैर्ऋषीन्वेदैरर्चयित्वा तु यत्नतः ॥

↩ वापस: ↩ उ.83

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 64, श्लोक 19 नियम KK 12-1-64-19

पितृयज्ञास्तथा कूपाः प्रपाश्च शयनानि च ।
दानानि च यथाकालं दातव्यानि द्विजातिषु ॥

↩ वापस: ↩ उ.83

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 9, श्लोक 10 उदाहरण KK 12-1-9-10

एकान्तशीली विमृशन्पक्वापक्वेन वर्तयन् ।
पितॄन्देवांश्च वन्येन वाग्भिरद्भिश्च तर्पयन् ॥

↩ वापस: ↩ उ.83

उ.84 नित्य पितृदेवताओं की पूजा, स्नान के बाद तर्पण

वक्ता / कथन: कवि-वर्णन; श्रीराम सीता से; भरत कौसल्या से (शपथ) उदाहरण नियम

- उदाहरण गंगातट पर ठहरे विश्वामित्र आदि मुनियों और राम-लक्ष्मण ने यथान्याय स्नान करके पितृदेवताओं का तर्पण किया, अग्निहोत्र में होम किया और हविश्शेष ग्रहण किया (रामा. बाल. 35.9–10)।
- नियम वन में रहते हुए भी देवताओं और पितृदेवताओं की विधिपूर्वक पूजा तथा आए हुए अतिथियों का सत्कार प्रतिदिन करना होगा — ऐसा श्रीराम ने वनवास के कष्टों का वर्णन करते हुए सीता से कहा (रामा. अयो. 28.14)।

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 35 › श्लोक 9 उदाहरण वा.रा. 1.35.9

तस्यास्तीरे तदा सर्वे चक्रुर्वासपरिग्रहम् ।
ततः स्नात्वा यथान्यायं संतर्प्य पितृदेवताः ॥

↩ वापस: ↩ उ.84

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 35 › श्लोक 10 उदाहरण वा.रा. 1.35.10

हुत्वा चैवाग्निहोत्राणि प्राश्य चामृतवद्धविः ।
विविशुर्जाह्नवीतीरे शुभा मुदितमानसाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.84

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 28 › श्लोक 14 नियम वा.रा. 2.28.14

देवतानां पितॄणां च कर्तव्यं विधिपूर्वकम् ।
प्राप्तानामतिथीनां च नित्यशः प्रतिपूजनम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.84

उ.85 वनवास में भी श्रीराम का नित्य पितृतर्पण

वक्ता / कथन: श्रीराम भरत से (अयो.); वाल्मीकि का कथन (अर.) उदाहरण नियम

- उदाहरण नियम वन में ही रहते हुए, शुचि होकर, नियत आहार के साथ, पवित्र कन्द, पुष्प और फलों से पितृदेवताओं और देवताओं को तृप्त करते हुए लोकयात्रा चलाऊँगा — ऐसा श्रीराम ने कहा (रामा. अयो. 109.26–27) ।
- उदाहरण गोदावरी में सीता और लक्ष्मण के साथ स्नान करने के बाद उस जल से पितृदेवताओं और देवताओं का तर्पण करके उदित सूर्य की स्तुति की (रामा. अरण्य. 16.41–42) ।

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 16 › श्लोक 41 उदाहरण वा.रा. 3.16.41

इत्येवं विलपंस्तत्र प्राप्य गोदावरीं नदीम् ।
चक्रेऽभिषेकं काकुत्स्थः सानुजः सह सीतया ॥

↩ वापस: ↩ उ.85

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 16 › श्लोक 42 उदाहरण वा.रा. 3.16.42

तर्पयित्वाथ सलिलैस्तैः पितॄन् दैवतानपि ।
स्तुवन्ति स्मोदितं सूर्यं देवताश्च तथानघाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.85 ↩ सूची.68

उ.86 श्रीराम की नित्य देव–पितृ–विप्र अर्चना

वक्ता / कथन: वाल्मीकि महर्षि (कथन) उदाहरण नियम

- उदाहरण राम जलकार्य (स्नान) करके शुचि होकर, समय पर अग्निहोत्र करके, इक्ष्वाकुओं द्वारा सेवित पवित्र देवालय में शीघ्र गए (रामा. उत्तर. 37.13) ।
- उदाहरण नियम वहाँ यथाविधि देवताओं, पितृदेवताओं और ब्राह्मणों की अर्चना करके, राम लोगों के साथ बाहरी कक्ष्या में गए (रामा. उत्तर. 37.14) ।

श्रीमद्रामायण › उत्तरकाण्ड › सर्ग 37 › श्लोक 13 उदाहरण वा.रा. 7.37.13

कृतोदकः शुचिर्भूत्वा काले हुतहुताशनः ।
देवागारं जगामाशु पुण्यमिक्ष्वाकुसेवितम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.86

श्रीमद्रामायण › उत्तरकाण्ड › सर्ग 37 › श्लोक 14 उदाहरण नियम वा.रा. 7.37.14

तत्र देवान् पितॄन् विप्रानर्चयित्वा यथाविधि ।
बाह्यकक्षान्तरं रामो निर्जगाम जनैर्वृतः ॥

↩ वापस: ↩ उ.86

उ.87 श्रीकृष्ण की दिनचर्या में देव-ऋषि-पितृ तर्पण

वक्ता / कथन: शुक महर्षि परीक्षित से (उदाहरण)

- उदाहरण श्रीकृष्ण निर्मल जल में विधिपूर्वक स्नान करके, वस्त्र धारण करके, सन्ध्योपासना आदि और अग्निहोत्र करके, मौन होकर ब्रह्मजप (वेदमन्त्रों का जप) करते थे (भाग. 10.80.6)।
- उदाहरण उदय होते सूर्य का उपस्थान करके, अपने अंशभूत देवताओं, ऋषियों और पितृदेवताओं का तर्पण करके, बड़ों और ब्राह्मणों की अर्चना करते थे (भाग. 10.80.7)।

श्रीमद्भागवत › दशमस्कन्ध › अध्याय 80 › श्लोक 6 उदाहरण — भाग. 10.80.6

अथाप्लुतोऽम्भस्यमले यथाविधि क्रियाकलापं परिधाय वाससी।
चकार सन्ध्योपगमादि सत्तमो हुतानलो ब्रह्म जजाप वाग्यतः॥

↩ वापस: ↩ उ.87

श्रीमद्भागवत › दशमस्कन्ध › अध्याय 80 › श्लोक 7 उदाहरण — भाग. 10.80.7

उपस्थायार्कमुद्यन्तं तर्पयित्वाऽऽत्मनः कलाः।
देवान् ऋषीन् पितॄन्वृद्धान्विप्रानभ्यर्च्य चात्मवान्॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ उ.87

(ऋ) श्राद्ध, पितरों की उत्पत्ति और स्वरूप

उ.88 सात पितृगण — उनके नाम

वक्ता / कथन: नारद धर्मराज से (ब्रह्मसभा-वर्णन) (नियम)

- नियम पितृगण सात ही हैं; उनमें चार मूर्तिमान और तीन शरीरी हैं (सभा. 11.45)।
- नियम वैराज, अग्निष्वात्त, गार्हपत्य (नाकचर), सोमप, एकशृंग, चतुर्वेद, कल (कलाः) — ये पितर चारों वर्णों में पूजे जाते हैं (सभा. 11.46–47)।
- नियम इनके तृप्त होने पर सोम फिर से तृप्त होता है; ये सभी पितर प्रजापति की सेवा करते रहते हैं (सभा. 11.48)।

महाभारत › सभापर्व › मन्त्रपर्व › अध्याय 11, श्लोक 45 नियम — KK 2-1-11-45

पितृणां च गणान्विद्धि सप्तैव पुरुषर्षभ।
मूर्तिमन्तो वै चत्वारस्त्रयश्चापि शरीरिणः॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.88

महाभारत › सभापर्व › मन्त्रपर्व › अध्याय 11, श्लोक 46 नियम — KK 2-1-11-46

वैराजश्च महाभागा अग्निष्वात्ताश्च भारत।
गार्हपत्या नाकचराः पितरो लोकविश्रुताः॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.88

महाभारत › सभापर्व › मन्त्रपर्व › अध्याय 11, श्लोक 47 नियम — KK 2-1-11-47

सोमपा एकशृङ्गाश्च चतुर्वेदाः कलास्तथा।
एते चतुर्षु वर्णेषु पूज्यन्ते पितरो नृप॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.88

महाभारत › सभापर्व › मन्त्रपर्व › अध्याय 11, श्लोक 48 नियम — KK 2-1-11-48

एतैराप्यायितैः पुर्वं सोमश्चाप्याय्यते पुनः।
त एते पितरः सर्वे प्रजापतिमुपस्थिताः॥

↩ वापस: ↩ उ.88

उ.89 पुत्रशोक में निमि द्वारा किया गया प्रथम श्राद्ध

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से उदाहरण नियम

- उदाहरण अत्रि वंश में दत्तात्रेय, उनके पुत्र तपोधन निमि; निमि का पुत्र श्रीमान् हज़ार वर्ष दुष्कर तपस्या करके मृत्यु को प्राप्त हुआ (अनु. 138.4–6)।
- उदाहरण निमि विधिदृष्ट कर्म से शौच कर्म करके तीव्र पुत्रशोक में डूब गए; चतुर्दशी के दिन करने योग्य कार्य करके, उसी शोक का स्मरण करते हुए रात्रि समाप्त होते ही जाग उठे (अनु. 138.7–8)।
- उदाहरण शोक से व्यथित होने पर भी मन को वश में करके, उन्होंने एकाग्रता से श्राद्धकल्प के विषय में विचार किया — पुत्र के प्रिय भोज्य, मूल, फल सब मन में निश्चित किए (अनु. 138.9–11)।
- उदाहरण अमावस्या के दिन पूज्य ब्राह्मणों को बुलाकर, दक्षिणावर्त क्रम से आसन स्वयं तैयार किए; सात ब्राह्मणों को एक साथ बिना नमक का श्यामाक (साँवाँ) अन्न परोसा (अनु. 138.12–13)।
- उदाहरण नियम आसनों पर और भोजन करने वाले ब्राह्मणों के पैरों के पास दक्षिणाग्र दर्भ रखे; दक्षिणाग्र दर्भ बिछाकर, शुचि होकर, नियम से, नाम और गोत्र का उच्चारण करते हुए श्रीमान् को पिण्ड दिए (अनु. 138.14–15)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 4 उदाहरण KK 13-1-138-4

स्वायम्भुवोऽत्रिः कौरव्य परमर्षिः प्रतापवान्।
तस्य वंशे महाराज दत्तात्रेय इति स्मृतः॥

↩ वापस: ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 5 उदाहरण KK 13-1-138-5

दत्तात्रेयस्य पुत्रोऽभून्निमिर्नाम तपोधनः।
निमेश्चाप्यभवत्पुत्रः श्रीमान्नाम श्रिया वृतः॥

↩ वापस: ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 6 उदाहरण KK 13-1-138-6

पूर्णे वर्षसहस्रान्ते स कृत्वा दुष्करं तपः।
कालधर्मपरीतात्मा निधनं समुपागतः॥

↩ वापस: ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 7 उदाहरण KK 13-1-138-7

निमिस्तु कृत्वा शौचानि विधिदृष्टेन कर्मणा।
सन्तापमगमत्तीव्रं पुत्रशोकपरायणः॥

↩ वापस: ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 8 उदाहरण KK 13-1-138-8

अथ कृत्वोपकार्याणि चतुर्दश्यां महामतिः।
तमेव गणयञ्शोकं विरात्रे प्रत्यबुध्यत॥

↩ वापस: ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 9 उदाहरण KK 13-1-138-9

तस्यासीत्प्रतिबुद्धस्य शोकेन व्यथितात्मनः।
मनः संहृत्य विषये बुद्धिर्विस्तारगामिनी॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 10 उदाहरण KK 13-1-138-10

ततः सञ्चिन्तयामास श्राद्धकल्पं समाहितः।
यानि तस्यैव भोज्यानि मूलानि च फलानि च॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 11 उदाहरण KK 13-1-138-11

उक्तानि यानि चान्यानि यानि चेष्टानि तस्य ह ।
तानि सर्वाणि मनसा विनिश्चित्य तपोधनः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 12 उदाहरण KK 13-1-138-12

अमावास्यां महाप्राज्ञो विप्रानानाय्य पूजितान् ।
दक्षिणावर्तिकाः सर्वा बृसीः स्वयमथाकरोत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 13 उदाहरण KK 13-1-138-13

सप्त विप्रांस्ततो भोज्ये युगपत्समुपानयत् ।
ऋते च लवणं भोज्यं श्यामाकान्नं ददौ प्रभुः ॥

↩ वापस: ↩ अ.1 · आदर्श ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 14 उदाहरण नियम KK 13-1-138-14

दक्षिणाग्रास्ततो दर्भा विष्टरेषु निवेशिताः ।
पादयोश्चैव विप्राणां ये त्वन्नमुपभुञ्जते ॥

↩ वापस: ↩ उ.89

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 15 उदाहरण नियम KK 13-1-138-15

कृत्वा च दक्षिणाग्रान्वै दर्भान्स प्रयतः शुचिः ।
प्रददौ श्रीमते पिण्डान्नामगोत्रमुदाहरन् ॥

↩ वापस: ↩ उ.89

उ.90 श्राद्ध स्वयम्भू द्वारा विहित धर्म — अत्रि ने निमि को धैर्य दिया

वक्ता / कथन: अत्रि निमि से — भीष्म युधिष्ठिर से उदाहरण नियम

- नियम युधिष्ठिर ने पूछा कि श्राद्ध का संकल्प किसने और किस काल में किया, और श्राद्ध में कौन-से मूल, फल और धान्य वर्जित हैं; भीष्म ने बताना आरंभ किया (अनु. 138.1–3).
- उदाहरण मुनियों ने पहले जो नहीं किया वह मैंने किया, कहीं ब्राह्मण शाप न दें — ऐसा तीव्र पश्चात्ताप से सोचकर निमि ने वंशकर्ता अत्रि का ध्यान किया; अत्रि तुरंत आए और पुत्रशोक से कृश निमि को सांत्वना दी (अनु. 138.16–19).
- नियम अत्रि ने कहा — तुम्हारे द्वारा संकल्पित यह पितृयज्ञ पहले ही ब्रह्मा द्वारा स्वयं देखा गया धर्म है; स्वयम्भू के सिवा श्राद्धविधि कौन बता सकता है; और कहा कि मैं स्वयम्भू द्वारा विहित उत्तम विधि बताऊँगा (अनु. 138.20–22).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 1 नियम KK 13-1-138-1

केन सङ्कल्पितं श्राद्धं कस्मिन्काले किमात्मकम् ।
भृग्वङ्गिरसिके काले मुनिना कतरेण वा ॥

↩ वापस: ↩ उ.90

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 2 नियम KK 13-1-138-2

येन सङ्कल्पितं चैव तन्मे ब्रूहि पितामह ।
कानि श्राद्धेषु वर्ज्यानि कानि मूलफलानि च ।
धान्यजात्यश्च का वर्ज्यास्तन्मे ब्रूहि पितामह ॥

↩ वापस: ↩ उ.90

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 3 नियम KK 13-1-138-3

यथा श्राद्धं सम्प्रवृत्तं यस्मिन्काले सदात्मकम् ।
येन सङ्कल्पितं चैव तन्मे शृणु जनाधिप ॥

↩ वापस: ↩ उ.90

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 16 उदाहरण KK 13-1-138-16

तत्कृत्वा स मुनिश्रेष्ठो धर्मसङ्करमात्मनः ।
पश्चात्तापेन महता तप्यमानोऽभ्यचिन्तयत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.90

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 17 उदाहरण KK 13-1-138-17

अकृतं मुनिभिः पूर्वं किं मयेदमनुष्ठितम् ।
कथं नु शापेन न मां दहेयुर्ब्राह्मणा इति ॥

↩ वापस: ↩ उ.90

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 18 उदाहरण KK 13-1-138-18

ततः सञ्चिन्तयामास वंशकर्तारमात्मनः ।
बुद्ध्वाऽत्रिं मनसा दध्यौ भगवन्तं समाहितः ।
ध्यातमात्रस्तथा चात्रिराजगाम तपोधनः ॥

↩ वापस: ↩ उ.90

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 19 उदाहरण KK 13-1-138-19

अथात्रिस्तं तथा दृष्ट्वा पुत्रशोकेन कर्शितम् ।
भृशमाश्वासयामास वाग्भिरिष्टाभिरव्ययः ॥

↩ वापस: ↩ उ.90

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 20 नियम KK 13-1-138-20

निमे सङ्कल्पितस्तेऽयं पितृयज्ञस्तपोधन ।
मतो मे पूर्वदृष्टोऽत्र धर्मोऽयं ब्रह्मणा स्वयम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.90

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 21 नियम KK 13-1-138-21

सोयं स्वयम्भुविहितो धर्मः सङ्कल्पितस्त्वया ।
ऋते स्वयम्भुवः कोऽन्यः श्राद्धे संविधिमाहरेत् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.90

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 22 नियम KK 13-1-138-22

अथाख्यास्यामि ते पुत्र श्राद्धे यं विधिमुत्तमम् ।
स्वयम्भुविहितं पुत्र तत्कुरुष्व निबोध मे ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.90

उ.91 वराहमूर्ति द्वारा किया गया प्रथम पिण्डप्रदान — पितरों को 'पिण्ड' संज्ञा

वक्ता / कथन: नर-नारायण नारद से (वैशम्पायन का कथन) उदाहरण नियम

- नियम दर्भों पर तीन पिण्ड रखकर पित्र्य करते हैं; पितरों ने 'पिण्ड' नाम कैसे पाया — ऐसा नारद ने पूछा (शान्ति. 355.11).
- उदाहरण समुद्र में डूबी पृथ्वी को गोविन्द ने वराहरूप में ऊपर उठाकर उसे यथास्थान स्थापित किया; उनका शरीर जल और कीचड़ से भरा था (शान्ति. 355.12–13).
- उदाहरण नियम सूर्य के मध्य-आकाश में होने पर आह्निक काल आते ही, दाढ़ों में लगे तीन पिण्डों को झाड़कर, भूमि पर दर्भ बिछाकर उन पर रखा, और अपने ही उद्देश्य से यथाविधि पित्र्य किया (शान्ति. 355.14–15).
- उदाहरण नियम अपनी ही विधि से तीन पिण्डों का संकल्प करके, अपने शरीर की उष्णता से उत्पन्न स्निग्ध तिलों से अपसव्य होकर प्रोक्षण करके, पूर्वाभिमुख होकर स्वयं किया; मर्यादा (परंपरा) स्थापित करने के लिए यह वचन कहा (शान्ति. 355.16–17).
- नियम पितरों की सृष्टि करने की इच्छा से, पितृकार्य की विधियों पर विचार करते समय मेरी दाढ़ों से झाड़े गए ये पिण्ड दक्षिण दिशा में आश्रित हुए; इसलिए ये ही पितर हैं। रूपहीन ये तीनों पिण्डरूप धारण करके लोक में सनातन पितर बनें — ऐसा वृषाकपि ने कहा (शान्ति. 355.18–20).
- नियम उन्होंने कहा — पिता, पितामह, प्रपितामह — इन तीन पिण्डों में जो है वह मैं ही हूँ; मैं ही लोक में पिता, पितामह, प्रपितामह और सबका कारण हूँ (शान्ति. 355.21–22).
- उदाहरण वराह पर्वत पर विस्तार से पिण्ड देकर, स्वयं अपनी पूजा करके वहीं अंतर्धान हो गए (शान्ति. 355.23).
- नियम इसीलिए पितर 'पिण्ड' संज्ञा से, वृषाकपि के वचन के अनुसार निरंतर पूजा प्राप्त करते हैं (शान्ति. 355.24).

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 11 नियम KK 12-3-355-11

त्रीन्पिण्डान्न्यस्य वै पित्र्यान्पूर्वं दत्त्वा कुशानिति ।
कथं तु पिण्डसञ्ज्ञां ते पितरो लेभिरे पुरा ॥

↩ वापस: ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 12 उदाहरण KK 12-3-355-12

नरनारायणावूचतुः
इमां हि धरणीं पूर्वं नष्टां सागरमेखलाम् ।
गोविन्द उज्जहाराशु वाराहं रूपमास्थितः ॥

↩ वापस: ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 13 उदाहरण KK 12-3-355-13

स्थापयित्वा तु धरणीं स्वे स्थाने पुरुषोत्तमः ।
जलकर्दमलिप्ताङ्गो लोककार्यार्थमुद्यतः ॥

↩ वापस: ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 14 उदाहरण नियम KK 12-3-355-14

प्राप्ते चाह्निककाले तु मध्यदेशगते रवौ ।
दंष्ट्राविलग्नांस्त्रीन्पिण्डान्विधूय सहसा प्रभुः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 15 उदाहरण नियम KK 12-3-355-15

स्थापयामास वै पृथ्व्यां कुशानास्तीर्य नारद ।
स तेष्वात्मानमुद्दिश्य पित्र्यं चक्रे यथाविधि ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 16 उदाहरण नियम KK 12-3-355-16

सङ्कल्पयित्वा त्रीन्पिण्डान्स्वेनैव विधिना प्रभुः ।
आत्मगात्रोष्मसम्भूतैः स्नेहगर्भैस्तिलैरपि ॥

↩ वापस: ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 17 उदाहरण नियम KK 12-3-355-17

प्रोक्ष्यापसव्यं देवेशः प्राङ्मुखः कृतवान्स्वयम् ।
मर्यादास्थापनार्थं च ततो वचनमुक्तवान् ॥

↩ वापस: ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 18 नियम KK 12-3-355-18

वृषाकपिरुवाच
अहं हि पितरः स्रष्टुमुद्यतो लोककृत्स्वयम् ।
तस्य चिन्तयतः सद्यः पितृकार्यविधीन्परान् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 19 नियम KK 12-3-355-19

दंष्ट्राभ्यां प्रविनिर्धूता ममैते दक्षिणां दिशम् ।
आश्रिता धरणीं पीड्य तस्मात्पितर एव ते ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 20 नियम KK 12-3-355-20

त्रयो मूर्तिविहीना वै पिण्डमूर्तिधरास्त्विमे ।
भवन्तु पितरो लोके मया सृष्टाः सनातनाः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 21 नियम KK 12-3-355-21

पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ।
अहमेवात्र विज्ञेयस्त्रिषु पिण्डेषु संस्थितः ।
नास्ति मत्तोऽधिकः कश्चित्को वान्योर्च्यो मया स्वयम् ।

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 22 नियम KK 12-3-355-22

अहमेव पिता लोके अहमेव पितामहः ।
पितामहपिता चैव अहमेवात्र कारणम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 23 उदाहरण KK 12-3-355-23

इत्येतदुक्त्वा वचनं देवदेवो वृषाकपिः ।
वराहपर्वते विप्र दत्त्वा पिण्डान्सविस्तरान् ।
आत्मानं पूजयित्वैव तत्रैवादर्शनं गतः ॥

↩ वापस: ↩ उ.91

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 24 नियम KK 12-3-355-24

एतदर्थं शुभमते पितरः पिण्डसञ्ज्ञिताः ।
लभन्ते सततं पूजां वृषाकपिवचो यथा ॥

↩ वापस: ↩ उ.91

उ.92 पितृकार्य देवकार्य से विशिष्ट; पिण्डों की उत्पत्ति वराह द्वारा

वक्ता / कथन: हयशिरा नारायण नारद से (347); शौनक (357.2–3); ब्रह्मा (357.91–92); वैशम्पायन जनमेजय से (358) नियम

- नियम हे मुनि, देवकार्य से पितृकार्य विशिष्ट है (शान्ति. 347.59).
- नियम प्राचीन पिण्डोत्पत्ति महावराह द्वारा रची गई; हव्य-कव्य के भोक्ता विष्णु ईशान दिशा के महासमुद्र में रहते हैं (शान्ति. 357.2–3).
- नियम नारायण ने स्वयं उस धर्म से दैव और पित्र्य कर्म किए; फेनपों और वैखानसों ने उस धर्म को प्राप्त किया (शान्ति. 358.14–15).

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 347, श्लोक 59 नियम KK 12-3-347-59

त्रींश्चैवेमान्गुणान्पश्य मत्स्थान्मूर्तिविवर्जितान् ।
देवकार्यादपि मुने पितृकार्यं विशिष्यते ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.92

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 357, श्लोक 2 नियम KK 12-3-357-2

महावराहसृष्टा च पिण्डोत्पत्तिः पुरातनी ।
प्रवृत्तौ च निवृत्तौ च यो यथा परिकल्पितः ॥

↩ वापस: ↩ उ.92

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 357, श्लोक 3 नियम KK 12-3-357-3

तथा स नः श्रुतो ब्रह्मन्कथ्यमानस्त्वयाऽनघ ।
हव्यकव्यभुजो विष्णुरुदक्पूर्वे महोदधौ ॥

↩ वापस: ↩ उ.92

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 358, श्लोक 14 नियम KK 12-3-358-14

तेन धर्मेण कृतवान्दैवं पित्र्यं च भारत ।
फेनपा ऋषयश्चैव तं धर्मं प्रतिपेदिरे ॥

↩ वापस: ↩ उ.92

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 358, श्लोक 15 नियम KK 12-3-358-15

वैखानसाः फेनपेभ्यो धर्मं तं प्रतिपदिरे ।
वैखानसेभ्यः सोमस्तु ततः सोऽन्तर्दधे पुनः ॥

↩ वापस: ↩ उ.92

उ.93 पितृयज्ञ में पूजित होने वाले नारायण ही हैं

वक्ता / कथन: नारद नर-नारायण से (वैशंपायन का कथन) नियम

- नियम धर्मपुत्रों में ज्येष्ठ ने नारद से पूछा कि दैव और पित्र्य कर्मों में तुम किसकी पूजा करते हो (शान्ति. 355.2)।
- नियम नारद ने कहा कि वे नारायण-विधि का अनुसरण करके पितृदेवताओं की पूजा करते हैं, वे भगवान ही पिता, माता और पितामह हैं, और पितृयज्ञों में वे नित्य जगत्पति की ही पूजा करते हैं (शान्ति. 355.7–8)।

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 2 नियम KK 12-3-355-2

ततस्तं वचनं प्राह ज्येष्ठो धर्मात्मजः प्रभुः ।
क इज्यते द्विजश्रेष्ठ दैवे पित्र्ये च कल्पिते ॥

↩ वापस: ↩ उ.93

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 7 नियम KK 12-3-355-7

यजामि वै पितॄन्साधो नारायणविधौ कृते ।
एवं स एव भगवान्पिता माता पितामहः ॥

↩ वापस: ↩ उ.93

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 8 नियम KK 12-3-355-8

इज्यते पितृयज्ञेषु मया नित्यं जगत्पतिः ।
श्रुतिश्चाप्यपरा देवाः पुत्रान्हि पितरोऽयजन् ॥

↩ वापस: ↩ उ.93

उ.94 नर-नारायण द्वारा किए गए दैव-पित्र्य कर्म — वे किसकी पूजा करते हैं?

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से (नारद-नरनारायण संवाद) उदाहरण नियम

- नियम दैव और पित्र्य कर्म किस विधि से करने चाहिए? देवताओं के देवता और पितरों के पिता कौन हैं? — यह युधिष्ठिर ने पूछा (शान्ति. 342.2, 342.4)।
- उदाहरण सर्वभूतों के पितर और देवता भी जो नर-नारायण हैं, वे किस देवता और किन पितरों की पूजा करते हैं — यह सोचते हुए नारद आए; उन्होंने दैव-पित्र्य कर्म समाप्त करके शास्त्रोक्त रीति से उनकी पूजा की (शान्ति. 342.20, 342.22)।
- नियम दैव-पित्र्य कर्मों में हम जिसकी पूजा करते हैं, वह सदसदात्मक परमात्मा ही है; उससे बड़ा कोई पिता या देवता नहीं — ऐसा नारायण ने कहा (शान्ति. 342.33–34)।
- नियम दैव और पित्र्य करने ही चाहिए — यह लोकहितकारी मर्यादा उस परमात्मा के शासन से ही प्रसिद्ध हुई (शान्ति. 342.35)।
- नियम दैव और पित्र्य सदा उस परमात्मा के ही हैं — यह तत्त्व से जानकर, वे आत्मा (परमात्मा) तक ही पहुँचते हैं, यह उत्तम द्विज जानते हैं (शान्ति. 342.39)।

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 342, श्लोक 2 नियम KK 12-3-342-2

कुतो ह्यस्य ध्रुवः स्वर्गः कुतो नैःश्रेयसं परम् ।
विधिना केन जुहुयाद्दैवं पित्र्यं तथैव च ॥

↩ वापस: ↩ उ.94

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 342, श्लोक 4 नियम KK 12-3-342-4

देवतानां च को देवः पितॄणां च पिता तथा ।
तस्मात्परतरं यच्च तन्मे ब्रूहि पितामह ॥

↩ वापस: ↩ उ.94

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 342, श्लोक 20 उदाहरण KK 12-3-342-20

पितरौ सर्वभूतानां दैवतं च यशस्विनौ ।
कां देवतां तु यजतः पितॄन्वा कान्महामती ॥

↩ वापस: ↩ उ.94

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 342, श्लोक 22 उदाहरण KK 12-3-342-22

कृते दैवे च पित्र्ये च ततस्ताभ्यां निरीक्षितः ।
पूजितश्चैव विधिना यथाप्रोक्तेन शास्त्रतः ॥

↩ वापस: ↩ उ.94

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 342, श्लोक 33 नियम KK 12-3-342-33

तां योनिमावयोर्विद्धि योसौ सदसदात्मकः ।
आवाभ्यां पूज्यते यो हि दैवे पित्र्ये च कल्प्यते ॥

↩ वापस: ↩ उ.94

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 342, श्लोक 34 नियम KK 12-3-342-34

नास्ति तस्मात्परोऽन्यो हि पिता देवोऽथवा द्विज ।
आत्मा हि नौ स विज्ञेयस्ततस्तं पूजयावहे ॥

↩ वापस: ↩ उ.94

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 342, श्लोक 35 नियम KK 12-3-342-35

तेनैषा प्रथिता ब्रह्मन्मर्यादा लोकभाविनी ।
दैवं पित्र्यं च कर्तव्यमिति तस्यानुशासनम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.94

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 342, श्लोक 39 नियम KK 12-3-342-39

दैवं पित्र्यं च सततं तस्य विज्ञाय तत्त्वतः ।
आत्मप्राप्तानि च ततो जानन्ति द्विजसत्तमाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.94

उ.95 पितृपूजा की प्रधानता — पितरों की पूजा पहले करनी चाहिए

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम युधिष्ठिर द्वारा सम्पूर्ण श्राद्धविधि बताने को कहने पर भीष्म ने बताना आरम्भ किया (अनु. 134.1–2)।
- पुण्य श्राद्धकर्म की विधि — पितृयज्ञ — धन्य है, यश देने वाली है, पुत्र देने वाली है (अनु. 134.3)।
- नियम देव, असुर, मनुष्य, गन्धर्व, उरग, राक्षस, पिशाच, किन्नर — सबके लिए पितर सदा पूज्य हैं (अनु. 134.4)।
- नियम पहले पितरों की पूजा करके बाद में देवताओं को तृप्त करते हैं; इसलिए मनुष्य को सर्वप्रयत्न से सदा उनकी पूजा करनी चाहिए (अनु. 134.5)।
- नियम पितरों के श्राद्ध को 'अन्वाहार्य' कहते हैं; उसके लिए विशेष विधि पहले कल्पित की गई (अनु. 134.6)।
- नियम पुण्य किसी भी दिन श्राद्ध किया जाए, पितामह प्रसन्न होते हैं; पिण्डान्वाहार्यक श्राद्ध प्रति मास करना चाहिए; अग्निहोत्री ब्राह्मण को चन्द्रक्षय (अमावास्या) के दिन पितृयज्ञ समाप्त करके करना चाहिए (अनु. 134.7)।
- नियम पिण्डों का मासिक श्राद्ध ही अन्वाहार्य है; उसे नियमपूर्वक, हाथ जोड़कर, शुचि होकर कुछ अन्य हवियों के साथ करना चाहिए (अनु. 134.8)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 1 नियम KK 13-1-134-1

चातुर्वर्ण्यस्य धर्मात्मन्धर्माः प्रोक्ता यथा त्वया ।
तथैव मे श्राद्धविधिं कृत्स्नं प्रब्रूहि पार्थिव ॥

↩ वापस: ↩ उ.95

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 2 नियम KK 13-1-134-2

युधिष्ठिरेणैवमुक्तो भीष्मः शान्तनवस्तदा ।
इमं श्राद्धविधिं कृत्स्नं वक्तुं समुपचक्रमे ॥

↩ वापस: ↩ उ.95

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 3 पुण्य KK 13-1-134-3

शृणुष्वावहितो राजञ्श्राद्धकर्मविधिं शुभम् ।
धन्यं यशस्यं पुत्रीयं पितृयज्ञं परन्तप ॥

↩ वापस: ↩ उ.95

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 4 नियम KK 13-1-134-4

देवासुरमनुष्याणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् ।
पिशाचकिन्नराणां च पूज्या वै पितरः सदा ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.95

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 5 नियम KK 13-1-134-5

पितॄन्पूज्यादितः पश्चाद्देवतास्तर्पयन्ति वै ।
तस्मात्तान्सर्वयत्नेन पुरुषः पूजयेत्सदा ॥

↩ वापस: ↩ अ ↩ उ.95

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 6 नियम KK 13-1-134-6

अन्वाहार्यं महाराज पितॄणां श्राद्धमुच्यते ।
तस्माद्विशेषविधिना विधिः प्रथमकल्पितः ॥

↩ वापस: ↩ उ.95

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 7 नियम पुण्य KK 13-1-134-7

सर्वेष्वहःसु प्रीयन्ते कृते श्राद्धे पितामहाः ।
पिण्डान्वाहार्यकं श्राद्धं कुर्यान्मासानुमासिकम् ।
पितृयज्ञं तु निर्वर्त्य विप्रश्चन्द्रक्षयेऽग्निमान् ॥

↩ वापस: ↩ उ.95

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 134, श्लोक 8 नियम KK 13-1-134-8

पिण्डानां मासिकश्राद्धमन्वाहार्यं विदुर्बुधाः ।
तदामिषेण कुर्वीत प्रयतः प्राञ्जलिः शुचिः ॥

↩ वापस: ↩ उ.95

उ.96 पितृमेध — पितर वैसे ही प्रतीक्षा करते हैं जैसे वर्षा की प्रतीक्षा की जाती है

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से नियम

- नियम उमा ने पूछा कि पितर सबके लिए पूज्य हैं और सर्वसम्पत्ति देने वाले हैं; पितृमेध के विषय में बताइए (अनु. 238.1)।
- नियम महेश्वर ने कहा कि मैं पितृमेध का देश, काल, विधान और शुभाशुभ बताऊँगा; पितर लोकों में पूज्य हैं, देवताओं के भी देवता, शुचि, निर्मल, पुण्य और दक्षिण दिशा के आश्रित हैं (अनु. 238.2–3)।
- नियम जैसे पृथ्वी पर सब प्राणी वर्षा की प्रतीक्षा करते हैं, वैसे ही पितर लोक में पितृमेध की प्रतीक्षा करते हैं (अनु. 238.4)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 1 नियम KK 13-1-238-1

उमोवाच —
।
पितृमेधः कथं देव तन्मे शंसितुमर्हसि ।
सर्वेषां पितरः पूज्याः सर्वसम्पत्प्रदायिनः ॥

↩ वापस: ↩ उ.96

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 2 नियम KK 13-1-238-2

पितृमेधं प्रवक्ष्यामि यथावत्तन्मना शृणु ।
देशकालौ विधानं च तत्क्रियायाः शुभाशुभम् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.96

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 3 नियम KK 13-1-238-3

लोकेषु पितरः पूज्या देवतानां च देवताः ।
शुचयो निर्मलाः पुण्या दक्षिणां दिशमाश्रिताः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.96

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 4 नियम KK 13-1-238-4

यथा वृष्टिं प्रतीक्षन्ते भूमिष्ठाः सर्वजन्तवः ।
पितरश्च तथा लोके पितृमेधं शुभेक्षणे ॥

↩ वापस: ↩ अ ↩ उ.96

उ.97 हव्य देवताओं के लिए, कव्य पितरों के लिए — पहले पितरों की पूजा करनी चाहिए

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से (नियम) (पाप) (पुण्य)

- नियम हव्य और कव्य पर आश्रित कर्म दो प्रकार का है; हव्यक्रिया देवताओं का और कव्य पितरों का पोषण करता है (अनु. 238.47)।
- नियम हव्यकर्म प्रसव्य रूप से मंगल-द्रव्यों के साथ, और कव्य अपसव्य रूप से अमंगल-द्रव्यों के साथ किया जाता है (अनु. 238.48)।
- नियम देव, असुर और गंधर्व भी पितरों की पूजा करते हैं; श्राद्धों से पोषित पितर बदले में उनका पोषण करते हैं (अनु. 238.49)।
- पाप पहले पितरों की पूजा किए बिना क्रिया करने वाले के फल को राक्षस और पिशाच भोगते हैं (अनु. 238.50)।
- नियम पुण्य इसलिए पृथ्वी पर मनुष्यों को हव्य-कव्य क्रियाएँ करनी चाहिए — मानव-जन्म ही कर्मक्षेत्र है, और कहीं नहीं; कव्य से संतति और हव्य से विविध ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं (अनु. 238.51–52)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 47 नियम KK 13-1-238-47

द्विविधं क्रियते कर्म हव्यकव्यसमाश्रितम्।
तयोर्हव्यक्रिया देवान्कव्यमाप्यायते पितॄन्।

↩ वापस: (↩ उ.97)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 48 नियम KK 13-1-238-48

प्रसव्यं मङ्गलैर्द्रव्यैर्हव्यकर्म विधीयते।
अपसव्यममङ्गल्यैः कव्यं चापि विधीयते॥

↩ वापस: (↩ उ.97)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 49 नियम KK 13-1-238-49

सदेवासुरगन्धर्वाः पितॄनभ्यर्चयन्ति च।
आप्यायन्ते च ते श्राद्धैः पुनराप्याययन्ति तान्॥

↩ वापस: (↩ अ.0 · पितृदेवता) (↩ उ.97)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 50 पाप KK 13-1-238-50

अनिष्ट्वा च पितॄन्पूर्वं यः क्रियां प्रकरोति चेत्।
रक्षांसि च पिशाचाश्च फलं भोक्ष्यन्ति तस्य तत्॥

↩ वापस: (↩ अ.3 · पाप) (↩ उ.97)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 51 नियम पुण्य KK 13-1-238-51

हव्यकव्यक्रियास्तस्मात्कर्तव्या भुवि मानुषैः।
कर्मक्षेत्रं हि मानुष्यं तदन्यत्र न विद्यते॥

↩ वापस: (↩ अ.0 · पितृदेवता) (↩ उ.97)

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 52 नियम पुण्य KK 13-1-238-52

कव्येन सन्ततिर्दृष्टा हव्ये भूतिः पृथग्विधाः।
इति ते कथितं देवि देवगुह्यं सनातनम्॥

↩ वापस: (↩ अ.0 · पितृदेवता) (↩ उ.97)

उ.98 देवताओं और पितृदेवताओं का मुख अग्नि ही है

वक्ता / कथन: अग्निदेव भृगु महर्षि से (सौति द्वारा कहा गया) नियम

- नियम वेदविधि से अग्नि में डाली गई हवि से देवता और पितृदेवता तृप्त होते हैं (आदि. 7.7)।
- नियम जल ही देवगण हैं, जल ही पितृगण हैं; दर्श-पौर्णमास याग पितृदेवताओं सहित देवताओं के हैं; पर्व-दिनों में देवता और पितृदेवता एक रूप में भी और अलग-अलग भी दिखाई देते हैं (आदि. 7.8–9)।
- नियम अग्नि में होम किए गए को देवता और पितृदेवता भोगते हैं; अग्नि ही उनका मुख है (आदि. 7.10)।
- नियम अमावस्या को पितृदेवताओं के लिए और पूर्णिमा को देवताओं के लिए अग्नि-मुख से ही होम होता है; वे उस हवि को भोगते हैं (आदि. 7.11)।

महाभारत › आदिपर्व › पौलोमपर्व › अध्याय 7, श्लोक 7 नियम KK 1-4-7-7

वेदोक्तेन विधानेन मयि यद्धूयते हविः।
देवताः पितरश्चैव तेन तृप्ता भवन्ति वै॥

↩ वापस: ↩ उ.98

महाभारत › आदिपर्व › पौलोमपर्व › अध्याय 7, श्लोक 8 नियम KK 1-4-7-8

आपो देवगणाः सर्वे आपः पितृगणास्तथा।
दर्शश्च पौर्णमासश्च देवानां पितृभिः सह॥

↩ वापस: ↩ उ.98

महाभारत › आदिपर्व › पौलोमपर्व › अध्याय 7, श्लोक 9 नियम KK 1-4-7-9

देवताः पितरस्तस्मात्पितरश्चापि देवताः।
एकीभूताश्च दृश्यन्ते पृथक्त्वेन च पर्वसु॥

↩ वापस: ↩ उ.98

महाभारत › आदिपर्व › पौलोमपर्व › अध्याय 7, श्लोक 10 नियम KK 1-4-7-10

देवताः पितरश्चैव भुञ्जते मयि यद्धुतम्।
देवतानां पितॄणां च मुखमेतदहं स्मृतम्॥

↩ वापस: ↩ उ.98

महाभारत › आदिपर्व › पौलोमपर्व › अध्याय 7, श्लोक 11 नियम KK 1-4-7-11

अमावास्यां हि पितरः पौर्णमास्यां हि देवताः।
मन्मुखेनैव हूयन्ते भुञ्जते च हुतं हविः॥

↩ वापस: ↩ उ.98

उ.99 निवाप में अग्नि को पहला भाग — उसका कारण

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से उदाहरण नियम पुण्य

- उदाहरण यह विधि प्रवर्तित होने के बाद सभी महर्षियों ने विधिदृष्ट कर्म से पितृयज्ञ किए; धर्मनित्य ऋषियों ने निवाप करके, व्रत-नियम के साथ तीर्थजलों से तर्पण भी किए (अनु. 139.1–2).
- नियम चारों वर्णों द्वारा दिए गए निवापों से तृप्त पितृदेवता उस अन्न को पचा न सकने से पीड़ित होकर सोम की शरण में गए; सोम के कहने पर मेरुशिखर पर स्थित ब्रह्मा के पास गए (अनु. 139.3–7).
- नियम पितरों ने कहा — 'निवाप के अन्न से हम पीड़ित हैं, हमारा कल्याण कीजिए'; तब ब्रह्मा ने कहा कि उनके पास बैठे अग्नि कल्याण करेंगे (अनु. 139.8–9).
- नियम अग्नि ने कहा — 'निवाप में तुम्हारे साथ मैं भी भोजन करूँगा, मेरे साथ तुम अन्न पचा लोगे'; इससे पितरों की पीड़ा दूर हुई और वे प्रसन्न हुए; इसीलिए अग्नि को पहला भाग दिया जाता है (अनु. 139.10–11).
- नियम पुण्य अग्निपूर्वक निवाप होने पर ब्रह्मराक्षस उस निवाप पर अधिकार नहीं कर सकते (अनु. 139.12).

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 1 उदाहरण KK 13-1-139-1

तथा विधौ प्रवृत्ते तु सर्व एव महर्षयः ।
पितृयज्ञानकुर्वन्त विधिदृष्टेन कर्मणा ॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 2 उदाहरण KK 13-1-139-2

ऋषयो धर्मनित्यास्तु कृत्वा निवपनान्युत ।
तर्पणं चापि कुर्वन्त तीर्थाम्भोभिर्यतव्रताः ॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 3 नियम KK 13-1-139-3

निवापैर्दीयमानैश्च चातुर्वर्ण्येन भारत ।
तर्पिताः पितरो देवास्तत्रान्नं जरयन्ति वै ॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 4 नियम KK 13-1-139-4

अजीर्णैस्त्वभिहन्यन्ते ते देवाः पितृभिः सह ॥
सोममेवाभ्यपद्यन्त तदा ह्यन्नाभिपीडिताः ॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 5 नियम KK 13-1-139-5

तेऽब्रुवन्सोममासाद्य पितरोऽजीर्णपीडिताः ।
निवापान्नेन पीड्यामः श्रेयो नोत्र विधीयताम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 6 नियम KK 13-1-139-6

तान्सोमः प्रत्युवाचाथ श्रेयश्चेदीप्सितं सुराः ।
स्वयम्भूसदनं यात स वः श्रेयोऽभिधास्यति ॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 7 नियम KK 13-1-139-7

ते सोमवचनाद्देवाः पितृभिः सह भारत ।
मेरुशृङ्गे समासीनं पितामहमुपागमन् ॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 8 नियम KK 13-1-139-8

पितर ऊचुः
निवापान्नेन भगवन्भृशं पीड्यामहे वयम्।
प्रसादं कुरु नो देव श्रेयो नः संविधीयताम्॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 9 नियम KK 13-1-139-9

इति तेषां वचः श्रुत्वा स्वयम्भूरिदमब्रवीत्।
एष मे पार्श्वतो वह्निर्युष्मच्छ्रेयो विधास्यति।।

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 10 नियम KK 13-1-139-10

अग्निरुवाच
सहितास्तस्य भोक्ष्यामो निवापे समुपस्थिते।
जरयिष्यथ चाप्यन्नं मया सार्धं न संशयः॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 11 नियम KK 13-1-139-11

एतच्छ्रुत्वा तु पितरस्ततस्ते विज्वराऽभवन्।
एतस्मात्कारणाच्चाग्नेः प्राग्भागो दीयते नृप॥

↩ वापस: ↩ उ.99

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 12 नियम पुण्य KK 13-1-139-12

निवापे चाग्निपूर्वं वै निवृत्ते पुरुषर्षभ।
न ब्रह्मराक्षसास्तं वै निवापं धर्षयन्त्युत॥

↩ वापस: ↩ उ.99

उ.100 श्राद्ध में भाग के अधिकारी विश्वेदेवों के नाम

वक्ता / कथन: अत्रि निमि से — भीष्म युधिष्ठिर से नियम

- नियम अग्निमुख विश्वेदेव भाग के अधिकारी हैं; उनके नाम बताता हूँ (अनु. 138.29)।
- नियम सह, कृति, विपाप्मा, पुण्यकृत्, पावन, ग्राम्य, क्षेम्य, समूह, दिव्यसानु, विवस्वान्, वीर्यवान्, श्रीमान्, कीर्तिमान्, कृत, जितात्मा, मुनिवीर्य, दीप्तरोम, भयंकर, अनुकर्मा, प्रतीत, प्रदाता, अंशुमान्, शैलाभ, परमक्रोधी, धीरोष्णी, भूपति, स्रज, वज्रीवरी (अनु. 138.30–33)।
- नियम विद्युद्वर्चस्, सोमवर्चस्, सूर्यश्री, सोमप, सूर्यसावित्र, दत्तात्मा, पुंडरीयक, उष्णीनाभ, नभोद, विश्वायु, दीप्ति, चमूहर, सुरेश, व्योमारि, शंकर, भव, ईश, कर्ता, कृति, दक्ष, भुवन, दिव्यकर्मकृत्, गणित, पंचवीर्य, आदित्य, रश्मिवान्, सप्तकृत्, सोमवर्चस्, विश्वकृत्, कवि, अनुगोप्ता, सुगोप्ता, नप्ता, ईश्वर — ये काल की गति का अनुसरण करने वाले महाभाग हैं (अनु. 138.33–37)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 29 नियम KK 13-1-138-29

विश्वे चाग्निमुखा देवाः सङ्ख्याताः पूर्वमेव ते।
तेषां नामानि वक्ष्यामि भागार्हाणां महात्मनाम्॥

↩ वापस: ↩ उ.100

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 30 नियम KK 13-1-138-30

सहः कृतिर्विपाप्मा च पुण्यकृत्पावनस्तथा।
ग्राम्यः क्षेम्यः समूहश्च दिव्यसानुस्तथैव च॥

↩ वापस: ↩ उ.100

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 31 नियम KK 13-1-138-31

विवस्वान्वीर्यवाञ्श्रीमान्कीर्तिमान्कृत एव च ।
जितात्मा मुनिवीर्यश्च दीप्तरोमा भयङ्करः ॥

↩ वापस: ↩ उ.100

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 32 नियम KK 13-1-138-32

अनुकर्मा प्रतीतश्च प्रदाताऽप्यंशुमांस्तथा ।
शैलाभः परमक्रोधी धीरोष्णी भूपतिस्तथा ॥

↩ वापस: ↩ उ.100

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 33 नियम KK 13-1-138-33

स्रजो वज्रीवरी चैव विश्वेदेवाः सनातनाः ।
विद्युद्वर्चाः सोमवर्चाः सूर्यश्रीश्चेति नामतः ॥

↩ वापस: ↩ उ.100 ↩ उ.100

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 34 नियम KK 13-1-138-34

सोमपः सूर्यसावित्रो दत्तात्मा पुण्डरीयकः ।
उष्णीनाभो नभोदश्च विश्वायुर्दीप्तिरेव च ॥

↩ वापस: ↩ उ.100

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 35 नियम KK 13-1-138-35

चमूहरः सुरेशश्च व्योमारिः शङ्करो भवः ।
ईशः कर्ता कृतिर्दक्षो भुवनो दिव्यकर्मकृत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.100

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 36 नियम KK 13-1-138-36

गणितः पञ्चवीर्यश्च आदित्यो रश्मिवांस्तथा ।
सप्तकृत्सोमवर्चाश्च विश्वकृत्कविरेव च ॥

↩ वापस: ↩ उ.100

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 138, श्लोक 37 नियम KK 13-1-138-37

अनुगोप्ता सुगोप्ता च नप्ता चेश्वर एव च ।
कीर्तितास्ते महाभागाः कालस्य गतिगोचराः ॥

↩ वापस: ↩ उ.100

उ.101 तीन पिण्डों की गति — चन्द्र, पुत्रप्राप्ति, अग्नि

वक्ता / कथन: पितृदेवता देवदूत से — भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को कहा गया नियम पुण्य

- नियम दूत ने फिर पूछा कि (ऊपर उठाया गया) एक पिण्ड नीचे किसे पहुँचता है, किस देवता को तृप्त करता है, पितरों का उद्धार कैसे करता है; अनुमति पाकर पत्नी जो मध्यम पिण्ड खाती है वह किसलिए; और अग्नि में जाने वाले अन्तिम पिण्ड की गति क्या है (अनु. 188.28–32)।
- नियम यह महान रहस्य है; देवता और मुनि भी पितृकार्य के निश्चय को इस प्रकार नहीं जानते — चिरंजीवी, पितृभक्त, वर प्राप्त किए हुए महायशस्वी विप्र को छोड़कर (अनु. 188.33–36)।
- नियम पुण्य जल में जाने वाला पिण्ड चन्द्रमा को तृप्त करता है; चन्द्रमा देवताओं और पितरों को तृप्त करता है (अनु. 188.37)।
- नियम पुण्य अनुमति पाई हुई पत्नी मध्यम पिण्ड खाए तो पुत्र की कामना करने वाले को पितामह पुत्र देते हैं (अनु. 188.38)।
- नियम पुण्य अग्नि में दिए गए पिण्ड से पितर तृप्त होकर प्रसन्नता से कामनाएँ प्रदान करते हैं (अनु. 188.39)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 28 नियम KK 13-1-188-28

आनुपूर्व्येण पिण्डानां प्रविभागः पृथक्पृथक् ।
पितॄणां त्रिषु सर्वेषां निरुक्तं कथितं त्वया ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 29 नियम KK 13-1-188-29

एकः समुद्धृतः पिण्डो ह्यधस्तात्कस्य गच्छति ।
कं वा प्रीणयते देवं कथं तारयते पितॄन् ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 30 नियम KK 13-1-188-30

मध्यमं तु तदा पत्नी भुङ्क्तेऽनुज्ञातमेव हि ।
किमर्थं पितरस्तस्य कव्यमेव च भुञ्जते ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 31 नियम KK 13-1-188-31

अत्र यस्त्वन्तिमः पिण्डो गच्छते जातवेदसम् ।
भवते का गतिस्तस्य कं वा समनुगच्छति ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 32 नियम KK 13-1-188-32

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं पिण्डेषु त्रिषु या गतिः ।
फलं वृत्तिं च मार्गं च यश्चैनं प्रतिपद्यते ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 33 नियम KK 13-1-188-33

पितर ऊचुः
सुमहानेष प्रश्नो वै यस्त्वया समुदीरितः ।
रहस्यमद्भुतं चापि पृष्टाः स्म गगनेचर ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 34 नियम KK 13-1-188-34

एतदेव प्रशंसन्ति देवाश्च मुनयस्तथा ।
तेऽप्येवं नाभिजानन्ति पितृकार्यविनिश्चयम् ।
वर्जयित्वा महात्मानं चिरजीविनमुत्तमम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 35 नियम KK 13-1-188-35

पितृभक्तस्तु यो विप्रो वरलब्धो महायशाः ।
त्रयाणामपि पिण्डानां श्रुत्वा भगवतो गतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 36 नियम KK 13-1-188-36

देवदूतेन यः पृष्टः श्राद्धस्य विधिनिश्चयः ।
गतिं त्रयाणां पिण्डानां शृणुष्वावहितो मम ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 37 नियम पुण्य KK 13-1-188-37

अपो गच्छति यो ह्यत्र शशिनं ह्येष प्रीणयेत् ।
शशी प्रीणयते देवान्पितॄंश्चैव महामते ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 38 नियम पुण्य KK 13-1-188-38

भुङ्क्ते तु पत्नी यं चैषामनुज्ञाता तु मध्यमम् ।
पुत्रकामाय पुत्रं तु प्रयच्छन्ति पितामहाः ॥

↩ वापस: ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.101

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 188, श्लोक 39 नियम पुण्य KK 13-1-188-39

हव्यवाहे तु यः पिण्डो दीयते तन्निबोध मे ।
पितरस्तेन तृप्यन्ति प्रीताः कामान्दिशन्ति च ।
एतत्ते कथितं सर्वं त्रिषु पिण्डेषु या गतिः ॥

↩ वापस: ↩ उ.101

उ.102 पितर कौन हैं — पिण्डसम्बन्ध से प्रेतमुक्ति

वक्ता / कथन: भीष्म युधिष्ठिर से नियम पुण्य

- नियम पितामह (ब्रह्मा), पुलस्त्य, वसिष्ठ, पुलह, अंगिरा, क्रतु, कश्यप — ये महायोगेश्वर हैं; ये ही पितर हैं; यही श्रेष्ठ श्राद्धविधि है (अनु. 139.21–22)।
- पुण्य उस कर्म से, पिण्डसम्बन्ध के कारण, प्रेत मुक्त हो जाते हैं (अनु. 139.22)।
- नियम यह आगम के अनुसार श्राद्ध की उत्पत्ति का वृत्तान्त है (अनु. 139.23)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 21 नियम KK 13-1-139-21

पितामहः पुलस्त्यश्च वसिष्ठः पुलहस्तथा ।
अङ्गिराश्च क्रतुश्चैव कश्यपश्च महानृषिः ।
एते कुरुकुलश्रेष्ठ महायोगेश्वराः स्मृताः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.102

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 22 नियम पुण्य KK 13-1-139-22

एते च पितरो राजन्नेष श्राद्धविधिः परः ।
प्रेतास्तु पिण्डसम्बन्धान्मुच्यन्ते तेन कर्मणा ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ अ.2 · सद्गति ↩ उ.102 ↩ उ.102

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 139, श्लोक 23 नियम KK 13-1-139-23

इत्येषा पुरुषश्रेष्ठ श्राद्धोत्पत्तिर्यथागमम् ।
व्याख्याता पूर्वनिर्दिष्टा किं ते वक्ष्याम्यतः परम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.102

उ.103 मृत लोग पुनर्जन्म ले लें तो भी पितर कैसे तृप्त होते हैं

वक्ता / कथन: महेश्वर उमादेवी से नियम

- नियम उमा ने पूछा कि पृथ्वी पर मरे हुए प्राणी कर्मवश शीघ्र ही विभिन्न जातियों में फिर जन्म लेते हैं; तब पितर देवताओं की तरह कैसे रहते हैं, उनका देश कौन-सा है, वे पिण्ड कैसे खाते हैं, और मृतकों को दिए गए अन्न से पोषण कैसे होता है (अनु. 238.39–41)।
- नियम उस प्रश्न से सारी सभा प्रसन्न हुई; महेश्वर ने यह कहते हुए आरम्भ किया कि यह रहस्यों में परम रहस्य है (अनु. 238.42–43)।
- नियम देवगणों की तरह ही पितृगण दक्षिण दिशा में रहते हैं (अनु. 238.44)।
- नियम प्रेतों के उद्देश्य से मनुष्यों द्वारा की गई पूजा से पितर तृप्त होते हैं; प्रेत पितर नहीं हैं (अनु. 238.45)।
- नियम जैसे उत्तर में देवता यज्ञकर्मों से रमण करते हैं, वैसे ही दक्षिण में (पितर) विभिन्न मखों से तृप्त होते हैं (अनु. 238.46)।

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 39 नियम KK 13-1-238-39

उमोवाच —

।

भगवन्देवदेवेश मृतास्ते भुवि जन्तवः ।
नानाजातिषु जायन्ते शीघ्रं कर्मवशात्पुनः ॥

↩ वापस: ↩ उ.103

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 40 नियम KK 13-1-238-40

पितरः स्वस्ति ते तत्र कथं तिष्ठन्ति देववत् ।
पितॄणां कतमो देशः पिण्डानश्नन्ति वै कथम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.103

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 41 नियम KK 13-1-238-41

अन्ने दत्ते मृतानां तु कथमाप्यायनं भवेत् ।
एवं मया संशयितं भगवन्वक्तुमर्हसि ॥

↩ वापस: ↩ उ.103

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 42 नियम KK 13-1-238-42

एतद्विरुद्धं पृच्छन्त्यां रुद्राण्यां परिषद्भृशम् ।
बभूव सर्वा मुदिता श्रोतुं हि परमं हितम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.103

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 43 नियम KK 13-1-238-43

स्थाने संशयितं देवि शृणु कल्याणि तत्वतः ।
गुह्यानां परमं गुह्यं हितानां परमं हितम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.103

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 44 नियम KK 13-1-238-44

यथा देवगणा देवि तथा पितृगणाः प्रिये ।
दक्षिणस्यां दिशि शुभे सर्वे पितृगणाः स्थिताः ॥

↩ वापस: ↩ उ.103

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 45 नियम KK 13-1-238-45

प्रेतानुद्दिश्य या पूजा क्रियते मानुषैरिह ।
तेन तुष्यन्ति पितरो न प्रेताः पितरः स्मृताः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.103

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 46 नियम KK 13-1-238-46

उत्तरस्यां यथा देवा रमन्ते यज्ञकर्मभिः ।
दक्षिणस्यां तथा देवि तुष्यन्ति विविधैर्मखैः ॥

↩ वापस: ↩ उ.103

उ.104 पितरों का स्वरूप — उनके अधिपति, आहार, काल

वक्ता / कथन: भृगु भरद्वाज से (189); भीष्म युधिष्ठिर से (89, 122, 206); भीष्म श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए (46); व्यास शुक से (238); याज्ञवल्क्य जनक से (316) नियम

- नियम यज्ञक्रियाओं से देवता, निवाप (पितृदेवताओं को दिए जाने वाले अर्पण) से पितर, वेदविद्या के अभ्यास, श्रवण और धारण से ऋषि, और सन्तानोत्पत्ति से प्रजापति प्रसन्न होते हैं (शान्ति. 189.13)।
- नियम पितरों के लिए मनुष्यों का एक मास एक दिन-रात है; शुक्लपक्ष उनका दिन (कर्मकाल) है और कृष्णपक्ष उनकी रात (शान्ति. 238.49)।

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 189, श्लोक 13 नियम KK 12-3-189-13

अपि चात्र यज्ञक्रियाभिर्देवताः प्रीयन्ते निवापेन पितरो वेदविद्याभ्यासश्रवणधारणेन ऋषय अपत्योत्पादनेन प्रजापतिरिति ॥

↩ वापस: ↩ उ.104

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 49 नियम KK 12-3-238-49

पित्र्ये रात्र्यहनी मासः प्रविभागस्तयोः पुनः ।
शुक्लोऽहः कर्मचेष्टायां कृष्णः स्वप्नाय शर्वरी ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.104

उ.105 पितृदेवताओं की उत्पत्ति, उनके गण, स्वधा, कव्य

वक्ता / कथन: मैत्रेय विदुर से; शुक परीक्षित से नियम

- नियम ब्रह्मदेव ने स्वयं को बलवान मानकर साध्यगणों और पितृगणों को अपने अदृश्य (परोक्ष) रूप से रचा (भाग. 3.21.42)।
- नियम पितृदेवताओं ने उसी अदृश्य शरीर को अपना उत्पत्ति-स्थान स्वीकार किया; साध्यों और पितृदेवताओं को ज्ञानीजन जो अर्पण करते हैं, वे उसी के द्वारा होते हैं (भाग. 3.21.43)।
- नियम अग्निष्वात्त, बर्हिषद, सोम्य और आज्यप पितृदेवता हैं; इनमें साग्निक और अनग्निक हैं; दक्ष की पुत्री स्वधा इनकी पत्नी है (भाग. 4.1.63)।
- नियम पृथु द्वारा पृथ्वी के दोहन के वृत्तान्त में, श्राद्धदेवता पितृदेवताओं ने अर्यमा को बछड़ा बनाकर, कच्चे (बिना पकाए) मिट्टी के पात्र में श्रद्धा से 'कव्य' नामक दूध दुहा (भाग. 4.18.18)।

श्रीमद्भागवत › तृतीयस्कन्ध › अध्याय 21 › श्लोक 42 नियम भाग. 3.21.42

ऊर्जस्वन्तं मन्यमान आत्मानं भगवानजः ।
साध्यान् गणान् पितृगणान् परोक्षेणासृजत् प्रभुः ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.105

श्रीमद्भागवत › तृतीयस्कन्ध › अध्याय 21 › श्लोक 43 नियम भाग. 3.21.43

त आत्मसर्गं तत्कायं पितरः प्रतिपेदिरे ।
साध्येभ्यश्च पितृभ्यश्च कवयो यद् वितन्वते ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.105

श्रीमद्भागवत › चतुर्थस्कन्ध › अध्याय 1 › श्लोक 63 नियम भाग. 4.1.63

अग्निष्वात्ता बर्हिषदः सोम्याः पितर आज्यपाः ।
साग्नयोऽनग्नयस्तेषां पत्नी दाक्षायणी स्वधा ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.105

श्रीमद्भागवत › चतुर्थस्कन्ध › अध्याय 18 › श्लोक 18 नियम भाग. 4.18.18

वत्सेन पितरोऽर्यम्णा कव्यं क्षीरमधुक्षत ।
आमपात्रे महाभाग श्रद्धया श्राद्धदेवताः ॥

↩ वापस: ↩ उ.105

उ.106 पितृदेवताओं का दिन-रात और चंद्रमा की भूमिका

वक्ता / कथन: मैत्रेय विदुर से; शुक परीक्षित से नियम

- नियम शुक्ल और कृष्ण पक्ष मिलकर मनुष्यों का एक मास होता है; वही पितृदेवताओं का एक दिन-रात है (भाग. 3.12.11)।
- नियम चंद्रमा अपनी बढ़ती और घटती कलाओं से पूर्वपक्ष और अपरपक्ष के द्वारा पितृदेवताओं के दिन-रात बनाता है (भाग. 5.22.9)।

श्रीमद्भागवत › तृतीयस्कन्ध › अध्याय 12 › श्लोक 11 नियम भाग. 3.12.11

तयोः समुच्चये मासः पितॄणां तदहर्निशम् ।
द्वौ तावृतुः षडयनं दक्षिणं चोत्तरं दिवि ॥

↩ वापस: ↩ उ.106

श्रीमद्भागवत › पञ्चमस्कन्ध › अध्याय 22 › श्लोक 9 नियम भाग. 5.22.9

अथ चापूर्यमाणाभिरुपक्षीयमाणाभिश्च कलाभिः पितॄणामहोरात्राणि पूर्वपक्षापरपक्षाभ्यां वितन्वानः सर्वजीवनिवहप्राणो जीवश्चैकमेकं नक्षत्रं त्रिंशन्मुहुर्तैर्भुङ्क्ते ॥

↩ वापस: ↩ उ.106

उ.107 पितृलोक कहाँ है, पितृगण, पितृराज यम, अर्यमा

वक्ता / कथन: शुक परीक्षित से नियम

- नियम तीनों लोकों के बीच ही, दक्षिण दिशा में, पृथ्वी के नीचे और ब्रह्माण्ड-जल के ऊपर स्थित प्रदेश में अग्निष्वात्त आदि पितृगण निवास करते हुए, परम समाधि के साथ अपने गोत्र वालों के लिए सत्य आशीर्वाद ही चाहते रहते हैं (भाग. 5.24.6).

श्रीमद्भागवत › पञ्चमस्कन्ध › अध्याय 24 › श्लोक 6 नियम भाग. 5.24.6

अन्तराल एव त्रिजगत्यास्तु दिशि दक्षिणस्याम् अधस्ताद् भूमेरुपरिष्टादण्डजलाशयस्याग्निष्वात्तादयः पितृगणा यस्यां दिशि स्वानां गोत्राणां परमेण समाधिना सत्या एवाशिष आशासना निवसन्ति यत्र ह वाव भगवान् पितृराजो वैवस्वतः स्वविषयं प्रापितेषु स्वपुरुषैर्जन्तुषु सम्परेतेषु यथाकर्मावद्यमेवानुलक्षितभगवच्छासनः सगणो दमं धारयति ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.107

उ.108 दक्षिण दिशा – पितरों और विश्वेदेवों का निवास

वक्ता / कथन: गरुड़ गालव से नियम

- नियम दक्षिण दिशा में तीनों लोकों का पितृपक्ष (पितृ-समूह) प्रतिष्ठित है; ऊष्मप देवताओं का निवास भी वहीं है (उद्योग. 109.2)।
- नियम वहाँ विश्वेदेव सदा पितरों के साथ रहते हैं; लोकों में पूजित होते हुए उन्होंने (पितरों के साथ) समान भाग प्राप्त किया है (उद्योग. 109.3)।

महाभारत › उद्योगपर्व › भगवद्यानपर्व › अध्याय 109, श्लोक 2 नियम KK 5-6-109-2

अत्र लोकत्रयस्यास्य पितृपक्षः प्रतिष्ठितः ।
अत्रोष्मपाणां देवानां निवासः श्रूयते द्विज ॥

↩ वापस: ↩ उ.108

महाभारत › उद्योगपर्व › भगवद्यानपर्व › अध्याय 109, श्लोक 3 नियम KK 5-6-109-3

अत्र विश्वे सदा देवाः पितृभिः सार्धमासते ।
इज्यमानाः स्म लोकेषु संप्राप्तास्तुल्यभागताम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.108

उ.109 पितृऋण — श्राद्ध से चुकाना चाहिए

वक्ता / कथन: पराशर जनक से (298); अश्मा जनक से (27); व्यास युधिष्ठिर से (24) नियम

- नियम मनुष्य देवताओं, अतिथियों, भृत्यों, पितरों और स्वयं के प्रति ऋणी होकर जन्म लेता है; इसलिए उसे ऋणमुक्त होना चाहिए (शान्ति. 298.9).
- नियम महर्षियों का ऋण स्वाध्याय से, देवताओं का ऋण यज्ञकर्म से, पितरों का ऋण श्राद्धदान से और मनुष्यों का ऋण सत्कार से चुकता है (शान्ति. 298.10).
- नियम ब्रह्मचर्य का पालन करने के बाद संतान उत्पन्न करके, यज्ञ करके, बिना असूया के पितृ-देव-मनुष्य ऋणों से मुक्त होना चाहिए (शान्ति. 27.55).

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 298, श्लोक 9 नियम KK 12-3-298-9

देवतातिथिभृत्येभ्यः पितृभ्यश्चात्मनस्तथा ।
ऋणवाञ्जायते मर्त्यस्तस्मादनृणतां व्रजेत् ॥

↩ वापस: ↩ उ.109

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 298, श्लोक 10 नियम KK 12-3-298-10

स्वाध्यायेन महर्षिभ्यो देवेभ्यो यज्ञकर्मणा ।
पितृभ्यः श्राद्धदानेन नृणामभ्यर्चनेन च ॥

↩ वापस: ↩ उ.109

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 27, श्लोक 55 नियम KK 12-1-27-55

चरितब्रह्मचर्यो हि प्रजायेत यजेत च ।
पितृदेवमनुष्याणामानृण्यादनसूयकः ॥

↩ वापस: ↩ उ.109

उ.110 पितृ ऋण — पुत्रों और श्राद्धों से मुक्ति

वक्ता / कथन: पाण्डुराज कुन्ती से; अन्य उदाहरण नियम पाप पुण्य

- नियम मनुष्य देव, ऋषि, पितृ और मनुष्यों के प्रति चार ऋणों के साथ जन्म लेता है; जो समय पर उनसे मुक्त नहीं होता उसके लिए उत्तम लोक नहीं हैं (आदि. 126.16–17).
- नियम वह यज्ञ से देवताओं को, स्वाध्याय-तप से ऋषियों को, पुत्रों और श्राद्धों से पितृदेवताओं को, और दया से मनुष्यों को प्रसन्न करता है (आदि. 126.18).
- उदाहरण नियम पाण्डु ने कहा कि यद्यपि वे शेष तीन ऋणों से मुक्त हो गए, पर पितृ ऋण नहीं चुका, और वह विशेष है (आदि. 126.19).
- नियम पाप पाण्डु ने कहा कि देह नष्ट होने पर पितृदेवताओं का नाश होता है, यह निश्चित है (आदि. 126.20).
- नियम शन्तनु ने भीष्म से कहा कि संतान से मनुष्य पितृदेवताओं के ऋण से मुक्त होता है (आदि. 107.72).
- पुण्य देवताओं ने पाण्डु से कहा कि पुत्रों के होने से तुम पितृ ऋण से मुक्त होकर, पुण्यात्मा होकर स्वर्ग प्राप्त करोगे (आदि. 132.62).
- उदाहरण पुण्य एकचक्रा के ब्राह्मण ने कहा — वह पुत्र, जिसके जन्म लेते ही पितृदेवता उसका मुख देखकर स्वर्ग चले गए, और जिसके तेज से वह स्वयं पितृ ऋण से मुक्त हुआ (आदि. 171.58).
- उदाहरण पुण्य जरत्कारु व्रतों और स्वाध्याय से ऋणमुक्त होकर, संतान से पितामहों का भार दूर करके, उनके साथ स्वर्ग पहुँचे (आदि. 15.8–10).

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 126, श्लोक 16 नियम KK 1-7-126-16

पाण्डुरुवाच —
।
चतुर्भिर्ऋणवानित्थं जायते मनुजो भुवि ।
पितृदेवमनुष्याणामृषीणामथ भामिनि ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 126, श्लोक 17 नियम KK 1-7-126-17

एतेभ्यस्तु यथाकालं यो न मुच्येत धर्मवित् ।
न तस्य लोकाः सन्तीति तता लोकविदो विदुः ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 126, श्लोक 18 नियम KK 1-7-126-18

यज्ञेन देवान्प्रीणाति स्वाध्यायात्तपसा ऋषीन् ।
पुत्रैः श्राद्धैरपि पितॄनानृशंस्येन मानवान् ॥

↩ वापस: ↩ अ.0 · पितृदेवता ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 126, श्लोक 19 उदाहरण नियम KK 1-7-126-19

ऋषिदेवमनुष्याणामृणान्मुक्तोऽस्मि धर्मतः ।
पितॄणां तु न मुक्तोऽस्मि तच्च तेभ्यो विशिष्यते ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 126, श्लोक 20 नियम पाप KK 1-7-126-20

देहनाशे भवेन्नाशः पितॄणामेष निश्चयः ।
इतरेषां त्रयाणां तु नाशे ह्यात्मा विनश्यति ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 107, श्लोक 72 नियम KK 1-7-107-72

अपत्येनानृणो लोके पितॄणां नास्ति संशयः ।
एषा त्रयी पुराणानां देवतानां च शाश्वती ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 132, श्लोक 62 पुण्य KK 1-7-132-62

पितॄणामृणनिर्मुक्तः स्वर्गं प्राप्स्यसि पुण्यभाक् ।
इत्युक्त्वा देवताः सर्वा विप्रजग्मुर्यथागतम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › बकवचपर्व › अध्याय 171, श्लोक 58 उदाहरण पुण्य KK 1-10-171-58

यस्य जातस्य पितरो मुखं दृष्ट्वा दिवं गताः ।
अहं मुक्तः पितृऋणाद्यस्य जातस्य तेजसा ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › आस्तीकपर्व › अध्याय 15, श्लोक 8 उदाहरण पुण्य KK 1-5-15-8

व्रतैश्च विविधैर्ब्रह्मन्स्वाध्यायैश्चानृणोऽभवत् ।
देवांश्च तर्पयामास यज्ञैर्विविधदक्षिणैः ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › आस्तीकपर्व › अध्याय 15, श्लोक 9 उदाहरण पुण्य KK 1-5-15-9

ऋषींश्च ब्रह्मचर्येम सन्तत्या च पितामहान् ।
अपहृत्य गुरं भारं पितॄणां संशितव्रतः ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

महाभारत › आदिपर्व › आस्तीकपर्व › अध्याय 15, श्लोक 10 उदाहरण पुण्य KK 1-5-15-10

जरत्कारुर्गतः स्वर्गं सहितः स्वैः पितामहैः ।
आस्तीकं च सुतं प्राप्य धर्मं चानुत्तमं मुनिः ॥

↩ वापस: ↩ उ.110

उ.111 संतानहीन को पितृलोक का फल नहीं – पुत्र पितरों को तारता है

वक्ता / कथन: देवता मन्दपाल से (आदि. 255); बृहद्रथ चण्डकौशिक से (सभा. 17); गालव उशीनर से (उद्योग. 118) उदाहरण नियम पाप पुण्य

- उदाहरण पाप महातपस्वी मन्दपाल देह छोड़कर पितृलोक गए, फिर भी तपस्या से अर्जित लोकों का फल उन्हें नहीं मिला (आदि. 255.7)।
- नियम मनुष्य ऋणों के साथ जन्म लेते हैं; वे यज्ञ, तपस्या और संतान से चुकते हैं; संतान न होने के कारण तुम्हारे लोक बन्द हो गए हैं, संतान पाओगे तो उनका भोग करोगे — ऐसा देवताओं ने कहा (आदि. 255.11–13)।
- नियम पुण्य 'पुत्' नामक नरक से पुत्र पिता की रक्षा करता है — ऐसी श्रुति है; अतः संतान के लिए प्रयत्न करना चाहिए (आदि. 255.14)।
- नियम पाप संतानहीन के लिए न कीर्ति होती है, न अक्षय स्वधा — ऐसा बृहद्रथ ने कहा (सभा. 17.29)।
- नियम पाप पुण्य पुत्र रूपी नौका से पितरों को और स्वयं को तारना चाहिए; पुत्र का फल पाने वाला स्वर्ग से नहीं गिरता, संतानहीन लोग जिस घोर नरक में जाते हैं, वहाँ नहीं जाता — ऐसा गालव ने कहा (उद्योग. 118.7–8)।

महाभारत › आदिपर्व › मयदर्शनपर्व › अध्याय 255, श्लोक 7 उदाहरण पाप KK 1-19-255-7

स गत्वा तपसः पारं देहमुत्सृज्य भारत।
जगाम पितृलोकाय न लेभे तत्र तत्फलम्॥

↩ वापस: ↩ उ.111

महाभारत › आदिपर्व › मयदर्शनपर्व › अध्याय 255, श्लोक 11 नियम KK 1-19-255-11

देवा ऊचुः —
।
ऋणिनो मानवा ब्रह्मञ्जायन्ते येन तच्छृणु।
क्रियाभिर्ब्रह्मचर्येण प्रजया च न संशयः॥

↩ वापस: ↩ उ.111

महाभारत › आदिपर्व › मयदर्शनपर्व › अध्याय 255, श्लोक 12 नियम KK 1-19-255-12

तदपाक्रियते सर्वं यज्ञेन तपसा सुतैः।
तपस्वी यज्ञकृच्चासि न च ते विद्यते प्रजा॥

↩ वापस: ↩ उ.111

महाभारत › आदिपर्व › मयदर्शनपर्व › अध्याय 255, श्लोक 13 नियम KK 1-19-255-13

त इमे प्रसवस्यार्थे तव लोकाः समावृताः।
प्रजायस्व ततो लोकानुपभोक्ष्यसि पुष्कलान्॥

↩ वापस: ↩ उ.111

महाभारत › आदिपर्व › मयदर्शनपर्व › अध्याय 255, श्लोक 14 नियम पुण्य KK 1-19-255-14

पुन्नाम्नो नरकात्पुत्रस्त्रायते पितरं श्रुतिः।
तस्मादपत्यसन्ताने यतस्व ब्रह्मसत्तम॥

↩ वापस: ↩ उ.111

महाभारत › सभापर्व › मन्त्रपर्व › अध्याय 17, श्लोक 29 नियम पाप KK 2-1-17-29

सोऽहं तपश्चरिष्यामि पत्नीभ्यां सहितो वने।
नाप्रजस्य मुने कीर्तिः स्वधा चैवाक्षया भवेत्।
एवमुक्तः स राज्ञा तु मुनिः कारुण्यमागतः॥

↩ वापस: ↩ उ.111

महाभारत › उद्योगपर्व › भगवद्यानपर्व › अध्याय 118, श्लोक 7 नियम पाप पुण्य KK 5-6-118-7

अनपत्योऽसि राजर्षे पुत्रौ जनय पार्थिव।
पितॄन्पुत्रप्लवेन त्वमात्मानं चैव तारय॥

↩ वापस: ↩ उ.111

महाभारत › उद्योगपर्व › भगवद्यानपर्व › अध्याय 118, श्लोक 8 नियम पाप पुण्य KK 5-6-118-8

न पुत्रफलभोक्ता हि राजर्षे पात्यते दिवः ।
न याति नरकं घोरं यत्र गच्छन्त्यनात्मजाः ॥

↩ वापस: ↩ उ.111

उ.112 वंश बचे तभी पिण्ड — परीक्षित के लिए कुन्ती की प्रार्थना

वक्ता / कथन: कुन्ती श्रीकृष्ण से नियम

- नियम कुन्ती ने कहा कि इसी शिशु पर पाण्डवों के और मेरे प्राण, तथा पाण्डुराज और मेरे ससुर के पिण्ड निर्भर हैं (आश्व. 66.20).

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 66, श्लोक 20 नियम KK 14-2-66-20

अस्मिन्प्राणाः समायत्ताः पाण्डवानां ममैव च ।
पाण्डोश्च पिण्डो दाशार्ह तथैव श्वशुरस्य मे ॥

↩ वापस: ↩ उ.112

उ.113 हिरण्यकशिपु ने पितृदेवताओं का श्राद्धभाग हर लिया था — इस पर पितृदेवताओं की स्तुति

वक्ता / कथन: पितृदेवता नृसिंहस्वामी से (नारद युधिष्ठिर से) उदाहरण नियम

- उदाहरण नियम हमारे पुत्रों द्वारा हमें दिए गए श्राद्धों को हिरण्यकशिपु ने बलपूर्वक भोगा, तीर्थ-समयों में दिया गया तिलोदक भी पी लिया; उसके पेट को नखों से चीरकर वह भाग फिर से प्राप्त कराने वाले भगवान को नमस्कार है — ऐसा कहकर पितृदेवताओं ने स्तुति की (भाग. 7.8.45).

श्रीमद्भागवत › सप्तमस्कन्ध › अध्याय 8 › श्लोक 45 उदाहरण नियम भाग. 7.8.45

श्राद्धानि नोऽधिबुभुजे प्रसभं तनूजैर्दत्तानि तीर्थसमयेऽपि तिलाम्बु चापिबत् ।
तस्योदरान्नखविदीर्णवपाद् य आर्च्छत् तस्मै नमो भगवतेऽखिलकर्मगोप्त्रे ॥

↩ वापस: ↩ उ.113

उ.114 संतान के अभाव में गड्ढे में लटके अगस्त्य के पितर

वक्ता / कथन: लोमश युधिष्ठिर से उदाहरण नियम पाप पुण्य

- उदाहरण पाप अगस्त्य ने अपने पितरों को एक गड्ढे में उल्टे लटकते देखा (अरण्य. 94.14)।
- पाप कारण पूछने पर उन्होंने कहा — 'संतान के लिए ही; हम तुम्हारे पितर हैं, संतान की कामना करते हुए इस गड्ढे में लटक रहे हैं' (अरण्य. 94.15–16)।
- नियम पुण्य 'अगस्त्य, यदि तुम उत्तम संतान उत्पन्न करो तो हमें इस नरक से मुक्ति और तुम्हें भी सद्गति प्राप्त होगी' — ऐसा कहा (अरण्य. 94.17)।
- उदाहरण सत्यधर्मपरायण अगस्त्य ने कहा — 'हे पितरो, मैं आपकी कामना पूरी करूँगा; आपकी मनोव्यथा दूर हो' (अरण्य. 94.18)।

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 94, श्लोक 14 उदाहरण पाप KK 3-6-94-14

अगस्त्यश्चापि भगवानेतस्मिन्काल एव तु ।
पितॄन्ददर्श गर्ते वै लम्बमानानधोमुखान् ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ उ.114

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 94, श्लोक 15 पाप KK 3-6-94-15

सोऽपृच्छल्लम्बमानांस्तान्भगवन्तश्च किम्पराः ।
किमर्थं वेह लम्बध्वे गर्ते यूयमधोमुखाः ।
सन्तानहेतोरिति ते प्रत्यूचुर्ब्रह्मवादिनः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ उ.114

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 94, श्लोक 16 पाप KK 3-6-94-16

ते तस्मै कथयामासुर्वयं ते पितरः स्वकाः ।
गर्तमेतमनुप्राप्ता लम्बामः प्रसवार्थिनः ॥

↩ वापस: ↩ अ.3 · पाप ↩ उ.114

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 94, श्लोक 17 नियम पुण्य KK 3-6-94-17

यदि नो जनयेथास्त्वमगस्त्यापत्यमुत्तमम् ।
स्यान्नोस्मान्निरयान्मोक्षस्त्वं च पुत्राप्नुया गतिम् ॥

↩ वापस: ↩ उ.114

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 94, श्लोक 18 उदाहरण KK 3-6-94-18

स तानुवाच तेजस्वी सत्यधर्मपरायणः ।
करिष्ये पितरः कामं व्येतु वो मानसो ज्वरः ॥

↩ वापस: ↩ उ.114

(ऊ) संक्षिप्त उल्लेखों की सूची — श्राद्ध/तर्पण/प्रेतकर्म करने वाले

#	कौन	क्या किया	किसके लिए	श्लोक
1	यादव (वृष्णि, भोज, अंधक आदि)	प्रभास में स्नान करके उस जल से पितृ-देव-ऋषि तर्पण, उसके बाद गोदान आदि	पितृदेवता, देवता, ऋषि	(भाग. 3.3.26)
2	पाण्डव, द्रौपदी, स्त्रियाँ	निर्हरण आदि कृत्य; गंगा में उदकदान	युद्ध में मारे गए अपने लोग	(भाग. 1.8.1; 1.8.4–5)
3	चित्रकेतु के ज्ञातिजन	देह-निर्हरण, उचित क्रियाएँ	चित्रकेतु का मृत पुत्र	(भाग. 6.16.13)
4	अर्चि (पृथु महाराज की पत्नी)	चिता पर दहन, उदकदान	पति पृथु	(भाग. 4.23.21–22)
5	प्रह्लाद	प्रेतकार्य / साम्परायिक कर्म	पिता हिरण्यकशिपु	(भाग. 7.10.23, 25)
6	सत्यव्रत (श्राद्धदेव)	कृतमाला नदी में जलतर्पण	(ग्रन्थ में उल्लेख नहीं है)	(भाग. 8.22.12)
7	विभीषण (श्रीराम की अनुमति से)	पितृमेध विधि से साम्परायिक (अन्त्य) कर्म	अपने बन्धुओं के लिए (रावण आदि के लिए)	(भाग. 9.8.110)
8	नन्द	जातकर्म के साथ विधिपूर्वक पितृदेवतार्चन	पितृदेवता, देवता	(भाग. 10.6.2)
9	बलराम	प्रभास में स्नान करके तर्पण	देवता, ऋषि, पितृदेवता, मनुष्य	(भाग. 10.98.7)
10	बलराम	प्रयाग में स्नान करके तर्पण	देवता आदि	(भाग. 10.99.10)
11	बलराम	गया जाकर पितृयजन	पितृदेवता	(भाग. 10.99.11)
12	अर्जुन	यथाविधि, क्रम से साम्परायिक (अन्त्य) कर्म करवाना	जिनका वंश नष्ट हो गया, वे मारे गए यादव बन्धु	(भाग. 11.31.22)
13	गय (आधूर्तरजस के पुत्र राजा)	स्वधा से पितरों को तृप्त किया	पितर	(शान्ति. 28.116)
14	अम्बरीष (नाभाग)	स्वधा से पितरों का अर्चन किया	पितर	(शान्ति. 98.8)
15	ऋषभ महर्षि	बदरी के पास वैहायस सरोवर में विधिपूर्वक तर्पण	पितर, देवता	(शान्ति. 127.4)
16	लिखित (शंख की आज्ञा से)	बाहुदा नदी में देव-ऋषि-पितृ तर्पण	देवता, ऋषि, पितर	(शान्ति. 23.39)
17	विश्वामित्र	अकाल के समय में मिले द्रव्य से चरु पकाकर दैव-पित्र्य कर्म आरम्भ किया	देवता, पितर	(शान्ति. 141.98)
18	भीष्म	प्रेतकार्य	चित्राङ्गद	(आदि. 108.15)
19	भीष्म (ऋत्विजों और कुरुप्रमुखों के साथ)	समस्त प्रेतकार्य सम्यक् रूप से	विचित्रवीर्य	(आदि. 111.8–9)
20	धृतराष्ट्र, विदुर, भीष्म	प्रेतकार्य (मरा हुआ मानकर)	पाण्डव	(आदि. 154.16)
21	धृतराष्ट्र, ज्ञातिजन, पुरवासी	उदकदान	पाण्डव, कुन्ती (मरा हुआ मानकर)	(आदि. 162.21–23)
22	विदुर, भीष्म के साथ	पिण्डोदकक्रिया / और्ध्वदेहिक	पाण्डव (मरा हुआ मानकर)	(आदि. 182.6–8)
23	युधिष्ठिर	राजाओं के शरीरों का शास्त्र के अनुसार दहन, उदकदान	युद्ध में मारे गए राजा	(आदि. 2.321–322)
24	ययाति	श्राद्धों से पितृतर्पण	पितृदेवता	(आदि. 79.3)
25	ययाति (वानप्रस्थ में)	पितृदेवताओं का तर्पण	पितृदेवता	(आदि. 80.14)
26	पाण्डुराज (वनवास का संकल्प)	वन्य आहार से और जल से पितृतर्पण	पितृदेवता	(आदि. 124.35)
27	शौनक	जल से पितृतर्पण (नित्यकर्म)	पितृदेवता	(आदि. 4.10)
28	अर्जुन	गंगाद्वार में स्नान करके पितामहों को तर्पण	पितृदेवता	(आदि. 234.12)
29	सत्यवती, बहुएँ	पुत्र के लिए (मरणोपरान्त) कार्य	विचित्रवीर्य	(आदि. 112.1)
30	सुमित्र (भार्गव वंश के वानप्रस्थ)	नियम से पितृदेवताओं और अतिथियों की पूजा करना (नित्य पितृपूजा)	पितर	(अनु. 120.6)
31	अगस्त्य आदि महर्षि	थके होने पर भी कमल-सरोवर में जल से तर्पण	(उल्लेख नहीं; देव-पितृ तर्पण)	(अनु. 142.51)
32	युधिष्ठिर	प्रेतकार्य	(युद्ध में मारे गए) सभी के लिए	(आश्व. 14.5)
33	युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र	शौचकार्य, और्ध्वदेहिक, विप्रों को महादान	भीष्म, कर्ण आदि कुरुवीर	(आश्व. 14.14–15)

34	युधिष्ठिर	अश्वमेध में श्राद्धों से पितामहों को तृप्त करना	पितामह	(आश्व. 91.13)
35	धौम्य (पाण्डवों के पुरोहित)	वनवास में इष्टियाँ और पित्र्य क्रियाएँ पिता की भाँति सम्पन्न कीं	पाण्डवों के पितर	(अरण्य. 25.3)
36	युधिष्ठिर	स्वधाकारों से नित्य पितरों की सेवा	पितर	(अरण्य. 30.11)
37	पाण्डव	काम्यकवन में पितृ-देव-विप्रों को यथाविधि निवेदन	पितर, देवता	(अरण्य. 36.45)
38	अर्जुन	इन्द्रलोक के लिए प्रस्थान करने से पहले गंगा में स्नान करके यथाविधि पितृतर्पण	पितर	(अरण्य. 42.21)
39	भीष्म	गंगाद्वार में पित्र्य व्रत का आचरण करते हुए पितृ-देव-ऋषि तर्पण	पितर	(अरण्य. 79.16; 79.18)
40	पाण्डव	नैमिषारण्य में गोमती के तीर्थों में बार-बार देव-पितृ-विप्र तर्पण	पितर	(अरण्य. 93.3)
41	युधिष्ठिर, भाई, द्रौपदी	जिस तीर्थ में परशुराम ने तेज पुनः प्राप्त किया, वहाँ स्नान करके देव-पितृ तर्पण	पितर	(अरण्य. 98.4)
42	भगीरथ	गंगा को समुद्र तक लाकर सगरपुत्रों को उदकदान (पाठान्तर)	सगरपुत्र	(अरण्य. 107.67–68)
43	पाण्डव, द्रौपदी	वैतरणी नदी में उतरकर पितृतर्पण	पितर	(अरण्य. 115.14)
44	युधिष्ठिर	वहाँ (उस तीर्थ में) स्नान करके पितृ-देव तर्पण, द्विजश्रेष्ठों को धनदान; उसके बाद समुद्रगामिनी गोदावरी के पास गए	पितर	(अरण्य. 119.3)
45	युधिष्ठिर, भाई, द्रौपदी, लोमश, विप्र	प्रभास तीर्थ में स्नान करके देव-पितृ तर्पण	पितर	(अरण्य. 119.17)
46	परावसु	भूल से मृग समझकर मारे गए पिता के लिए समस्त प्रेतकार्य	पिता रैभ्य	(अरण्य. 140.7)
47	पाण्डव	दुर्गम स्थान में भागीरथी के जल से परम शौच के साथ पितृ-देव-ऋषि तर्पण; वहाँ निवास करते हुए तर्पण और जप	पितर	(अरण्य. 147.48–49)
48	पाण्डव	यथालब्ध मूल-फलों से पितृतर्पण	पितर	(अरण्य. 157.6)
49	द्रौपदी	पर्व के दिनों में भिक्षा, बलि, श्राद्धविधि और स्थालीपाक श्रद्धा से करती है	पितर	(अरण्य. 234.36)
50	अकम्पन	प्रेतकृत्य	युद्ध में मारे गए अपने पुत्र के लिए	(द्रोण. 52.37)
51	रन्तिदेव	उनके दिए हुए कव्यों को पितृदेवताओं ने समय पर स्वीकार किया	पितृदेवताओं के लिए	(द्रोण. 67.19–20)
52	कुणि गार्ग्य की पुत्री (वृद्धकन्या)	उपवासों और तपस्या से पितृ-देवार्चन	पितृदेवताओं और देवताओं के लिए	(शल्य. 53.6, 8)
53	बलराम	कारपचन तीर्थ में स्नान करके तर्पण	पितृदेवताओं और देवताओं के लिए	(शल्य. 55.13)
54	युधिष्ठिर	विधिवत् प्रेतकार्य	सौप्तिक संहार में मारे गए अपने पुत्रों के लिए	(सौप्तिक. 11.4)
55	युधिष्ठिर	श्राद्धकर्म के लिए धृतराष्ट्र ने जितना माँगा उतना धन दिया	धृतराष्ट्र के पुत्रों के लिए	(आश्रम. 2.5)
56	गान्धारी	विविध श्राद्धकर्म; ब्राह्मणों को उनकी इच्छित वस्तुएँ देकर ऋणमुक्त हुईं	अपने पुत्रों के लिए	(आश्रम. 2.12)
57	धृतराष्ट्र	बार-बार दान और श्राद्ध किए, ऐसा कहा	अपने पुत्रों के लिए (जो मारे गए)	(आश्रम. 3.31)
58	नारद	दैवकर्म करने के बाद यथाविधि पित्र्यकर्म किया	पितर	(शान्ति. 355.1)
59	श्रीराम	दाहसंस्कार	जटायु	(रामा. बाल. 1.54)
60	श्रीराम	दाहसंस्कार (उसके बाद कबन्ध स्वर्ग गया)	कबन्ध	(रामा. बाल. 1.56)
61	अन्धमुनि और उनकी पत्नी	उदकक्रिया (जलाञ्जलि)	मुनिकुमार (उनका पुत्र)	(रामा. अयो. 64.46; 64.51)
62	भरत, दशरथ की रानियाँ, मन्त्री, पुरोहित	उदकक्रिया, दशाह आशौच	दशरथ	(रामा. अयो. 76.23)
63	दशरथ	श्राद्ध (विवाह से पहले)	पितर	(रामा. बाल. 72.21)
64	भगीरथ	सलिलक्रिया (गंगाजल से)	सगरपुत्र (प्रपितामह)	(रामा. बाल. 44.17–18)
65	भरत, शत्रुघ्न	उदकक्रिया (जलाञ्जलि)	दशरथ	(रामा. अयो. 102.7)
66	भरत, शत्रुघ्न	सभी प्रेतकृत्य	दशरथ	(रामा. अयो. 103.10)

67	श्रीराम, भाई	जलाञ्जलि, पिण्डप्रदान (निर्वाप)	दशरथ	(रामा. अयो. 103.27–28)
68	श्रीराम, सीता, लक्ष्मण	स्नान के बाद पितृतर्पण	पितृदेवता	(रामा. अरण्य. 16.42)
69	श्रीराम, लक्ष्मण	दहन, पिण्डप्रदान, उदकक्रिया	जटायु	(रामा. अरण्य. 68.31; 68.33; 68.35–36)
70	श्रीराम, लक्ष्मण	चिता में दहन (कबन्ध की इच्छा पर); दहन के बाद कबन्ध दिव्य रूप में उठा	कबन्ध	(रामा. अरण्य. 72.1–4)
71	श्रीराम	तीर्थस्नान, पितृतर्पण	पितृदेवता	(रामा. अरण्य. 75.4)
72	सुग्रीव	उदकक्रिया (वाली को मरा हुआ मानकर)	वाली	(रामा. किष्कि. 9.20)
73	अंगद, सुग्रीव, तारा, वानर	दहन, जलाञ्जलि	वाली	(रामा. किष्कि. 25.49–50; 25.52)
74	विभीषण	दाहसंस्कार, तिलोदक (दर्भ मिले तिल जल के साथ)	रावण (बड़े भाई)	(रामा. युद्ध. 111.120–121)
75	एक वृद्ध ब्राह्मण	अपना बालक पुत्र माता-पिता के पितृकार्य किए बिना ही मर गया, यह विलाप	—	(रामा. उत्तर. 73.8)

सूचिका में उद्धृत श्लोक

श्रीमद्भागवत › तृतीयस्कन्ध › अध्याय 3 › श्लोक 26 उदाहरण भाग. 3.3.26

तत्र स्नात्वा पितॄन् देवान् ऋषींश्चैव तदम्भसा ।
तर्पयित्वाऽथ विप्रेभ्यो गावो बहुगुणा ददुः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.1

श्रीमद्भागवत › प्रथमस्कन्ध › अध्याय 8 › श्लोक 1 उदाहरण भाग. 1.8.1

पुत्रशोकातुराः सर्वे पाण्डवाः सह कृष्णया ।
स्वानां मृतानां यत्कृत्यं चक्रुर्निर्हरणादिकम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.2

श्रीमद्भागवत › प्रथमस्कन्ध › अध्याय 8 › श्लोक 4 उदाहरण भाग. 1.8.4

अथ ते सम्परेतानां स्वानामुदकमिच्छताम् ।
दातुं सकृष्णा गङ्गायां पुरस्कृत्य ययुः स्त्रियः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.2

श्रीमद्भागवत › प्रथमस्कन्ध › अध्याय 8 › श्लोक 5 उदाहरण भाग. 1.8.5

ते निनीयोदकं सर्वे विलप्य च भृशं पुनः ।
आप्लुता हरिपादाब्जरजःपूतसरिज्जले ॥

↩ वापस: ↩ सूची.2

श्रीमद्भागवत › षष्ठस्कन्ध › अध्याय 16 › श्लोक 13 उदाहरण भाग. 6.16.13

निर्हृत्य ज्ञातयो ज्ञातेर्देहं कृत्वोचिताः क्रियाः ।
तत्यजुर्दुस्त्यजं स्नेहं शोकमोहभयार्तिदम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.3

श्रीमद्भागवत › अष्टमस्कन्ध › अध्याय 22 › श्लोक 12 उदाहरण भाग. 8.22.12

एकदा कृतमालायां कुर्वतो जलतर्पणम् ।
तस्याञ्जल्युदके काचित् शफर्येकाऽभ्यपद्यत ॥

↩ वापस: ↩ सूची.6

श्रीमद्भागवत › नवमस्कन्ध › अध्याय 8 › श्लोक 110 उदाहरण भाग. 9.8.110

स्वानां विभीषणश्चक्रे कोसलेन्द्रानुमोदितः ।
पितृमेधविधानेन यदुक्तं साम्परायिकम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.7

श्रीमद्भागवत › दशमस्कन्ध › अध्याय 6 › श्लोक 2 उदाहरण भाग. 10.6.2

वाचयित्वा स्वस्त्ययनं जातकर्मात्मजस्य वै ।
कारयामास विधिना पितृदेवार्चनं तथा ॥

↩ वापस: ↩ सूची.8

श्रीमद्भागवत › दशमस्कन्ध › अध्याय 98 › श्लोक 7 उदाहरण भाग. 10.98.7

तीर्थाभिषेकव्याजेन मध्यस्थः प्रययौ किल ।
स्नात्वा प्रभासे सन्तर्प्य देवर्षिपितृमानवान् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.9

श्रीमद्भागवत › दशमस्कन्ध › अध्याय 99 › श्लोक 10 उदाहरण भाग. 10.99.10

स्रोतेन सरयूं प्रायात् प्रयागमुपगम्य सः ।
स्नात्वा सन्तर्प्य देवादीन् जगाम पुलहाश्रमम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.10

श्रीमद्भागवत › दशमस्कन्ध › अध्याय 99 › श्लोक 11 उदाहरण भाग. 10.99.11

गोमतीं गण्डकीं स्नात्वा विपाशां शोणमाप्लुतः ।
गयां गत्वा पितॄनिष्ट्वा गङ्गासागरसङ्गमम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.11

श्रीमद्भागवत › एकादशस्कन्ध › अध्याय 31 › श्लोक 22 उदाहरण भाग. 11.31.22

बन्धूनां नष्टगोत्राणामर्जुनः साम्परायिकम् ।
हतानां कारयामास यथावदनुपूर्वशः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.12

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 28, श्लोक 116 उदाहरण KK 12-1-28-116

तर्पयामास सोमेन देवान्वित्तैर्द्विजानपि ।
पितॄन्स्वधाभिः कामैश्च स्त्रियः स्वाः पुरुषर्षभ ॥

↩ वापस: ↩ सूची.13

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 98, श्लोक 8 उदाहरण KK 12-1-98-8

अतिथीनन्नपानेन पितॄंश्च स्वधया तथा ।
ऋषीन्स्वाध्यायदीक्षाभिर्देवान्यज्ञैरनुत्तमैः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.14

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 127, श्लोक 4 उदाहरण KK 12-1-127-4

तस्मिन्सरसि कृत्वाऽहं विधिवत्तर्पणं पुरा ।
पितॄणां देवतानां च ततोश्रममियां तदा ॥

↩ वापस: ↩ सूची.15

महाभारत › शान्तिपर्व › राजधर्मपर्व › अध्याय 23, श्लोक 39 उदाहरण KK 12-1-23-39

त्वं गत्वा बाहुदां शीघ्रं तर्पयस्व यथाविधि ।
देवानृषीन्पितॄंश्चैव मा चाधर्मे मनः कृथाः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.16

महाभारत › शान्तिपर्व › आपद्धर्मपर्व › अध्याय 141, श्लोक 98 उदाहरण KK 12-2-141-98

ततः समारभत्कर्म दैवं पित्र्यं च भारत ।
आहूय देवानिन्द्रादीन्भागंभागं विधिक्रमात् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.17

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 108, श्लोक 15 उदाहरण KK 1-7-108-15

तस्मिन्पुरुषशार्दूले निहते भूरितेजसि ।
भीष्मः शान्तनवो राजा प्रेतकार्याण्यकारयत् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.18

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 111, श्लोक 8 उदाहरण KK 1-7-111-8

धर्मात्मा स तु गाङ्गेयः चिन्ताशोकपरायणः ।
प्रेतकार्याणि सर्वाणि तस्य सम्यगकारयत् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.19

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 111, श्लोक 9 उदाहरण KK 1-7-111-9

राज्ञो विचित्रवीर्यस्य सत्यवत्या मते स्थितः ।
ऋत्विग्भिः सहितो भीष्मः सर्वैश्च कुरुपुङ्गवैः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.19

महाभारत › आदिपर्व › जतुगृहपर्व › अध्याय 154, श्लोक 16 उदाहरण KK 1-8-154-16

प्रेतकार्याणि च तथा चकार सह बान्धवैः ।
पाण्डवानां तथा क्षत्ता भीष्मश्च कुरुसत्तमः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.20

महाभारत › आदिपर्व › जतुगृहपर्व › अध्याय 162, श्लोक 21 उदाहरण KK 1-8-162-21

एवं गत्वा ततश्चक्रे ज्ञातिभिः परिवारितः ।
उदकं पाण्डुपुत्राणां धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.21

महाभारत › आदिपर्व › जतुगृहपर्व › अध्याय 162, श्लोक 23 उदाहरण KK 1-8-162-23

हा फल्गुनेति चाप्यन्ये हा यमाविति चापरे ।
कुन्तीमार्ताश्च शोचन्त उदकं चक्रिरे जनाः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.21

महाभारत › आदिपर्व › चैत्ररथपर्व › अध्याय 182, श्लोक 6 उदाहरण KK 1-11-182-6

अल्पशोकः प्रहृष्टात्मा शशास विदुरं तदा ।
पाण्डवानां महाप्राज्ञ कुरु पिण्डोदकक्रियाम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.22

महाभारत › आदिपर्व › चैत्ररथपर्व › अध्याय 182, श्लोक 8 उदाहरण KK 1-11-182-8

श्रुत्वा भीष्मेण विदुरः कृतवानौर्ध्वदेहिकम् ।
पाण्डवानां विनाशाय कृतं कर्म दुरात्मना ॥

↩ वापस: ↩ सूची.22

महाभारत › आदिपर्व › पर्वसंग्रहपर्व › अध्याय 2, श्लोक 321 उदाहरण KK 1-2-2-321

यत्र राजा महाप्राज्ञः सर्वधर्मभृतां वरः ।
राज्ञांतानि शरीराणि दाहयामास शास्त्रतः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.23

महाभारत › आदिपर्व › पर्वसंग्रहपर्व › अध्याय 2, श्लोक 322 उदाहरण KK 1-2-2-322

तोयकर्मणि चारब्धे राज्ञामुदकदानिके ।
गूढोत्पन्नस्य चाख्यानं कर्णस्य पृथयात्मनः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.23

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 79, श्लोक 3 उदाहरण KK 1-7-79-3

देवानतर्पयद्यज्ञैः श्राद्धैस्तद्वित्पितॄनपि ।
दीनाननुग्रहैरिष्टैः कामैश्च द्विजसत्तमान् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.24

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 80, श्लोक 14 उदाहरण KK 1-7-80-14

शंसितात्मा जितक्रोधस्तर्पयन्पितृदेवताः ।
अग्नींश्च विधिवज्जुह्वन्वानप्रस्थविधानतः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.25

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 124, श्लोक 35 उदाहरण KK 1-7-124-35

एकान्तशीली विमृशन्पक्वापक्वेन वर्तयन् ।
पितॄन्देवांश्च वन्येन वाग्भिरद्भिश्च तर्पयन् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.26

महाभारत › आदिपर्व › पौलोमपर्व › अध्याय 4, श्लोक 10 उदाहरण KK 1-4-4-10

सोऽथ विप्रर्षभः सर्वं कृत्वा कार्यं यथाविधि ।
देवान्वाग्भिः पितॄनद्भिस्तर्पयित्वाऽऽजगाम ह ॥

↩ वापस: ↩ सूची.27

महाभारत › आदिपर्व › अर्जुनवनवासपर्व › अध्याय 234, श्लोक 12 उदाहरण KK 1-15-234-12

तत्राभिषेकं कृत्वा स तर्पयित्वा पितामहान् ।
उत्तितीर्षुर्जलाद्राजन्नग्निकार्यचिकीर्षया ॥

↩ वापस: ↩ सूची.28

महाभारत › आदिपर्व › सम्भवपर्व › अध्याय 112, श्लोक 1 उदाहरण KK 1-7-112-1

ततः सत्यवती दीना कृपणा पुत्रगृद्धिनी ।
पुत्रस्य कृत्वा कार्याणि स्नुषाभ्यां सह भारत ॥

↩ वापस: ↩ सूची.29

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 120, श्लोक 6 उदाहरण KK 13-1-120-6

पितृदेवांश्च नियतमतिथींश्च स पूजयन् ।
प्राणसन्धारणार्थं च यत्किञ्चिदुपहारयन् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.30

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 142, श्लोक 51 उदाहरण KK 13-1-142-51

श्रमेण महता युक्तास्ते बिसानि कलापशः ।
तीरे निक्षिप्य पद्मिन्यास्तर्पणं चक्रुरम्भसा ॥

↩ वापस: ↩ सूची.31

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अश्वमेधपर्व › अध्याय 14, श्लोक 5 उदाहरण KK 14-1-14-5

अर्चयामास देवांश्च ब्राह्मणांश्च युधिष्ठिरः ।
कृत्वाऽथ प्रेतकार्याणि सर्वेषां कुरुनन्दनः ।
अन्वशासच्च धर्मात्मा पृथिवीं सागराम्बराम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.32

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अश्वमेधपर्व › अध्याय 14, श्लोक 14 उदाहरण KK 14-1-14-14

एवं नातिमहान्कालः स तेषां संन्यवर्तत ।
कुर्वतां शौचकार्याणि भीष्मस्य निधने तदा ।
महादानानि विप्रेभ्यो ददतामौर्ध्वदेहिकम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.33

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अश्वमेधपर्व › अध्याय 14, श्लोक 15 उदाहरण KK 14-1-14-15

भीष्मकर्णपुरोगाणां कुरूणां कुरुसत्तम ।
सहितो धृतराष्ट्रेण स ददावौर्ध्वदेहिकम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.33

महाभारत › आश्वमेधिकपर्व › अनुगीतापर्व › अध्याय 91, श्लोक 13 उदाहरण KK 14-2-91-13

तुष्टा द्विजातयश्चात्र दानैर्बहुविधैरपि ।
क्षत्रियाश्च सुयुद्धेन श्राद्धैश्चापि पितामहाः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.34

महाभारत › अरण्यपर्व › अर्जुनाभिगमनपर्व › अध्याय 25, श्लोक 3 उदाहरण KK 3-2-25-3

इष्टीश्च पित्र्याणि तथा क्रियाश्च महावने वसतां पाण्डवानाम् ।
पुरोहितस्तत्र समृद्धतेजाश्चकार धौम्यः पितृवन्नृपाणाम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.35

महाभारत › अरण्यपर्व › अर्जुनाभिगमनपर्व › अध्याय 30, श्लोक 11 उदाहरण KK 3-2-30-11

स्वाहाकारैः स्वधाभिश्च पूजाभिरपि च द्विजान् ।
देवताश्च पितॄंश्चैव सततं पार्थ सेवसे ॥

↩ वापस: ↩ सूची.36

महाभारत › अरण्यपर्व › अर्जुनाभिगमनपर्व › अध्याय 36, श्लोक 45 उदाहरण KK 3-2-36-45

चरन्तो मृगयां नित्यं शुद्धैर्बाणैर्मृगार्थिनः ।
पितृदैवतविप्रेभ्यो निर्वपन्तो यथाविधि ॥

↩ वापस: ↩ सूची.37

महाभारत › अरण्यपर्व › इन्द्रलोकाभिगमनपर्व › अध्याय 42, श्लोक 21 उदाहरण KK 3-4-42-21

ततः पितॄन्यथान्यायं तर्पयित्वा यथाविधि ।
मन्दरं शैलराजं तमाप्रष्टुमुपचक्रमे ॥

↩ वापस: ↩ सूची.38

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 79, श्लोक 16 उदाहरण KK 3-6-79-16

पुरा भागीरथीतीरे भीष्मो धर्मभृतांवरः ।
पित्र्यं व्रतं समास्थाय न्यवसन्मुनिभिः सह ॥

↩ वापस: ↩ सूची.39

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 79, श्लोक 18 उदाहरण KK 3-6-79-18

स पितॄंस्तर्पयामास देवांश्च परमद्युतिः ।
ऋषींश्च तर्पयामास विधिदृष्टेन कर्मणा ॥

↩ वापस: ↩ सूची.39

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 93, श्लोक 3 उदाहरण KK 3-6-93-3

तत्र देवान्पितॄन्विप्रांस्तर्पयित्वा पुनःपुनः ।
कन्यातीर्थेऽश्वतीर्थे च गवां तीर्थे च भारत ॥

↩ वापस: ↩ सूची.40

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 98, श्लोक 4 उदाहरण KK 3-6-98-4

स तत्र भ्रातृभिश्चैव कृष्णया चैव पाण्डवः ।
स्नात्वा देवान्पितॄंश्चैव तर्पयामास भारत ॥

↩ वापस: ↩ सूची.41

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 107, श्लोक 67 उदाहरण KK 3-6-107-67

प्रणिपत्य महादेवं पुरा राजा भगीरथः ।
पितॄनाप्लावयामास सागरं चाप्यपूरयत् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.42

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 107, श्लोक 68 उदाहरण KK 3-6-107-68

तेऽपि स्वर्गं गता राजन्सगरस्यात्मजाः क्षणात् ।
पितृभ्यश्चोदकं तत्र ददौ पूर्णमनोरथः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.42

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 115, श्लोक 14 उदाहरण KK 3-6-115-14

ततो वैतरणीं सर्वे पाण्डवा द्रौपदी तथा ।
अवतीर्य महाभागास्तर्पयाञ्चक्रिरे पितॄन् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.43

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 119, श्लोक 3 उदाहरण KK 3-6-119-3

तत्रापि चाप्लुत्य महानुभावः सन्तर्पयामास पितॄन्सुरांश्च ।
द्विजातिमुख्येषु धनं विसृज्य गोदावरीं सागरगामगच्छत् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.44

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 119, श्लोक 17 उदाहरण KK 3-6-119-17

तत्राभिषिक्तः पृथुलोहिताक्षः सहानुजैर्देवगणान्पितॄंश्च ।
सन्तर्पयामास तथैव कृष्णा ते चापि विप्राः सह लोमशेन ॥

↩ वापस: ↩ सूची.45

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 140, श्लोक 7 उदाहरण KK 3-6-140-7

तस्य स प्रेतकार्याणि कृत्वा सर्वाणि भारत ।
पुनरागम्य तत्सत्रमब्रवीद्भ्रातरं वचः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.46

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 147, श्लोक 48 उदाहरण KK 3-6-147-48

तस्मिन्देवर्षिचरिते देशे परमदुर्गमे ।
भागीरथीपुण्यजलेतर्पयांचक्रिरे पितॄन् ।
देवानृषींश्च कौन्तेयाः परमं शौचमास्थिताः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.47

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 147, श्लोक 49 उदाहरण KK 3-6-147-49

तत्र ते तर्पयन्तश्च जपन्तश्च कुरूद्वहाः ।
ब्राह्मणैः सहिता वीरा ह्यवसन्पुरुषर्षभाः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.47

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 157, श्लोक 6 उदाहरण KK 3-6-157-6

अर्चिताः सततं देवाः पुष्पैरद्भिः सदा च वः ।
यथालब्धैर्मूलफलैः पितरश्चापि तर्पिताः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.48

महाभारत › अरण्यपर्व › द्रौपदीसत्यभामासंवादपर्व › अध्याय 234, श्लोक 36 उदाहरण KK 3-12-234-36

भिक्षाबलिश्राद्धविधिस्थालीपाकाश्च पर्वसु ।
मान्यानां मानसत्कारा ये चान्ये विदिता मम ॥

↩ वापस: ↩ सूची.49

महाभारत › द्रोणपर्व › अभिमन्युवधपर्व › अध्याय 52, श्लोक 37 उदाहरण KK 7-3-52-37

स राजा प्रेतकृत्यानि तस्य कृत्वा शुचान्वितः ।
शोचन्नहनि रात्रौ च नालभत्सुखमात्मनः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.50

महाभारत › द्रोणपर्व › अभिमन्युवधपर्व › अध्याय 67, श्लोक 19 उदाहरण KK 7-3-67-19

तत्सर्वं विततेयज्ञे ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत ।
प्रत्यक्षं तस्य हव्यानि प्रतिगृह्णन्ति देवताः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.51

महाभारत › द्रोणपर्व › अभिमन्युवधपर्व › अध्याय 67, श्लोक 20 उदाहरण KK 7-3-67-20

कव्यानि पितरः काले सर्वकामान्द्विजोत्तमाः ।
स चेन्ममार सृञ्जय चतुर्भद्रतरस्त्वया ॥

↩ वापस: ↩ सूची.51

महाभारत › शल्यपर्व › ह्रदप्रवेशपर्व › अध्याय 53, श्लोक 6 उदाहरण KK 9-2-53-6

उपवासैः पूजयन्ती पितॄन्देवांश्च सा पुरा ।
तस्यास्तु तपसोग्रेण महान्कालोऽत्यगान्नृप ॥

↩ वापस: ↩ सूची.52

महाभारत › शल्यपर्व › ह्रदप्रवेशपर्व › अध्याय 53, श्लोक 8 उदाहरण KK 9-2-53-8

ततः सा तपसोग्रेण पीडयित्वाऽऽत्मनस्तनुम् ।
पितृदेवार्चनरता बभूव विजने वने ॥

↩ वापस: ↩ सूची.52

महाभारत › शल्यपर्व › ह्रदप्रवेशपर्व › अध्याय 55, श्लोक 13 उदाहरण KK 9-2-55-13

हलायुधस्तु तत्रापि दत्त्वा दानं महाबलः ।
आप्लुतः सलिले पुण्ये सुशीते विमले शुचौ ।
सन्तर्पयामास पितॄन्देवांश्च रणदुर्मदः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.53

महाभारत › सौप्तिकपर्व › ऐषीकपर्व › अध्याय 11, श्लोक 4 उदाहरण KK 10-2-11-4

कृत्वा तु विधिवत्तेषां पुत्राणाममितौजसाम् ।
प्रेतकार्याणि सर्वेषां बभूव भृशदुःखितः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.54

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 2, श्लोक 5 उदाहरण KK 15-1-2-5

परिवृत्तेषु चाहःसु पुत्राणां श्राद्धकर्मणि ।
ददौ च राजा वित्तानि यावदस्य चिकीर्षितम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.55

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 2, श्लोक 12 उदाहरण KK 15-1-2-12

गान्धारी चैव पुत्राणां विविधैः श्राद्धकर्मभिः ।
आनृण्यमगमत्कामान्विप्रेभ्यः प्रतिपाद्य सा ॥

↩ वापस: ↩ सूची.56

महाभारत › आश्रमवासिकपर्व › आश्रमवासपर्व › अध्याय 3, श्लोक 31 उदाहरण KK 15-1-3-31

सुखमध्युषितः पुत्र त्वया सुपरिपालितः ।
मया दानानि दत्तानि श्राद्धानि च पुनःपुनः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.57

महाभारत › शान्तिपर्व › मोक्षधर्मपर्व › अध्याय 355, श्लोक 1 उदाहरण KK 12-3-355-1

कस्यचित्त्वथ कालस्य नारदः परमेष्ठिजः ।
दैवं कृत्वा यथान्यायं पित्र्यं चक्रे ततः परम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.58

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 1 › श्लोक 54 उदाहरण वा.रा. 1.1.54

राघवः शोकसंतप्तो विललापाकुलेन्द्रियः ।
ततस्तेनैव शोकेन गृध्रं दग्ध्वा जटायुषम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.59

श्रीमद्रामायण › बालकाण्ड › सर्ग 1 › श्लोक 56 उदाहरण वा.रा. 1.1.56

तं निहत्य महाबाहुर्ददाह स्वर्गतश्च सः ।
स चास्य कथयामास शबरीं धर्मचारिणीम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.60

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 64 › श्लोक 46 उदाहरण वा.रा. 2.64.46

एवं स कृपणं तत्र पर्यदेवयतासकृत् ।
ततोऽस्मै कर्तुमुदकं प्रवृत्तः सह भार्यया ॥

↩ वापस: ↩ सूची.61

श्रीमद्रामायण › अयोध्याकाण्ड › सर्ग 64 › श्लोक 51 उदाहरण वा.रा. 2.64.51

स कृत्वाथोदकं तूर्णं तापसः सह भार्यया ।
मामुवाच महातेजाः कृताञ्जलिमुपस्थितम् ॥

↩ वापस: ↩ सूची.61

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 72 › श्लोक 1 उदाहरण वा.रा. 3.72.1

एवमुक्तौ तु तौ वीरौ कबन्धेन नरेश्वरौ ।
गिरिप्रदरमासाद्य पावकं विससर्जतुः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.70

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 72 › श्लोक 2 उदाहरण वा.रा. 3.72.2

लक्ष्मणस्तु महोल्काभिर्ज्वलिताभिः समन्ततः ।
चितामादीपयामास सा प्रजज्वाल सर्वतः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.70

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 72 › श्लोक 3 उदाहरण वा.रा. 3.72.3

तच्छरीरं कबन्धस्य घृतपिण्डोपमं महत् ।
मेदसा पच्यमानस्य मन्दं दहत पावकः ॥

↩ वापस: ↩ सूची.70

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 72 › श्लोक 4 उदाहरण वा.रा. 3.72.4

सविधूय चितामाशु विधूमोऽग्निरिवोत्थितः।
अरजे वाससी बिभ्रन्माल्यं दिव्यं महाबलः॥

↩ वापस: ↩ सूची.70

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 75 › श्लोक 4 उदाहरण वा.रा. 3.75.4

सप्तानां च समुद्राणां तेषां तीर्थेषु लक्ष्मण।
उपस्पृष्टं च विधिवत् पितरश्चापि तर्पिताः॥

↩ वापस: ↩ सूची.71 ↩ तीर्थ.40

श्रीमद्रामायण › किष्किन्धाकाण्ड › सर्ग 9 › श्लोक 20 उदाहरण वा.रा. 4.9.20

शोकार्तश्चोदकं कृत्वा किष्किन्धामागतः सखे।
गूहमानस्य मे तत् त्वं यत्नतो मन्त्रिभिः श्रुतम्॥

↩ वापस: ↩ सूची.72

श्रीमद्रामायण › उत्तरकाण्ड › सर्ग 73 › श्लोक 8 उदाहरण वा.रा. 7.73.8

केनाद्य दुष्कृतेनायं बाल एव ममात्मजः।
अकृत्वा पितृकार्याणि गतो वैवस्वतक्षयम्॥

↩ वापस: ↩ सूची.75

(ऋ) तीर्थों में पितृतर्पण का फल — तालिका

#	तीर्थ	पितृसम्बन्धी फल	श्लोक
1	प्रभास	वहाँ स्नान करके पितृदेवताओं और देवताओं को तर्पण करके, ब्राह्मणों को भोजन कराकर, योग्य व्यक्तियों को श्रद्धा से दान दें तो, जैसे नावों से समुद्र पार करते हैं वैसे ही पापों को पार किया जा सकता है (श्रीकृष्ण यादवों से)	(भाग. 11.6.38–39)
2	कृत्तिकाओं का आश्रम	वहाँ स्नान करके पितरों को तर्पण करके जो महादेव को प्रसन्न करता है, वह निर्मल होकर स्वर्ग प्राप्त करता है	(अनु. 64.25)
3	तीर्थ (सामान्यतः)	तीर्थ का कीर्तन करने, वहाँ स्नान और पितृतर्पण करने से पाप शुद्ध हो जाता है, और लोग पवित्र होकर सुखपूर्वक स्वर्ग पहुँचते हैं	(अनु. 170.17)
4	पुष्कर	स्नान करके जो पितृदेवताओं को तर्पण करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर ब्रह्मलोक में पूजित होता है	(अरण्य. 80.27)
5	जम्बूमार्ग	वहाँ दृढ़व्रती होकर जो श्राद्ध करता है, वह वाजपेय का फल पाता है, उसका दुष्कृत नष्ट होता है (प्रक्षिप्त पाठ)	(अरण्य. 80.43)
6	अगस्त्य सरोवर	पितृ-देवार्चन में निरत होकर तीन रात उपवास करे तो अग्निष्टोम का फल	(अरण्य. 80.45)
7	धर्मारण्य (कण्वाश्रम)	नियताहार होकर पितृदेवताओं का अर्चन करे तो सर्वकाम-समृद्धि और यज्ञ का फल	(अरण्य. 80.48)
8	नर्मदा नदी	पितृदेवतर्पण से अग्निष्टोम का फल	(अरण्य. 80.54)
9	सरस्वती-सागर संगम	तीन रात रहकर स्नान करके पितृदेवताओं को तर्पण करे तो चन्द्रमा के समान प्रकाशित होता है और अश्वमेध का फल पाता है	(अरण्य. 80.64)
10	सिन्धु-सागर संगम (वरुण तीर्थ)	स्नान करके पितृ-देव-ऋषि तर्पण करे तो वारुण लोक	(अरण्य. 80.69–70)
11	वितस्ता नदी	पितृदेवतर्पण से वाजपेय का फल	(अरण्य. 80.90)
12	मलदा नदी	सायंसन्ध्या में आचमन करके अग्नि को यथाशक्ति चरु निवेदित करे तो वह पितरों के लिए अक्षय दान है, ऐसा पण्डित कहते हैं	(अरण्य. 80.93–94)
13	कुमारकोटि	पितृ-देवार्चन के साथ स्नान करे तो दस हज़ार गायों का फल और कुल का उद्धार	(अरण्य. 80.117–118)
14	पुष्करों का समित (कुरुक्षेत्र द्वार)	स्नान करके पितृदेवताओं का अर्चन करे तो कृतकृत्य होकर अश्वमेध का फल पाता है	(अरण्य. 81.25–26)
15	श्रीतीर्थ	स्नान करके पितृदेवताओं का अर्चन करे तो उत्तम श्री प्राप्त होती है	(अरण्य. 81.46)
16	कपिलातीर्थ	ब्रह्मचारी होकर स्नान करके पितृदेवताओं का अर्चन करे तो एक हज़ार कपिला गायों के दान का फल	(अरण्य. 81.47–48)
17	सूर्यतीर्थ	उपवास के साथ पितृदेवताओं का अर्चन करे तो अग्निष्टोम का फल और सूर्यलोक	(अरण्य. 81.48–49)
18	सुतीर्थक	वहाँ पितर देवताओं के साथ नित्य सन्निहित रहते हैं; पितृ-देवार्चन के साथ स्नान करे तो अश्वमेध का फल और पितृलोक की प्राप्ति	(अरण्य. 81.55–56)
19	आपगा नदी	देवों और पितरों के उद्देश्य से श्यामाक का भोजन दे तो महान धर्मफल – एक विप्र को भोजन कराना करोड़ लोगों को भोजन कराने के समान; स्नान, पितृ-देवार्चन और एक रात निवास से अग्निष्टोम का फल	(अरण्य. 81.68–70)
20	मधुवटी (देवीस्थान)	स्नान करके पितृदेवताओं का अर्चन करे तो एक हज़ार गायों का फल	(अरण्य. 81.94–95)
21	पृथूदक	पितृ-देवार्चन के साथ स्नान करे तो सभी अशुभ कर्मों का नाश, अश्वमेध का फल और स्वर्ग	(अरण्य. 81.142–144)
22	रेणुका तीर्थ	पितृ-देवार्चन के साथ स्नान करे तो सब पापों से शुद्धि और अग्निष्टोम का फल	(अरण्य. 81.160)
23	पावन तीर्थ	पितृदेवतर्पण से अग्निष्टोम का फल	(अरण्य. 81.175)

24	प्लक्षा सरस्वती (वल्मीक से निकलने वाला जल)	स्नान करके पितृदेवताओं का अर्चन करे तो अश्वमेध का फल	(अरण्य. 82.6–7)
25	त्रिशूलखात	पितृ-देवार्चन के साथ स्नान करे तो देहत्याग के बाद गाणपत्य	(अरण्य. 82.11)
26	सप्तगंगा, त्रिगंगा, शक्रावर्त	विधिपूर्वक देव-पितृ तर्पण करे तो पुण्यलोक में पूजित होता है	(अरण्य. 82.29)
27	सरस्वती नदी	पितृदेवतर्पण से सारस्वत लोकों में आनन्द करता है	(अरण्य. 82.66)
28	क्षीरवती नदी	पितृ-देवार्चन से वाजपेय का फल	(अरण्य. 82.68)
29	धर्मप्रस्थ	कुएँ के जल से स्नान करके पितृदेवतर्पण करे तो पापमुक्त होकर स्वर्ग पहुँचता है	(अरण्य. 82.99)
30	गौरीशिखर (स्तनकुण्ड)	पितृ-देवार्चन के साथ स्नान करे तो हयमेध का फल और शक्रलोक	(अरण्य. 82.151–152)
31	शोण-ज्योतिरथ्या संगम	नियत होकर पितृदेवतर्पण करे तो अग्निष्टोम का फल	(अरण्य. 83.8)
32	पयोष्णी नदी	पितृ-देवार्चन से एक हज़ार गायों का फल	(अरण्य. 83.40)
33	मेधाविक	पितृदेवतर्पण से अग्निष्टोम का फल, स्मृति और मेधा	(अरण्य. 83.55)
34	मन्दाकिनी (चित्रकूट)	पितृ-देवार्चन के साथ स्नान करे तो अश्वमेध का फल और परम गति	(अरण्य. 83.58–59)
35	ज्येष्ठस्थान (वह कुआँ जिसमें चारों समुद्र हैं)	आचमन करके पितृ-देवार्चन करे तो पवित्र होकर परम गति पाता है	(अरण्य. 83.63–64)
36	च्यवन सरोवर	लोमश ने युधिष्ठिर को 'यहाँ भाइयों के साथ मिलकर पितृदेवतर्पण करो' ऐसा उपदेश दिया	(अरण्य. 126.12)
37	कुरुक्षेत्र, गया, गंगा, सरस्वती, प्रभास, पुष्कर	पितृमेध के लिए ये देश हैं; यहाँ दिया गया महाफलदायक है	(अनु. 238.5)
38	तीर्थ, पुण्य नदियाँ, एकान्त वन, नदीतट के रेतीले टीले	श्राद्ध के लिए पूजित देश	(अनु. 238.6)
39	गंगा	गंगाजल से भस्म भीगने पर सगरपुत्र स्वर्ग प्राप्त करते हैं; पितरों के लिए सलिलक्रिया गंगा में करनी चाहिए	(रामा. बाल. 41.19–20)
40	मतंगाश्रम (शबरी आश्रम) के सप्तसमुद्र तीर्थ	विधिवत् स्नान करके पितृदेवताओं को तृप्त करने पर अपना अशुभ नष्ट हुआ और शुभ प्राप्त हुआ, ऐसा श्रीराम ने कहा	(रामा. अरण्य. 75.4–5)

तालिका में उद्धृत श्लोक

श्रीमद्भागवत › एकादशस्कन्ध › अध्याय 6 › श्लोक 38 नियम पुण्य — भाग. 11.6.38

वयं च तस्मिन्नाप्लुत्य तर्पयित्वा पितॄन् सुरान्।
भोजयित्वोषिजो विप्रान् नानागुणवतान्धसा॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.1

श्रीमद्भागवत › एकादशस्कन्ध › अध्याय 6 › श्लोक 39 नियम पुण्य — भाग. 11.6.39

तेषु दानानि पात्रेषु श्रद्धयाऽर्प्य महान्ति वै।
वृजिनानि तरिष्यामो दानैर्नौभिरिवार्णवम्॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.1

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 64, श्लोक 25 नियम पुण्य — KK 13-1-64-25

आश्रमे कृत्तिकानां तु स्नात्वा यस्तर्पयेत्पितॄन्।
तोषयित्वा महादेवं निर्मलः स्वर्गमाप्नुयात्॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.2

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 170, श्लोक 17 नियम पुण्य KK 13-1-170-17

कीर्तनाच्चैव तीर्थस्य स्नानाच्च पितृतर्पणात् ।
शोध्यं हि पातकं तीर्थे पूता यान्ति सुखं दिवम् ।।

↩ वापस: ↩ तीर्थ.3

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 27 नियम पुण्य KK 3-6-80-27

तत्राभिषेकं यः कुर्यात्पितृदेवांश्च तर्पयेत् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो ब्रह्मलोके च पूज्यते ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.4

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 43 नियम पुण्य KK 3-6-80-43

तत्रगत्वा महाप्राज्ञः कुर्याच्छ्राद्धं दृढव्रतः ।
वाजपेयमवाप्नोति दुष्कृतं चास्य नश्यति ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.5

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 45 नियम पुण्य KK 3-6-80-45

आगस्त्यं सर आसाद्य पितृदेवार्चने रतः ।
त्रिरात्रोपोषितो राजन्नग्निष्टोमफलं लभेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.6

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 48 नियम पुण्य KK 3-6-80-48

अर्चयित्वा पितॄन्देवान्नियतो नियताशनः ।
सर्वकामसमृद्धः स्याद्यज्ञस्य फलमश्नुते ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.7

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 54 नियम पुण्य KK 3-6-80-54

नर्मदां स समासाद्य नदीं त्रैलोक्यविश्रुताम् ।
तर्पयित्वा पितॄन्देवानग्निष्टोमफलं लभेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.8

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 64 नियम पुण्य KK 3-6-80-64

तत्र स्नात्वा च राजेन्द्र विमलार्कसमद्युतिः ।
त्रिरात्रमुषितः स्नातस्तर्पयेत्पितृदेवताः ।
प्रभासते यथा सोमः सोश्वमेधं च विन्दति ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.9

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 69 नियम पुण्य KK 3-6-80-69

सागरस्य च सिन्धोश्च सङ्गमं प्राप्य दुर्लभम् ।
तीर्थे सलिलराजस्य स्नात्वा प्रयतमानसः ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.10

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 70 नियम पुण्य KK 3-6-80-70

तर्पयित्वा पितॄन्देवानृषींश्च भरतर्षभ ।
प्राप्नोति वारुणं लोकं दीप्यमानं स्वतेजसा ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.10

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 90 नियम पुण्य KK 3-6-80-90

वितस्तां च समासाद्य सन्तर्प्य पितृदेवताः ।
नरः फलमवाप्नोति वाजपेयस्य भारत ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.11

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 93 नियम पुण्य KK 3-6-80-93

ततो गच्छेत मलदां त्रिषु लोकेषु विश्रुताम्।
पश्चिमायां तु सन्ध्यायामुपस्पृश्य यथाविधि॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.12

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 94 नियम पुण्य KK 3-6-80-94

चरुं सप्तार्चिषे राजन्यथाशक्ति निवेदयेत्।
पितृणामक्षयं दानं प्रवदन्ति मनीषिणः॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.12

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 117 नियम पुण्य KK 3-6-80-117

कुमारकोटीमासाद्य नियतः कुरुनन्दन।
तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.13

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 80, श्लोक 118 नियम पुण्य KK 3-6-80-118

गवामयुतमाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत्।
ततो गच्छेत धर्मज्ञ रुद्रकोटिं समाहितः॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.13

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 25 नियम पुण्य KK 3-6-81-25

सम्मिते पुष्कराणां च स्नात्वाऽर्च्य पितृदेवताः।
जामदग्न्येन रामेण कृतं तत्सुमहात्मना॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.14

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 26 नियम पुण्य KK 3-6-81-26

कृतकृत्यो भवेद्राजन्नश्वमेधं च विन्दति।
ततो रामह्रदानार्च्छेत्तीर्थसेवी समाहितः॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.14

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 46 नियम पुण्य KK 3-6-81-46

श्रीतीर्थं च समासाद्य स्नात्वा नियतमानसः।
अर्चयित्वा पितॄन्देवान्विन्दते श्रियमुत्तमाम्॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.15

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 47 नियम पुण्य KK 3-6-81-47

कपिलातीर्थमासाद्य ब्रह्मचारी समाहितः।
तत्र स्नात्वाऽर्चयित्वा च पितॄन्स्वान्दैवतान्यपि॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.16

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 48 नियम पुण्य KK 3-6-81-48

कपिलानां सहस्रस्य फलं विन्दति मानवः।
सूर्यतीर्थं समासाद्य स्नात्वा नियतमानसः॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.16 ↩ तीर्थ.17

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 49 नियम पुण्य KK 3-6-81-49

अर्चयित्वा पितॄन्देवानुपवासपरायणः।
अग्निष्टोममवाप्नोति सूर्यलोकं च गच्छति॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.17

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 55 नियम पुण्य KK 3-6-81-55

तत्र सन्निहिता नित्यं पितरो दैवतैः सह ।
तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.18

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 56 नियम पुण्य KK 3-6-81-56

अश्वमेधमावाप्नोति पितृलोकं च गच्छति ।
ततोम्बुमत्यां धर्मज्ञ सुतीर्थकमनुत्तमम् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.18

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 68 नियम पुण्य KK 3-6-81-68

आपगा नाम विख्याता नदीसिद्धनिषेविता ।
श्यामाकभोजनं तत्र यः प्रयच्छति मानवः ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.19

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 69 नियम पुण्य KK 3-6-81-69

देवान्पितॄन्समुद्दिश्य तस्य धर्मफलं महत् ।
एकस्मिन्भोजिते विप्रे कोटिर्भवति भोजिता ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.19

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 70 नियम पुण्य KK 3-6-81-70

तत्र स्नात्वाऽर्चयित्वा च पितॄन्वै दैवतानि च ।
उषित्वा रजनीमेकामग्निष्टोमफलं लभेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.19

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 94 नियम पुण्य KK 3-6-81-94

गत्वा मधुवटीं चैव देव्याः स्थानं नरः शुचिः ।
तत्र स्नात्वाऽर्चयित्वा च पितॄन्देवांश्च पूरुषः ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.20

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 95 नियम पुण्य KK 3-6-81-95

स देव्या समनुज्ञातो गोसहस्रफलं लभेत् ।
कौशिक्याः सङ्गमे यस्तु दृषद्वत्याश्च भारत ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.20

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 142 नियम पुण्य KK 3-6-81-142

पृथूदकमिति ख्यातं कार्तिकेयस्य वै नृप ।
तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.21

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 143 नियम पुण्य KK 3-6-81-143

अज्ञानाज्ज्ञानतो वाऽपि स्त्रिया वा पुरुषेण वा ।
यत्किञ्चिदशुभं कर्म कृतं मानुषबुद्धिना ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.21

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 144 नियम पुण्य KK 3-6-81-144

तत्सर्वं नश्यते तत्र स्नातमात्रस्य भारत ।
अश्वमेधफलं चास्य स्वर्गलोकं च गच्छति ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.21

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 160 नियम पुण्य KK 3-6-81-160

तीर्थाभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा अग्निष्टोमफलं लभेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.22

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 81, श्लोक 175 नियम पुण्य KK 3-6-81-175

पावनं तीर्थमासाद्य तर्पयेत्पितृदेवताः ।
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति भारत ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.23

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 6 नियम पुण्य KK 3-6-82-6

ततश्चापि सरिच्छ्रेष्ठा नदीनामुत्तमा नदी ।
प्लक्षा देवी स्मृता राजन्पुण्या देवी सरस्वती ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.24

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 7 नियम पुण्य KK 3-6-82-7

तत्राभिषेकं कुर्वीत वल्मीकान्निःसृते जले ।
अर्चयित्वा पितॄन्देवानश्वमेधफलं लभेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.24

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 11 नियम पुण्य KK 3-6-82-11

त्रिशूलखातं तत्रैव तीर्थमासाद्य भारत ।
तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः ।
गाणपत्यं च लभते देहं त्यक्त्वा न संशयः ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.25

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 29 नियम पुण्य KK 3-6-82-29

सप्तगङ्गे त्रिगङ्गे च शक्रावर्ते च तर्पयन् ।
देवान्पितॄंश्च विधिवत्पुण्ये लोके महीयते ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.26

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 66 नियम पुण्य KK 3-6-82-66

सरस्वतीं समासाद्य तर्पयेत्पितृदेवताः ।
सारस्वतेषु लोकेषु मोदते नात्र संशयः ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.27

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 68 नियम पुण्य KK 3-6-82-68

ततः क्षीरवतीं गच्छेत्पुण्यां पुण्यतरैर्वृताम् ।
पितृदेवार्चनपरो वाजपेयमवाप्नुयात् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.28

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 99 नियम पुण्य KK 3-6-82-99

तत्र कूपोदकं कृत्वा तेन स्नातः शुचिस्तथा ।
पितॄन्देवांस्तु सन्तर्प्य मुक्तपापो दिवं व्रजेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.29

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 151 नियम पुण्य KK 3-6-82-151

समारुह्य नरश्रेष्ठ स्तनकुण्डेषु संविशेत् ।
स्तनकुण्डमुपस्पृश्य वाजपेयफलं लभेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.30

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 82, श्लोक 152 नियम पुण्य KK 3-6-82-152

तत्राभिषेकं कुर्वाणः पितृदेवार्चने रतः ।
हयमेधमवाप्नोति शक्रलोकं च गच्छति ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.30

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 83, श्लोक 8 नियम पुण्य KK 3-6-83-8

शोणस्य ज्योतिरथ्यायाः सङ्गमे नियतः शुचिः ।
तर्पयित्वा पितॄन्देवानग्निष्टोमफलं लभेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.31

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 83, श्लोक 40 नियम पुण्य KK 3-6-83-40

ततो वापीं महापुण्यां पयोष्णीं सरितां वराम् ।
पितृदेवार्चनरतो गोसहस्रफलं लभेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.32

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 83, श्लोक 55 नियम पुण्य KK 3-6-83-55

मेधाविकं समासाद्य पितॄन्देवांश्च तर्पयेत् ।
अग्निष्टोममवाप्नोति स्मृतिं मेधां च विन्दति ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.33

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 83, श्लोक 58 नियम पुण्य KK 3-6-83-58

ततो गिरिवरश्रेष्ठे चित्रकूटे विशाम्पते ।
मन्दाकिनीं समासाद्य सर्वपापप्रणाशिनीम् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.34

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 83, श्लोक 59 नियम पुण्य KK 3-6-83-59

तत्राभिषेकं कुर्वाणः पितृदेवार्चने रतः ।
अश्वमेधमवाप्नोति गतिं च परमां व्रजेत् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.34

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 83, श्लोक 63 नियम पुण्य KK 3-6-83-63

तत्र कूपे महाराज विश्रुता भरतर्षभ ।
समुद्रास्तत्र चत्वारो निवसन्ति युधिष्ठिर ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.35

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 83, श्लोक 64 नियम पुण्य KK 3-6-83-64

तत्रोपस्पृश्य राजेन्द्र पितृदेवार्चने रतः ।
नियतात्मा नरः पूतो गच्छेत परमां गतिम् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.35

महाभारत › अरण्यपर्व › तीर्थयात्रापर्व › अध्याय 126, श्लोक 12 नियम पुण्य KK 3-6-126-12

तस्यैतद्द्विजसंघुष्टं सरो राजन्प्रकाशते ।
अत्र त्वं सह सोदर्यैः पितॄन्देवांश्च तर्पय ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.36

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 5 नियम पुण्य KK 13-1-238-5

तस्य देशाः कुरुक्षेत्रं गया गङ्गा सरस्वती ।
प्रभासं पुष्करं चेति तेषु दत्तं महाफलम् ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.37

महाभारत › अनुशासनपर्व › दानधर्मपर्व › अध्याय 238, श्लोक 6 नियम पुण्य KK 13-1-238-6

तीर्थानि सरितः पुण्या विविक्तानि वनानि च ।
नदीनां पुलिनानीति देशाः श्राद्धस्य पूजिताः ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.38

श्रीमद्रामायण › अरण्यकाण्ड › सर्ग 75 › श्लोक 5 नियम पुण्य वा.रा. 3.75.5

प्रणष्टमशुभं यन्नः कल्याणं समुपस्थितम् ।
तेन त्वेतत् प्रहृष्टं मे मनो लक्ष्मण सम्प्रति ॥

↩ वापस: ↩ तीर्थ.40